Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

यह संसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167969

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह संसार

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Complete Vedic Books Store
Veg, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Veg & Organic Products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह संसार

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

081
167969
Central Library
167969
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-Y

BOOKS IN HINDI, ENGLISH & SANSKRIT
www.hindisahityasadan.com
Phone - 9213527666, 7065618655
011 23553624

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चेम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5

Yeh Sansaar by Gurudutt

प्रकाशक : भारती साहित्य सदन
३०/९०, कनॉट सर्कस (मद्रास होटल के नीचे)
नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : मई १९९२

मुद्रक : अजय प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

₹ 90 p. - =

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

'यह संसार' स्व० श्री गुरुदत्त का पारिवारिक-सामाजिक उपन्यास है। इसमें धर्म और मजहब की विस्तार से विवेचना की गई है। यत्र-तत्र राष्ट्रीयता का वर्णन भी इस उपन्यास में किया गया है। मनुष्य के वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक आचरण पर इस उपन्यास में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। मनुष्य का पहरावा और खान-पान तथा रहन-सहन किस प्रकार मनुष्य अथवा समाज को प्रभावित करते हैं, इसका विशद वर्णन उपलब्ध है।

ऐसा देखने में आता है कि परिवार तथा समाज की मुख्य समस्या विवाह सम्बन्धों को लेकर उत्पन्न होती है। दो आर्यसमाजी परिवार तथा दो ईसाई परिवारों की सामाजिक गुत्थी को इस उपन्यास में बड़े तार्किक और मार्मिक रीति से सुलझाया गया है। समुदायेतर सम्बन्धों को उपन्यासकार ने सदा ही ग्राह्य माना है। किन्तु इसके लिए परस्पर समन्वय और सामंजस्य होना भी नितान्त अनिवार्य बताया है।

हिन्दू जीवन-दर्शन के प्रति उपन्यासकार गुरुदत्त सदा सजग रहे हैं। उनके अकाट्य तर्क पाठक को बरबस उस दिशा में विचार करने के लिए बाध्य कर देते हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यास का पाठक जब समाज में स्थापित होने लगता है तो अपनी बात बड़ी स्पष्टता से कहने में समर्थ हो जाता है। हिन्दी पाठकों को उनकी यह विशेष देन है। वे जिस विचारधारा का प्रतिपादन करते हैं, अपने पाठक को भी उसी प्रवाह में सम्मिलित कर लेते हैं। इस प्रकार उसकी बुद्धि के परिष्कृत होने में वे सहसा सहायक बन जाते हैं। यही उनकी विशेषता है।

प्रस्तुत उपन्यास में आर्यसमाज की विचारधारा और आर्यसमाजियों के आचरण पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। किसी समुदाय का मात्र सदस्य होना एक बात है, और उस विचारधारा को हृदयंगम कर तदनुरूप अपने जीवन का संचालन करना सर्वथा पृथक् बात है। इसी को इस उपन्यास के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया है। एक पात्र के मुख से उन्होंने कहलवाया है—"···आर्यसमाज कहो अथवा वैदिक धर्म कहो, इसमें ज्ञान-ध्यान की महिमा तो है परन्तु आचरण की कुछ अधिक महिमा नहीं मानी जाती। कर्म ही मोक्ष दिलाता है, ऐसा आर्यसमाज मानता है। परन्तु क्षमा करें, आपके परिवार में बातों की महिमा को आचरण से ऊँचा समझा जाता है।"

वर्तमान में आर्यसमाजियों की यही स्थिति है, जबकि आर्यसमाज के प्रवर्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी दयानन्द ने आचरण पर ही विशेष बल दिया है।

मत-मतान्तर और राष्ट्रीयता का इस उपन्यास में विस्तार से उल्लेख किया गया है। हिन्दू युवक का ईसाई कन्या से तथा हिन्दू कन्या का ईसाई युवक से लगाव होना इस उपन्यास का ताना-बाना होने के कारण हिन्दुत्व और ईसाइयत की इस उपन्यास में तर्कपूर्ण व्याख्या की गई है। वैदिक नामधारी होने से ही कोई हिन्दू नहीं हो सकता और जौन, पौल आदि नामधारी होने से ही कोई ईसाई भी नहीं हो सकता। प्रश्न मनुष्य की राष्ट्रीयता और विचारधारा का होता है। विचारों तथा आचरण से शुद्ध-पवित्र व्यक्ति किसी भी मत का मानने वाला हो, वह वास्तव में मानव है और मानव धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है।

मनु द्वारा प्रतिपादित दस लक्षणों की इसमें व्याख्या और विवेचना की गई है। भारत में रहने वाला यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति भारतीय कहला सकता है, किन्तु क्या उसका आचरण भी भारतीयता से सामंजस्य स्थापित कर सकता है? यही सबसे बड़ा प्रश्न है। जो व्यक्ति मन-वचन-कर्म से भारतीय है वही वास्तव में भारतीय है, फिर उसका सम्प्रदाय अथवा मजहब हिन्दू, मुसलमान अथवा ईसाई कुछ भी हो। भारतीयता ही मुख्य है।

इन सब विषयों को कथावस्तु का आधार बनाकर इस उपन्यास का ताना-बाना बुना गया है। यह तो पाठक पर ही निर्भर करता है कि वह अपनी बुद्धि के आधार पर किस विचारधारा को ग्राह्य मानता है और किसको अग्राह्य।

—अशोक कौशिक
(संपादक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक नामधारी होने से ही कोई हिन्दू नहीं हो सकता और जौन, पौल आदि नामधारी होने से ही कोई ईसाई भी नहीं हो सकता। प्रश्न मनुष्य की राष्ट्रीयता और विचारधारा का होता है। विचारों तथा आचरण से शुद्ध-पवित्र व्यक्ति किसी भी मत का मानने वाला हो, वह वास्तव में मानव है और मानव धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है।

मनु द्वारा प्रतिपादित दस लक्षणों की इसमें व्याख्या और विवेचना की गई है। भारत में रहने वाला यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति भारतीय कहला सकता है, किन्तु क्या उसका आचरण भी भारतीयता से सामंजस्य स्थापित करता है ? यही सबसे बड़ा प्रश्न है। जो व्यक्ति मन-वचन-कर्म से भारतीय है वही वास्तव में भारतीय है, फिर उसका सम्प्रदाय अथवा मजहब हिन्दू, मुसलमान अथवा ईसाई कुछ भी हो, भारतीयता ही मुख्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

"मैं तो मानता हूँ कि पाप-पुण्य अपने-अपने समझने की बात है। आप लोग जो बार-बार शास्त्र, सिद्धान्त और वेद की बात कहते रहते हैं उसे मेरी बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती।"

पाँव से गले तक योरोपियन पहिरावा पहने हुए एक व्यक्ति, अपनी एक एकड़ भूमि पर बनी दो मंज़िली कोठी के भूमि-तल पर, प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा से युक्त ड्राइंगरूम में बैठा, धोती, कुर्ता पहने और पगड़ी बाँधे हुए एक व्यक्ति को समझा रहा था। कहने वाला व्यक्ति सिर से नंगा था। वह घर का स्वामी था। धोती-कुर्ता पहने व्यक्ति अपने दो साथियों के साथ उसके निमन्त्रण पर भोजन करने के लिए आया हुआ था।

नगर में आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव हो रहा था और केसरिया पगड़ीधारी महाशय नत्थूराम उत्सव में भजनीक के रूप में पधारे थे। उत्सव में पण्डितजी ने बहुत ही मीठी और ओजपूर्ण वाणी में भजन गाये थे और उपदेश दिया था। पण्डितजी के भजनोपदेशों से कोठी के स्वामी श्री पी० एन० ग्रोवर साहब की पत्नी श्रीमती प्रमिला ग्रोवर बहुत प्रभावित हुई थीं और वास्तव में यह निमन्त्रण उन देवीजी के आग्रह पर ही उनके पति मिस्टर ग्रोवर ने दिया था।

श्री ग्रोवर आर्यसमाज के प्रधान थे और श्रीमती ग्रोवर ने यह ठीक समझा कि पण्डित नत्थूरामजी जैसे प्रभावी उपदेशक को प्रधान के घर में बढ़िया भोजन खिलाकर तृप्त किया जाय। जब पण्डितजी को बुलाया गया तो उनके साथ बाहर से आये दो अन्य वक्ताओं को भी आमन्त्रित कर लिया गया। ग्रोवर साहब ने आर्य-समाज के चार-पाँच अन्य प्रमुख व्यक्तियों को भी आमन्त्रित किया हुआ था।

मुख्य अतिथि तो पण्डित नत्थूरामजी ही थे। अन्य व्यक्ति तो गौण थे। उसका कारण यह था कि उन अन्य लोगों के भाषण में श्रीमती ग्रोवर को वह रस नहीं मिला था जो उनको पण्डितजी के भजनों और उपदेशों से प्राप्त हुआ था।

श्रीमती ग्रोवर द्वारा आमन्त्रित अन्य अतिथि अभी तक नहीं आये थे और उनकी प्रतीक्षा में बैठे हुए ही समय निकालने के लिए आतिथेय महोदय अपने मनो-द्गार प्रकट कर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित नत्थूराम ने उसी सायंकाल अपने एक भजन में गाया था—

दान धर्म और पुण्य कर्म से
तो स्वर्ग द्वार खुल जाते हैं।
यह सब साधन प्रभु लीला से,
हम इसी देह में पाते हैं॥

ग्रोवर साहब इस दान-धर्म और पुण्य-कर्म की ही व्याख्या कर रहे थे। श्रीमती ग्रोवर तो भोजन के लिए मेज़ लगवा रही थीं और ग्रोवर साहब का सुपुत्र, भूषण अतिथियों के स्वागत के लिए कोठी के द्वार पर खड़ा था।

पण्डित नत्थूराम ग्रोवर साहब की उक्ति को समझने के यत्न में लीन होने के कारण अभी मौन थे। ग्रोवर साहब पण्डितजी को मौन देख यह समझे कि उस व्यक्ति को, जिसने उत्सव में दस सहस्र से भी अधिक नर-नारियों को अपने भजनों से मंत्रमुग्ध किया हुआ था, उन्होंने निरुत्तर करने में सफलता प्राप्त कर ली है। इससे गर्व से फूलते हुए ग्रोवर साहब ने अपना वक्तव्य जारी रखा।

वे कहने लगे, "मैं एक बात जब सुन लेता हूँ तो फिर उसे समझकर स्वीकार अथवा अस्वीकार कर देता हूँ। तदुपरान्त मुझे उस बात को पुनः सुनने में रुचि नहीं रहती और आप तो वही परमात्मा-आत्मा की बात अनादि काल से अनन्त काल तक करते जाते हैं।"

पण्डित नत्थूराम यह अनुभव करने लगा था कि यह धनी-मानी व्यक्ति उस सदृश साधारण आर्थिक स्थिति के भजनोपदेशक का अपमान करने के लिए ये सब बातें कर रहा है। वह स्वयं को छोटा समझता हुआ, मौन रहने में अपना कल्याण समझने लगा था।

इसी समय भूषण भी शेष आने वाले चार सज्जनों को लेकर भीतर आ गया था। ये लोग एक ही मोटर गाड़ी में आये थे। इनमें एक ठेकेदार थे। उनका नाम था लाला रामनारायण। ये भी लखपति थे और नगर में पाँच-छः कोठियों के मालिक थे। अन्य लोग भी आर्यसमाज के संगठन में सक्रिय भाग लेने वाले थे।

पण्डित नत्थूराम ने समझा कि अब तो ग्रोवर साहब की डाँट-डपट से छुट्टी मिलेगी। उसका विचार था कि अपने ही नगर के अन्य आर्यसमाजियों के सामने ग्रोवर साहब सिद्धान्त के विरुद्ध बात नहीं करेंगे। परन्तु ग्रोवर साहब अपने स्वभाव से विवश थे और अब नत्थूराम को छोड़कर नगर के बाहर से आये एक अन्य व्याख्यानदाता को सम्बोधन करते हुए बोले, "क्यों साहब! आप तो पढ़े-लिखे व्यक्ति प्रतीत होते हैं। आप भी क्या ऐसा ही समझते हैं जैसे कि पुराने विचारों के लोग समझते हैं?"

यह व्यक्ति नारायणदत्त थे। गुरुकुल काँगड़ी के स्नातक और विद्यालंकार बनने के उपरांत उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय की उच्चतम विज्ञान की उपाधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त की थी। वह भाग्य के धनी, इतना पढ़ने के उपरान्त भी आर्यसमाज में प्रचार के लिए जाते रहते थे। ऐसे कुछ लोग थे जो उनके प्रवचनों को पसन्द करते थे और उनको आर्यसमाज के उत्सवों पर आमन्त्रित करते रहते थे।

श्री नारायणदत्त नहीं चाहते थे कि जिसके घर में वह भोजन करने के लिए आये हैं, उसीको अनभिज्ञ कहना आरम्भ कर दें। यही कारण था कि वह ग्रोवर साहब के वक्तव्य को चुपचाप सुन रहे थे। इस मुसकराने ने ही ग्रोवर साहब को भ्रम में डाल दिया था और वह उनसे अपनी बात के समर्थन की आशा में प्रश्न पूछ बैठे थे।

विद्यालंकार महोदय को मुख खोलना ही पड़ा और बोले, "ग्रोवर साहब ! आप स्वाध्याय किया करिये।"

"वह तो करता हूँ। नित्य पाँच-छः घंटे पढ़ता हूँ।"

"आप धन्य हैं। आपने स्वामीजी का लिखा 'सत्यार्थप्रकाश' तो पढ़ा ही होगा?"

"हाँ, पढ़ा था।"

"उसमें मन्तव्यामन्तव्य प्रकाश का अध्याय भी पढ़ा होगा?"

ग्रोवर साहब समझने लगे कि यह पढ़ा-लिखा व्यक्ति उसकी परीक्षा लेना चाहता है। इस कारण बोल पड़े, "विद्यार्थी जीवन में मैंने वह पढ़ा था और सारांश तो अब भी मस्तिष्क में विद्यमान है। यद्यपि उसके शब्द दोहरा नहीं सकता।"

"और आजकल क्या पढ़ते हैं?"

"नियम से तो मैं 'रीडर्स डाइजेस्ट' पढ़ता हूँ। इसमें नित्य नये विषयों पर लेख आते रहते हैं। इसके अतिरिक्त 'लाइफ मैगजीन' पढ़ता हूँ। दैनिक स्टेट्समैन और टाइम्स ऑफ इण्डिया भी पढ़ लेता हूँ।"

"मेरे विचार से तो आपने अपनी आँखों पर कर्म और विचारों से विदेशियों द्वारा रँगे चश्मे चढ़ाए हुए हैं और उनसे ही आप देख रहे हैं।"

"पर क्या इस रंग में कुछ भूल है?"

"आप तो विज्ञान पढ़े हैं। आपको विदित होगा कि कुछ रंग हैं जिनके शीशे अपने ही रंग की किरणों को अपने में से गुज़रने देते हैं और दूसरी सब किरणों को रोक लेते हैं।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। मेरा मतलब है मैं ऐसा नहीं हूँ।"

"देखिए ग्रोवर साहब ! महर्षि दयानन्दजी अपनी पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' में अपना मन्तव्य लिखते हुए कहते हैं कि ईश्वर, जिसके ब्रह्म, परमात्मा आदि अनेक नाम हैं, जो सर्वत्र निराकार, निर्विकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी इत्यादि लक्षणों से संयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, स्मरण है। ऐसा वहाँ लिखा है।"

"और आप इसको अस्वीकार कर चुके हैं। यही न ?"

अब तो ग्रोवर साहब घबराये। और तुरन्त अपनी बात छोड़ रामनारायणजी से पूछने लगे, "रामनारायणजी ! सुशीला और उसकी माँ को भी ले आते।"

"मैंने सुशीला की मम्मी को कहा था। वह बोली प्रमिला बहिनजी ने तो हमको बुलाया ही नहीं। वे किसी अन्य दिन आयेंगी।"

"क्यों प्रमिलाजी !" ग्रोवर ने अपनी पत्नी को आवाज़ देकर पूछा, "तुमने मिसेज टण्डन को नहीं बुलाया ?"

प्रमिला खाने का सब प्रबन्ध पूर्ण कर अभ्यागतों को खाने के लिए डाइनिंग-हॉल में चलने को कहने आई थी। प्रमिला ने कह दिया, "आज का आयोजन तो हमारे सार्वजनिक जीवन का अंग है। और सुशीला हमारे परिवार से सम्बन्धित हो गई है।"

रामनारायण की लड़की, सुशीला की सगाई मिस्टर ग्रोवर के लड़के भूषण से हो चुकी थी और सुशीला की माँ कान्ता देवी सम्बन्धियों के घर में अनामंत्रित आना नहीं चाहती थी। वैसे सुशीला और उसकी माँ कान्ता, कई बार सगाई के पूर्व और बाद में भी, उनके यहाँ आ चुकी थीं। दोनों परिवार परस्पर मिलते रहते थे। फिर भी वे ऐसे समारोह में, जिसमें बाहरी लोग भी आने वाले हों, आना नहीं चाहती थीं।

मिस्टर ग्रोवर का आशय भी सुशीला इत्यादि के न आने पर चिन्ता व्यक्त करना नहीं था। उसने तो नारायणदत्तजी के प्रश्न का उत्तर देने से बचने के लिए वात बदली थी।

अब प्रमिला ने कह दिया, "भोजन का समय हो गया है।"

सब लोग उठ गए और ड्राइंगरूम से खाने के कमरे में चले गए। सब खाने के लिए बैठ गए। नारायणदत्त विद्यालंकार और ग्रोवर साहब का लड़का भूषण साथ-साथ बैठे थे। विद्यालंकार के दूसरी ओर भजनीक महोदय बैठे थे।

सामने 'डिशों' में साग-भाजी, दही, दाल, चावल, पूरी, फल, मिठाई इत्यादि रखी थीं। सब लोग अपने-अपने मन से जिसकी जो इच्छा होती थी, अपनी-अपनी प्लेटों में खाने के लिए रख रहे थे। भजनीक महोदय ने सबसे पहले हाथ बढ़ाया रसगुल्लों की 'डिश' की ओर।

डिश में कलछी रखी थी और पण्डितजी ने एक-एक कर छः रसगुल्ले उठा अपनी प्लेट में रख लिए और चम्मच से उठा-उठाकर खाने लगे। नारायणदत्तजी ने एक रसगुल्ला ही लिया और उसके टुकड़े करके खाने लगे। पण्डित नत्थूराम ने ग्रोवर साहब के वक्तव्य पर उत्पन्न संशय के निवारण के लिए नारायणदत्त से पूछ लिया, "बाबू साहब ! आप क्या यही मानते हैं कि पुण्य वह है जो अपने-आपको पुण्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम हो ?"

नारायणदत्त कहने लगे, "यह कैसे हो सकता है ? यदि मुसलमान को गौहत्या पुण्य प्रतीत होती है तो हिन्दू के लिए गौरक्षा पुण्य है। साथ ही एक अहिन्दू राजा यदि व्यापक गोवध कराने लगे तो वह गौहत्या न तो पुण्य कर्म हो जाएगा न ही जनता के लिए सुख-सुविधामय।

"पण्डितजी ! सम्पूर्ण धर्म का मूल वेद हैं और धर्म-कर्म ही पुण्य है, जो वेदानुकूल नहीं वह पुण्य नहीं हो सकता।"

नारायणदत्तजी की साथ की कुर्सी पर बैठा भूषण इन दोनों आर्यसमाजियों की बातें ध्यानपूर्वक सुन रहा था। उसने पूछ लिया, "पर वेद में तो गोमांस खाना लिखा है ?"

"कौन कहता है ?"

"सुना है, मैक्समूलर साहब ने लिखा है।"

"इस बात का क्या प्रमाण है कि उसने वेद पढ़े भी थे ?"

"तो वेद का अनुवाद कैसे कर दिया है ?"

"बिल्कुल इस प्रकार, जिस प्रकार इस अंग्रेजी वाक्य 'मे ही ब्लेस अवर यूनियन' का यह अर्थ करूँ—वह हमारी ट्रेड यूनियन का सर्वनाश करे।" ब्लेस का अर्थ ब्लास्ट और यूनियन का अर्थ ट्रेड यूनियन आज के समाजवादी काल के अनुरूप ही है।

"यही बात मैक्समूलर साहब की है। वह वेदों की भाषा से अनभिज्ञ होते हुए गौ के अर्थ पृथिवी मानने की अपेक्षा गाय मान रहे हैं और मेद के अर्थ भूमि खोदने के स्थान पर गाय की हत्या मान रहे हैं।"

"तो मैक्समूलर संस्कृत नहीं जानते थे ?"

"देखिए भूषणजी ! मैक्समूलर पाणिनी की संस्कृत पढ़े थे। वैदिक संस्कृत उससे भिन्न है। इसके साथ ही वेदों में अनेकार्थवाची शब्द हैं। अर्थ लगाने में पूर्वापर की संगति भी मिलनी चाहिए।"

पण्डित नत्थूरामजी तो भोजन करने में लगे थे। वे भूषण और नारायणदत्त की चर्चा की ओर ध्यान नहीं दे रहे थे।

भूषण और नारायणदत्त बहुत कम खा रहे थे और बातों में रुचि अधिक ले रहे थे। भूषण ने कहा, "पिताजी कहते हैं कि स्वामी दयानन्द बहुत बड़े आदमी थे परन्तु वे आधुनिक युग की प्रगति से अनभिज्ञ थे।"

"मुझे विस्मय हो रहा है कि ये श्रीमान् आर्यसमाज के प्रधान पद पर किस प्रकार अधिष्ठित हैं ?" नारायणदत्तजी का प्रश्न था।

भूषण ने उत्तर दिया, "वे अधिष्ठित हैं इस कारण क्योंकि उनको बहुसंख्यक सदस्यों ने निर्वाचित किया है।"

"वे तो स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों तक को नहीं मानते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु इसमें निर्णय तो सदस्यों ने यह दिया है कि पिताजी सबसे अधिक दयानन्द के सिद्धान्तों को मानते हैं। तभी तो उनको प्रधान बनाया गया है।"

नारायणदत्त मौन हो गए। वह समझ गए थे कि समाज के विधि-विधान में कहीं-न-कहीं खराबी है। मौन हो जाने पर भी उनके मुख पर असन्तोष स्पष्ट झलक रहा था।

: २ :

रात के भोजन के उपरांत उत्सव की अन्तिम सभा हो रही थी। और उस सभा में समाज के प्रधान को धन्यवाद देने के लिए जाना था। लोगों में धन्यवाद किए जाने वालों में अपने नाम को सुनने की लालसा थी, इसलिए उन्हें भी उपस्थित होना था। अतः सब-के-सब भोजन समाप्त कर उठ बैठे। केवल पण्डित नत्थूराम का पेट अभी नहीं भरा था। वे बैठे हुए चावल और मठा ले रहे थे। उनकी इच्छा थी कि भोजन के अन्त में एक-दो रसगुल्लों से मुख मीठा किया जाय। सबको उठता देख उनके मुख पर निराशा की झलक थी।

ग्रोवर साहब ने भजनोपदेशक महोदय के मुख पर असन्तोष की झलक देखी तो कह दिया, "पण्डितजी! आपको तो सभा में सबसे पहले पहुँचना चाहिए। आपके बिना तो रंग जमेगा ही नहीं।"

पण्डितजी ने कह दिया, "मैं नहीं समझ रहा कि आप सब लोग इतना कम क्यों खा रहे हैं। अब यह प्लेट में रखा तो समाप्त कर लूँ।"

"हाँ, हाँ खाइए।" प्रमिला देवी बोल उठीं, "पण्डितजी खाइएगा नहीं तो बोलिएगा किस प्रकार।"

पण्डित नत्थूराम डटकर खाते रहे। उनको सबसे पीछे तक बैठे रहकर खाने का लाइसेंस मिल गया था।

नारायणदत्त विद्यालंकार उठे और 'बेसिन' में हाथ धो-पोंछकर जब मोटर में चलने लगे तो भूषण ने उनको कह दिया, "आप मेरी मोटर में चलेंगे।"

वहाँ तीन मोटर गाड़ियाँ थीं। दो में सब लोग चले गए तो भूषण नारायणदत्त को अपनी गाड़ी में बैठाने के लिए ले चला। वह अभी ड्राइंगरूम से निकला ही था कि प्रमिला देवी ने आवाज़ दे दी, "भूषण! मैं भी तुम्हारी गाड़ी में चलूँगी।"

भूषण माँ को इनकार नहीं कर सका। परन्तु उसके मुख पर असंतोष दिखाई देने लगा था। वह परेशानी में माँ का मुख देखने लगा। माँ ने कह दिया, "पण्डितजी को भी चलना है। वह भोजन समाप्त कर चुके हैं और हाथ धोकर आ ही रहे हैं।"

भूषण निराश पुनः ड्राइंगरूम में आ कुर्सी पर बैठ गया। नारायणदत्त यह देख रहा था। उसने पूछा, "क्या बात है भूषणजी!"

"कुछ नहीं, मैं आपसे पृथक् में बात करना चाहता था।"

"तो फिर क्या हुआ। इनको सभा-मंडप में छोड़ हम लोग पाँच मिनट के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर ठहर जाएँगे।"

इससे भूषण उत्साहित हो उठ खड़ा हुआ और माँ की प्रतीक्षा करने लगा। पण्डित नत्थूराम भी आ गए थे। माँ वस्त्र बदलने के लिए भीतर गई हुई थीं।

"सुनाइए पण्डितजी !" भूषण ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "पेट भरा अथवा नहीं ?"

"बाबूजी, मैं खाता कुछ अधिक हूँ। परन्तु काम भी इन उपदेशकों से···" उसने नारायणदत्तजी की ओर संकेत कर कह दिया, "अधिक ही करता हूँ। ये उपदेशक तो पूर्ण उत्सव में दो-तीन व्याख्यान ही देते हैं और मुझे तो उत्सव की पाँचों सभाओं में तीन-तीन बार बोलना पड़ता है।"

इस समय प्रमिला देवी वस्त्र बदलकर आ गईं। इस कारण भूषण पण्डित के भजनों की और उसके परिश्रम की प्रशंसा नहीं कर सका।

ये चारों वहाँ से चलकर सभा-मंडप में जा पहुँचे। पण्डितजी को प्रमिला देवी मंच पर ले गईं और भूषण ने नारायणदत्तजी से कहा, "तो आपके पास समय है ?"

"हाँ, मेरा इस समय कोई कार्यक्रम नहीं है।"

"कार्यक्रम यह है कि पिताजी आप सब लोगों को, जो बाहर से आये हुए हैं, पुष्पमालाएँ पहनाएँगे और आपका धन्यवाद करेंगे। वे आशा करेंगे कि आप उस समय वहाँ पर हों।"

"यह कुछ नहीं।" नारायणदत्त ने मुस्कराते हुए कहा, "आप बताइए कि आप क्या चाहते हैं ?"

"मैं आपसे अपने मन में उठ रहे द्वन्द्व का समाधान चाहता हूँ। उसके लिए पृथक् स्थान पर बैठकर पाँच मिनट बात करनी पड़ेगी।"

"ठीक है। आप बताइए, हमको कहाँ एकान्त मिल सकता है ?"

"आप पुष्पमालाओं से वंचित रह जाएँगे।"

"आप इसकी चिन्ता न करिए।"

प्रसन्नचित भूषण ने विद्यालंकारजी की बाँहों में हाथ डाला और उनको सभा-मंडप से बाहर ले गया। दोनों पुनः गाड़ी में सवार होकर चल दिए। भूषण समीप ही एक रेस्टोराँ के सामने आ खड़ा हुआ और गाड़ी से उतरकर बोला, "हम तो बातें ही करते रहे थे, खाया कुछ भी नहीं। वहाँ के खाने का सप्लीमेंट (पूरक) कुछ यहाँ ले लें।"

"मेरा तो पेट भर चुका है।"

"तब भी आइए, एक प्याला कॉफी तो चल ही जाएगा।"

नारायणदत्त और भूषण दोनों गाड़ी से उतरकर रेस्टोराँ के एक कोने में जाकर बैठ गए। बैरा आया और भूषण ने दो प्याले कॉफी का आर्डर दे बात आरम्भ कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप परमात्मा को मानते हैं ?" भूषण ने पूछ लिया।

"हाँ। किन्तु तुम किसलिए पूछ रहे हो ?"

"और उसको आप सर्वव्यापक, सबका कर्त्ता, भर्ता और संहार-कर्त्ता मानते हैं ?"

नारायणदत्त समझ नहीं सका था कि यह लड़का क्या कहना चाहता है। फिर भी वह अपने मन के संस्कारों से कहता जा रहा था, "जी ! आपके पिताजी से बात करते हुए भी मैंने यही कहा था कि स्वामी दयानन्दजी ने अपने मन्तव्यों में सबसे प्रथम मन्तव्य यही लिखा है।"

"तो ये ईसाई, मुसलमान आदि भी उसी ने बनाए हैं ?"

"हाँ।..." नारायणदत्त ने बात पूरी भी नहीं की थी कि ठीक उसी समय रेस्टोराँ के द्वार से एक लड़की भीतर आती दिखाई दी और वह इन लोगों को वहाँ बैठे देख उनके समीप आ खड़ी हुई।

आते ही उसने कहा, "भूषणजी ! एम आई डिस्टर्बिंग यू ?" (मैं आपकी बातों में बाधक तो नहीं हो रही ?)

"ओ नो। आओ बैठो। आपने तो कहा था कि आज आपके दर्शन नहीं होंगे।"

"माँ आज पिक्चर जा रही थीं और वह मुझको साथ ले जाना चाहती थीं। परन्तु एकाएक उनका विचार बदल गया। इसलिए इस समय खाली होने के कारण यहाँ कॉफी पीने के लिए चली आई हूँ।"

लड़की बैठी तो भूषण ने परिचय करा दिया, "अंजू ! ये हैं पण्डित नारायणदत्त विद्यालंकार, एम० एस-सी०। ए रेअर कम्बीनेशन ऑफ डिग्रीज़ (योग्यताओं का बिरला संयोग) हैं। इनकी इन योग्यताओं के कारण ही मैं इनकी ओर आकर्षित हुआ हूँ और इनसे अपने मन के कुछेक संशय निवारण करने के लिए इनको एक रोचक कार्यक्रम से उठा लाया हूँ।

"और पण्डितजी ! ये हैं मेरी कॉलेज की एक साथिन। इन्होंने बी० ए० पास कर पढ़ाई समाप्त कर दी थी और मैं अब एम० ए० की परीक्षा में बैठ रहा हूँ।"

नारायणदत्त ने हाथ जोड़कर लड़की को नमस्ते कही। उनको लड़की से बातें करने का अवसर दिये बिना भूषण ने बैरे को एक प्याला, लड़की के लिए भी, कॉफी लाने के लिए कह दिया और फिर अपना वार्तालाप आरम्भ कर दिया—

"पण्डितजी ! मैं पूछ रहा था कि जब परमात्मा ही सबका पिता है तो आर्य-समाज में इन ईसाइयों और मुसलमानों के विपरीत इतना कुछ क्यों कहा जाता है ?

"मैंने कल पण्डित भूमानन्दजी से भी यही प्रश्न किया था। वह कहने लगे कि ये लोग वेद-मत को नहीं मानते, इसलिए। परन्तु उनकी निन्दा करने के लिए यह पर्याप्त कारण नहीं हो सकता। आप इस विषय में क्या कहते हैं ?"

नारायणदत्त मुस्कराया और बोला, "मैं ईसाइयों अथवा मुसलमानों से घृणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कोई कारण नहीं देखता। मैं इनकी निन्दा भी नहीं करता। इनका वेद-मत को न मानना इनसे घृणा करने का कारण नहीं होना चाहिए।"

भूषण की आँखों में मुस्कराहट की झलक दिखाई देने लगी। इस समय बैरा तीनों के लिए कॉफी ले आया। सबसे पहले लड़की ने ही उठाकर पीनी आरम्भ की। नारायणदत्त ने भी एक सुरकी लगा प्याले को पुनः सॉसर में रखकर कहा, "परन्तु व्यवहार में पारस्परिकता तो होनी चाहिए।"

"वह क्या होती है ? मैं संस्कृत नहीं पढ़ा हूँ।"

"इसका अभिप्राय है कि जैसे को तैसा। यथायोग्य व्यवहार। मैं यदि किसी गरीब ईसाई लड़की को पढ़ाई करने के लिए सहायता दूँ तो इसका यह अर्थ नहीं निकलता कि लड़की को हिन्दू धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए। एक मुसलमान रोगी को मैं औषध देता हूँ तो इतने मात्र से हिन्दू किये जाने पर बाध्य नहीं किया जा सकता। किन्तु ऐसी बात ईसाई और मुसलमान करते हैं और कर रहे हैं। हम इसे निन्दनीय मानते हैं।"

"परन्तु उनके मज़हव में कुछ खराबी है ? यदि कोई हिन्दू ईसाई अथवा मुसलमान बना लिया जाय तो उसको कुछ हानि हो सकती है ?"

"उसके हानि-लाभ की बात तो जीवन के अन्त में, जीवन के कर्मों का लेखा-जोखा करने पर, पता चलेगी। इसकी बात तो अभी नहीं कही जा सकती। परन्तु समाज की बात तो है। किसी हिन्दू को लोभ देकर अथवा धोखा देकर ईसाई अथवा मुसलमान बना लेने का यही अर्थ है जो किसी भारत के नागरिक को पकड़कर पाकिस्तान में ले जाकर, उससे भारत के विपरीत कार्य कराने का है। यही बात ईसाइयों के विषय में कही जा सकती है। नागालैण्ड को भारत से पृथक् राज्य इस आधार पर बनाया जा रहा है कि वह ईसाइयों का देश है। झूठ बोलकर उनके मन में अपनी मान्यताओं के प्रति घृणा उत्पन्न कर भारत का शत्रु बनाया गया है। अव उनको अपने प्राचीन समाज और मान्यताओं के विरुद्ध लड़ाया जा रहा है।"

"पर ऐसा क्यों ? यदि ईसाई अथवा मुसलमान हिन्दुओं से नफरत करते हैं तो क्या इसका कारण यह नहीं कि हिन्दुओं में कुछ नफरत के योग्य हैं ?"

"मैं तो हिन्दुओं में कुछ भी इस प्रकार का घृणा योग्य नहीं देखता। केवल कह देने मात्र से तो कोई निंदनीय अथवा प्रशंसा के योग्य नहीं हो जाता।"

"पर निन्दनीय तो है। उदाहरण के रूप में काली के सम्मुख बकरा अथवा भैंसा बलि चढ़ाना भला कहाँ का प्रशंसनीय कार्य है ?"

"भूषणजी, आप हिन्दू हैं न ?"

"जी कहा तो जाता हूँ।"

"और आप हिन्दू माता-पिता की संतान भी हैं।"

"वे भी अपने को हिन्दू कहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या यह सत्य नहीं कि उनके माता-पिता भी हिन्दू ही कहे जाते थे ?"

"मेरे नाना-नानी तो अभी जीवित हैं। दादीजी भी जीवित हैं, हाँ, दादा नहीं हैं।"

"तो यह बताओ ! तुमने अपने घर में कभी कोई बकरा अथवा भैंसा बलि चढ़ते देखा है ?"

भूषण यह सुनकर विस्मित-सा मुख देखता रह गया।

नारायणदत्त ने अपनी बात जारी रखी, "नहीं न ? तो इसका यह अर्थ नहीं क्या कि बलि देना हिन्दुओं का लक्षण नहीं। यह किसी अन्य बात का लक्षण है।"

"तो यह किस बात का लक्षण है ?"

"यह काली के उपासकों का एक कार्य है।"

"वे क्या हिन्दू नहीं हैं ?"

"हैं तो वे हिन्दू ही। परन्तु यह कार्य हिन्दुओं का सामान्य कार्य नहीं। जो इस बलि-कार्य को पसन्द नहीं करते वे इसे न करते हुए भी हिन्दू रह सकते हैं, रह रहे हैं और रहते रहे हैं।

"जैसे ईसाइयों में कुछ लोग एक से अधिक औरतों से सम्बन्ध रखते हुए भी ईसाई रहते हैं। यही बात यहाँ है। ईसाई धर्म में एक से अधिक पत्नी रखना वर्जित है। परन्तु कुछ लोग अविवाहित पत्नियाँ रखते हैं। फिर भी वे रहते ईसाई ही हैं।"

भूषण के मन में उथल-पुथल मच रही थी। वह आज तक यही समझ रहा था कि देवी के सामने बलि चढ़ाने वाले को ही हिन्दू कहते हैं। परन्तु उनके अपने घर में तो कभी देवी के सामने यह भेंट चढ़ाई नहीं गई। उसके नाना-नानी तो बहुत पुराने विचार के व्यक्ति हैं और अपने को कट्टर हिन्दू मानते हैं। उनके घर में भी तो बलि नहीं चढ़ाई गई। एक बात और थी। वे तो मांस भी नहीं खाते थे। भूषण ने एक और बात पूछ ली, "तो सब हिन्दुओं का सामान्य धर्म क्या है ?"

"भूषणजी ! हममें एक साझी बात है। धर्म, अर्थ और काम। इसे हम त्रिवर्ग मानते हैं। इन तीनों में धर्म मुख्य हैं। अर्थ और काम धर्म के अधीन हैं। देखो, हमारे धर्मशास्त्र में क्या लिखा है—

यत्र धर्मस्तथैवार्थः कामश्चैवाभिवर्णितः।
त्रिवर्ग इति विख्यातो गुणएव स्वयम्भुवा॥
चतुर्थो मोक्ष इत्यैव पृथगर्थः पृथग्गुणाः॥

"अर्थ है कि इसमें धर्म से अर्थ और उससे काम का वर्णन है। ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है। परन्तु मोक्षमार्ग इससे पृथक् है उसका गुण भी उससे पृथक् है।"

"इसका अभिप्राय यह है कि हिन्दुओं में धर्म, अर्थ और काम की व्यवस्था तो साझी है और मोक्ष की व्यवस्था पृथक्-पृथक् ढंग पर समझी जाती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"काम तो विवाह से सम्बन्ध रखता है न ?"

"हाँ, विवाह पर प्रतिबन्ध धर्म का ही है।"

"यह कैसे ?"

"यह इस प्रकार कि पति-पत्नी में गुण-कर्म-स्वभाव में समानता का विचार धर्म है।"

"अरे !" भूषण ने विस्मय प्रकट करते हुए कह दिया, "गुण, कर्म और स्वभाव का विवाह अर्थात् काम से क्या सम्बन्ध ?"

नारायणदत्त देख रहा था कि साथ में बैठी लड़की इनकी बातें रुचिपूर्वक सुन रही थी। इससे वह काम-सम्बन्धी बात को बहुत ही संयत भाषा में कहना चाहता था। उसने कहा, "विवाह का अर्थ भोग-विलास में असीमता की छूट नहीं। विवाह तो वासनाओं पर नियन्त्रण रखने के लिए ही होता है। यही धर्म है।"

"मैं समझा था कि एक जाति और दूसरी जाति की बात कह रहे हैं।"

"वह भी है। परन्तु जाति का सम्बन्ध काली भक्त, विष्णुपन्थी, ईसापन्थी अथवा मोहम्मदपन्थी होने से नहीं। जाति तो योनि से होती है। सब मनुष्यों की एक ही योनि है। अर्थात् एक ही जाति है। जहाँ तक विवाह का सम्बन्ध है, उस पर पन्थों का नियन्त्रण नहीं। उस पर स्वभाव और कर्म का नियन्त्रण है। स्वभाव से अभिप्राय शम, दम, तप इत्यादि है और कर्म का सम्बन्ध धृति, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, सत्य और अक्रोधादि से है। इसमें समानता होनी चाहिए।"

"अर्थात्" लड़की ने वार्त्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "चोर लड़के का चोर लड़की से और झूठ बोलने वाली से विवाह हो सकता है।"

यह सुन तीनों हँस पड़े। भूषण उठ खड़ा हुआ। कॉफी समाप्त हो चुकी थी और भूषण बैरा को मूल्य दे चुका था। चलते हुए नारायणदत्त ने कह दिया, "चोर तो न्यायालय द्वारा दण्डनीय होते हैं। फिर भी चोर पति का ईमानदार पत्नी से विवाह होने की अपेक्षा दोनों का चोर होना ही ठीक रहेगा।"

पुनः तीनों हँसते हुए बाहर निकल गए। रेस्टोराँ के द्वार पर लड़की ने हाथ जोड़ भूषण से विदा माँगी। भूषण लड़की को विदा कर नारायणदत्तजी को गाड़ी में चढ़ाकर पूछने लगा, "अब आप सभा-मण्डप में चलेंगे क्या ?"

"हाँ।"

"आपसे मैंने बहुत कुछ पूछा है।" भूषण ने गाड़ी चलाते हुए कहा, "और इस सब पर बहुत-कुछ विचार करने के लिए सामग्री मिली है। कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूँ। मैं आपका बहुत आभारी हूँ।"

: ३ :

नारायणदत्त विद्यालंकार तो स्वभाव से उपदेशक थे। उपदेशक तो बीज फेंकने वाला होता है। यह देखना उसका काम नहीं कि कौन-सा बीज कहाँ पड़ा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कौन-सा कहाँ। उसमें से किस बीज के जमने की सम्भावना है और किसकी नहीं। वह तो बीज डालता जाता है और फल को परमात्मा के अधीन मानता है।

नारायणदत्त विद्यालंकार तो भूल गया था। परन्तु उसके डाले बीज उस लड़की के, जो रेस्टोरां में कॉफी पीते समय वहाँ आ टपकी थी, मन पर भी पड़े थे और भूषण के मन पर भी, और दोनों के ही मन पर वे अंकुरित होने लगे थे।

भूषण तो अपने मन के द्वन्द्व को मिटाने के लिए उपदेशक महोदय को पृथक् में बात करने के लिए लाया था। उसके मन में द्वन्द्व यह था कि उसकी सगाई रामनारायण की लड़की सुशीला से हुए तीन वर्ष हो चुके थे। उसके उपरान्त अंजू से उसका परिचय हुआ था। परिचय परिपक्व होने में बहुत समय लगा था। इस देरी में दोनों की पारिवारिक स्थिति कारण थी।

अंजू ईसाई क्लर्क की लड़की थी। उसने ईसाई मत प्रचार के लिए फण्ड में से छात्रवृत्ति प्राप्त करके शिक्षा प्राप्त की थी। उसके माता-पिता चार लड़कियों के पालन-पोषण के भार में वे अंजू की उच्च शिक्षा का भार वहन नहीं कर सकते थे। अंजू अपनी पढ़ाई का सब खर्च अपनी छात्रवृत्ति से करती थी। उसमें से यदि कुछ बच जाता तो अपनी बहिनों को पुस्तक आदि के लिए देती रहती थी।

पढ़ाई समाप्त कर वह नौकरी ढूंढ़ने लगी थी किन्तु मिल नहीं रही थी। इन्हीं दिनों अंजू से भूषण का सामना हो गया। इससे पूर्व वे एक-दूसरे की शक्ल से परिचित थे। भूषण कॉलेज के पाँचवें वर्ष में था और धनी बाप का बेटा होने से फर्स्टक्लास रेस्टोरां में चाय पीने जाया करता था। प्रायः उसके साथी भी उसके साथ होते थे। कभी-कभी वह अकेला भी आता था। ऐसे ही एक दिन वह मध्याह्नोत्तर की चाय पीने रेस्टोरां में प्रवेश करने लगा तो उसे यह परिचित लड़की दिखाई दी। स्वभाववश भूषण ने हाथ जोड़कर नमस्ते कही तो अंजू ने भी मुस्कराकर हाथ जोड़ दिए।

दैवी प्रेरणा से ही भूषण ने कह दिया, "चाय नहीं पिएँगी?"

स्वाभाविक रूप से अंजू ने कह दिया, "मैं चाय पीने नहीं आई थी।"

"मगर चाय का समय तो है। आइए एक प्याला पिया जा सकता है।"

अंजू इन्कार तो नहीं कर सकी। वह दिन-भर नौकरी की खोज में मारी-मारी फिरती रही थी। इस समय अत्यन्त थकी हुई थी। परन्तु भूषण से कुछ भी परिचय न होने के कारण वह संकोच अनुभव कर रही थी और चुप थी। भूषण ने उसको झिझकते देखा तो कह दिया, "आइए, आइए! आप कुछ परेशान मालूम होती हैं।"

अंजू भूषण के साथ रेस्टोरां में प्रविष्ट हो गई। और ये दोनों एक कोने में जाकर बैठ गए।

भूषण ने पूछा, "क्या खाइएगा?"

"कुछ भी मँगवा लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUP-Y
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण ने पेस्ट्री, केक, नमकीन काजू आदि का ऑर्डर दे दिया। फिर कुछ करने के लिहाज से पूछने लगा, "आप तो परीक्षा में पास हो गई थीं न ?"

"अनफार्चुनेटली यस (दुर्भाग्य से हाँ)।"

"भला, दुर्भाग्य से क्यों ?"

"जब तक पढ़ती थी, एक ईसाई मिशन की ओर से पचास रुपया छात्रवृत्ति मिलती थी। पास होने पर वह छात्रवृत्ति बन्द हो गई। मेरी तीन बहिनें हैं। एक सैकण्ड ईयर में पढ़ती है, दूसरी मैट्रिक और तीसरी सातवीं श्रेणी में। पिताजी उनके खर्च से दबे हुए हैं। मेरा खर्चा वहन करना उनके लिए कठिन हो गया है। मैं नौकरी की खोज में दिन-भर चक्कर काटा करती हूँ। किन्तु नौकरी मिल नहीं रही है। यदि फेल हो जाती तो पचास रुपए तो मिलते रहते।"

बैरा खाने का सामान लेकर आ गया। दोनों ने अपनी प्लेट में खाने की वस्तुएँ रखीं और खाने लगे। भूषण कुछ विचार कर रहा था। उसने पूछा, "आप क्या काम कर सकेंगी ?"

"किसी भी स्थान पर क्लर्क का कार्य कर सकती हूँ।"

"टाइप करना जानती हो ?"

"जानती तो हूँ, पर अभी स्पीड नहीं हुई।"

"कुछ हिन्दी !"

"हाँ, मैट्रिक तक पढ़ी है।"

"मैं समझता हूँ कि मैं आपकी इस दिशा में सहायता कर सकता हूँ। कितना वेतन स्वीकार्य होगा ?"

Central Library 167969 Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"जो कुछ भी मिल जाए। तो भी पचास रुपये से तो अधिक ही होना चाहिए।"

भूषण ने मुस्कराकर पूछ लिया, "पचास से अधिक क्या मतलब ?"

"इतना मेरे माता-पिता मेरे भोजन का खर्चा माँग रहे हैं।"

भूषण ने गम्भीर होकर पूछ लिया, "आपके पिता का वेतन क्या है ?"

"पाँच सौ रुपया मासिक पाते हैं। परन्तु आप जानते हैं कि हमारे ईसाइयों के रहन-सहन के ढंग में यह धनराशि तो कुछ भी नहीं।"

"वे कितने मास से आपसे कुछ पाने की आशा लगाए हुए हैं ?"

"जब से परीक्षाफल घोषित हुआ है। आज तीन मास हो गए हैं।"

"अच्छा देखिए अंजू देवी ! मैं आपके लिए एक स्थान पर नौकरी की बात करूँगा। फिर भी इसमें एक-दो दिन तो लग ही जावेंगे। तब तक के लिए मैं आपके माता-पिता से भोजन क्रय करने का मूल्य दे देता हूँ। आपको जब वेतन मिले उनमें से सुविधानुसार उन्हें दे दें।"

दोनों खाद्य-सामग्री का स्वाद ले रहे थे और साथ ही चाय की सुरकियाँ भी लेते जाते थे। भूषण देख रहा था कि अंजू खाने में द्रुतगति से चल रही है अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भूखी है।

जब भूषण ने कहा कि वह उसको माता-पिता से भोजन खरीदने का दाम दे देगा तो उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े। वह आँसू रोकने का यत्न करने लगी, परन्तु इसमें कठिनाई अनुभव कर उसने प्याला उठा मुख से लगा लिया। भूषण ने यह रुपये देने का प्रस्ताव आँखें नीची किये हुए किया था। एकाएक अंजू ने प्याला सॉसर में रखा और स्कर्ट की जेब से रूमाल निकाल आँखें पोंछने लगी। वह यत्न करने पर भी आँसुओं का ढुलकना रोक नहीं सकी। भूषण ने उसे देखा और विस्मय से पूछने लगा, "क्यों क्या बात है अंजूजी !"

"कुछ नहीं, आपकी सहानुभूति से प्रभावित प्रसन्नता में ये टपक पड़े थे।"

"तब तो ठीक है। तुम अपने माता-पिता को पचास रुपये तो घर के खर्च के लिए आज ही दे देना। कल इसी समय यहाँ मिलना और मैं तुम्हारी नौकरी के विषय में अपने यत्न का परिणाम बताऊँगा।"

भूषण ने उसे अपने पिता के एक मित्र के वर्कशाप में एकाउण्ट्स-क्लर्क के रूप में नौकर करा दिया। वेतन ढाई सौ रुपया मासिक था। अंजू ने सहायता के पचास रुपये प्रथम वेतन मिलने पर वापस कर दिये। दोनों का परिचय बढ़ने लगा। प्रायः दोनों पाँच बजे सायंकाल किसी रेस्टोराँ पर चायपान के लिए जाने लगे थे।

इस प्रकार परिचय चलते हुए भी एक वर्ष से अधिक हो गया था। उपरिवर्णित आर्यसमाज के उत्सव के कुछ दिन पूर्व ही एक दिन अंजू ने चाय पीते हुए भूषण को कह दिया, "मैं आज आपको एक विशेष बात कहने के लिए आई हूँ।"

"वह तो नित्य ही करती हो। कोई दिन खाली नहीं जाता जिस दिन तुमने कुछ-न-कुछ विशेष न बताया हो।"

"परन्तु आज की बात उन सबसे विलक्षण है।"

"अच्छा ? तो सुनाओ।"

अंजू ने कहा, "मैं आज से आपको भाई नहीं कहा करूँगी।" यह बात उसने गर्दन नीची करके कही थी।

"ओह ! भला क्यों ? क्या अपराध किया है मैंने ?"

"यह अपराध नहीं। असल में बात यह है कि मैं कई मास के विचारोपरान्त इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि मैं आपके प्रति पति की भावना रखती हूँ।"

"ओह !" भूषण विस्मित-सा चुप रहा।

"मैं आपसे विवाह करूँगी।"

"जबरदस्ती ?"

"वह मैं कैसे कर सकती हूँ। आप तो मुझसे अधिक बलवान् हैं।"

"तो फिर कैसे विवाह करोगी ? मेरी तो सगाई हो चुकी है। और लड़की मेरी परीक्षा पास करने की प्रतीक्षा कर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! कौन है वह ?"

"तुमने जरूर देखी होगी। वह तुम्हारे बॉस की भांजी है। लाला ठाकुरदास की बहिन कान्ता का विवाह लाला रामचरन टण्डन से हुआ है और उनकी लड़की सुशीला है।"

"हाँ, उसे देखा है, वह कई बार माँ के साथ कारखाने में आ चुकी है।"

"मैं तो उससे नत्थी हो चुका हूँ।"

"तो यह सब बदल नहीं सकता ?"

"माताजी ने वह लड़की मेरे लिए चुनी है। पिताजी ने भी स्वीकार कर ली है और अब तक इस बात को ढाई वर्ष हो चुके हैं।"

अंजू ने एक दीर्घ निःश्वास लिया और गम्भीर विचारों में काँटा उठा उससे प्लेट में लकीरें-सी खींचने लगी।

"पर अंजू !" भूषण ने कह दिया, "चिन्ता किस बात की है। तुम जैसी लड़की से तो कोई भी अच्छे-से-अच्छा लड़का विवाह के लिए तैयार हो जाएगा।"

"हाँ। परन्तु वह आपके सिवाय ही होगा।"

"वैसे तो मैं भी तैयार हो जाता, पर मैं वचनबद्ध हूँ।"

"आप उस लड़की से मिले हैं ?"

"हाँ। हम कई बार मिलकर घर बनाने की योजना पर विचार कर चुके हैं। वह हमारे घर पर आती रहती है।"

"मैं समझती हूँ कि उसका आपके साथ विवाह नहीं होगा।"

"क्या आधार है इस बात में ?"

"कह नहीं सकती। पर मेरा मन कहता है कि हम दोनों 'हसबैंड एण्ड वाइफ' बनने वाले हैं। प्रभु का यही विधान है।"

"तो तुमको प्रभु ने यह विधान बताया है ?"

"मुझे नित्य आने वाले सपनों में कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।"

"पर स्वप्न तो अपने ही विचारों की स्मृतिमात्र होते हैं।"

"कुछ भी हो, यह है। मैं स्वयं इस विषय में आपसे बात करना नहीं चाहती थी। मैं समझती थी कि आप ही एक दिन यह प्रस्ताव करेंगे। परन्तु एक घटना घर पर घट रही है और उससे विवश होकर मैंने इस बात में उतावली कर दी है।"

"क्या घटना घट रही है ?"

"अपनी ही जाति-बिरादरी का एक युवक हमारे घर के चक्कर काटने लगा है और माँ ने संकेत से कहना आरम्भ कर दिया है कि गुस्टोव फर्नैंडिस संभ्रांत युवक है। नीलगिरि में चाय के कई बागों का मालिक है।"

"और अंजू बहिन को उसमें क्या दोष दिखाई देता है ?"

"कुछ नहीं। मैंने गुण-दोष देखने का यत्न ही नहीं किया। अभी उसने केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना अपने-आप प्रकट किया है कि वह जब भी किसी औरत के समीप बैठता है तो उचित से अधिक उससे सटकर बैठता है।"

"तो क्या वह तुम्हारी माताजी के साथ इसी प्रकार उनसे सटकर बैठता है?"

"यह मैंने नहीं देखा। हाँ, मेरे साथ चिपकने का उसका स्वभाव तो स्पष्ट हो चुका है। इससे अब, उसके आने पर मैं बाँहों वाली कुर्सी पर बैठ जाती हूँ जिससे उसको अपने स्वभाव को कार्य में लाने का अवसर ही न मिले।"

भूषण ने बैरे को दाम दे दिये और उठते हुए कह दिया, "देखो अंजू! मेरे भाग्य का तो निश्चय हो चुका है। मैं इस सम्बन्ध से मुक्ति पाने की आशा नहीं रखता।"

अंजू भी उठ खड़ी हुई और भूषण के साथ रेस्टोरेंट से निकलते हुए बोली, "मैंने एक बात अभी तक आपसे सीखी है। वह है अपने परमात्मा पर भरोसा करना। मैं इस विषय में यही व्यवहार स्वीकार किये हुए हूँ।"

जब भूषण उससे विदा हो अपने मकान की ओर जाने लगा तो अंजू ने पूछ लिया, "आप मेरे मन के इस रहस्योद्घाटन पर नाराज तो नहीं हुए?"

"नहीं, इसमें नाराज होने की कोई भी बात नहीं है।"

"तो आप मुझे अभी भी मिला करेंगे?"

"मुझे तुममें कोई खराबी नहीं दिखाई दी। तुम वैसी ही सौम्य, सुशील, सभ्य और सुहृदय हो जैसे पहले थीं।"

"मैं एक बात चाहती हूँ कि आप इस चाय के कार्यक्रम को बन्द नहीं करें। हम पूर्ववत् यहाँ मिलते रहा करें। यह मेरे जीवन में बहुत बड़ा संबल और सहारा होगा।"

"अच्छा कल आऊँगा।"

: ४ :

इस घटना ने भूषण को सुशीला के विषय में विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया था। अभी तक वह सुशीला से विवाह को एक ऐसी बात मानता था जैसे कोई मध्याह्नोत्तर के समय रात के खाना मिलने के विषय पर विचार करता है।

जिस प्रकार एक व्यक्ति दिन-भर जीविकोपार्जन में संलग्न रहकर जब दिन के कार्य की समाप्ति पर थकावट अनुभव करता हुआ रात में स्वादिष्ट पौष्टिक भोजन की प्राप्ति की और फिर सात घंटे सुख की नींद लेने की आशा करता है वैसे ही भूषण पन्द्रह वर्ष की पढ़ाई के उपरान्त विद्यार्थी जीवन की समाप्ति के समीप सुशीला से विवाह की आशा कर रहा था।

इस दिन से पूर्व वह समझ रहा था कि सुशीला से विवाह एक स्वाभाविक और भाग्य द्वारा नियत घटना है। इसमें मीन-मेख निकालना न तो आवश्यक है न सम्भव। परन्तु जब अंजू एक अन्य विकल्प के रूप में सम्मुख आई तो स्वाभाविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में उसकी बुद्धि सक्रिय हो उठी और वह दोनों के गुण-अवगुणों को देखने लगा।

एक बार तो उसने अपने मस्तिष्क से अंजू को निकाल देने का यत्न किया। वह विचार करता था कि अंजू बहिन ही रहेगी। परन्तु बात यहीं टिकी नहीं रह सकी।

अंजू के इस मन के रहस्य प्रकट करने के कुछ दिन बाद सुशीला उससे कॉलेज के समय के उपरान्त कॉलेज के बाहर मिलने के लिए आई। वह अपने पिता की मोटर गाड़ी में आई थी। भूषण का कॉलेज का समय दो बजे मध्याह्नोत्तर समाप्त होता था। वह कॉलेज के फाटक से निकला तो उसकी दृष्टि समीप खड़ी टंडन साहब की मोटर पर पड़ गई। वह अभी गाड़ी के वहाँ खड़ी होने के कारण पर विचार ही कर रहा था कि मोटर का ड्राइवर उसके सामने आकर बोला, "लालाजी की लड़की गाड़ी लेकर आई हुई हैं।"

"किसलिए ?"

"चलिए, यह तो उनसे ही पता करियेगा।"

भूषण गाड़ी के समीप आ गाड़ी में बैठी सुशीला को हाथ जोड़कर नमस्ते करने लगा। सुशीला ने गाड़ी का द्वार खोला और कह दिया, "आइए, आपको लेने के लिए आई हूँ।"

"कुछ खास बात है क्या ?"

"मम्मी ने बुलाया है।"

भूषण गाड़ी में चढ़ सुशीला के पास बैठ गया और पूछने लगा, "मम्मीजी का स्वास्थ्य तो ठीक है ?"

"हाँ।"

"और आपका !"

"आपको कैसा लग रहा है ?"

"मुझे तो वही 'ब्लूमिंग, ब्लौसमिंग फ्लावर' (प्रकाशमान खिल रहा पुष्प) ही प्रतीत हो रही हो।"

"बस रहने दीजिए। बहुत हो गई। चलिए, मम्मी कह रही थीं कि आपसे मिले बहुत दिन हो गए हैं।"

"परन्तु परसों ही तो देवीजी घर पर पधारी थीं और आत्मा के अस्तित्व पर बात हुई थी। और जब हम अपना-अपना दृष्टिकोण एक-दूसरे को समझा नहीं सके थे तो हमने यह सहमति प्रकट की थी कि—वी ऐग्री टु डिफर। (हम मतभेद को स्वीकार करते हैं)।"

"परन्तु आज एक नया विषय सम्मुख उपस्थित हुआ है।"

"क्या ?"

"यह तो मम्मी ही बताएँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आत्मा को छोड़कर परमात्मा की बात हो सकती है।"

"इन दो के अतिरिक्त क्या कोई अन्य बात नहीं है ?"

"उस दिन पण्डित भूमानन्दजी बता रहे थे कि इन दो के अतिरिक्त तो जड़ प्रकृति है। वह बेचारी न बोलती है, न सूँघती है। न चलती है और न ही स्पर्श कर सकती है।"

"तो वह है क्यों ?"

"तो क्या आज के वार्तालाप का यही विषय है ?"

"नहीं। भला इस प्रकार की अन्धी, बहरी, गूँगी बात कोई क्यों करेगा ?"

"तो फिर क्या बात है जो देवी की मम्मीजी ने आपको इतना कष्ट दिया है आज ?"

इसका उत्तर सुशीला ने नहीं दिया। भूषण के मन में अंजू का यह कथन उभर आया कि—मैं समझती हूँ कि आपका उसके साथ विवाह नहीं होगा। —वह भी गम्भीर होकर विचार करने लगा था कि क्या उसकी चर्चा अंजू की फैक्टरी में हुई है और इस चर्चा में अंजू आ रही है ?

दोनों मौन बैठे रहे। गाड़ी टंडनजी की कोठी में जा पहुँची। सुशीला उसे ड्राइंगरूम में ले गई और उसको वहाँ बैठाकर स्वयं समीप रखे सोफे पर बैठकर बोली, "मैं वहाँ ड्राइवर के सामने आपसे बात करना नहीं चाहती थी। वास्तव में मैं ही आपको यहाँ पकड़कर लाई हूँ। मम्मी को तो अभी आपके यहाँ आने का ज्ञान भी नहीं है।"

"तो उनको ज्ञान करा दो। कुछ खाने-पीने को तो मिल जाएगा।"

"पहले एक बात आपसे कर लूँ। बाद में उनको सूचित कर दूँगी।"

"किन्तु सुशीलाजी ! प्यास लगी है। सूखे गले से बात किस प्रकार हो पाएगी।"

सुशीला माथे पर त्योरी चढ़ाकर उठी और रसोईघर में जाकर काँच के एक गिलास में जल भर लाई। भूषण जल पी रहा था कि सुशीला ने कहना आरम्भ किया, "आपका विवाह मुझसे होगा अथवा नहीं ?"

"बात यह है कि सुशीला देवी का कन्यादान उसके माता-पिता करने वाले हैं। वह दान मुझे मिलेगा या अन्य किसी को ? मैं कैसे कह सकता हूँ। यह तो उनकी इच्छा पर ही है। मैं देवीजी का अपहरण नहीं करूँगा।"

सुशीला अपने विचारों को सुव्यवस्थित कर बोली, "प्रश्न यह है कि आप मेरा कन्यादान स्वीकार करेंगे या नहीं ?"

"भला वह कौन मूर्ख होगा जो ऐसी उत्तम वस्तु का दान अस्वीकार कर देगा ?"

"आपकी अंजू अस्वीकार कर सकती है और आपको अस्वीकार करने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवश कर सकती है।"

अंजू का नाम सुन भूषण समझ गया कि कुछ बात ठाकुरदास की फैक्टरी में हुई है। अब पूर्ण बात को जानने लिए उसने मुस्कराते हुए कह दिया, "अंजू का इस विषय में कोई अधिकार नहीं।"

"तो आप अंजू के मन की बात जानते हैं?"

"मैं समझता हूँ कि मैं जानता हूँ।"

"क्या वह आपसे विवाह करना नहीं चाहती?"

"चाहती है।"

"और आप उसको इस विषय में प्रोत्साहन दे रहे हैं?"

"नहीं।"

"नहीं तो उसके साथ नित्यं सायं कहाँ जाते हैं?"

"देखो सुशीला! मैं किसके साथ कहाँ जाता हूँ, यह बात इस विवाह से सम्बन्ध नहीं रखती। मैं समझता हूँ कि तुम्हें इतने मात्र से सन्तोष कर लेना चाहिए।"

"ठीक है, मैं विवाह से पहले ही सन्तोष कर लेना चाहती हूँ। बाद में ठगी जाने पर सन्तोष करने से क्या लाभ होगा?"

"यह ठीक ही है। जाँच-पड़ताल कर सन्तोष कर लीजिए। तो क्या अब मैं जाऊँ?"

"नहीं, मम्मी को बुला रही हूँ। कदाचित् वे भी आपसे कुछ पूछ अपने मन में सन्तोष करना चाहें।"

"ठीक है। इसका अभिप्राय यह है कि अंजू केवल देवीजी के मस्तिष्क में ही नहीं छा रही वरन् उनकी मम्मी को भी उसका भास हो रहा है।"

पूर्ण बात सुनने से पहले सुशीला अन्दर चली गई। सुशीला और उसकी माँ को आने में दस मिनट लग गए। भूषण तो उस दिन अंजू से यह सुन कि उसका विवाह सुशीला से नहीं होगा अपनी सफाई देने की सम्भावना पर उस दिन ही विचार कर रहा था। अतः वह सुशीला की माँ से मिलकर अब बात कराने की तैयारी करने लगा था। जब कान्तादेवी आई तो भूषण ने उठकर हाथ जोड़कर नमस्कार की और कहा, "सुशीला कह रही थी कि आपको मुझसे कुछ कहना है। इस कारण मुझे यहाँ बैठाकर आपको कष्ट देने के लिए चली गई थी।"

कान्तादेवी ने कहा, "मैं चाहती थी कि सुशीला स्वयं आपसे समझ-समझा ले। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसे आपकी बात से सन्तोष नहीं हुआ।"

"मुझे खेद है कि मैं अपनी बात को स्पष्ट नहीं समझा सका।"

"तो ऐसा करो। अपने माता-पिता को सुशीला के डैडी से मिलने के लिए कह दो। हमारे पास इस बात के प्रमाण हैं कि आप अभी भी अपनी भावी पत्नी से वंचना का व्यवहार कर रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या वे प्रमाण मैं देख सकता हूँ?"

"आप क्या करेंगे देखकर? अपराधी को प्रमाण दिखाने में लाभ ही क्या होगा? यदि देखने की इच्छा हो तो अपने माता-पिता को भेज देना।"

"तो अब मैं जाऊँ?"

"हाँ, जा सकते हो।"

भूषण वहाँ से उठ बाहर को चल दिया। कान्तादेवी भी उसके पीछे-पीछे बाहर आई। ड्योढ़ी पर खड़ी हो उसने मोटर की ओर संकेत कर कहा, "आप गाड़ी में बैठ जाइए। ड्राइवर आपको घर तक छोड़ आएगा।"

"पर माताजी! कहीं अपराधियों को सवारी के लिए मोटर गाड़ियाँ मिला करती हैं?"

"हाँ, ऐसा तब होता है, जब अपराधी कोई विशिष्ट व्यक्ति हो।"

"सो तो मैं हूँ नहीं। वैसे तो मैं अपराधी भी नहीं हूँ।" इतना कह भूषण लम्बे-लम्बे पग बढ़ाता हुआ कोठी से बाहर हो गया।

भूषण ने यह घटना अपने पिता को नहीं बताई। वे गरम दिमाग के आदमी थे और भूषण जानता नहीं था कि वे उस पर ही बरस पड़ें अथवा उसके ससुराल वालों पर।

इसके दो दिन बाद आर्यसमाज का उत्सव आरम्भ हो गया था। परन्तु इससे पूर्व एक घटना और हो चुकी थी। जिस दिन वह अपनी पत्नी और सास से तिरस्कृत होकर आया था, उसी दिन सायं पाँच बजे वह अंजू से मिलने के लिए नियत रेस्टोराँ में जा पहुँचा। अंजू वहाँ पहले ही पहुँची हुई थी। यह नित्य के विपरीत था।

उसको देख भूषण उसके समीप बैठा तो अंजू ने कहा, "आज मेरी नौकरी छूट गई है।"

"अंजू बहिन! उस दिन तुमने यह संकेत दिया था कि मेरा विवाह सुशीला से नहीं हो सकेगा। क्या हुआ था वहाँ जिससे तुमने यह अनुमान लगा लिया था।"

"आपका और मेरा नित्य यहाँ चाय पीने के लिए आना और फिर कभी-कभी भ्रमण के लिए पार्क में जाना किसी ने देखा है और उसने लाला ठाकुरदास को बताया है। उस दिन लाला ठाकुरदासजी ने मुझको बुलाकर पूछा था कि मेरा आपसे क्या सम्बन्ध है?"

"मैंने बताया कि अभी मेरा आपसे मित्रों का-सा ही सम्बन्ध है।"

"यह सुन उन्होंने पूछा, 'कि और कभी किसी अन्य प्रकार का भी सम्बन्ध हो सकता है?' मैंने कहा, 'हो सकता है। हम पति-पत्नी के बन्धन में बँध सकते हैं।'

"मेरे मुख से अनायास मेरे मन की अवस्था का बखान हो गया। यह सुनकर लालाजी गम्भीर हो गए और बहुत देर तक मौन बैठे रहे।

"मैंने पूछा, 'आपको कुछ आपत्ति है इसमें?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे बोले, 'कुछ कह नहीं सकता।'

"आज मैं वहाँ पहुँची तो लालाजी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कह दिया कि मैं उनकी फैक्टरी में काम नहीं कर सकती। मैं अपने कागज-पत्र सतीश बाबू को सँभला दूँ और साथ ही अपना इस मास का वेतन तथा एक मास का नोटिस-वेतन खजाँची से ले लूँ।

"मैंने पूछा कि क्या यह सुशीला बहिन की सिफारिश से किया जा रहा है?

"वे बोले, उसका इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं।

"मैंने और अधिक बात करनी पसन्द नहीं की और अपना हिसाब ले करके घर चली आई।

"माँ को पता चला तो वे गुस्टोव से विवाह करने के लिए जोर देने लगीं। मैंने उनको समझाया भी कि उनको मेरी नौकरी छूटने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। कम-से-कम वर्ष भर के लिए रोटी-पानी का खर्चा मेरे पास है। फिर भी वह कह रही हैं कि आखिर विवाह तो करना ही है। इससे अच्छा सम्बन्ध अन्यत्र नहीं मिलेगा।"

अंजू की बात समाप्त होने पर भूषण बोला, "और अब मेरी सुन लो। आज कॉलेज से ज्यों ही बाहर निकला तो देखा कि सुशीला गाड़ी लेकर द्वार के पास विराजमान है। वह मुझे अपने घर अपनी माँ के पास ले गई। वहाँ जाकर तुम्हारे विषय में पूछने लगी। मैंने वस्तुस्थिति का वर्णन कर दिया। उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया और अपनी माँ को बुला लाई। उसकी माताजी ने यह अन्तिम बात कह दी कि मैं अपने माता-पिता को सुशीला के माता-पिता के पास भेज उनको सन्तोष करा दूँ।"

"ठीक है आप अपने माता-पिता को उनके पास भेजकर वास्तविक स्थिति का दर्शन करा दीजिए।"

"मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझता।"

"तो फिर सुशीला का विवाह किस प्रकार होगा?"

"धनी बाप की बेटी है, हो जाएगा।"

"और आपका?"

"मैं विवाह के बिना भी जीवित रह सकता हूँ।"

"मुझे बहुत दुःख है कि मैं आपके कार्यक्रम में बाधक सिद्ध हो रही हूँ।"

"नहीं, मेरा कार्यक्रम विवाह से पृथक् है।"

दोनों चाय पी रहे थे। अंजू देख रही थी कि भूषण कुछ उद्विग्न हो रहा है। यह देखकर अंजू ने पूछ लिया, "आप इस घटना के घटने पर असंतुष्ट और क्रुद्ध प्रतीत होते हैं।"

"नहीं अंजू! न मैं असन्तुष्ट हूँ और न ही क्रुद्ध। असन्तोष तो तब होता जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीला से सम्बन्ध सन्तोषजनक होता। सम्बन्ध तो था ही नहीं। परिचय था और भविष्य का एक बन्धन था। मुझे क्रोध भी नहीं आ रहा है। क्रोध करने का कोई कारण नहीं। सुशीला और उसके माता-पिता को कानूनन सम्बन्ध न बनाने की स्वतन्त्रता थी। अभी सगाई ही तो हुई थी।

"मैं कुछ चिन्तित अवश्य हूँ। वह यह कि मैंने सुशीला को पत्नी बनाने का वचन अपने माता-पिता के सम्मुख दिया था। उसका पालन मैं कैसे करूँगा?"

अंजू हँस पड़ी और बोली, "भला इसमें कठिनाई क्या है? सुशीला देवी का अपहरण कर लीजिए।"

"हाँ, यह ठीक है। परन्तु क्या वह अपहरण का कष्ट करने योग्य है भी?"

"यह तो अपने-अपने विचार की बात है।"

भूषण ने बात बदल दी, "अब तुम्हारे लिए नौकरी ढूँढ़नी पड़ेगी, नहीं तो तुम्हारी माताजी गुस्टोव से विवाह के लिए हड़बड़ी मचाने लगेंगी।"

"उसका उपाय दूसरा है। वह मैं कर रही हूँ।"

"क्या?"

"बता दूंगी।"

: ५ :

विद्यालंकारजी से बातचीत इसके उपरान्त ही हुई थी। जब अंजू के माता व पिता रात के भोजन के उपरान्त मद्य लेने लगते थे तो वह घर से चली आया करती थी और प्रायः उस रेस्टोराँ में बैठ एक प्याला कॉफी का लिया करती थी जहाँ उस दिन भूषण नारायणदत्तजी को लेकर आया था। यह तो घटनावश ही था कि भूषण एक ऐसे विषय पर बातें कर रहा था जिसमें अंजू की भी रुचि थी।

जब भूषण नारायणदत्त को लेकर आर्यसमाज मण्डप की ओर चला गया तो अंजू समझ गई कि भूषण उससे विवाह के लिए अपने मन को तैयार कर रहा है। इससे वह प्रसन्न थी। परन्तु उसकी समझ में एक बात नहीं आ रही थी कि भूषण को सुमति देने वाले व्यक्ति ईसाइयों और मुसलमानों को देश का विरोधी बता रहे थे। वह इस बात को समझ नहीं सकी थी। वह अपने मन के भावों से ही अपने मतावलम्बियों के भावों का अनुमान लगा रही थी। वह स्वयं अपने को भारत की नागरिक और भारत के सेक्युलर राज्य की समर्थक मानती थी।

भूषण और पण्डितजी जब सभा मण्डप में पहुँचे तो फूलों की मालाएँ पहिनाई जा चुकी थीं। पण्डित नारायणदत्त जब मंच पर पहुँचे तो ग्रोवर साहब धन्यवाद-पूरक भाषण दे रहे थे। उन्होंने निम्न वाक्य से अपना भाषण बन्द कर दिया—"हमारे एक विद्वान् अतिथि तो रह ही गए हैं। मैं इनका आर्यसमाज की ओर से स्वागत करता हूँ।"

इतना कहकर उन्होंने वहाँ रखी बहुत-सी फूलमालाओं में से एक माला उठा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर नारायणदत्तजी के गले में डाल दी। तदनन्तर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने अपना भाषण समाप्त करने के लिए कहा।

"मैं परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने हमारे इस यज्ञ के सम्पन्न होने में सहायता की है।"

इस भाषण के उपरान्त शान्ति-पाठ हुआ और उत्सव समाप्त घोषित हो गया। ग्रोवर साहब के घर पर कोई अभ्यागत ठहरा हुआ नहीं था। जो-जो जिस-जिसके यहाँ ठहरे हुए थे उन-उनकी गाड़ी में बैठकर अपने-अपने निवास को चले गए। ग्रोवर साहब अपनी पत्नी और पुत्र भूषण के साथ अपनी गाड़ी में बैठकर अपने घर चल दिए। ग्रोवर ने अपने लड़के से पूछा, "तुम्हारा ससुर क्या कह रहा था?"

भूषण पहले कुछ डरा। परन्तु शीघ्र ही साहस पकड़ पूछने लगा "क्या कह रहे थे।"

"वे पूछ रहे थे कि क्या तुमने मुझे कुछ सन्देश दिया है?

"मैंने कह दिया नहीं।

"तो बोले उससे पूछिएगा। उसे आपसे कुछ कहना चाहिए था।"

"पिताजी! उनकी लड़की चाहती थी कि मैं उससे तुरन्त विवाह कर लूँ।"

"किसलिए?"

"यह तो मैं जानता नहीं। हाँ मैं परीक्षा से पूर्व विवाह नहीं कर सकता।"

"अच्छी बात है, मैं उनको समझा दूँगा।"

इस प्रकार भूषण ने उस समय बात टाल दी। वह समझ रहा था कि वह अपने-आपको दोषी मानता नहीं। इस कारण वह विवाह तोड़ने की बात करेगा नहीं।

अगले दिन स्थानीय आर्यसमाज के सदस्यों की बैठक थी और उसमें समाज के पदाधिकारियों का चुनाव होने वाला था। ग्रोवर साहब पिछले पाँच वर्षों से निरन्तर प्रधान निर्वाचित होते आ रहे थे और इस अवधि में वह आर्यसमाज को दस सहस्र रुपये दान दे चुके थे। आर्यसमाज, उसकी कन्या पाठशाला, उसका वेद प्रचार फण्ड, आर्यसमाज के अधीन एक अनाथालय भी था और एक निःशुल्क चिकित्सालय भी था। इन सबमें वे दान दे रहे थे। ग्रोवर साहब को पूर्ण आशा थी कि वे निर्विरोध प्रधान चुने जाएँगे।

परन्तु बात सर्वथा उनकी आशा के विपरीत हुई। एक सदस्य ने लाला रामनारायण ठेकेदार का नाम प्रधान-पद के लिए प्रस्तावित किया तो एक अन्य सदस्य ने उसका समर्थन कर दिया। उसी समय किसी अन्य सदस्य ने ग्रोवर साहब का नाम भी प्रस्तावित कर दिया किन्तु उसका समर्थन किसी ने भी नहीं किया। तीसरा कोई अन्य नाम प्रस्तावित न होने के कारण रामनारायण टण्डन निर्विरोध प्रधान चुन लिये गए। इसके उपरान्त ग्रोवर साहब ने देखा कि सबके-सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदाधिकारी नये ही निर्वाचित हुए हैं। उसके अपने साथियों में कोई भी किसी पद के लिए निर्वाचित नहीं हो सका।

सब काम पन्द्रह-बीस मिनट में समाप्त हो गया। बत्रा ने उठकर विदा होने वाले प्रधान का धन्यवाद करना चाहा परन्तु पूर्व इसके कि वह एक शब्द कहे, सभी सदस्य उठकर चल दिए।

भूषण भी समाज का एक सदस्य था और उसने अपने पिता के विपरीत मत देख समझ लिया कि यह किसी प्रकार का षड्यंत्र है। उसे सन्देह हो रहा था कि इसके पीछे सुशीला का उससे वैमनस्य भी एक कारण हो सकता है।

पिता-पुत्र निर्वाचन सभा से घर को इकट्ठे ही लौटे। दोनों ही अपने-अपने विचार में मग्न थे। भूषण गाड़ी चला रहा था और उसका पिता उसके समीप बैठा हुआ था। आखिर पिता के मुख से निकल गया, "मुझे तो आज के निर्वाचन में किसी प्रकार का षड्यंत्र प्रतीत होता है।"

"पिताजी !" उसने अपने पिता को सान्त्वना देने के लिए कहा, "मैं समझता हूँ कि यह ठीक ही हुआ है। अब आप अपने काम में अधिक ध्यान दे सकेंगे।"

"यह तो है ही, पर मुझको कुछ ऐसा जान पड़ा है कि यह निर्वाचन तो एक प्रकार से मुझ पर और मेरे साथियों पर अविश्वास का प्रस्ताव-सा हो गया है।"

भूषण ने पुनः पिता का ध्यान हटाने के लिए कह दिया, "मैं तीन मास में परीक्षा देकर किसी काम-धन्धे में लगना चाहता हूँ। उसमें मैं आपके पूर्ण सहयोग की आकांक्षा रखता हूँ।"

"वह तो होगा ही। परन्तु मैं इस मौन अविश्वास के प्रताड़न से छटपटा रहा हूँ।

"पिताजी ! छोड़िए इस बात को। कुछ लाभ था आपको इस सभा के अध्यक्ष बने रहने पर ?"

"लाभ तो था। मान-प्रतिष्ठा थी।"

"सब मिथ्या मोह है।"

"ओह ! भूषण ! तुम वैरागी कब से हो गए हो ?"

भूषण के मन में वैराग्य नहीं था। वह समझ रहा था कि पिताजी का यह सब अपमान उसके कारण ही हुआ है। इस कारण वह इस घटना पर पिताजी की चिन्ता को रोकना चाहता था।

गाड़ी कोठी में पहुँची तो ग्रोवर साहब ने अपने ड्राइंगरूम में पहुँचते ही पत्नी को कह दिया, "एक प्याला कॉफी बना दो। बहुत थकावट अनुभव कर रहा हूँ।"

प्रमिला इस थकावट का कारण नहीं जान सकी और अपने स्वस्थ पति के मुख पर परेशानी की झलक देख और रसोइए को अपने स्थान पर न देख स्वयं कॉफी बनाने के लिए चल दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण ने भी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "पिताजी! यह आर्यसमाज का प्रधान-पद एक प्रकार की लायबिलिटी (देयता) ही थी। यह नहीं मिली तो हानि के स्थान पर लाभ की सम्भावना ही प्रतीत होती है।"

"यह तो ठीक है। पर मैं यह समझ नहीं सका कि हमारे रामनारायणजी से पारिवारिक सम्बन्ध होते हुए भी वे मेरे विरुद्ध चुनाव लड़ने के लिए डटे रहे। यदि वे मुझको कह देते कि अब वे प्रधान बनना चाहते हैं तो मैं स्वयं उनका नाम प्रस्तावित करता। यह सब जो आज हुआ है, मुझे किसी प्रकार का षड्यंत्र प्रतीत होता है।"

"कुछ भी हो, इससे हमारा लाभ ही होगा।"

"पर तुम बताओ, यदि इस घटना की छाया तुम्हारे सुशीला से विवाह पर पड़ी तो तुम क्या करोगे?"

"क्या छाया पड़ सकती है?"

"यह सगाई टूट भी सकती है।"

"पिताजी! हमको नहीं तोड़नी चाहिए। यदि वे इस दिशा में किसी प्रकार का संकेत देते हैं तो हमें उनसे झगड़ा नहीं करना चाहिए।"

"मैं झगड़े की बात नहीं कर रहा। मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि क्या तुमको इस बात का शोक होगा?"

भूषण गम्भीर विचार में डूब गया। उसे विश्वास हो गया था कि सगाई टूट चुकी है और यह आर्यसमाज के निर्वाचन की घटना, उस सगाई टूटने का परिणाम है, कारण नहीं। फिर भी उसने कह दिया, "पिताजी! हम इन्सान हैं। हमें इन्सानों की भाँति अपने धर्म का पालन करना चाहिए। इस धर्म के अन्तर्गत 'यथायोग्य व्यवहार' भी आता है।"

"तब ठीक है।"

इस समय प्रमिला देवी एक प्याले में गरम दूध में कॉफी मिलाती हुई आ गई। ग्रोवर ने कॉफी का प्याला उसके हाथ से लिया और धीरे-धीरे पीने लगे।

माँ ने भूषण के समीप बैठ धीरे से पूछ लिया, "क्या हुआ है भूषण!"

"माँ! कुछ नहीं। पिताजी के स्थान पर सुशीला के पिता प्रधान चुन लिये गए हैं और यह सब कुछ हमसे चोरी-चोरी किया गया है। पिताजी का विचार है कि सुशीला के पिता हमसे नाराज हैं और उनका मत है कि कदाचित् सुशीला के साथ हुई मेरी सगाई भी टूट जाए।"

एक क्षण तक प्रमिला देवी विचार करती रही। फिर तुरन्त ही उसके मन की प्रतिक्रिया उसके मुख से निकल गई, "भूषण! सुशीला से कई गुणा सुन्दर और सुशिक्षित लड़कियाँ इस नगर में हैं। यह तो परस्पर-परिचय होने से ही रिश्ता बना था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर माँ ! मैं तो चिन्ता नहीं कर रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि हम इस सम्बन्ध को नहीं तोड़ेंगे। वे तोड़ते हैं तो हमें दुःख नहीं होगा।"

भूषण का पिता बोल पड़ा, "तो ठीक है। आज से तुम उसके घर नहीं जाना। यदि किसी को जरूरत होगी तो वह स्वयं यहाँ चलकर आयेगा।"

ग्रोवर साहब का टण्डन साहब की लड़की से सम्बन्ध तोड़ने का विचार और भी पक्का हो गया, जब उसी सायंकाल मिस्टर बत्रा ग्रोवर से मिलने के लिए आया। उसने कहा, "टण्डनजी की ओर से प्रधान बनने का प्रचार तीन-चार दिन से हो रहा था। मेरे पास तो टण्डनजी स्वयं आये थे और आपकी बहुत निन्दा कर कहने लगे कि ऐसे नास्तिक को आर्यसमाज का प्रधान नहीं रहने देना चाहिए। मैंने उनसे कहा था कि यदि वे कहें तो मैं आपसे कहकर उनका नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तावित करवा सकता हूँ। मैंने कहा कि आप उनके समधी हैं अतः उनको आपका नाम प्रस्तावित करने में प्रसन्नता होनी चाहिए। परन्तु वे कहने लगे कि मैं ऐसे नास्तिक से अपना नाम भी प्रस्तावित कराना नहीं चाहता।

"मैं इस सबका आशय समझ नहीं सका। इसलिए चुप रहा। अब यह सब नाटक देख मैं यह जानने के लिए आया हूँ कि क्या आपके लड़के की सगाई टूट गई है?"

"हमारी ओर से तो टूटी नहीं है। उनकी ओर की बात वे जानें।"

"आपने भूषणजी से पूछा है कि उससे किसी प्रकार का झगड़ा तो नहीं हुआ?"

"अभी-अभी भूषण से बातचीत हुई थी। उसका तो कहना है कि हमको सगाई नहीं तोड़नी चाहिए। यदि वे तोड़ते हैं तो फिर विचार कर लेंगे। अभी तो लड़का अपनी परीक्षा की तैयारी में लगा है।"

: ६ :

भूषण ने उस दिन से ही जब अंजू को लाला ठाकुरदास ने नौकरी से निकाला था, चाय पीने का स्थान बदल लिया था। दो दिन से वह चाय पीने के लिए वहाँ नहीं गया था। वह आर्यसमाज के उत्सव में संलग्न था। आर्यसमाज के पदाधिकारियों के चुनाव के दिन भूषण अवकाश पा अंजू से मिलने गया तो निश्चित रेस्टोराँ में निश्चित स्थान पर बैठा प्रतीक्षा करता रहा। पर अंजू नहीं आई। वह इसका कारण नहीं समझ सका। भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार उसके मन में आ रहे थे परन्तु किसी पर भी उसका मन जमता नहीं था। वह समझता था कि अंजू बीमार हो सकती है। पिछले एक वर्ष में वह एक दिन भी बीमार नहीं हुई थी। वह विचार करता था कि मिस्टर फर्नेंडिस से उसकी सगाई हो, विवाह की तैयारी भी हो रही हो सकती है। परन्तु इस बात पर भी मन नहीं जमा। फिर उसने विचार किया, कहीं उसकी माँ ने उसे घर से निकाल न दिया हो और वह कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भटक न रही हो।

जब वह किसी परिणाम पर नहीं पहुँचा और उसे वहाँ बैठे पौन घण्टा हो गया तो वह चाय पीकर उठा और विचार करता हुआ कि उससे कैसे मिला जाए, अपने घर लौट आया।

रात के भोजन के उपरान्त उसे विचार आया कि पिछले दिन अंजू रात को कॉफी पीने आई थी। वह रेस्टोराँ उसके घर के समीप ही था। अत: भोजन कर वह अपनी पढ़ाई में लगने की अपेक्षा घर से निकल उसी रेस्टोराँ की ओर पैदल चल दिया। वह उस रेस्टोराँ में पहुँचा तो उसको अंजू एक हट्टे-कट्टे सूट पहने व्यक्ति के साथ रेस्टोराँ में दाखिल होती दिखाई दी।

भूषण के मन में विचार आया कि हो न हो, यह चाय के बागों का मालिक गुस्टोव फर्नेंडिस ही हो। इससे वह रेस्टोराँ में तो गया परन्तु एक पृथक् मेज पर बैठकर कॉफी का आर्डर देने लगा। इस समय जब अंजू की दृष्टि भूषण पर पड़ी तो वह फर्नेंडिस को साथ लेकर भूषण की मेज के समीप आ गई।

भूषण ने अंजू को मेज के समीप आकर खड़े होते देखा तो उठ हाथ जोड़ नमस्ते कर दी। अंजू ने कहा, "भूषणजी ! मैं आपका इनसे परिचय कराने के लिए लाई हूँ।"

"धन्यवाद। बैठिए।" उसने अपने सामने की कुर्सियों की ओर संकेत कर दिया।

अंजू ने बैठते हुए कहा, "ये हैं मिस्टर गुस्टोव फर्नेंडिस, नीलगिरि में कई चाय के बागों के मालिक। ये मेरे पिताजी के मित्र हैं।"

"और," उसने अपने साथी को सम्बोधित करते हुए कहा, "ये हैं श्री भूषण कुमार। हम दोनों बी० ए० में सहपाठी थे। मैं तो बी० ए० करने के बाद नौकरी करने लगी और यह आजकल एम० ए० में पढ़ते हैं। यहाँ के एक रईस श्री प्रेमनाथ ग्रोवर के सुपुत्र हैं।"

फिर उसने बात बदलते हुए कहा, "देखिए भूषणजी ! ये मुझको आज रात का खाना खिलाने के लिए यहाँ लाए हैं। आप भी हमारे साथ सम्मिलित हो सकते हैं।"

"मैं तो भोजन करके यहाँ एक प्याला कॉफी पीने के लिए आया हूँ।"

"फिर भी आप आइए। आप देखेंगे कि ये एक बहुत ही हास्य प्रकृति के हैं, इनके व्यंग्य बड़े तीखे होते हैं।"

"तब तो बहुत मजा रहेगा।"

बैरा आया तो उसे खाना लाने के लिए कह दिया गया। भूषण के लिए कॉफी आ गई। फर्नेंडिस ने वार्तालाप आरम्भ करते हुए कहा, "मिस्टर भूषण, मुझे हर उस आदमी से मिलकर प्रसन्नता होती है जो अंजू का मित्र है। मैं इसके सम्मोहन में इतना फँस गया हूँ कि मुझे अब सब ओर अंजू-ही-अंजू दिखाई देती है। मैं इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर मित्रों को देखता हूँ तो समझता हूँ कि इसके मित्रों का चयन कितना अच्छा है। अतः जब ये मेरा भी इसी प्रकार चयन करेंगी तो मैं भी उन भाग्यशालियों में अपने को समझूंगा जो इनके मित्र हैं।"

अंजू हँस रही थी। भूषण भी हँसने लगा। वह समझा कि यह आदमी अंजू से घनिष्ठता प्रकट कर रहा है। भूषण उसकी हँसी उड़ाने के लिए कहने लगा, "वह तो आप अभी भी हैं। मैं समझता हूँ कि आप उसके मित्रों में पहले ही सम्मिलित हैं। अन्यथा यह इस डिनर के लिए आपका निमन्त्रण कैसे स्वीकार करती ?"

"इसने निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। यह तो अपनी माँ की आज्ञाकारिणी लड़की होने से उसकी आज्ञा का पालन कर रही है।"

"तब तो और भी अच्छा है।"

"भला, यह कैसे ?"

"खुली गाय साथ चलते-चलते कभी सींग भी मार देती है परन्तु ग्वाले द्वारा गले में रस्सा बाँधकर हाथ में पकड़ाई हुई गाय तो सुशील और विनम्र होकर साथ चलेगी।"

"क्यों अंजू !" फर्नेंडिस ने उससे पूछा, "तुम गाय हो ?"

"आप क्या कसाई हैं ?"

"कसाई ? ओह नो। क्यों मिस्टर भूषण ! आपका क्या मतलब है ?"

"मैं तो समझा था कि आप बैल हैं और ग्वाले ने किसी विचार से अपनी गाय का रस्सा बैल के साथ बाँध दिया है।"

"बैल यस, आई आलसो थिंक सो।"

"परन्तु प्रश्न तो यही है कि क्या बैल में बुद्धि होती है ?" अंजू ने गम्भीर होकर पूछ लिया।

"तुम किस प्रकार की बुद्धि देखना चाहती हो अंजू डियर !"

"यही कि कहीं वह कसावखाने को न चल पड़े।"

"पर मैं तो मैरेज आल्टर की ओर चल रहा अनुभव करता हूँ।"

"उसी को तो कसावखाना समझा जाता है।"

"कौन समझता है ?"

"एक तो ये मेरे मित्र मिस्टर भूषण ही हैं।"

इस समय तक प्लेटें लग चुकी थीं और बैरा प्रथम कोर्स में फ्राइडफिश लेकर आ खड़ा हुआ था। फर्नेंडिस ने चार पीसेज डिश में से उठाकर अपनी प्लेट में रख लीं। एक टुकड़ा अंजू ने ले लिया। अब छुरी-काँटों से काट-काटकर और टमाटो सॉस में भिगो-भिगोकर दोनों खाने लगे। भूषण देख रहा था कि अंजू का साथी सत्य ही बैलों की भाँति जल्दी-जल्दी, बिना भली-भाँति कौर को चबाए निगल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वह विस्मय कर रहा था कि यह बैल की भाँति भोजन के बाद जुगाली भी करेगा ?

"क्या देख रहे हैं मिस्टर भूषण !"

"मैं देख रहा हूँ कि आपको कसाबखाने की ओर जाने की बहुत जल्दी है जो बिना चबाए ही गले के नीचे उतार रहे हैं।"

"मछली तो पहले ही चबाई हुई खुराक होती है जो बिना चबाए ही गले के नीचे उतर जाती है।"

"परन्तु इसके साथ आलू और बेसन भी तो है।"

"ये तो कसाबखाने में पहुँचते-पहुँचते पच जाएँगे।"

"पर मुझे तो बूचड़खाने की ओर जाने में रुचि नहीं।" अंजू ने एक ही टुकड़े को भली-भाँति चबाते हुए कहा, "इस कारण मजे से धीरे-धीरे खा रही हूँ।"

"कभी तो खाकर समाप्त करोगी ? तब तो जाओगी ही।"

अंजू ने बात को बदलते हुए कहा, "भूषणजी ! मुझे इनकी सिफारिश से मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में तीन सौ रुपये मासिक वेतन की नौकरी मिल गई है।"

"बधाई हो।"

फर्नेंडिस ने कहा, "पर मैं तो इनको एक जमींदार की रानी बनाकर ले जाने के लिए आया था और इन्होंने तीन सौ की नौकरी स्वीकार कर ली है। बताओ, यह गाय बूचड़खाने जाने योग्य है क्या ?"

"मुझे बूचड़खाने से डर लगता है। पहले बाहर की खुली हवा का आनन्द भोग कर लूँ, बाद में वहाँ देखने के लिए जाऊँगी। यदि प्रलोभन बहुत प्रबल हुए तो बलि का बकरा बनने के लिए चली जाऊँगी।"

"मिस्टर भूषण ! इसे समझाओ कि परमात्मा के अटल नियमों के सामने तो सबको नतमस्तक होना पड़ता है।"

भूषण ने मुस्कराते हुए कहा, "परमात्मा के अटल नियम तो मिशन के लोग अधिक अधिकार से समझा देंगे। परमात्मा का वास इस होटल से गिरजाघर में अधिक है।"

भोजन समाप्त हुआ तो फर्नेंडिस ने कहा, "मैं कल कालीकट जा रहा हूँ।"

"तो बस, बूचड़खाने की यात्रा समाप्त ?"

"नहीं, एक पड़ाव आ गया है। ज़रा साँस लेकर आगे चलेंगे।"

तीनों बाहर निकले तो अंजू और फर्नेंडिस एक ओर को चल दिए। भूषण अपने घर को चला गया।

भूषण घर पहुँचा तो उसके पिता ने पूछ लिया, "किधर गए थे ?"

"भोजनोपरान्त जरा टहलने के लिए चला गया था।"

"पढ़ाई किस समय होती है ? पिछले तीन दिनों तक जो उत्सव के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाई हो नहीं पाई थी।"

"मैं कल प्रातःकाल से ही पढ़ाई आरम्भ कर दूंगा। रात के समय का पढ़ा हुआ तो स्मरण भी नहीं रहता। यह काम मैं प्रातःकाल करता हूँ।"

"तो जल्दी सो जाया करो।"

"बस अब सोने के लिए जा रहा हूँ।"

वह अपने कमरे में गया। उसने कपड़े बदले और पलँग पर लेट तो गया किन्तु सो नहीं सका। उसकी समझ में यह आ रहा था कि सुशीला तो गई और अंजू को घर लाना अति कठिन है। अंजू के पिता तो उसको ईसाई बनाने के लिए विवाह के लिए तैयार हो जाएँगे। वे गिरजाघर में जा बपतिस्मा लेने को कहेंगे। यह बात उसके माता-पिता नहीं मानेंगे। यदि वह ईसाई हो गया तो पिताजी उसे घर से निकाल देंगे। यदि ईसाई होने के लिए वह तैयार नहीं हुआ तो अंजू के माता-पिता स्वीकार नहीं करेंगे। अब तो वह ईसाइयों के गढ़ में काम पा गई है और उसे दिन-रात ईसाई धर्म पर डटे रहने की शिक्षा मिला करेगी।

तो अब किसी तीसरे स्थान पर विवाह का प्रबन्ध करना पड़ेगा। वह इसी प्रकार की उधेड़बुन में लगा हुआ था। अगले दिन वह कॉलेज गया और विवाह की बात भूल गया। वह अब परीक्षा की चिन्ता करने लगा। रात को भोजनोपरान्त वह रेस्टोराँ में कॉफी पीने के लिए गया तो उसने देखा कि अंजू उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

अंजू ने भूषण को देख सुख अनुभव किया। जब भूषण उसके सामने बैठा तो अंजू ने कहा, "आप सायंकल चाय पर क्यों नहीं आये ?"

"कल मैं वहाँ गया था। तुम नहीं मिलीं। इस कारण यह अनुमान लगा रहा था कि तुम उस समय तक कार्यालय से लौटती नहीं हो।"

"नहीं, मैं कार्यालय से आ जाया करती हूँ और मैं समझती हूँ कि उसी समय चाय पीने के लिए मिला करें तो ठीक है। यह समय ठीक नहीं।"

"हाँ, मैं भी इस समय सो जाना चाहता हूँ कि जिससे बहुत प्रातःकाल उठकर कॉलेज की पढ़ाई कर सकूँ।"

"फर्नेंडिस तो विवाह करके ही यहाँ से जाने का विचार करता था और माँ मुझे उससे विवाह करने पर विवश कर रही थी। एकाएक कल उसको कालीकट से तार आया कि उसे तुरन्त वहाँ पहुँच जाना चाहिए। इससे वह आज चला गया है। परन्तु दो सप्ताह में लौटेगा। वह, इस विचार से कि सैंटर में पादरी लोग मुझे अपने धर्म पर दृढ़ रहने की शिक्षा देते रहेंगे, इसलिए मुझे वहाँ नौकरी दिलवा गया है। मैं वहाँ एकाउण्ट्स विभाग में काम करती हूँ। दो दिन में ही मुझे पता चल गया है कि मिस्टर फर्नेंडिस मेरे दो मास का वेतन अपनी जेब से दे गया है और वह समझता है कि इतने काल में तो वह मुझे विवाह पर राज़ी कर ही लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सैंटर से मुझे वह काम दिया गया है जो कोई भी सौ-सवा सौ का आदमी कर सकता है। जब मैंने कहा कि मैं तो इससे अच्छा काम कर सकती हूँ तो मेरे अफसर ने कहा, 'ऊँचे दर्जे के काम का स्थान खाली नहीं है।'

"मैंने उनसे कहा कि 'इस काम के लिए भी तो और लोग हैं ?' वह कहने लगे, 'पर तुमको तो मिस्टर फर्नेंडिस के खर्चे पर यहाँ रखा गया है। वह चाहता है कि तुम यहाँ के वायुमण्डल में रहती हुई एक नेक ईसाई लड़की की भाँति रह सको। वह दो मास का वेतन अग्रिम जमा करा गया है। तुम ईसाई साहित्य पढ़ा करो और यदि तुमको कुछ अधिक देर तक यहाँ रहने का अवसर मिला तो तुम डिवि-निटि में एम० ए० कर लोगी।' "

"उससे क्या होगा ?"

"वह अधिकारी बोला, 'तुम यदि चाहो तो डॉक्टर ब्रूस ह्यूबर्ट से बात कर सकती हो।

" 'डॉक्टर ह्यूबर्ट स्टेशन से बाहर गए हैं। वे एक-दो दिन में आएँगे और मैं उनसे बात करूँगा।

" 'वैसे तो मैं इस प्रबन्ध को गलत नहीं समझता। परन्तु यदि तुमको अन्त में फर्नेंडिस से विवाह नहीं करना और उसे अस्वीकार करना है तो यह रुपया लेना ठीक नहीं।'

" 'मैं भी ऐसा ही समझती हूँ। परन्तु रुपया तो चाहिए और उससे विवाह भी नहीं करना है। मैं दोनों बातों में समन्वय करना चाहती हूँ। मैं जो कुछ वेतन पाती हूँ, उसके मूल्य का मिशन का काम कर दूँ। इससे मुझे फोकट में रुपया नहीं मिलेगा। फर्नेंडिस का दिया धन मिशन को दान माना जाएगा।'

" 'और यदि काम नहीं मिलता तो ?'

" 'इस स्थिति पर अभी विचार नहीं किया। मुझे कम-से-कम डेढ़ सौ रुपया महीना चाहिए।' "

भूषण इतना तो अपने पिता से माँगकर भी दे सकता था। परन्तु उस अवस्था में उनको बताना पड़ता। यह वह अभी बताना नहीं चाहता था कि उसकी दृष्टि सुशीला के अतिरिक्त किसी अन्य लड़की पर भी है और वह ईसाई लड़की है। वह जानता नहीं था कि उसके माता-पिता उसके इस प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे अथवा नहीं। इससे वह चुप रहा। अंजू भी गम्भीर विचार में बैठी रही। वे कॉफी पी चुके थे और अपने-अपने विचारों में लीन अपने-अपने घर को चल दिए।

अंजू नहीं चाहती थी कि वह अब अपने विवाह की बात भूषण से करे। उसने संकेत दिया था और वह चाहती थी कि अब भूषण को स्वयं अपने विचारों से उसे अवगत कराना चाहिए। एक बात के लिए वह दृढ़ संकल्प थी। वह यह कि वह फर्नेंडिस से विवाह नहीं करेगी। विकट समस्या थी खर्च की। आजकल वह घर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने के पचहत्तर रुपये देती थी। माँ ने कह दिया था यदि नौकरी छूट गई तो विवाह क्यों नहीं कर लेती। पचास-साठ रुपया उसका अपना निजी खर्चा था। पचास रुपया वह अपनी छोटी बहिनों को पढ़ाई के लिए दिया करती थी। इसलिए इससे कुछ कम में तो निर्वाह हो ही नहीं सकता था।

: ७ :

दिन व्यतीत हो रहे थे। सुशीला पहले सप्ताह में कम-से-कम एक बार भूषण से और उसकी माँ से मिल जाया करती थी। अब उसने आना बन्द कर दिया था।

दोनों परिवारों में वैमनस्य का कारण ठाकुरदास का लड़का अनिल कुमार था। उसकी दृष्टि अंजू पर पड़ गई तो वह उसका पीछा करने लगा। पीछा करते-करते उसको नित्य अंजू और भूषण एक स्थान पर नियत समय पर मिलते दिखाई दे गए।

अनिल कुमार, कारखाने में तो पिता के भय से अंजू से बात कर नहीं सकता था। इस कारण वह छुट्टी के उपरान्त उसका पीछा करता था। पहले दिन तो वह दृष्टि बचाकर निकल गया। उसका विचार था कि वह भेंट घटनावश है। परन्तु वह जब भी कारखाने के समय के उपरान्त अंजू से मिलने का यत्न करता, भूषण वहाँ उपस्थित होता और वह अंजू से मिलकर उससे अपने मन की बात कह सकने का अवसर नहीं पाता था। आखिर वह उकता गया और उसने भूषण के कान खिचवाने की योजना बना ली। उसने एक दिन अपनी माँ को सुशीला की माँ से भूषण और अंजू के परस्पर मेल-जोल की बात बता दी। उसने इतना तो सत्य कहा कि दोनों नित्य मिलते हैं। परन्तु इसके साथ ही अपनी कल्पना की एक कहानी भी बना ली। उसने कहा कि दोनों का गिरजाघर में विवाह हो चुका है परन्तु वे इसे छिपा रहे हैं। कारण यह कि वह परीक्षा के उपरान्त अपना कारखाना अलग लगवा कर उसे खुले आम रख लेगा।

कान्ता ने पूछा, "क्या प्रमाण है तुम्हारे पास इसका ?"

"बूआ ! उस होटल वाले से साक्षी दिलवा सकता हूँ जहाँ ये नित्य मिलते हैं। वहाँ के बैरे भी इस बात की साक्षी देंगे।"

कान्ता ने अपने भाई ठाकुरदास से इस विषय की जाँच करने के लिए कहा। ठाकुरदास ने अनिल को ही जाँच करने पर लगा दिया और उसने होटल वाले का बयान, बैरों के बयान और फिर एक अन्य निर्धन आदमी का बयान लिखाकर उन पर हस्ताक्षर कराकर अपने पिता को दिखा दिए। इन सब बयानों पर हस्ताक्षर कराने के लिए उसको दो सौ रुपया व्यय करना पड़ा।

इन बयानों ने सब गड़बड़ मचा दी। अनिल का विचार था कि बूआ और उसका फूफा भूषण से तुरन्त विवाह की माँग करेंगे। यदि भूषण का विवाह गिरजाघर में हुआ है तो भूषण विवाह से इनकार कर देगा। इस अवस्था में भूषण की सगाई टूट जाएगी और भूषण का अपने पिता से झगड़ा हो जाएगा। जब अंजू को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पिता से कहकर वह नौकरी से निकलवा देगा। भूषण पिता के घर से निकाला हुआ अंजू का खर्चा नहीं दे सकेगा। तब अवसर होगा कि अंजू को मन की बात कहकर अपनी अविवाहिता पत्नी बना लेगा।

किन्तु हुआ इससे विपरीत। अनिल की प्रमाणित जाँच का परिणाम ठाकुरदास ने बहिन को बताया। उसने अपनी लड़की को बताया और वह भूषण को मिलने के लिए कॉलेज में जा पहुँची।

सुशीला और उसकी माता कान्तादेवी ने भूषण से कहा था कि अपने माता-पिता को बात करने के लिए भेजे। उसने इसको अपमान समझा और अपने माता-पिता को टण्डन-परिवार से मिलने के लिए नहीं कहा और टण्डन-परिवार ने समझा कि लड़का अपराधी है, इसी कारण वह अपने माता-पिता को यहाँ नहीं भेज रहा है।

उन्होंने सगाई तोड़ने का निश्चय कर लिया। साथ ही प्रेमनाथ ग्रोवर को अपमानित करने की योजना भी बना ली। उन दिनों आर्यसमाज का उत्सव हो रहा था और उसके उपरान्त पदाधिकारियों का चुनाव होने वाला था। टण्डन ने अधिकांश सदस्यों से मिलकर ग्रोवर के विपरीत वातावरण बना दिया। इस वातावरण में ग्रोवर के नास्तिकता के विचार और समय-समय पर उनका प्रकटीकरण सहायक हो गये।

इस प्रकार अपमानित करने के उपरान्त भी जब ग्रोवर उससे मिलने के लिए नहीं आया और न ही उसने उसके प्रधान बन जाने पर बधाई दी तो उसने ग्रोवर साहब को 'मौडर्न फाईनांसिग कम्पनी' की मैनेजिंग डायरेक्टरी से निकालने का यत्न किया। इस कम्पनी में ग्रोवर साहब के अपने हिस्से तीस प्रतिशत थे। शेष सत्तर प्रतिशत बहुत से लोगों में बँटे हुए थे। किसी के पास भी पाँच से अधिक हिस्से नहीं थे। और ग्रोवर कुछ अपने साथी बनाकर प्रति तीसरे वर्ष मैनेजिंग डायरेक्टर बन जाया करता था।

टण्डन ने ब्रोकर्ज को कहे बिना कम्पनी के हिस्से खरीदने आरम्भ कर दिए। इस सब कार्य में छः मास लग गए। टण्डन और ठाकुरदास तथा अनिल के मिल-मिलाकर पचपन प्रतिशत हिस्से रामनारायण के हाथ में आ गए और फिर प्रेमनाथ ग्रोवर को इस कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टरी से हटवा दिया। टण्डन मैनेजिंग डायरेक्टर बन गया।

इस समय तक भूषण परीक्षा पास कर चुका था और प्लास्टिक के सामान का कारखाना लगाने की योजना बना चुका था। इसकी सरकार के उद्योग-विभाग से उसने मंजूरी भी ले ली थी। कारखाने के लिए स्थान और पूँजी एकत्रित हो चुकी थी। भूषण ने प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी बना ली और वह स्वयं उसका मैनेजिंग डायरेक्टर बन काम को शीघ्रातिशीघ्र चालू करने में संलग्न हो गया।

ग्रोवर साहब स्वयं अब एक ऑडिटर के रूप में काम करने लगे थे। वैसे यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम उन्होंने जीवनारम्भ से किया हुआ था, परन्तु फाइनांसिग डायरेक्टर का काम अधिक लाभ देने वाला था। वह उसमें लग गए थे। अब उधर से छुट्टी मिल जाने पर पुन: अपने पहले काम में लग गए। आय में कुछ कमी अवश्य हुई, पर कार्य चल रहा था।

इस अवधि में अंजू और फर्नेंडिस में झगड़ा हो चुका था और फर्नेंडिस ने मिशन को उसके वेतन के नाम पर दिया जाने वाला धन बन्द कर दिया था। परन्तु इस केन्द्र का चीफ पादरी डॉक्टर ह्यूबर्ट अंजू पर डोरे डालने लगा था।

जिस दिन फर्नेंडिस और अंजू में झगड़ा हुआ था वह सैण्टर के चीफ के पास पहुँचा और कहने लगा, "मैं इस लड़की के लिए पन्द्रह सौ रुपया व्यय कर चुका हूँ। मैं तो और भी व्यय करने को तैयार था, परन्तु आज उसने स्पष्ट कह दिया है कि वह एक हिन्दू लड़के से प्रेम करती है और उससे ही विवाह करेगी। इस कारण मैं अब इस पर अधिक व्यय करना लाभदायक नहीं समझता।"

"यदि वह किसी हिन्दू लड़के से विवाह करना चाहती है तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि उसे हाथ से न जाने दिया जाय।" चीफ का कहना था।

"मेरे लिए इसमें किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ता। जब वह मेरी पत्नी नहीं बन रही तो वह किसी से भी विवाह करे, मुझे इससे क्या?"

"मिस्टर फर्नेंडिस! तुम जैसे निष्ठावान प्रभु के भक्त से मैं ऐसी अशा नहीं करता था। आज भारत में एक भी ईसाई का विधर्मियों के गोल में चले जाने को हम स्वीकार नहीं कर सकते।"

"आज क्या है?"

"आज भारत सैक्युलर स्टेट है। हमको इससे लाभ उठाना चाहिए।"

"एक कम अथवा अधिक से क्या अन्तर पड़ता है?"

"तुम जानते नहीं कि वर्तमान वयस्क मताधिकार के कानून से संख्या का कितना महत्त्व बढ़ गया है। जिस मजहब वालों के मत अधिक होंगे, उनका राज्य होगा और इस भूमण्डल के ईसाई राज्यों में भारत जैसे विशाल देश को सम्मिलित करना अपने धर्म के लिए एक भारी लाभ होगा।"

"परन्तु अंग्रेज ईसाई थे और उनके राज्य में तो हम कुछ अधिक वृद्धि नहीं कर सके?"

"अंग्रेजों की अपनी सीमाएँ थीं। वे उनका उल्लंघन नहीं कर सकते थे। वर्तमान 'बुद्धिमान' कांग्रेसियों के राज्य में वे सीमाएँ नहीं हैं। वे हिन्दुओं के प्रतिनिधि जब ईसाई और मुसलमानों को रियायतें देते हैं तो यह उनकी ईमानदारी मानी जाती है। यही बात अंग्रेज शासकों द्वारा किये जाने पर बेईमानी अथवा पक्षपात का चिह्न माना जाता था।"

"आपकी यह राजनीति मेरी समझ में नहीं आ रही। एक औरत के ईसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने अथवा न रहने से क्या बन सकता है।"

ह्यूबर्ट मुस्कराया और बोला, "फर्नेंडिस ! तुम नहीं समझते क्या कि एक औरत का मजहब के प्रचार में कितना बड़ा महत्त्व होता है। एक औरत का जो अपने बच्चे पर प्रभाव होता है वह पिता का नहीं होता। और फिर एक तन्दुरुस्त औरत पचास वर्ष में एक दर्जन से अधिक ईसाइयों की वृद्धि में साधन हो सकती है।"

फर्नेंडिस कुछ समझ गया और उसने कह दिया, "तो इसके लिए यत्न करिए।"

"आप अभी रुपया देना बन्द मत करिए।"

"परन्तु सामान्य मत-परिवर्तन के लिए मैं एक सहस्र वार्षिक जो देता हूँ।"

"वह तो बजट में सम्मिलित हो जाता है और उसमें से व्यय के लिए तो कमेटी की स्वीकृति लेनी पड़ती है। इस लड़की के लिए स्वीकृति मिल जाएगी अथवा नहीं, यह कहा नहीं जा सकता।"

"मैं इस लड़की के लिए विशेष तो दूँगा नहीं।" फर्नेंडिस को क्रोध आ रहा था। उसने ईसाइयत के प्रचार के विचार से कुछ नरम होकर कहा, "मैं आपको इस वर्ष एक सहस्र और अधिक दे सकता हूँ। परन्तु यह काम तो मिशन का है कि वह देखे कि किस व्यक्ति पर धन व्यय करना ठीक है और किस पर ठीक नहीं।"

"मैं इसे उचित मामला समझता हूँ। आप रुपया दे दीजिए। इसकी कोई रसीद-पर्ची नहीं बनेगी। तब मैं अपनी जिम्मेदारी और सूझ-बूझ से उसको व्यय कर लूँगा।"

फर्नेंडिस तैयार हो गया। उसने एक सहस्र रुपया नकद डॉक्टर ह्यूबर्ट के पास जमा करा दिया और डॉक्टर से विदा ले ली। डॉक्टर समझ रहा था कि तीन मास के लिए तो अंजू को रखा ही जा सकता है और इस काल में उसका विवाह किसी उपयुक्त ईसाई युवक से किया जा सकता है।

अंजू पर दबाव डालने के लिए उसने एक सीमा तक उसे बताना आवश्यक समझा। उसने सायंकाल अंजू के घर जाने से पूर्व उसे बुलाया और अपने सामने बैठाकर कहा, "अंजू ! तुम जानती थीं कि तुम्हारे वेतन का रुपया मिस्टर गुस्टोव फर्नेंडिस दे रहा था और मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हारा उससे झगड़ा हो गया है।"

"जी ! किस कारण झगड़ा हुआ है मैं वह सब बात बताना नहीं चाहती। फिर भी इतना बताने में मुझे संकोच नहीं कि वह मुझसे विवाह की इच्छा करते थे और आरम्भ से ही मैंने उनसे विवाह करना अस्वीकार कर रखा था। उसको यह विदित था। इस कारण अब झगड़ा करने का कोई कारण नहीं था।"

"परन्तु तुम उसके द्वारा दिया जाने वाला वजीफा तो स्वीकार करती थीं ?"

"आप भूल गए हैं डॉक्टर ! मैंने यहाँ काम पाने के पहले दिनों में ही आपसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा था कि मैं हराम का वेतन लेना नहीं चाहती। वेतन के अनुरूप मुझसे काम लीजिए। तब आपने मुझे कठिन काम दे दिया था। मैं समझती हूँ इसको वेतन कहिए अथवा वज़ीफा कहिए, मैं जितना कुछ पाती थी उतने का काम कर देती थी। मैं समझती थी कि मैं सैंटर से वेतन पाती थी और ईमानदारी से काम करती थी। आपको वह धन कहाँ से आता था, यह बात मेरे विचार करने की नहीं।"

डॉक्टर ह्यूबर्ट इस सफाई पर चकित रह गया। वह इस लड़की के विचार करने के ढंग पर चकित था। फिर भी वह अभी निराश नहीं हुआ था। उसने कह दिया, "पर मुझे बताया गया है कि तुम किसी हिन्दू लड़के से प्रेम करती हो?"

"तो फर्नेंडिस ने आपको यह बता दिया है? हाँ, यह बात ठीक है।"

"वह लड़का कौन है?"

"मुझे उसका नाम-धाम बताने की स्वीकृति नहीं।"

"क्या वह आर्यसमाजी है?"

"इससे क्या होता है? वह कोई भी हो। मैं उससे प्रेम इस कारण नहीं करती कि वह हिन्दू है या मुसलमान, देवी भक्त है या विष्णु का भक्त। मैं उसके मानवीय गुणों पर मुग्ध हूँ।"

"तुम्हारा विवाह कब होगा?"

"कदाचित् इस जन्म में नहीं।"

"परन्तु तुम्हारा अथवा किसी भी मनुष्य का अगला जन्म तो कयामत के बाद ही होगा और उसके उपरान्त तुम या तो नरक में होगी अथवा स्वर्ग में। अधिक सम्भव है कि नरक में ही होगी। बताओ क्या लाभ है उससे प्रेम करने का।"

"तो प्रेम करने का भी कुछ लाभ होता है?"

"हाँ, स्त्री के लिए नौकरी जैसी ड्रैजरी (कोल्हू के बैल के काम) से बचाया जा सकता है। बच्चों की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है फिर प्रभु और उसके पुत्र यशुमसीह की बरकतों पर विचार करने को अवकाश मिलता है।"

"ये सब तो विना विवाह के भी प्राप्त हो रहे हैं।"

"पर अंजू, हम कल से तुमको वेतन नहीं दे सकते।"

"मैं इस बात की ही आशा कर रही थी।"

"तो तुमको वेतन की आवश्यकता नहीं है?"

"आवश्यकता तो है। आजकल की मँहगाई के काल में वेतनधारियों को निरन्तर नौकरी करनी आवश्यक है। अन्यथा निर्वाह में कठिनाई उपस्थित हो जाएगी।"

"तो वह लड़का तुमको खाने-पीने के लिए नहीं देगा?"

"मैं उससे माँगूँगी नहीं।"

"पर क्या वह जानता है कि तुम उससे विवाह करना चाहती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने एक बार उसको अपने मन की इच्छा बताई थी। तब कुछ एक कारणों से वह विवाह नहीं कर सकता था। उसके उपरांत वह जानता है कि फर्नेडिस मुझसे विवाह की अभिलाषा रखता है। और मुझ पर धन व्यय कर रहा है। इस कारण वह विवाह के विषय पर कभी भी बात नहीं करता।"

"तो तुम उससे बात करोगी ?"

"मैंने अभी निश्चय नहीं किया। मैं कहीं नौकरी ढूँढूँगी। जब आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाऊँगी तो मैं विवाह की चर्चा करूँगी। यदि अपनी निर्धनता का प्रदर्शन कर उससे विवाह की याचना करूँगी तो यह वेश्यावृत्ति हो जाएगी। यह मैं कभी नहीं करूँगी।"

"देखो अंजू, तुम बहुत अच्छी लड़की हो। तुमको कहीं अन्यत्र काम ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं। तुम यहाँ इसी स्थान पर और इसी वेतन पर काम कर सकती हो।

"परन्तु ईसाई धर्म, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ है, उसे धन अथवा विवाह के लोभ में नहीं गँवाना। तुम हिन्दू से विवाह कर सकती हो पर तुम और तुम्हारे बच्चे इत्यादि ईसाई ही रहने चाहिए।"

"और अगर मैं विवाह न करना चाहूँ तो ?"

"वह तो करना ही पड़ेगा। कारण यह है कि विवाह के बिना कोई स्त्री रह नहीं सकती। यदि वह विवाह नहीं करती तो वह व्यभिचार में फँस जाती है और यह महापापों में से एक है।"

"और जब कोई पुरुष विवाह नहीं करता तो वह इस प्रकार के व्यभिचार में नहीं फँसता ?"

"व्यभिचार वह है जब कोई अविवाहित स्त्री-पुरुष परस्पर सहवास करते हैं। पुरुष तो बिना स्त्री के भी अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ा सकता है।"

"यह कैसे ?"

"यह मैं तुमको बता नहीं सकता। तुम 'सेक्स' पर कोई पुस्तक पढ़ लो तो तुमको मालूम हो जाएगा।"

वास्तव में अंजू ने सेक्स का साहित्य पढ़ा था और वह जानती थी। परन्तु ईसाई मिशन का चीफ उसको क्षम्य कहेगा, ऐसा तो वह विचार भी नहीं कर सकती थी। वह इस विषय को आगे नहीं चला सकी। उसने अपने स्थान से उठते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि मेरे यहाँ काम करने के विषय में आप मुझे लिखित आज्ञा-पत्र भेज दीजिए। मैं चलती हूँ।"

"जरा ठहरो। एक विषय पर और बातें करनी हैं।"

"कहिए।"

"मैं तुम्हारे लिए एक योग्य पति ढूंढ़ चुका हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलो। कदाचित् वह तुम्हें उस हिन्दू युवक से अधिक मानव प्रतीत हो।"

"मैं उसे अवसर देने के लिए तैयार हूँ। केवल एक बात है। मेरा यहाँ काम कर सकना उसके साथ विवाह की शर्त न हो।"

"यह शर्त तो नहीं है। फिर भी यह अवसर देने के लिए तो है कि तुम उसके सम्पर्क में आ सको।"

"खैर, वह आप जानिए, आपका काम जाने। मैं वेतन तो काम करने का ले रही हूँ। जब तक आप काम लेते रहेंगे, मैं स्वयं को वेतन की अधिकारिणी मानूँगी।"

: ८ :

उसी दिन अंजू ने भूषण को डॉक्टर ह्यूवर्ट के साथ हुए पूर्ण वार्तालाप का विवरण सुना दिया। भूषण ने मन में संतोष अनुभव करते हुए कहा, "देखो अंजू! मैं तुमसे विवाह कर सकने में अपना सौभाग्य मानता हूँ। परन्तु मैंने अभी तक तुम्हारे कथन का उत्तर नहीं दिया। उसके कई कारण थे। सबसे बड़ा कारण यह था कि मैं सुशीला से विवाह करने का वचन दे चुका था। हमारे धर्मशास्त्र में वचन भंग करने को महापाप मानते हैं। केवल वचन पालन करते हुए तेरह वर्ष तक वनों में घूमने वाले युधिष्ठिर को धर्मपुत्र कहा गया है। इस कारण तुमको सुशीला से कई गुणा श्रेष्ठ, सुन्दर, सुशील और बुद्धिमान मानता हुआ भी अपना वचन भंग करना नहीं चाहता था।

"सुशीला से मिले अब छः मास हो चुके हैं। परन्तु उसका विवाह अभी नहीं हुआ। इस कारण मेरा वचन अभी तक स्थिर है। जब वह विवाह कर लेगी तब मैं अपने को वचनमुक्त समझूँगा।

"साथ ही इन दिनों तुम फर्नेंडिस के वजीफे पर निर्वाह कर रही थीं। मैं इस वजीफे का अर्थ यह समझता था कि फर्नेंडिस तुमको अपने अनुकूल बनाने का यत्न कर रहा है। वह मुझसे अधिक धनी आदमी है। तुम्हारा हम-मजहब भी है और फिर देखने में भी खराब नहीं है। इस कारण तुम्हारे लिए मैं मौन था। यह स्थिति अब नहीं है। तुमने उसे अस्वीकार कर दिया है। परन्तु डॉक्टर ह्यूवर्ट ने मेरा एक और प्रतिस्पर्धी उपस्थित करने का प्रस्ताव किया है और अभी सुशीला की ओर से भी स्वतन्त्रता नहीं मिली है।

"मेरे पिताजी ने मुझसे एक अन्य स्थान पर विवाह के लिए प्रस्ताव किया था परन्तु मैंने उनको भी, अपने सुशीला से वचन की बात कहकर टाल दिया है।

"हाँ, अब एक बात में पहले से अन्तर है। मैं अब तुमको दो-ढाई सौ रुपया मासिक सुगमता से दे सकता हूँ। मुझको पाँच सौ रुपया मासिक वेतन मिलता है और यदि तुम मुझे मेरे मन की करने दो तो मैं तुमको बिना किसी प्रकार की शर्त के अपना आधा वेतन ढाई सौ रुपया मासिक सुगमता से दे सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस आधे वेतन देने का अर्थ यह होगा कि आप मुझसे विवाह करने पर वचनबद्ध हो रहे हैं। साथ ही आप यह कह रहे हैं कि आप सुशीला से वचनबद्ध हैं।"

"नहीं अंजू ! यह ढाई सौ रुपया बिना किसी प्रकार की शर्त के होगा। न मैं अपने को किसी प्रकार से बाँध रहा हूँ, न ही मैं इससे तुम्हें बाँधी गई मानता हूँ।"

"मेरी बात छोड़िए। मैं तो आपसे बिना एक पैसा भी लिए बँध चुकी हूँ। यह अदृश्य बंधन कैसा है ? मन का है अथवा आत्मा का है, मैं नहीं जानती। परन्तु मैं तो आपके बंधन की बात समझ रही थी।"

"नहीं; जब तक सुशीला विवाह नहीं कर लेती, मैं विवाह नहीं करूँगा। उसने और उसकी माँ ने मेरा घोर अपमान किया है। उसके पिता ने व्यापार में मेरे पिता का घोर विरोध किया है। फिर भी वचन तो वचन ही है और मैं उसे तभी समाप्त समझूँगा, जब वह विवाह कर लेगी।

"मैं नहीं जानता कि उसका विवाह क्यों नहीं हो रहा। उसके माता-पिता को अपने व्यवहार के उपरांत अपनी लड़की का विवाह कर देना चाहिए था।"

"तो आप पता क्यों नहीं करते ?"

"सारी बात पता करने के तो साधन नहीं हैं। फिर भी इतना पता करता रहता हूँ कि उसकी कहीं सगाई हुई है अथवा नहीं। और विवाह हो रहा है तो कब हो रहा है। अभी तक जो समाचार मिला है उसके अनुसार उनके घर में विवाह की कोई चर्चा नहीं है।"

अंजू गम्भीर होकर विचार करने लगी। चाय समाप्त कर विदा होने से पूर्व भूषण ने अपना पर्स निकालकर कहा, "मैं समझता हूँ अपने वेतन में से तुम्हारा भाग तुमको दे दूँ।"

"कब मिला है आपको वेतन ?"

"तीन दिन हुए। स्वयं ही अपना वेतन अपने कारखाने के हिसाब में से निकालता हूँ। यह पाँच सौ रुपया वेतन कारखाना चालू होने तक मिलेगा। उसके उपरांत जब कारखाना माल तैयार करने लगेगा, मेरा वेतन बढ़ जाएगा। यह दो सहस्र रुपये तक भी जा सकता है।"

अंजू ने भूषण के हाथ से उसका पर्स लेकर पुनः उसी की जेब में डालते हुए कहा, "अभी आप इसे रखिए। मैं समझती हूँ कि डॉक्टर ह्यूबर्ट की परीक्षा कर लूँ। जब तक वह देता है, मैं क्यों न लूँ ? मैं मेहनत से कार्य करती हूँ और तब धन लेती हूँ। इस कारण उनसे वेतन लेने में हानि नहीं समझती। जब उनका धैर्य समाप्त हो जाएगा तब आपकी परीक्षा भी कर लूँगी। परीक्षा यह है कि बिना विवाहादि सूत्रों के वेतन दें तो लूँगी। आप कारखाना चालू करिए और उसमें मुझसे काम लीजिए। तब वेतन के रूप में दीजिए। यह मेरे स्वाभिमान को ठेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पहुँचाएगी।"

दोनों चले आए।

इस बात को हुए भी अब तीन मास हो गए थे। भूषण का कारखाना कार्य के लिए तैयार हो गया था और उसके उद्घाटन-समारोह का विचार हुआ तो भूषण ने अपने पिता से पूछा, "उद्घाटन किससे कराएँगे ?"

"राज्य के मुख्यमन्त्री से लेकर आर्यसमाज के किसी प्रसिद्ध नेता तक को इस कार्य के लिए ला सकता हूँ।"

अपना मत बताए बिना, भूषण ने अपने पिता से पुनः पूछा, "आप किसको उचित समझते हैं ?"

"मैं तो समझता हूँ कि राज्य के मुख्यमन्त्री से कराया जाए तो अधिक ठीक रहेगा।"

"क्या औचित्य है इसका ?"

"उससे सम्पर्क बनेगा। कभी किसी बात का कोटा अथवा विदेश से कुछ मँगवाने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता पड़ी तो सुगमता रहेगी।"

"यह सब-कुछ तो अभी तक बिना उद्घाटन अथवा किसी अन्य कार्य को उनसे कराए हो गया है। आगे भी सरकारी अधिकारियों से कार्य होता रहेगा।"

"परन्तु भूषण ! प्रत्येक कार्य के लिए भारी रिश्वत देनी पड़ती है।"

"वह तो तब भी देनी पड़ेगी। मैं एक भिन्न दृष्टिकोण से विचार करता हूँ।"

"किस दृष्टिकोण से ?"

"मैं कार्य सिद्धि के लिए दो प्रकार के देवताओं की आराधना को आवश्यक समझता हूँ। एक देवता तो हैं इस भूतल पर रहने वाले प्रतिष्ठित जन। इसमें ये मन्त्री और राज्यपाल आदि लोग हैं। इनकी पूजा के लिए पुष्प-पत्र तो रिजर्व बैंक के हरे नोट हैं। वे इनकी पूजा के लिए अर्पण करने ही पड़ेंगे। दूसरे देवता हैं सूर्य, चन्द्र, मरुत, इन्द्र, वरुण आदि। उनकी पूजा के लिए पुष्प-पत्र देना और भी आवश्यक है।"

"महादेव के पूजन के लिए किसी वेद शास्त्र के ज्ञाता ब्राह्मण को बुलाया जाए तो ठीक है।"

"यह तो होगा ही। जिन पण्डितजी को तुम उचित समझो, हवन इत्यादि करने के लिए बुलवा लो और उद्घाटन के लिए मुख्यमन्त्री को बुला लिया जाए। हमने आर्यसमाज की कन्या पाठशाला का उद्घाटन भी तो केन्द्र के शिक्षामन्त्री से करवाया था।"

"पिताजी ! मैं तब से ही विचार कर रहा था कि आपने भारी भूल की थी। शिक्षामन्त्री मुसलमान, अभारतीय और विशेष रूप में वैदिक शिक्षा-पद्धति का विरोधी था। उसके हाथ से इस पवित्र कार्य को प्रारम्भ कराकर आपने सारे कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ही अपवित्र कर दिया था।"

मिस्टर ग्रोवर ने जब पुत्र के मुख से अपने कार्य की कठोर आलोचना सुनी तो उनका मुख तमतमा आया। फिर भी वह अपने इकलौते बेटे को डाँट नहीं सके। अपने क्रोध को नियन्त्रण में रखते हुए वह पूछने लगा, "तो वह कन्या पाठशाला अपवित्र हो गई है ?"

'निस्संदेह पिताजी ! आपने उस पाठशाला का उद्घाटन ही अपवित्र हाथों से नहीं कराया, वरन् उसको एक अपवित्र संगठन के अधीन कर उसको और भी अपवित्र कर दिया है। सरकारी शिक्षा-विभाग सब-का-सब रिश्वतखोरों, हराम-खोरों और धर्मविहीनों से भरा पड़ा है।"

"देखो भूषण ! ऐसी बात किसी के सामने मत कह देना। अन्यथा लेने-के-देने पड़ जाएँगे।"

"पिताजी ! मैं तो घर में बैठकर आपसे एकान्त में बात कर रहा हूँ। इससे चिन्ता करने की बात नहीं। परन्तु आप यह जानते हैं कि स्कूलों में पाठ्यक्रम के लिए जो पुस्तक प्रस्तुत की जाती हैं, उनके प्रकाशकों को पुस्तक स्वीकार कराने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों को कुछ-न-कुछ भेंट-पूजा देनी पड़ती है। यह क्या ईमानदारी के लक्षण हैं ? ऐसे महकमे के अधीन आर्यसमाज के स्कूल को करके भला किस पुण्य की आशा की जा सकती है ?

"पिछले वर्ष आपने मुझे स्कूल के निरीक्षण के लिए भेज था। मैंने देखा था कि स्कूल की अध्यापिकाओं में से आधी से अधिक तो अपने पतियों से असन्तुष्ट हैं और शेष अनीश्वरवादी हैं। आपको कदाचित् यह विदित नहीं कि आपके स्कूल की मुख्याध्यापिका ईसाई है। आप उसको नौकरी से निकाल नहीं सकते। सरकारी नियमोपनियम इसकी स्वीकृति नहीं देते।"

ग्रोवर निरुत्तर हों रहा था। उसने पूछ लिया, "अच्छा, बताओ तुम क्या चाहते हो ?"

"पिताजी ! मेरी उत्कट इच्छा है कि एक विद्वान् वेदपाठी को मैं उद्घाटन-यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में आमंत्रित करूँ और उसके वेद मन्त्रोच्चारण द्वारा ही कारखाने का उद्घाटन कराऊँ। इस उद्घाटन समारोह के दिन सायंकाल के समय एक विशाल चाय पार्टी दूँ। इसमें इस लोक के देवी-देवताओं को आमंत्रित करूँ।"

"ठीक है, तुम करो। बस इतना विचार रख लेना कि मुख्यमन्त्री अथवा अन्य सरकारी अधिकारियों के सामने किसी धोती-कुर्ता अथवा पीली पगड़ी वाले पण्डित से उद्घाटन करा उनका अपमान न करा देना।"

भूषण अपने पिता के इस स्वभाव को जानता था। उसको सदा विस्मय हुआ करता था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे निर्भीक व्यक्ति के चेले कितने भीरु और सिद्धान्तविहीन हो चुके हैं परन्तु वह अपने पिताजी का विरोध करना उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं समझता था।

इससे पहले वह विद्यार्थी जीवन में था और पिताजी के कामों का विरोध करने में स्वयं को अशक्त पाता था। वह विचार किया करता था कि परिवार और व्यापार के कार्य पिताजी के हैं, उसका अधिकार नहीं कि वह उसमें हस्तक्षेप करे। यह कारखाने का उद्घाटन प्रथम कार्य था, जो वह अपना समझता था और उसका पूर्ण उत्तरदायित्व वह अपना मानता था। इस कारण इस समय वह अपने मन की करना चाहता था। उसने पण्डित नारायणदत्त वेदालंकार एम० एस-सी० को पत्र लिख दिया। उसको उसने उद्घाटन-यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया और उनसे निवेदन किया कि दस दिन के भीतर, जो दिन उचित समझें यहाँ आ जावें। यथासम्भव उनकी भेंट-पूजा और सेवा की जावेगी।

नारायणदत्त को स्मरण हो आया कि एक मूर्ख पिता के बुद्धिमान और निष्ठावान पुत्र से कॉफी पीते हुए रेस्टोराँ में बात हुई थी। इससे उसके मन में समारोह में सम्मिलित होने की रुचि हुई और उसने पत्रोत्तर दे दिया।

इस प्रकार दिन-मुहूर्त्त नियत कर दिया गया और उस हवन में जो उद्घाटन के समय होने वाला था, भूषण ने आर्यसमाज के सदस्यों को सपरिवार आमन्त्रित किया। उसके अतिरिक्त अपने कॉलेज के सहपाठी और अन्य मित्रों को भी इस अवसर पर बुला लिया।

आर्यसमाजी सदस्यों में आर्यसमाज के प्रधान रामनारायण टण्डन और उसके परिवार के सदस्यों को पृथक् निमन्त्रण भेजा गया। इसी प्रकार अन्य समाज के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया गया था।

अपने मित्रों में उसने अंजू को तथा उसके माता-पिता को भी बुलाया था। उसी सायंकाल राज्य के मुख्यमन्त्री और अन्य सरकारी विभागों के अधिकारियों को भी बुलाया था।

इस समारोह का प्रबन्ध देख पण्डित नारायणदत्तजी को जहाँ हर्ष हुआ, वहाँ विस्मय भी हुआ। पण्डितजी उद्घाटन-समारोह से एक दिन पहले ही वहाँ आ गए थे। ग्रोवर के घर में रहते हुए रात को भोजन के समय वे पूछ बैठे, "यह विचार किसका है? पिता का अथवा पुत्र का?"

"कौन-सा विचार?" प्रेमनाथ ग्रोवर ने पूछ लिया।

"यह यज्ञ करने का और इसमें ब्रह्मा बना किसी को बैठाने का। साथ ही कारखाने का उद्घाटन ब्रह्मा द्वारा कराने का।"

"यह विचार तो भूषण का है। मैं तो परमात्मा को मानता नहीं। इस कारण उसकी पूजा में भी विश्वास नहीं करता। फिर भी मैं स्वतन्त्र विचारों का समर्थक हूँ। भूषण ने जब इस आयोजन की इच्छा प्रकट की तो मैंने स्वीकार कर लिया। मेरी अपनी भी एक योजना है। नगर के गण्यमान नागरिकों को मैं सायंकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय-पान के लिए आमन्त्रित कर रहा हूँ।"

"खैर, एक बात बहुत शुभ है कि आप विभिन्न विचारों का समन्वय करने की सामर्थ्य रखते हैं।"

: ६ :

परन्तु भूषण के निमन्त्रण ने दो परिवारों में भारी हलचल मचा दी। कारखाने के उद्घाटन का निमन्त्रण रामनारायण टण्डन, उनकी पत्नी कान्तादेवी और पुत्री सुशीला के नाम पृथक्-पृथक् पहुँचे थे। सुशीला का भाई अभी छोटा था और उसको टण्डन की पत्नी के निमन्त्रण में सम्मिलित कर इस प्रकार लिखा गया था—श्रीमती कान्तादेवी टण्डन, सपरिवार। इस प्रकार सुशीला की छोटी बहिन निर्मला भी आमन्त्रित की गई थी।

जब सुशीला को निमन्त्रण-पत्र मिला तो वह उसको लेकर अपनी माँ के पास जा पहुँची और बोली, "मम्मी ! यह निमन्त्रण आया है।"

"मुझे भी आया है। तुम्हारे डैडी के लिए भी पृथक् आया है।"

"वहाँ जाना चाहिए अथवा नहीं ?"

"रात को तुम्हारे डैडी से राय करूँगी।"

"मैं तो जा रही हूँ।"

"क्या है वहाँ ?"

"मुझको सन्देह हो रहा है कि अनिल ने झूठ बोला था।"

"और लिखित बयान ?"

"मेरा अनुमान है कि वे भी जाली थे।"

"इस सन्देह और अनुमान को तुमने एक बार पहले भी प्रकट किया था, तब भी तुमने इसके लिए कोई प्रमाण नहीं दिया था।"

"सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उनका विवाह अभी भी प्रकट रूप से नहीं हुआ है।"

"यह तो एक नकारात्मक युक्ति है। इसे प्रमाण तो नहीं कहा जा सकता। तुम्हारे डैडी इस युक्ति को प्रमाण नहीं मानते। दूसरी ओर अनिल भी अपनी बात को दोहराता है। एक दिन उसने रात के नौ बजे दोनों को होटल में जाते हुए तुम्हारे डैडी को दिखाया था।"

"परन्तु वह होटल नहीं रैस्टोराँ था।"

"इससे तो सन्देह अधिक सुदृढ़ हो गया था। होटल पर तो पुलिस का नियन्त्रण होता है। रैस्टोराँ पर नहीं। वहाँ सब प्रकार की खराबी की जा सकती है।"

सुशीला निरुत्तर हो गई। उसे चुप देख कान्तादेवी ने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि तुमको अब सागरचन्द से विवाह करना मान लेना चाहिए। लाला मोहनलाल की पत्नी सौभाग्यवती आज भी अपने लड़के के विषय में कहने आई थी। सागरचन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य सरकार में चीफ इंजीनियर है। वह इस समय लाखों में खेलता है।"

सुशीला ने कुछ उत्तर नहीं दिया और तरल नेत्रों से भूमि की ओर देखती रही। माँ ने उसकी पीठ पर हाथ फेर प्यार करते हुए कह दिया, "सुशीला बेटी ! संसार में बहुत बातें हैं जो मनुष्य के वश में नहीं होतीं। एक दैवी शक्ति मनुष्य को ढकेलते हुए अपने मार्ग पर लिए जाती है। फिर किसी व्यक्ति के लिए अन्य कुछ उपाय ही नहीं रह जाता। उसे उस मार्ग पर हँसते-खेलते चलना ही चाहिए।"

"पर माँ ! पुरुषार्थ भी तो कुछ है अथवा नहीं ?" सुशीला ने अपने गालों पर लुढ़कने वाले आँसुओं को पोंछकर कहा।

"यही तो कह रही हूँ। यह ठीक है कि भूषण से सगाई हुई थी, परन्तु देखकर तो मक्खी खाई नहीं जाती। सागरचन्द भूषण से निश्चय ही श्रेष्ठ युवक है।"

"मैं इस उद्घाटन-यज्ञ पर जा रही हूँ और स्वयं जाँच करना चाहती हूँ।"

"क्या जाँच करोगी ?"

"मैं उनसे सीधा प्रश्न करूँगी कि उनका अंजू से कैसा सम्बन्ध है।"

"देखो सुशीला ! यदि वह उसके साथ पति का सम्बन्ध संसार से चोरी रखते हुए निभा रहा है तो वह तुम्हारे सामने भी झूठ बोल देगा। यदि उसका कोई सम्बन्ध नहीं तो वह उसी प्रकार अब भी कह देगा जैसा उसने पीछे कहा था। क्या लाभ होगा इससे ?"

"लाभ-हानि की बात बाद में देखूँगी।"

रात को रामनारायण टण्डन ने भी सुशीला से बात की। उसने कहा, "तुम जा सकती हो। हममें से कोई नहीं जाएगा। मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि किसी निश्चय पर पहुँचने के पूर्व अपने माता-पिता से राय कर लेना। मैं एक बात यह चाहता हूँ कि तुम सागरचन्द को भी निष्पक्ष भाव से देखो। उसको अवसर दो कि वह अपने गुण तुम पर प्रकट कर सके, जिससे तुमको अपना जीवन-साथी निर्वाचित करने में सहायता मिल सके।"

"मैंने इस बात से इन्कार नहीं किया। किन्तु उन महाशय को समय ही नहीं मिलता कि कभी दर्शन दें।"

"मेरी सागरचन्द से बात हुई है। वह कहता था कि वह तुमसे मिलने में इस कारण संकोच करता है कि तुम्हारी माता आर्य स्त्री समाज की प्रधान है। कदाचित् विवाह से पूर्व तुम दोनों का मिलना उनको पसन्द न हो।

"मैंने उसे बताया था कि भूषण तुमसे मिलने आता रहता था और तुम दोनों एक-दूसरे को भलीभाँति जानते हो। इस पर उसने कल चाय के समय यहाँ आने की इच्छा प्रकट की है।"

"तो आने दीजिए। मैं निश्चय करते समय इस सम्बन्ध में भी विचार कर लूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ओर अंजू के घर में भी इससे कम हलचल नहीं थी। अंजू के माता-पिता को पहली बार ही भूषण का किसी प्रकार का सन्देश मिला था। वे भूषण को जानते नहीं थे।

उसी दिन सायंकाल मिस्टर पीटर अपने कार्यालय से लौटा तो अपने और नोरा मैथ्यू के नाम दो सुन्दर निमन्त्रण कार्ड मेज पर पड़े देखे। वह उठाकर पढ़ने लगा। जब उसकी समझ में कुछ नहीं आया तो उसने पत्नी को बुलाकर पूछा, "यह कहाँ से आया है ?"

"एक व्यक्ति मोटर गाड़ी में आया था। वह तीन कार्ड दे गया। दो तो ये हैं। एक अंजू के नाम था। अंजू का कार्ड उसकी मेज पर पड़ा है।"

"परन्तु वह तो ऐसी भाषा में है जिसे मैं पढ़ नहीं सकता।"

"अंजू आ जाय। उससे पढ़वाऊँगी। उसे हिन्दी आती है।"

"कोई खर दिमाग आदमी मालूम देता है।"

जब अंजू सायंकाल साढ़े छः बजे के लगभग आई तो उसका पिता अपना कार्ड लेकर उसके पास जा पहुँचा। उसने कहा, "अंजू ! जरा पढ़ना तो यह किसका है ?"

अंजू अपनी मेज पर रखे अपने नाम के कार्ड को पढ़ रही थी। उसने पिता के हाथ में भी कार्ड देखा तो पूछा, "यह कार्ड आप और मम्मी दोनों के लिए है ?"

"नहीं, उसे पृथक् आया है।"

"पापा ! मेरे एक सहपाठी हैं। उसने प्लास्टिक का सामान बनाने का कारखाना लगाया है। उसकी अगले रविवार ओंपनिंग सैरेमनी है। उस अवसर पर आपको बुलाया गया है।"

"हम क्या करेंगे जाकर ?"

"यह ओपनिंग सैरेमनी हिन्दू तरीके से की जा रही है। जरा चलकर देखनी चाहिए।"

"मैं इसमें कोई लाभ नहीं समझता। कहाँ है इसकी फैक्टरी ?"

"फैक्टरी एरिया में है।"

"अर्थात् यहाँ से पाँच-छः मील दूर।"

"हाँ, मगर वह अपनी गाड़ी भेज देगा।"

"ओह ! भला किसलिए ?"

"उसने विचार किया होगा कि कदाचित् आपको इतनी दूर आने के लिए गाड़ी न मिले।"

"हमको या तुमको ?"

"एक ही बात है पापा ! वे मेरे मित्र भी हैं !"

"क्या आयु है उसकी ?"

"मेरा सहपाठी रहा है तो लगभग मेरी ही आयु का होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखने में कैसा है ?"

"आप चलिए और स्वयं देख लीजिए। उसको आप भी पसन्द करेंगे ?"

"तो तुमने पसन्द कर लिया है ?"

अंजू इसका अर्थ समझी तो मौन हो गई। वह भूषण के साथ अपने सम्बन्धों के विषय में बताना नहीं चाहती थी। इस समय तक उसकी माँ भी वहाँ आकर कार्ड के विषय में वार्तालाप सुन रही थी। उसने अंजू को चुप और उसके लाल हुए मुख को देखा तो बोली, "हमें तुम्हारे विवाह में आपत्ति नहीं। परन्तु एक बात स्मरण रखनी चाहिए कि विवाह गिरजाघर में होगा।"

"पर मम्मी ! तुम स्वयं तो वहाँ कभी जाती नहीं।"

"फिर भी मेरा विवाह वहीं पर हुआ था। देखो अंजू ! हमारा कोई बेटा नहीं। बेटियाँ ही हैं और हम अपना वंश उनसे ही चला सकते हैं।"

"माँ ! अभी तो कोई ऐसी बात है नहीं। हमने कभी इस विषय पर बात भी नहीं की है। यद्यपि मैं उसके लिए अनुराग अनुभव करती हूँ परन्तु अभी तक अपने मन में कुछ भी निर्णय नहीं कर सकी। अब इन कार्डों के आने से मैं यह समझी हूँ कि उसके मन में भी मेरे लिए स्थान बन रहा है।"

उसके पिता ने कहा, "जाहिलों की भाषा में भेजा गया निमन्त्रण तो यह प्रकट करता है कि कोई बहुत ही अतीत काल का व्यक्ति है।"

एकाएक पीटर की आँखों में चमक आ गई। वह पूछने लगा, "यह कोई आर्य-समाजी तो नहीं ?"

अंजू जानती थी कि वह आर्यसमाजी है। परन्तु उसने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। उसकी माँ ने पूछा, "तुम्हारा इससे कब का परिचय है ?"

"जब मैं कॉलेज में भरती हुई थी।"

"और अनुराग कब से अनुभव कर रही हो ?

"कोई निश्चित तिथि तो बता नहीं सकती। फिर भी यह मेरे कॉलेज की पढ़ाई छोड़ देने के बहुत बाद में पता चला था। पहली सर्विस इसके द्वारा ही मिली थी।"

"इसको तो दो वर्ष से अधिक हो गए हैं ?"

"हाँ।"

"और इतने लम्बे काल में तुमने इस विषय में कोई बात नहीं की ?"

"मुझे इस प्रकार की बात कहते लज्जा आती है।"

नोरा ने कह दिया, "मैं इस अवसर पर जाऊँगी और उससे सम्पर्क बनाकर तुम्हारे कार्य में सहायक बनूँगी।"

अंजू चुप रही। वह समझती थी कि माँ बात बिगाड़ सकती है। परन्तु वह इन्कार कैसे कर सकती थी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १० :

निश्चित दिन प्रातः छः बजे भूषण की गाड़ी अंजू और उसके माता-पिता को लेने आ गई। निमन्त्रण में लिखा था कि यज्ञ छः बजे आरम्भ होगा और नौ बजे समाप्त होगा। सवा नौ बजे कारखाने का उद्घाटन होगा और फिर अल्पाहार होगा। अंजू ने यह सब कार्यक्रम अपने माता-पिता को बता रखा था और कह दिया था कि उनको लेने के लिए गाड़ी छः बजे से पहले आएगी।

बहुत जल्दी मचाने पर अंजू के माता-पिता सात बजे तक तैयार हो पाए। साढ़े सात बजे ये लोग फैक्टरी पर पहुँच सके और जब ये लोग वहाँ पहुँचे तो उसी समय सुशीला अकेली अपने पिता की गाड़ी से वहाँ पहुँच गई। वह भूषण की गाड़ी को पहचानती थी। उसमें अंजू को प्रौढ़ावस्था के स्त्री-पुरुष के साथ आते देख स्तब्ध रह गई। वह समझ गई कि अंजू और उसके माता-पिता को लाने के लिए भूषण की गाड़ी का जाना विशेष अर्थ का सूचक है।

अंजू के माता-पिता गाड़ी से उतर ही रहे थे, अंजू उनसे पहले ही गाड़ी से बाहर निकलकर खड़ी हो गई थी। उसने भी सुशीला को देखा और जब दोनों की आँखें मिलीं तो अंजू ने हाथ जोड़कर नमस्कार कर दिया। उसकी एक-दो बार सुशीला से ठाकुरदास के कार्यालय में भेंट और बातचीत हुई थी।

सुशीला अभी अपने विस्मय को पार नहीं कर सकी थी। अतः उसने अंजू की नमस्कार का कोई उत्तर नहीं दिया! अंजू ने उसे परेशानी में पड़ी देखा तो उसके समीप आकर बोली, "सुशीलाजी! मैं अंजू हूँ। कदाचित् आप भूल गई हैं?"

"नहीं।" सुशीला ने सचेत और सतर्क होते हुए कहा, "नहीं, मैं भूली नहीं। मैं विचार कर रही थी कि वह बात ठीक ही थी।"

"क्या ठीक थी? आइए, भीतर आइए। क्या किसी की प्रतीक्षा कर रही हैं यहाँ?"

"नहीं।...हाँ। पर तुम यह बताओ कि तुम्हारा मिस्टर ग्रोवर से कब विवाह हुआ है?"

"कौन मिस्टर ग्रोवर!" अंजू को उसके विस्मय और प्रश्न का अर्थ समझ में आ गया। इस कारण उसने गम्भीर होकर कह दिया, "मेरा अभी विवाह नहीं हुआ है?"

"क्यों?...नहीं। मेरा मतलब है कि यह गाड़ी...यह साथ कौन हैं?"

अंजू समझ रही थी कि सुशीला घबरा रही है। वह उसे भूषण की गाड़ी में देख समझी है कि वह भूषण की पत्नी बन गई है। वह मन-ही-मन विचार करने लगी कि यह लड़की बहुत ही सरलचित्त है। सरलचित्त का अभिप्राय बुद्धू भी होता है। अंजू सोचने लगी कि वह क्या है?

अंजू ने सुशीला की बाँह-में-बाँह डाली और उसको यज्ञशाला की ओर ले जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कहा, "सुशीला बहिन ! बिना विवाह किए भी गाड़ी सवारी के लिए मिल सकती है। इन दोनों बातों का भला परस्पर क्या सम्बन्ध हो सकता है ?"

"मुझे तुम्हारे विवाह की चिन्ता नहीं। मैं तो कुछ अन्य बात का विचार कर रही थी।"

अंजू और सुशीला भूषण और उसके माता-पिता के पीछे जाकर बैठ गईं। पचास के लगभग लोग एकत्रित थे। सामने और दाएँ-बाएँ पण्डित लोग बैठे हुए वेद-मन्त्रों से आहुति डलवा रहे थे। अंजू ने देखा कि पण्डितों में एक उच्चासन पर वह आदमी बैठा था जो एक दिन भूषण को ईसाई और मुसलमानों पर देशद्रोह की भावना पैदा करने का दोषारोपण कर रहा था। उस समय तो उसकी समझ में कुछ इस प्रकार आया था कि वह व्यक्ति असत्य भाषण कर रहा है, परन्तु अब आठ मास के लगभग मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में काम करते हुए वह भलीभाँति समझ गई थी कि नये बने हुए ईसाइयों की, किस प्रकार देश के कामों से अरुचि उत्पन्न की जा रही है। वहाँ एक सामान्य घोष था कि हिन्दू कौम मर रही है और डूबती नौका में बैठना भयावह है। इसके साथ ही उनको सदा अंग्रेजी राज्य की श्रेष्ठता का बखान सुनाया जाता था। यह कहा जाता था कि अंग्रेजों के काल में ही उन गरीबों की परवरिश का विचार पैदा हुआ और अंग्रेजी सरकार के भय से स्वराज्य सरकार उनके साथ न्याय कर रही है। अंजू इसे सर्वथा असत्य मानती थी।

वह मन-ही-मन विचार कर रही थी, कदाचित् सुशीला देवी की पुनः भूषण से सुलह हो गई है अथवा हो रही है। इसी कारण उसने उसको भूषण की गाड़ी से उतरते देख कहा था—"तो यह सत्य था।" अर्थात् उसकी सूचना कि उसका भूषण से विवाह हो चुका है, सत्य है।

अंजू समझती थी कि उसने उसका भ्रम निवारण कर दिया है। वह सुशीला के मुख पर सन्तोष और प्रसन्नता की झलक देख रही थी। इससे उसे अपने किये पर पश्चात्ताप तो हुआ, परन्तु वह यह समझती थी कि भ्रम निवारण कर उसने मानयुक्त व्यवहार अपनाया है। इससे वह स्वयं को धोखा न देने वाली सिद्ध कर सकी है।

यज्ञ हो रहा था। अंजू और सुशीला दोनों अपने-अपने विचारों में लीन थीं। सुशीला समझ रही थी कि अंजू ने यह कहकर कि विवाह के बिना भी मोटर गाड़ी चढ़ने को मिल सकती है, यह सिद्ध कर लिया है कि वह वेश्या है। बिना विवाह के वह भूषण से इतनी घनिष्ठता उत्पन्न कर सकी है कि मोटर और कदाचित् अन्य भी कई सुविधाएँ प्राप्त कर रही है। फिर भी न तो वह निराश थी, न ही क्रुद्ध। वह समझ रही थी कि भूषण से विवाही जाती हुई समय पर बच गई है।

यज्ञ समाप्त हुआ और पण्डित नारायणदत्त ने कारखाने का द्वार खोला और उसी समय पचास के लगभग कर्मचारी पण्डितजी के पीछे कारखाने में प्रवेश कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। उन कर्मचारियों में ग्रोवर, पिता-पुत्र और प्रमिला देवी सबसे आगे थे।

भूषण पण्डितजी को लेकर अपने कार्यालय में चला गया और कर्मचारी अपने-अपने काम में लीन हो गए। माल बनने लगा। उद्घाटन-यज्ञ पर आये लोग कर्मचारियों को कारखाना चलाते देखने लगे।

आधा घण्टा-भर कार्य चलता रहा। तदुपरान्त उस दिन सब कर्मचारियों को मिठाई देकर विदा कर दिया गया। बाद में अभ्यागतों को जलपान कराया गया। कारखाने के साथ एक हॉल था। वह हॉल कर्मचारियों के लिए पुस्तकालय और मनोरंजन का स्थान बनने वाला था। वहीं पर मेज-कुर्सी लगी थीं। वहाँ सब आये हुए लोगों के लिए चाय-पान का प्रबन्ध था।

भूषण ने अंजू और सुशीला को इकट्ठे यज्ञशाला में प्रवेश करते देखा था। उसने दोनों में किसी प्रकार का वार्त्तालाप हो चुकने का अनुमान लगाया था। वार्त्तालाप की प्रतिक्रिया को जानने के लिए वह उत्सुक था। जब कार्यालय में वह अपनी कलम से दो सहस्र रुपये के प्रथम ऑर्डर रजिस्टर में दर्ज कर चुका तो वहाँ से उठा और अभ्यागतों को अपना चलता हुआ कारखाना दिखाने लगा। इस समय उसने अनुभव किया कि अंजू की माता उसके साथ है। उसे कुछ ऐसा अनुभव हो रहा था कि वह उससे बात करने के लिए उत्सुक है। परन्तु वह अन्य आये हुए प्रतिष्ठित अभ्यागतों को समझाने में लीन था।

पण्डित नारायणदत्त प्रेमनाथ ग्रोवर से बातें करता हुआ पृथक् खड़ा था। अंजू अपने पिता के साथ एक ओर खड़ी थी। उसके समीप ही सुशीला खड़ी अपनी एक सहेली से बातें कर रही थी।

भूषण को जब कुछ अवकाश मिला तो अंजू की माँ ने भूषण से कहा, "मिस्टर भूषण ! मैं तुमसे पृथक् में कुछ बातें करने की इच्छा करती हूँ।"

"मम्मी ! इस कारखाने के विषय में अथवा किसी अन्य विषय में ?"

"कुछ अंजू के विषय में ?"

"तो ऐसा करिए, आज रात का डिनर मेरे साथ मिनर्वा में करिए। वहाँ पर मैं अंजू को आमन्त्रित कर रहा हूँ। यहाँ पृथक्क्ता नहीं मिलेगी। न ही समय होगा। वहाँ हम निश्चिन्त होकर बात कर सकेंगे।"

"अच्छा, यही ठीक रहेगा।"

इस प्रकार भूषण ने अंजू की माँ को टाल दिया। जब कारखाने के कर्मचारियों को मिठाई देकर विदा किया जा रहा था तो उस समय अंजू पण्डित नारायणदत्त से बातें कर रही थी और सुशीला बातें कर रही थी उसके पिता से। यह उसके लिए विस्मयकारक ही था। वह समझने लगा कि आज सुशीला के साथ उसके अनिश्चित सम्बन्धों की गाँठ खुलने लगी है।

सुशीला से प्रेमनाथ ने ही बात आरम्भ की थी। वह अपनी एक सहेली से बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर चुकी थी और वहाँ से चले जाने के विषय में विचार कर रही थी। वह चाहती थी कि भूषण की माँ को नमस्ते कहकर चल दे। परन्तु प्रमिलादेवी उस समय अन्य महिलाओं से बातों में व्यस्त थीं।

प्रेमनाथ ने सुशीला को अकेले में खड़ी देखा तो उसके पास जाकर पूछने लगा, "सुशीला बेटी ! तुम्हारे माता-पिता नहीं आये ?"

"वे आपसे नाराज हैं।"

"ओह ! मुझे तो ज्ञात नहीं था।

"परन्तु बेटी, तुम आई हो। इसका अर्थ यह हुआ कि तुम हमसे नाराज नहीं हो।"

"नहीं थी। परन्तु आज इस यज्ञ से असंतुष्ट जा रही हूँ।"

"हाँ, पूर्ण संतोष तो मुझको भी नहीं है। आज तो तुमको भूषण के साथ यज्ञ-वेदी पर बैठी होना चाहिए था।......"

"परन्तु पिताजी ! आपके सुपुत्र ने इस स्थान को भरने के लिए किसी अन्य को तैयार कर लिया प्रतीत होता है।"

"सत्य सुशीला ! तुम तो आज बहुत नई-नई बातें बता रही हो। मुझे इस बात का भी ज्ञान नहीं है। अभी कल तक तो वह स्थान तुम्हारे लिए रिक्त रखा होने की बात कर रहा था।"

"वह सब धोखा था।"

"अच्छा, पता करूँगा।"

"उस औरत से पता कर सकते हैं।" सुशीला ने नोरा की ओर संकेत करके बता दिया जो उस समय भूषण से बात कर रही थी।

प्रेमनाथ ने पूछ लिया, "यह कौन है, मैं तो जानता नहीं ?"

"यह एक ईसाई स्त्री है। इसकी लड़की पण्डित नारायणदत्तजी से बातें कर रही है। मेरा तो विचार है कि आपकी जानकारी के बिना विवाह हो चुका है।"

प्रेमनाथ के लिए यह समाचार अप्रत्याशित ही था। भूषण से कई बार बात हुई थी कि उसका विवाह हो जाना चाहिए। वह सदा यही उत्तर देता था कि वह सुशीला से वचनबद्ध है। वह अपनी ओर से वचनभंग नहीं करेगा। जब सुशीला का विवाह हो चुकेगा तब ही वह अपने विवाह के विषय में विचार करेगा।

सुशीला ने यह सूचना देकर दो बातें कीं। एक तो रामनारायण टण्डन और उसके परिवार वालों के नाराज होने का कारण बता दिया और दूसरे उसने भूषण की सत्यता को एक झूठ और फरेब प्रकट किया।

प्रेमनाथ ने अब अंजू, जो नारायणदत्त से बातें कर रही थी, और सुशीला में मुकाबिला करना आरम्भ कर दिया। अंजू सुशीला से तीन-चार इंच ऊँची थी। वह गौर-वर्णीय और सुशीला से अधिक सुन्दर रूपरेखा वाली थी। ये सब सुशीला की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात के सत्य होने की सम्भावना प्रकट करते थे। फिर भी वह भूषण के इतने नालायक होने पर विश्वास नहीं करता था। वह यह सोच भी नहीं सकता था कि इतनी बात वह अपने माता-पिता से इतने दिन के लिए चोरी रख सका है।

उसने गम्भीर भाव बनाकर कहा, "सुशीला! तुम मेरी तो बेटी ही हो। यद्यपि तुम्हारे इस समाचार पर मुझे अभी भी विश्वास नहीं आ रहा। खैर, मैं जाँच करूँगा। परन्तु तुम तो सब अवस्थाओं में मेरी बेटी ही रहोगी। तुम भूषण की माँ से मिलने के लिए तो आ ही सकती हो।"

इस समय प्रमिला सुशीला को अपने पति से बातें करते देख वहाँ आ गई। वह उसको पृथक् में ले जाकर उसका सुख-समाचार पूछने लगी। एकाएक प्रेमनाथ ने अंजू से स्वयं बात करने का निश्चय कर लिया। और वह वहाँ जा पहुँचा जहाँ नारायणदत्त अंजू से बातें कर रहा था।

अंजू ने मिस्टर ग्रोवर को आया देख हाथ जोड़कर नमस्कार कर दिया। प्रेमनाथ ने नारायणदत्त से पूछा, "इनका परिचय क्या है?"

नारायणदत्त कुछ अधिक तो जानता नहीं था। वह अंजू से सार्वजनिक विषयों पर ही बातचीत कर रहा था। वह अभी विचार ही कर रहा था कि अंजू ने स्वयं उत्तर दे दिया, "आपको सुशीला बहिन ने मेरे विषय में कुछ तो बताया प्रतीत होता है। वह मेरी ओर देखकर आपसे बातें कर रही थीं।"

"उसने तो तुम्हारे विषय में बहुत बुरी बात बताई है।"

"क्या कोई न बताने योग्य बात है? पिताजी! मनुष्य भ्रम में भी तो फँस सकता है। मैं तो स्वयं में कोई भी बुरी बात नहीं देखती।"

"यह अपने-अपने दृष्टिकोण से होता है। एक ही बात को दो मनुष्य भिन्न-भिन्न रंग में देखते हैं।"

"पर क्यों? वास्तविकता भला कभी छिप सकती है?"

अब नारायणदत्त ने मुस्कराते हुए कह दिया, "उसका कारण यह है कि दोनों की आँखों पर रंगीन चश्मा चढ़ा होता है। चश्मों का रंग भिन्न-भिन्न होने से दोनों वस्तु के रंग में अन्तर देखते हैं।"

"तो वे चश्मा उतारकर क्यों नहीं देखते?" अंजू ने कुछ विक्षुब्ध भाव से कहा।

"क्योंकि दोनों की दृष्टि दुर्बल होने से चश्मा दोनों को लगाना होता है। और दोनों भिन्न-भिन्न दुकानदारों से चश्मा बनवाने चल पड़ते हैं। वे दुकानदार उनको अपने-अपने मनपसन्द रंग के काँच का चश्मा बना देते हैं। दोनों देखने तो लगते हैं परन्तु दोनों को एक ही वस्तु भिन्न-भिन्न रंग की दिखाई देने लगती है।"

इस समय तक लोग खाने-पीने के लिए हॉल में जाने लगे थे।

प्रेमनाथ ने बात को समाप्त करते हुए कहा, "देखो···क्या नाम बताया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने अपना ? मैं तुमसे एक अत्यावश्यक विषय पर बातचीत करना चाहता हूँ। यदि तुम्हारे पास समय हो तो इस चाय के उपरान्त तुम हमारे घर पर चलो।"

अंजू विचारमग्न खाने की मेज पर अपनी माँ के समीप जाकर बैठ गई।

: ११ :

सुशीला बिना खाए-पीए लौट जाना चाहती थी। परन्तु प्रमिला ने बाँह पकड़-कर उसे घसीटा और अपने साथ खाने की मेज पर ले गई। वे वहीं जाकर बैठ गईं, जहाँ अंजू अपनी माँ के साथ बैठी थी। प्रमिला तो यह समझती थी कि अंजू भूषण की कोई सहपाठिन होगी। वह उससे परिचित नहीं थी। सुशीला तो अंजू को मन से निकाल चुकी थी। वह एक दिन पहले सागरचन्द से जब वह उसके घर चाय पीने आया था विवाह कर लेने का मन में संकल्प कर चुकी थी। यद्यपि उसने सागरचन्द को बताया नहीं था, फिर भी वह उसे कह चुकी थी कि विवाह के विषय में वह उसके माता-पिता से बात करे। आज तो वह भूषण के विषय में यह जानने के विचार से आई थी कि जब उसका विवाह हो चुका है तो घोषणा क्यों नहीं हुई ?

अभी तक वह समझी थी कि अंजू का विवाह तो नहीं हुआ है परन्तु दोनों अविवाहित पति-पत्नी हैं। फिर भी वह जिस बात को जानने आई थी वह तो भूषण से ही जान सकती थी। भूषण की माता से तो वह औपचारिक बात ही करती रही। वह चाहती थी कि भूषण से एकान्त में मिले परन्तु भूषण इस समय अपने पिता और पण्डित नारायणदत्त के साथ बैठा चाय पीने लगा था।

कुछ बात करने के लिए और प्रमिलादेवी को उतना ही बता देने के लिए जितना वह भूषण के पिता को बता चुकी थी, उसने कहा, "माताजी, आप जानती हैं कि यह आपकी बगल में कौन लड़की बैठी है ?"

प्रमिला ने समझा कि सुशीला इस लड़की का परिचय प्राप्त करना चाहती है। इस कारण उसने साथ बैठी अंजू की ओर देख कह दिया, "बेटी ! यह मेरी बेटी तुम्हारा परिचय जानना चाहती है।"

अंजू हँस पड़ी। वह बोली, "माताजी, हम दोनों सहेली हैं। परन्तु उन पण्डितजी के···" उसने भूषण के साथ बैठे पण्डित नारायणदत्त की ओर संकेत कर कह दिया, "कथानुसार हमारी आँखों पर भिन्न-भिन्न रंग के चश्मे चढ़े हुए हैं। इस कारण सहेली होते हुए भी एक-दूसरे को ठीक-ठीक ढंग से नहीं जान सकीं।"

प्रमिला इस कथन का अर्थ न समझती हुई सुशीला की ओर देखकर पूछने लगी, "तो तुम सहेली हो।"

"मैं इसे जानती हूँ।" सुशीला ने कहा, "मैं तो पूछ रही थी कि आप भी जानती हैं अथवा नहीं। मैं इसको कैसे जानती हूँ, वह सब मैंने पिताजी को बता दिया है। आप उनसे पूछ लीजिएगा।"

अंजू ने मुस्कराते हुए कहा, "पिताजी ने आज मुझे अपने साथ घर ले जाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमंत्रण दिया है। मैं माताजी को अपना परिचय स्वयं ही वहाँ चलकर दे लूँगी।"

"तब तो तुम कुछ विशेष लड़की प्रतीत होती हो?" प्रमिला ने बात टालते हुए सुशीला को कह दिया, "तुमने अपने रंगीन चश्मे में देखा हुआ भूषण के पिताजी को बता दिया है। इसके रंगीन चश्मे से देखा हुआ मैं घर पर चलकर पता कर लूँगी।

"देखो सुशीला! आज तुम्हारे दर्शन कई मास के उपरांत हुए हैं और तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारे दर्शन इतनी देर तक क्यों नहीं हुए और फिर आज एकाएक क्यों हुए हैं। साथ ही तुम्हारे माता-पिताजी क्यों नहीं आये?"

"मैंने सब बात पिताजी को बता दी हैं।"

"अच्छी बात है। अब बताओ फिर कब आओगी?"

"यह मैं आज इस समय नहीं बता सकती। मैं भूषणजी से मिलने के लिए आई थी, परन्तु उनसे पृथक् में बात नहीं हो सकी।"

"तो मैं पृथक् में भेंट करवा दूँ? तुम मेरे साथ हमारे घर चलो और मध्याह्न का भोजन वहीं करना।"

"नहीं माताजी! घर तो ये जा रही हैं। मैं आज नहीं, फिर कभी आऊँगी। फिर भी मैं भूषणजी से एक-दो मिनट बात करना चाहूँगी। आशा करती हूँ कि मैं उनसे इतना समय तो पा ही जाऊँगी।"

"देखो सुशीला बेटी! जल्दी-जल्दी में कुछ होगा नहीं। न तुम समझा सकोगी और न स्वयं कुछ समझ सकोगी। मेरा कहा मानो। आज तुम हमारे घर चलो, मैं निमन्त्रण देती हूँ और फिर ऐसी बातों में टाल-मटोल करना ठीक नहीं। एक बात और है। यदि तुम अपनी बात भली-भाँति न समझा सकीं तो मैं समझाने-समझने में तुम्हारी सहायता कर दूँगी।"

सुशीला अभी बता नहीं रही थी कि उसके मन का संकल्प तो बदल चुका है। वह तो अपने इस नये संकल्प में कारण ढूँढ़ने आई थी। वह अपनी मनःस्थिति के इस आत्मविश्लेषण से भौंचक्की हो खड़ी रह गई। वह अपने मन में विचार कर रही थी कि क्या वह अपने-आपसे वंचना नहीं खेल रही।

वह मन में एक कल्पना बना उसके आधार पर रूठी थी। उस कल्पना का आधार अनिल का वक्तव्य था। पिछले कई महीनों में अनिल के कुछ अन्य दुर्गुण प्रकट होने पर वह अनिल पर अविश्वास करती हुई भूषण के व्यवहार पर पुनः विचार करने लगी थी। विचार करते हुए उसका ध्यान भूषण के अभी तक विवाह न करने पर चला गया। वह अनिल के लांछनों पर सन्देह करने लगी थी। इसी सन्दर्भ में उसने इस उद्घाटन-समारोह पर आने का निश्चय किया था। हालाँकि उसके माता-पिता उसको एक नये प्राणी से सम्बन्ध बनाने पर विचार करने के लिए कहने लगे थे। पिछले दिन वह पिताजी के आमन्त्रण पर चाय के समय पर आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वह एक उच्च सरकारी अधिकारी है, बहुत अधिक वेतन पाता है और ऊपर से भी अधिक आय कर रहा है, शरीर से भूषण की तुलना में इक्कीस ही है, बहुत ही फैशनेबल कपड़े पहनता है और बहुत ही मीठी-मीठी बातें करता है। खूब हँसता है और हँसाता है।

उसी सायंकाल वह उसे सिनेमा दिखाने के लिए ले गया। इन चार घंटों की संगति में ही वह उसके मस्तिष्क पर छा गया था। दोनों में स्पर्श भी हुआ था और एक-दूसरे की बाँह में बाँह डाले हुए वे नगर के क्लब में गए थे। वहाँ उसने सह-नृत्य का प्रथम पाठ पढ़ाया था। इसी के उपरान्त उसने अपने माता-पिता से मिलने के लिए कहा था और उसे आशा दिलाई थी कि इस बार माता-पिता का उत्तर दूसरा होगा।

फिर भी वह इस उद्घाटन-यज्ञ के निमन्त्रण से लाभ उठाने यहाँ आई थी। यहाँ आने की प्रथम घटना तो अंजू का भूषण की मोटर में वहाँ आना था। वह उसे अपने सागरचन्द के विषय में संकल्प का आधार मालूम हुआ। वह समझ गई थी कि भूषण से सम्बन्ध-विच्छेद का कारण प्रकट हो गया है। मन की इसी अवस्था में उसने प्रेमनाथ के सम्मुख अंजू की निन्दा की थी। और अब प्रमिला देवी से संकेत में कह रही थी।

परन्तु भूषण के माता-पिता के उसे निमन्त्रण देने पर वह अपने पूर्ण आयोजन पर सन्देह करने लगी थी। वह पुनः अनिल के चरित्र से आरम्भ कर विचार कर रही थी। पिछले सात-आठ महीने की कल्पना का आधार ही मिथ्या है अथवा कल्पना पर निर्मित भवन निराधार है।

इस समय प्रमिला देवी, अंजू तथा अन्य अभ्यागत खाने-पीने में लगे थे। सुशीला खाने का बहाना करती हुई अपने विचारों का ताना-बाना ठीक कर रही थी। अब वह विचार करती थी कि भूषण की माँ के निमन्त्रण को ठुकराए कैसे? साथ ही वह अब इस सम्भावना पर विचार करने लगी थी कि यदि भूषण के विषय में उसकी धारणा गलत सिद्ध हुई तो क्या करेगी। सागरचन्द को वह किस प्रकार मुख दिखाएगी।"

प्रमिला ने उसे सामने रखे काजू से खेलते देखा तो कहने लगी, "सुशीला! खाओ न। इसे देख क्या रही हो?"

सुशीला को चेतना हुई और वह विचार-क्षेत्र से निकल वस्तुस्थिति से दो-चार होने लगी। उसने कह दिया, "मैं माताजी से कहकर आई थी कि ब्रेक फास्ट घर पर करूँगी।"

"अब तो तुम हमारे घर पर चल रही हो न? वहाँ चलकर टेलीफोन कर दूँगी कि तुम मध्याह्न का भोजन हमारे साथ ही करोगी।"

"नहीं माताजी, मैं जा रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने माता-पिता के कोप से डरती हो न ? हम तुम्हारी ओर से उनसे क्षमा माँग लेंगे। वास्तव में हमसे उनकी नाराजगी का अभी तक कोई भी कारण हमारी समझ में नहीं आया। तुम्हारे बहाने से हम उनसे इस विषय में भी बात कर लेंगे।

"सुशीला ! बूढ़ों के शुष्क निरर्थक व्यवहार में अर्थ और रस भरने वाली नई पीढ़ी ही होती है। तुम लोग हम दोनों के परिवारों में पुनः मैत्री स्थापित कर सको, तो मैं अपना अहोभाग्य मानूँगी।"

यह तो एक प्रकार की प्रार्थना ही थी। इसे वह अस्वीकार तो नहीं कर सकी परन्तु मानने में वही सागरचन्द के साथ बातचीत सामने आ खड़ी होती थी। पाँव से सिर तक पूर्ण अंग्रेजी वेश में सागरचन्द और कुर्ता, पायजामा और चप्पल में भूषण की तुलना होने लगी। सागरचन्द के हँसी-मजाक की भूषण के तत्त्वज्ञान की बातों से तुलना होने लगी। सागरचन्द की क्लब लाइफ और भूषण के आर्यसमाज के अधिवेशनों में रुचिपूर्वक भाग को देखा जाने लगा।

लोग खा-पीकर उठने लगे। प्रमिला ने देखा कि सुशीला ने कुछ भी नहीं खाया। वह अनुमान लगाने लगी थी कि सुशीला के माता-पिता ही विवाह में मुख्य बाधा हैं। इससे वह सुशीला पर दया अनुभव करने लगी। वह समझ रही थी कि कदाचित् अपने माता-पिता निर्मित दूषित वातावरण से निकलने में किसी का आश्रय ढूंढ़ रही है। इस कारण वह इसमें सहायक होना चाहती थी।

अब प्रमिला ने मेज से उठते हुए कहा, "सुशीला ! चलो तुमने तो कुछ भी नहीं खाया। अब तुम घर पर चलकर खाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

भूषण की मोटर में अंजू के माता-पिता को वापस भेज दिया गया। जाने से पूर्व अंजू की माँ नोरा ने भूषण से कहा, "मैं रात सवा नौ बजे मिनर्वा में पहुँच जाऊँगी।"

"धन्यवाद।" भूषण ने कहा और ड्राइवर को कह दिया, "इनको छोड़कर सीधे घर पहुँच जाना।"

वह विचार कर रहा था कि वह स्वयं पिताजी की गाड़ी में घर चला जाएगा। उनके पास छोटी फिएट गाड़ी थी। जब भूषण वहाँ पहुँचा तो सुशीला और अंजू प्रमिला के साथ पहले ही गाड़ी में बैठी थीं। पण्डित नारायणदत्त आगे ड्राइवर के पास बैठे थे। प्रेमनाथ पीछे घुसने की बात सोच रहा था कि इतने में भूषण आ गया। वह गाड़ी लदी हुई देख परेशानी अनुभव करता हुआ खड़ा रह गया। प्रेमनाथ ने उससे पूछा, "तुम्हारी गाड़ी कहाँ है?"

"वह अंजू देवी के माता-पिता को छोड़ने के लिए गई है।"

"तो लौटकर यहाँ आयेगी न?"

"नहीं, मैंने उसे घर पहुँचने के लिए कह दिया है।"

"तो इस गाड़ी को लौटकर हमें ले जाने के लिए कह देते हैं?"

"मुझे ज्ञात नहीं था कि आप इनको भी साथ ले जा रहे हैं। अंजू के विषय में तो इनकी माताजी ने बताया था परन्तु···।"

"तो मैं उतर जाती हूँ।" सुशीला ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

प्रेमनाथ ने कहा, "नहीं, मैं पण्डितजी के पास बैठ जाता हूँ और भूषण अपनी माताजी के पास बैठ जाएगा।"

प्रमिला सुशीला और भूषण में बात बनाने का यत्न कर रही थी। वह बात बिगड़ती देख सुशीला को अपनी गोद में बैठा भूषण को भीतर आने का निमंत्रण देने लगी।

प्रेमनाथ ने बात बनती देख भूषण को गाड़ी के भीतर ढकेल दिया और वह स्वयं घुसकर पण्डित नारायणदत्त के साथ अगली सीट पर बैठ गया। गाड़ी चल पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण हँसने लगा। माँ ने उसे हँसते देख पूछ लिया, "क्यों भूषण! किसलिए हँस रहे हो?"

"माँजी! आप सुशीला को 'स्मगल' (चोरी) करके ले जा रही हैं।"

"नहीं भूषण, यह स्मगलिंग नहीं है। हाँ इसे हरण कहना हो तो कह सकते हैं। यह क्षत्रियों के लिए क्षम्य माना गया है।"

सुशीला बोली, "आजकल के काल में यह अपराध है।"

"यह अपराध तो तब होगा जब तुम कचहरी में मेरे विरुद्ध दावा करोगी। बताओ ऐसा करोगी?"

"दावा तो मेरे माता-पिता करेंगे।"

"और तुम कह दोगी कि तुम बालिग हो, तुम्हारा अपहरण रजामन्दी से हुआ है।"

"तो क्या यह अपहरण होगा?"

"यह तो लोगों के समझने की बात है। हम तो अपहरण ही मानेंगे। तुम यह भी समझ सकती हो कि स्वेच्छा से ससुराल गमन कर रही हो।"

सुशीला के मस्तिष्क में पुन: सागरचन्द की स्मृति उभरने लगी। उसकी समझ में आ रहा था कि वह साथ बैठे युवक से अधिक सहिष्णु, सहृदय और सहानुभूति-पूर्ण है। यह तो शीतल, शुष्क, तर्क करने वाला और कंजूस है।

वह पुन: अपने मन में इनके साथ आने को अनुचित समझने लगी। उसकी दृष्टि अंजू की ओर गई। अंजू भी सबके साथ हँस रही थी।

"क्यों अंजू जी! तुम क्या समझ रही हो? यह अपहरण है अथवा स्वेच्छा से ससुराल गमन।" सुशीला ने अंजू को मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहन दे दिया।

सब अंजू का उत्तर सुनने के लिए हँसना बन्द कर सतर्क हो गए। अंजू ने विचार कर कहा, "मैं तो दोनों में अन्तर नहीं समझी। यह तो वही पण्डितजी वाली बात है। जैसा-जैसा जिसकी आँखों पर चश्मा होगा, वैसा-वैसा ही उसको दिखाई देगा।"

"तो यह अपहरण भी है और ससुराल गमन भी?" प्रेमनाथ ने अगली सीट पर से कह दिया।

"जी नहीं।" सुशीला ने कहा, "मैं समझती हूँ कि दोनों में से कुछ भी नहीं। मैं माताजी के घर मध्याह्न का भोजन करने के लिए जा रही हूँ।"

"हाँ।" अब नारायणदत्त ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "यह एक चौथे रंग की ऐनक है। भूषण ने अपनी ऐनक में से देखा कि यह स्मगलिंग हो रहा है। माताजी की ऐनक ने देखा कि यह सुभद्राहरण हो रहा है। तीसरे को दोनों में अन्तर दिखाई नहीं दिया। अर्थात् लड़कियों का ससुराल गमन हरण ही है। चौथे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ऐनक बता रही है कि यह केवल भोजन का निमंत्रण है।"

"और पण्डितजी महाराज ! आपकी ऐनक क्या कहती है ?"

"मैंने अपनी ऐनक को बेरंग कर रखा है। इस कारण मुझे इन चारों से कुछ विलक्षण दिखाई दे रहा है।"

"क्या दिखाई दे रहा है ?" अंजू ने पूछ लिया। उसे पण्डितजी की विलक्षणता का आभास तो पहले ही मिल चुका था।

"मैं देख रहा हूँ कि न तो यह स्मगलिंग है, न ही अपहरण। यह ससुराल गमन भी नहीं है। यह भोजन का निमंत्रण भी नहीं। यह है अंधे मानव का अँधेरे में टटोलना। कोई नहीं जानता कि वह किधर जा रहा है। नियति के धकेले हुए सब चले जा रहे हैं और ये नहीं जानते कि इसका अन्त किधर होगा।"

इस अतिशीत, अनिश्चित, अप्रिय कथा से सबकी हँसी विलीन हो गई और सब अपने-अपने विचारों में लीन मौन बैठे रहे। सुशीला और अंजू दोनों अनुभव कर रही थीं कि पण्डितजी ने बहुत ठीक अनुमान लगाया है।

गाड़ी घर पहुँची तो सब गाड़ी से उतरकर भीतर चले गए। सुशीला ने देखा कि चीफ इंजीनियर खुराना की मोटर गाड़ी कोठी की ड्योढी पर खड़ी है और जब ये लोग वहाँ पहुंचे तो कमरे में सागरचन्द को बैठे देख सुशीला द्वार पर ही ठिठक गई।

सागरचन्द ने सुशीला को देखा तो वह भी उठकर उसकी ओर बढ़कर प्रसन्नता से उबलते हुए बोला, "ओह ! आप भी यहाँ हैं ?"

सागरचन्द ने सुशीला से हाथ मिलाया और उसकी बाँह अपनी बाँह में डालकर ले गया और फिर उसे अपने सोफे पर बैठा लिया। प्रमिला तो दोनों लड़कियों के साथ ही भीतर आई थी परन्तु प्रेमनाथ गाड़ी में पैट्रोल डलवाने के लिए ड्राइवर को कहने के लिए पीछे रुक गया था। वह ड्राइवर को पैंट्रोल इत्यादि के लिए दाम दे रहा था।

भूषण अपनी माँ और दोनों लड़कियों के पीछे-पीछे अन्दर आ रहा था। सागरचन्द ने उसे देखा तो उसे अपने समीप दूसरी ओर बैठने के लिए कह दिया।

भूषण बैठा तो प्रमिला इत्यादि भी बैठ गई। सागरचन्द ने कहा, "आपके उद्घाटन-सम्बन्धी निमंत्रण के विषय में आया हूँ। मैं सायंकाल आपकी चाय-पार्टी में नहीं आ सकता। मैं दौरे पर जा रहा हूँ। इसलिए अभी बधाई देने के लिए चला आया था। कितना रुपया लगाकर काम किया है ?"

इस समय भूषण का पिता प्रेमनाथ भी अन्दर आ गया और वह भी एक कुर्सी पर बैठकर पूछने लगा, "अच्छा सागरचन्दजी ! किधर जा रहे हैं ?"

"मैं तो भोपाल जा रहा हूँ। वहाँ एक दिन का काम है। निर्माण-कार्य के मन्त्री ने बुलाया है। परसों तक लौट आऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चाय पीएँगे ?"

"जी नहीं। मैं ब्रेकफास्ट करके आया हूँ।"

प्रेमनाथ ने घण्टी बजाई और नौकर आया तो उसने कह दिया, "सबके लिए 'कोका कोला' ले आओ।"

सागरचन्द ने पुनः भूषण से पूछा, "कितना रुपया लगाया है इस उद्योग में?"

"एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी शुरू की है। पाँच लाख की पूंजी है और कुल सात पत्तीदार हैं। इनमें मुख्य पत्तीदार मैं हूँ। लगभग पचहत्तर प्रतिशत पूंजी मेरी है। मैं मैनेजिंग डायरेक्टर भी हूँ। अभी तक पाँच सौ रुपया वेतन पाता था। काम प्रारम्भ होने पर वेतन एक सहस्र रुपया हो जाएगा और उसके अतिरिक्त बिक्री पर एक प्रतिशत मिलेगा।"

सागरचन्द ने अपनी स्थिति रखते हुए कहा, "मुझे पन्द्रह सौ रुपया मिलता है। सवा सौ रुपया टैक्स और सवा सौ रुपया प्रॉविडेंट फण्ड निकल जाता है। शेष बारह सौ बचता है। इसमें आजकल निर्वाह नहीं हो रहा। इस कारण किसी प्रकार का व्यापार करना चाहता हूँ। यदि आपकी फैक्टरी में कुछ रुपया लग जाता तो ठीक था।"

"पर अभी तो कार्य आरम्भ नहीं हुआ। और जो कुछ पूंजी डाली गई है, वही पर्याप्त प्रतीत होती है। परन्तु बाद में काम बढ़ाने पर पूँजी बढ़ाने की आवश्यकता अनुभव हुई तो फिर आप से पूछ लेंगे। यह आपने बता दिया तो समय आने पर हम आपके प्रस्ताव का लाभ उठाएँगे।"

"तो स्मरण रखिएगा। भूलिएगा नहीं। एक बहुत ही प्रसन्नता की बात मैं आपको बताना चाहता हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे आशीर्वाद और बधाई देंगे। मैं अभी-अभी सुशीलाजी के पिताजी से मिलकर आ रहा हूँ। उन्होंने सुशीला देवी से मेरे विवाह की अर्जी स्वीकार कर ली है। उनका कहना है कि सुशीलाजी ने भी इस विवाह की स्वीकृति दे दी है।"

भूषण और प्रेमनाथ मुख देखते रह गए। सबसे पहले प्रमिला को कर्तव्य की चेतना हुई। उसने उठ सुशीला की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "सुशीला बेटी ! बहुत-बहुत बधाई हो। भगवान् करे सौभाग्यवती रहो। पुत्र, पौत्रों और प्रपौत्रों का दर्शन करो।"

"सागरचन्द जी ! सुशीला-जैसी पत्नी पाकर आप सत्य ही बधाई के पात्र हो। भगवान् आपको दीर्घ जीवन तक इस विवाहित जीवन का भोग प्राप्य कराए।"

"तो आप समझती हैं कि सुशीलाजी से विवाह करके मैं सौभाग्य को प्राप्त हो रहा हूँ।"

"हाँ बेटा !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तक प्रेमनाथ सावधान हो गया था और उसने कह दिया, "इस शुभ घोषणा के उपरान्त आज तुम दोनों हमारे यहाँ भोजन करोगे।"

"ग्रोवर साहब ! मैंने 'मिनर्वा' में हम दोनों के लिए लंच का प्रबन्ध कर रखा है। मैं सुशीला से अपने भावी जीवन के विषय में कुछ विचार करना चाहता हूँ।"

"भाई ! ऐसे शुभ कार्य में हम बाधा नहीं डाल सकते। देखो, हमको विवाह पर बुलाना। भूल न जाना।"

इस समय तक सुशीला आँखें नीची किए चुपचाप बैठी रही। एकाएक सागर-चन्द ने सुशीला से पूछा, "सुशीलाजी ! यहाँ कुछ काम न हो तो चलें।"

सुशीला उठी और बिना किसी को नमस्कार किए सागरचन्द के साथ बाहर चल दी। भूषण दोनों को गाड़ी तक छोड़ने के लिए बाहर आया। वह अपने मन में हल्कापन अनुभव करने लगा था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके सिर से भारी बोझा उतर गया है।

जब सागर और सुशीला गाड़ी में बैठ गए तो भूषण ने हाथ जोड़ नमस्ते करते हुए कहा, "सुशीलाजी ! क्या मैं आशा करूँ कि विवाह पर आमंत्रित किया जाऊँगा।"

सुशीला कुछ उत्तर नहीं दे पाई। गाड़ी चल दी।

: २ :

जब भूषण ड्राइंगरूम में वापस आया तो वहाँ सब गम्भीर मुद्रा में बैठे अपने-अपने विचारों में लीन थे। भूषण पण्डित नारायणदत्त के पास बैठ गया। उसके बैठते ही नारायणदत्त ने मुस्कराते हुए पूछा, "कैसा रहा यह नाटक ?"

"मैं गहरे सागर में डूबता-डूबता बच गया-सा अनुभव करता हूँ।"

"मैं एक बात नहीं समझा।"

"क्या ?"

"यही कि जब यह इतना कुछ इन महाशय से मान चुकी थी फिर यह आपके यहाँ आकर दूसरों की निन्दा क्यों करती फिर रही थी ?"

प्रमिला ने जो कुछ समझा था, वह बताते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि लगभग एक वर्ष से यह हमारे यहाँ नहीं आई थी। और जब हमने इसको और इसके माता-पिता को निमंत्रण भेजा तो इनके घर के किसी के भी आने की आशा नहीं करते थे। जब यह आई तो मैं समझी थी कि यह अपने अकारण रूठने का प्रायश्चित्त करने आई है।

"परन्तु बाद में यह कुछ इस लड़की··· क्या नाम है बेटी तुम्हारा ?" प्रमिला ने अंजू की ओर देखकर पूछ लिया। अंजू ने कुछ उत्तर नहीं दिया। प्रमिला ने अपना कथन जारी रखते हुए कहा, "इस लड़की के विषय में कुछ निन्दा की बात कहने लगी थी। वहाँ उसे समय नहीं मिला। मैं भी जानना चाहती थी कि वह क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना चाहती है। इसलिए उसको यहाँ ले आई थी। परन्तु न तो वह प्रायश्चित्त कर रही थी, न ही किसी की निन्दा-प्रशंसा कर सकी। चुपचाप चल दी है।"

"खैर, एक बात हुई है।" नारायणदत्त ने मुस्कराते हुए कहा; "न तो आप उसको स्मगल करके यहाँ ला रहे थे, न ही उसका मोटर में अपहरण हो रहा था। वह स्वेच्छा से ससुराल-गमन भी नहीं था। वह तो अपने भाग्य की ओर खिंची आ रही थी और उसको पा गई है।"

एकाएक प्रेमनाथ उठा और भूषण को अपने साथ बाहर बरामदे में ले गया। वहाँ रखी कुर्सियों पर बैठ पिता ने पुत्र से पूछा, "जानते हो सुशीला इस ईसाई लड़की के बारे में क्या कह रही थी?"

"क्या कह रही थी?"

"कि तुमने हमको बताए बिना इससे विवाह कर लिया है।"

"और आप क्या समझे हैं?"

"यह लड़की सुशीला से अधिक सुन्दर और समझदार प्रतीत होती है। इस कारण यह कहना कठिन है कि इसने अपने इन दोनों गुणों का किस प्रकार प्रयोग किया है। तुम बताओ क्या स्थिति है?"

"पिताजी! आप मेरे व्यवहार से क्या समझे हैं?"

"यह तुम्हारी मित्र तो है। तुम इसके माता-पिता का आदर भी करते हो। तुमने उनको यज्ञ पर बुलाने के लिए अपनी गाड़ी भेजी थी और अब वापस जाने के लिए भी गाड़ी दी है। कुछ तो बात है तुम दोनों में। मैं यही जानना चाहता हूँ।"

"पिताजी! बात तो है। परन्तु वह विवाह तक नहीं पहुँची। इसने आज से डेढ़ वर्ष पूर्व मुझसे विवाह की इच्छा प्रकट की थी। तब मेरी सुशीला से सगाई हो चुकी थी। इस कारण मैंने इससे विवाह अस्वीकार कर दिया था। बाद में सुशीला मुझसे रूठ गई। उसके रूठने का कारण भी यही था कि वह समझती थी कि हम परस्पर पति-पत्नी रूप में सम्बन्ध रखते हैं। मैंने इसका और इसके माता-पिता का भ्रम निवारण करने का यत्न किया। मैंने स्पष्ट कहा कि उनका सन्देह निराधार है। सुशीला की माँ कहने लगीं कि उनके पास मेरे वंचनामय जीवन के प्रमाण हैं। मैंने वे प्रमाण देखने चाहे। वे मुझे न दिखाकर आपको अथवा माताजी को दिखाना चाहती थीं।

"मैंने तभी समझ लिया कि यह सम्बन्ध करना भूल होगी। परन्तु मैं वचनबद्ध था। मैंने अपनी ओर से वचनभंग न करने का निश्चय कर रखा था। मैं समझता हूँ कि मैंने अपना निश्चय निभाया है।"

"पर यह बात तुमने हमसे पहले कभी नहीं की?"

"वह इसलिए कि मैं स्वयं को दोषी नहीं मानता था। इस कारण मैं स्वयं जज के पास जाकर कह नहीं सका कि कोई मुझको दोषी समझ रहा है, इस कारण मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषों की जाँच की जाय। यह तो आरोप लगाने वालों को या तो मुझे बताना चाहिए था या आपको दिखाना चाहिए था कि मेरे विरुद्ध क्या प्रमाण हैं। मुझे यह अति अपमानजनक और अयुक्तिसंगत प्रतीत हुआ था कि मैं स्वयं पर जाँच की माँग करूँ।"

"और अब बताओ?"

"यह तो अब अंजू के विचार का विषय है कि वह मुझे सुशीला की भाँति अनिच्छित व्यक्ति समझ छोड़ दे अथवा अपनी पूर्व की धारणा पर कार्य करे। मैं उससे इस विषय पर पूछने का विचार रखता हूँ। मैंने रात उसे और उसकी माँ को खाने पर आने को आमंत्रित किया है। वहाँ सब बात मैं पण्डित नारायणदत्तजी के सन्मुख करना चाहता हूँ।"

"और अपने माता-पिता के सामने नहीं?"

"उनसे राय तो पहले ही कर लेने का विचार है। कुछ अनिश्चित स्थिति आज सुशीला के यज्ञ में सम्मिलित होने के कारण हो गई थी। परन्तु अब उस ओर से बात स्पष्ट हो गई है। वह प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप की भावना से नहीं आई थी। वह तो अपने को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दूसरों की थाली में राख छिड़कने के लिए आई थी।"

"देखो भूषण! देखने में यह लड़की सुन्दर, सभ्य और सुशील दिखाई देती है। परन्तु यह ईसाई है। तुम तो मुझसे भी अधिक आर्यसमाजी हो। तुम दोनों का निर्वाह कैसे होगा?"

"पिताजी! आप यह बताइये।" भूषण ने निर्णयात्मक बात करने के लिए पूछ लिया, "आप मत-परिवर्तन का सम्बन्ध विचार-परिवर्तन से समझते हैं अथवा नाम और लेबल परिवर्तन से?"

"नाम और लेबल? क्या मतलब?"

"नाम तो माता-पिता रखते हैं। जैसे इस लड़की का नाम अंजू है। लेबल परिवार, वातावरण और रहन-सहन बनाता है। जैसे यह ईसाई है। इस विषय में एक सीमा तक बात पण्डित नारायणदत्तजी से हुई थी और शेष आज रात लड़की और लड़की की माँ के सम्मुख होगी।

"रही बात विचारों की। मैं समझता हूँ कि पिछले दो वर्ष के मेरे इससे सम्पर्क से मेरे और इसके विचारों में बहुत कुछ सामंजस्य हो चुका है। यह ईसाई नहीं रही। मैं एक सीमा तक आर्यसमाजी नहीं रहा। विचारों में परस्पर हम अधिक मिलते हैं और ये ईसाई मत से तथा मैं आर्यसमाजी मत से कम मिलता हूँ।"

"आर्यसमाजी मत क्या है?"

"आर्यसमाज एक संस्था है। इसमें प्रधान, मंत्री इत्यादि मतदान से निर्वाचित होते हैं। उसमें विद्वत्ता की किसी प्रकार की शर्त नहीं। न ही विचार और आचरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की किसी प्रकार की शर्त है। इस विचार से तो मैं आर्यसमाज को त्याज्य मानता हूँ। इसी कारण इस वर्ष मैंने वार्षिक शुल्क नहीं दिया। धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थानों में मुख्य नेता चुनने के लिए निर्वाचनों का उपाय मूर्खतापूर्ण व्यवस्था है। मैं इसको नहीं मानता।"

"किस बात को मानते हो ?"

"आर्यसमाज वेद को सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा प्रदत्त ज्ञान मानता है। वेद में जो कुछ लिखा है उसे स्वतः प्रमाण मानता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के कथनानुसार कि जो कुछ वेद-विरुद्ध है उसे प्रमाण नहीं मानता। ये और इसी प्रकार की बातें जो आर्यसमाज मानता है वह मैं भी मानता हूँ।"

"बहुत बाल की खाल उतार रहे हो।"

"जी, इस विवाह पर पिछले दो वर्ष से विचार कर रहा हूँ। और हम दोनों ने इसी प्रकार अनेकानेक विषयों पर विचार-विनिमय किया है।"

"यदि हम अथवा इसके माता-पिता न मानें तो क्या फिर भी यह विवाह होगा ?"

"मैं अपने माता-पिता से विद्रोह करने के लिए कोई कारण नहीं पाता। वह अपने माता-पिता से कैसे निबटेगी, यह मैं नहीं जानता। हाँ, आपको आश्वासन देता हूँ कि मैं आपकी स्वीकृति लेकर ही इधर पग उठाऊँगा।"

भूषण के व्यवहार से पिता को कभी भी असन्तोष नहीं हुआ था और इस समय भी वह सन्तुष्ट था। एक बात उसके मन में खटक रही थी। इसलिए उसने उस विषय में भी पूछ लिया, "मानो, तुम किसी प्रकार का इससे प्रबन्ध करते हो, हम उसे स्वीकार नहीं करते तो तुम क्या करोगे ?"

"मैं विवाह नहीं करूँगा।"

"इससे अथवा किसी से भी ?"

"इससे तो नहीं ही करूँगा और यदि वह मेरे साथ विवाह न कर सकने के कारण अविवाहित रहेगी तो मैं भी अविवाहित रहूँगा।"

"यदि इस विवाह में उसके माता-पिता ने बाधा डाली तो फिर क्या होगा ?"

"वही, जो आपके अस्वीकार करने पर होगा। यदि वह किसी भी कारण मेरे साथ विवाह की इच्छा रखते हुए भी विवाह नहीं कर सकी और इसलिए वह अविवाहित रही तो मैं भी विवाह नहीं करूँगा और अविवाहित रहूँगा।"

"और यदि बाद में उसने किसी दबाव में आकर अथवा प्रेम में फँसकर सुशीला की भाँति विवाह कर लिया तो तुम क्या करोगे ?"

"यह उस समय अपनी आयु-सामर्थ्य और परिस्थिति देखकर ही निर्णय करूँगा।"

इसमें कुछ भी ऐसा नहीं था कि जिसको प्रेमनाथ ग्रोवर अयुक्तिसंगत कहते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल एक बात थी। वह वंश चलाने की थी। परन्तु प्रेमनाथ उसको केवल भावुकता मात्र समझता था और इसमें कोई तत्त्व नहीं मानता था। इस कारण वह चुप रहा।

प्रमिला अंजू को अपने सोने के कमरे में ले गई। वह भी सुशीला के व्यवहार को देख भूषण के विवाह के विषय में कुछ निश्चय करना चाहती थी और सुशीला के कथन से वह यही समझी थी कि यह लड़की उससे प्रतिस्पर्द्धा करने वाली है। वहाँ ले जाकर उसने कहा, "देखो बेटी ! सुशीला ने तुम पर किसी प्रकार का व्यंग्य कसा था और तुमने कहा था कि तुम अपना परिचय घर चलकर दोगी। मैं तो सुशीला को भी यहाँ पूर्ण बात जानने के लिए ही लाई थी। परन्तु वह तो यहाँ रही नहीं। इस कारण अब तुम ही बताओ, तुम कौन हो ?"

अंजू ने अपना परिचय देते हुए बताया—"मेरे पिता एक बैंक में असिस्टैंट मैनेजर हैं। मैं माता-पिता की बड़ी लड़की हूँ। मैं भूषणजी की श्रेणी में ही पढ़ती थी और बी० ए० पास करने के उपरान्त काम ढूँढ़ने लगी थी। भूषणजी से कॉलेज में तो केवल सहपाठी होने मात्र का परिचय था परन्तु बाद में जब उन्होंने मुझे नौकरी दिलाने में सहायता की तो मेरा उनसे परिचय बढ़ने लगा। आज लगभग एक वर्ष से अधिक समय बीत गया होगा जब मैंने उनसे विवाह की इच्छा प्रकट की थी। किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया। इसका कारण उन्होंने अपनी सुशीला के साथ सगाई बताया था। तब से हम मित्र के समान ही रह रहे हैं। परस्पर मिलते-जुलते रहते हैं। इससे अधिक अभी हमारा और कोई सम्बन्ध नहीं है। आज परिस्थिति बदली प्रतीत होती है और मैं पुनः अपनी अभिलाषा की पूर्ति की आशा करने लगी हूँ।"

"परन्तु सुशीला क्या कहना चाहती थी और उसने भूषण के पिताजी से क्या कहा है ?"

"पिताजी से क्या कहा है, यह तो वही बता सकते हैं। हाँ, वह मेरे विरुद्ध थी। मैं लाला ठाकुरदासजी की फैक्टरी में नौकरी करती थी। उसने वहाँ मेरी किसी प्रकार की शिकायत करके मुझे नौकरी से निकलवा दिया। मैं समझती हूँ कि वे यहाँ शिकायत करके मुझे भूषणजी की मित्रता से वंचित करने का यत्न कर रही थीं। कदाचित् वह यह समझ रही थीं कि उसके विवाह का प्रबन्ध हो गया जानकर मैं पुनः भूषणजी से विवाह का यत्न करूँगी और उसमें पहले ही विघ्न डालना चाहिए।"

प्रमिलादेवी समझ गई कि यह लड़की सुशीला से तो अधिक समझदार है। फिर भी उसकी परीक्षा लेने के विचार से उसने पूछ लिया, "यदि सुशीला के सागरचन्द से विवाह की घटना न होती और इसके पूर्व ही अथवा इसके अभाव में भूषण और सुशीला में सुलह हो जाती और फिर विवाह हो जाता तो तुम क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतीं ?"

"कुछ नहीं। कहीं-न-कहीं नौकरी करती हुई अपना जीवनयापन करती रहती।"

"मैं तो विवाह के विषय में पूछ रही हूँ।"

"माताजी! मैं तो विश्वास करती हूँ कि विवाह परमात्मा द्वारा निश्चय किए हुए होते हैं। फिर भी वासनाभिभूत अथवा किसी अन्य कारण से मतिभ्रष्ट हो पुरुष-स्त्री का सम्बन्ध अथवा विवाह ईश्वर की इच्छा के विपरीत भी होते हैं। वे सदा दु:ख का कारण होते हैं। ऐसी कोई दुर्घटना मेरे साथ भी होगी, मैं कह नहीं सकती। अभी तक तो मैंने स्वयं को ईश्वर के भरोसे पर रखा है।"

"तुम्हारा अपने समुदाय में विवाह नहीं हो रहा है?"

"मेरा तो वही समुदाय है जो भूषणजी का है। आज ही बाहर बैठे पण्डितजी से बातचीत हो रही थी। वे भी मेरे ही मन की बात कह रहे थे। उनका कहना था कि इस भूतल में मुख्य रूप में चार समुदाय हैं। जेरज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज। इन समुदायों में उपसमुदाय हैं। जेरज में मुख्य हैं मनुष्य और पशु। मैं मनुष्य समुदाय में हूँ और आपको भी उसी समुदाय का मान आपसे सम्पर्क बना है।

"कुछ मानव समुदाय के प्राणी पशुओं से भी स्नेह रखते हैं। मेरी माँ के पास एक टेरी कुतिया थी। कभी-कभी तो कुछ ऐसा अनुभव होता था कि उनका मुझसे भी अधिक उससे स्नेह है। जब टेरी बच्चे पैदा करने योग्य हो गई तो उन्होंने एक बहुत ही सुन्दर कुत्ते के साथ टेरी की भेंट करवाई। इसके लिए उनको उस कुत्ते के मालिक की काफी खुशामद करनी पड़ी थी। मैं समझती हूँ कि मेरे विवाह के विषय में तो उनको टेरी जितनी भी चिन्ता नहीं है।

"मेरे लिए एक पति ढूँढ़ा भी गया था। सौन्दर्य, सच्चरित्रता और विचारवान होने के नाते नहीं वरन् उसके धन-दौलत के विचार से। मैंने उसे अस्वीकार कर दिया था। माँ इससे बहुत क्रुद्ध हुई थी।"

प्रमिला अंजू की दार्शनिकों की भाँति परिस्थिति और उसमें व्यवहार का विश्लेषण करते देख चकित रह गई। उसने कहा, "तब तो ठीक है। अब मैं सब समझ गई हूँ। परन्तु अंजू बेटी! मैं तुम्हारे लिए शुभकामना ही कर सकती हूँ। इस समय तुम और भूषण सज्ञान हो गए हो। तुम दोनों अपने माता-पिता की इच्छा के बिना भी तो अपना व्यवहार निश्चय कर सकते हो। मैं तो भगवान् से ही प्रार्थना कर सकती हूँ कि आप दोनों का कल्याण हो।"

अंजू समझती थी कि यह शुभ कामना बहुत कुछ है और कुछ भी नहीं। वास्तव में भावी जीवन की कुंजी तो भूषणजी के हाथ में है। अत: वह मौन रही और दोनों उठकर बाहर ड्राइंगरूम में चली आईं।

वहाँ भूषण और उसके पिता बैठे हुए थे और पण्डित नारायणदत्त उनसे सुशीला का पूर्ण इतिहास सुन रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

मध्याह्न के भोजनोपरान्त अंजू अपने घर जाने लगी तो भूषण ने पुनः उसके जाने के लिए अपनी गाड़ी दे दी। उसे उस मोटर-गाड़ी में चढ़ाने के लिए आया तो उसने उसे स्मरण कराया, "आज रात का खाना मिनर्वा में है। मैंने तुम्हारी मम्मी को भी उसमें आमन्त्रित किया है। मिनर्वा ऐसा स्थान है जो बातचीत के लिए 'न्यूट्रल एरिया' (तटस्थ क्षेत्र) माना जा सकता है।"

"तो बातचीत होगी ?"

"वह तो सुशीला के साथ सागरचन्द की घोषणा से पहले ही विचार बन चुका था।"

"नहीं जी। मैं यह पूछ रही हूँ कि अभी तक यह बातचीत हो नहीं चुकी क्या ?"

"मेरे और तुम्हारे मध्य में न ? अब बातचीत का क्षेत्र विस्तृत हो रहा है। तुम्हारी माताजी और पण्डित नारायणदत्तजी भी वहाँ होंगे।"

"आपकी माताजी नहीं होंगी ?"

"यह तो उनसे पूछना होगा। मुझे यह विदित हुआ है कि उनके साथ तुम्हारी बातें हो चुकी हैं।"

"हाँ, मैं उनको अपनी सहायक ही समझती हूँ।"

"अच्छी बात है, तुम्हारी इच्छा का उल्लेख कर दूंगा।"

भूषण जब पुनः भीतर आया तो पण्डितजी ड्राइंगरूम में बैठे अपनी डिबिया में से पान के पत्ते पर कत्था लगाकर उसमें सुपारी इत्यादि रख रहे थे।

प्रेमनाथ पण्डितजी को कह रहे थे, "यह बकरियों की तरह पत्ते चबाने की बात मेरी समझ में नहीं आई। आप जैसे विद्वान् व्यक्ति भी इस आदत की दासता में फँसे हुए हैं।"

"लालाजी, यह आदत तो है परन्तु इसकी दासता है यह मैं नहीं मान सकता। यदि यह मुझे न मिले तो मैं किसी प्रकार की बेचैनी अनुभव नहीं करता।"

"तो फिर किसलिए व्यर्थ की बात करते हैं ?"

"तो क्या स्वेच्छा से की गई बात व्यर्थ होती है ?"

"तो क्या यह व्यर्थ नहीं है ?"

"इसके गुण हैं।"

"मुख को रँग देना। यही न ?"

"जी नहीं। कुछ दिन तक खाकर देखिए फिर बात करिएगा। यह पाचक है, शक्तिदायक है और फिर मुख को सुगन्धित रखता है।"

"पर मुख रँग देता है और दाँतों को खराब कर देता है।"

"मुख रँग देता है तो मुख की शोभा बढ़ जानी माननी चाहिए। रही दाँतों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खराब करने की बात, यह अनुभव के विपरीत है। साथ ही यदि किसी को यह अनुकूल न बैठे तो वह न ले। जैसे अन्य अनेक वस्तुएँ अनुकूल न होने पर नहीं ली जातीं।"

इस समय भूषण भीतर आया तो पिता ने पूछ लिया, "हाँ तो क्या कहती हैं?"

"इससे कहा-सुनी हो चुकी है। आज की घटना से कुछ भी नवीन परिस्थिति उत्पन्न नहीं हुई। परन्तु आज रात के खाने पर इसके सम्मुख इसकी माताजी से बातचीत होने वाली है। वह एक नई स्थिति उत्पन्न कर सकती है।

"आज मैंने इसे और इसकी माँ को मिनर्वा रेस्टोराँ में रात के भोजन के लिए आमन्त्रित किया हुआ है। उस समय पण्डितजी इस वार्तालाप में मेरी सहायता करेंगे। यदि माताजी चाहें तो वे भी वहाँ उपस्थित हो सकती हैं।"

"नहीं।" प्रमिला ने कह दिया, "मैं इस वार्तालाप में सम्मिलित होना नहीं चाहती। तुम जो कुछ भी निश्चय करोगे, मुझे स्वीकार होगा।"

"पर मैं चाहता हूँ कि संस्कार में रीति-रिवाज वैदिक हों।" प्रेमनाथ का कहना था।

नारायणदत्त हँस पड़ा। उसने कहा, "परन्तु लालाजी ! आप तो वेदों को असभ्य मनुष्य की, असत्य भाषा में कवितामात्र मानते हैं।"

यह सुन प्रेमनाथ कुछ घबराया। फिर साहस पकड़कर कहने लगा, "पर यह हमारी नेशनल युनिटी का एक केन्द्र है।"

"शुक्र है। आपने यह तो माना है। परन्तु यह तो एक निरर्थक बात है। इससे अधिक ऐक्य का केन्द्र तो मजिस्ट्रेट के सामने हस्ताक्षर करने में बन जावेगा।"

"तो आप इसे किसलिए मानते हैं?"

"मैं तो वेदों को ईश्वरीय भाषा में ईश्वरीय ज्ञान का भण्डार मानता हूँ। इसके मन्त्रों से इसकी भाषा में ही भगवान् से प्रार्थना करनी शोभा पाती है। यह कल्याण की भी सूचक होगी।"

"यह सब निरर्थक और आधारविहीन बात है। देखने में यह नहीं आता। देखिए पण्डितजी ! जब तक मैं आर्यसमाज का प्रधान था, तब तक इस प्रकार की अप्रमाणित बातों को सुनकर चुप रहता था। परन्तु अब मैं एक मुक्त जीव हूँ और जो कुछ अब कह रहा हूँ, अपने अनुभव और सूझ-बूझ की बात कह रहा हूँ।"

नारायणदत्त मुस्कराने लगा। भूषण ने इस वार्तालाप को बन्द करते हुए कहा, "पिताजी ! जैसा आप कहते हैं यह बात इस प्रकार नहीं है। इस पर भी इस समय यह विचारणीय विषय नहीं है। विचारणीय विषय तो यह है कि हमारे घर में नेशनेलिटी भारतीय है। अंजू के घर में उसके माता-पिता की नेशनेलिटी अभारतीय है। या यह कहिए कि जिसे हम भारतीय मानते हैं उसे वे भारतीय नहीं मानते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण हमारी और उनकी नेशनेलिटी में अन्तर है।

"एक राष्ट्र की लड़की दूसरे राष्ट्र में आये तो कैसे आये ? यह प्रश्न उपस्थित है। इसके लिए मैंने एक रास्ता निकाला है। वह मैंने अंजू को भी बताया था। वह इस बात में मुझसे सहमत है। यदि मैंने अंजू के घर में और उसकी बिरादरी में जाकर रहना हो तो मैं उनकी बिरादरी के रीति-रिवाज मानकर ही वहाँ रह सकता हूँ। और यदि अंजू को मेरी बिरादरी में आकर रहना हो तो उसे हमारे रीति-रिवाज स्वीकार करने पड़ेंगे।

"हमने इस विषय पर भी विचार किया है कि क्या मुझे उनकी बिरादरी में चलकर रहना चाहिए। उसका कहना है कि जहाँ तक वह समझी है, मेरे उनकी बिरादरी में सम्मिलित होने से हमारा और हमारे परिवार का कल्याण नहीं है।"

"यह क्यों ?"

"उसे मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में रहते हुए आठ-नौ मास होने जा रहे हैं। उन लोगों के व्यवहार का ज्यों-ज्यों उसको ज्ञान होता जाता है, वह समझती जाती है कि कहीं कुछ खराबी है जिससे वे इस प्रकार का असभ्यतायुक्त एवं अयुक्तिसंगत व्यवहार स्वीकार कर रहे हैं।

"उसने एक वार्त्तालाप सुनाया था जो डॉक्टर ह्यूबर्ट और संथालों में कार्य करने वाले एक मिशनरी के मध्य हुआ था। वह मिशनरी डॉक्टर साहब से धन लेने के लिए आया था। पिछले वर्ष वर्षा न होने के कारण जंगली लोगों में अन्नादि की कमी हो रही है। वह मिशनरी महोदय दस सहस्र रुपया अपने क्षेत्र में बाँटने के लिए ले जाना चाहता था। डॉक्टर साहब ने रुपया देते हुए कहा था कि यह रुपया उन लोगों को देना है जो बपतिस्मा लेने के लिए तैयार हों।"

"और जो तैयार न हों ?"

"उनका कोई अधिकार नहीं है कि वे ईसाइयों का धन लें।"

"मिशनरी का कहना था, मेरी तो नीति यह रही है कि मैं धन देकर पहले अपने फिर अपने मिशन के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करता हूँ। फिर जब बार-बार सहायता देने से उनके मन में अपने प्रति सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है तो तब मैं उनमें देशवासियों अथवा देश की सरकार और उनके हिन्दू धर्म मानने वालों के प्रति घृणा उत्पन्न करता हूँ। इसके पीछे उनको अपने प्रभु यीसुमसीह के चमत्कारों का ज्ञान कराता हूँ। तब वे स्वेच्छा से अपने मत में आ जाते हैं।

"यह सुन डॉक्टर ह्यूबर्ट बोला, 'यह प्रक्रिया तो बहुत लम्बी है। यदि तुम इस गति से चलते गए तो भारत-जैसे लम्बे-चौड़े देश में ईसाइयों का बहुमत तैयार करने में सदियाँ लग जाएँगी। और तब तक इस देश में अनुकूल राज्य रहे, इसकी आशा नहीं।'

" 'यह तो हमारे सौभाग्य की बात है कि पिछले चौदह-पन्द्रह वर्ष से देश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-निरपेक्ष राज्य है। धर्म-निरपेक्ष का अभिप्राय: यह है कि देश के धनी-मानी लोगों का धन लेकर निर्धनों में बाँटा जाय और उस बाँटने में कौन बाँटने वाला है, इसका विचार न किया जाय। उस धन के बाँटने में हमने अपने को उपस्थित किया तो हमारी सेवाएँ स्वीकार हो गईं। यह समझा गया कि हमारा संगठन इतना सबल और विस्तृत है कि रुपये का बँटवारा हम सुचारु रूप से कर सकेंगे। एक हिन्दुओं की संस्था आर्यसमाज भी प्रत्याशी थी। परन्तु जब मैं सरकारी अधिकारियों के सम्मुख एक फर्स्ट क्लास सूट पहने, सिर से पाँव तक योरोपियन पहरावे में तथा फर्स्ट क्लास औक्सोनियन उच्चारण के साथ अंग्रेजी में बात करने लगा और वह आर्यसमाजी कार्यकर्ता धोती-कुर्ता पहने, वासन्ती दुपट्टा कन्धे पर डाले, पाँव में चप्पल और सिर पर पगड़ी बाँधे हिन्दी में बात करने लगा तो अधिकारी ने मुझसे पूछा, "डॉक्टर ! इसमें आप बाँटने का खर्चा कितना लेंगे ?"

"मैंने बताया कि कुछ भी नहीं। हमारे पास तो पहले से ही इस क्षेत्र में सैकड़ों कार्यकर्ता विद्यमान हैं।

"बस इतने मात्र से आर्यसमाजियों को शान्त रहने के लिए कह दिया गया। उनको दो सहस्र दिया गया और मुझे पचास सहस्र दे दिया और इसके बँट जाने पर और देने का वचन दिया है।

"इस प्रकार का सैक्युलर राज्य सदा रहेगा नहीं। इस कारण छल-बल और धन से अधिक-से-अधिक लोगों को अपने धर्म में सम्मिलित करो। जो युवक पहले ईसाई हो चुके हैं उनका इन भूखों मरती लड़कियों से विवाह करा दो। जो बपतिस्मा ले उनको अन्नादि और वस्त्र दो और उनको अपने अधीन वेतन पर काम पर लगा दो। जो कुछ पढ़े-लिखे हैं उनको यहाँ केन्द्र में भेज दो। हम उनको दूसरे नगरों में भेजकर नौकरी का प्रबन्ध कर देंगे।

"मैं तो यह चाहता हूँ कि देश में अन्न और वस्त्र का अभाव बना रहे तो हम पाँच वर्ष में यहाँ जंगली क्षेत्रों में सबकी सब जनता को ईसाई बना लेंगे। तब यहाँ का संसदीय प्रतिनिधि ईसाई होगा।

"इस पर उस मिशनरी ने कहा, इसके लिए तो बहुत धन चाहिए। मैं समझता हूँ कि इस क्षेत्र के बहुसंख्यक लोगों को इस ढंग से ईसाई बनाने के लिए एक करोड़ रुपया तो लग ही जाएगा।

"डॉक्टर का कहना था, 'इतना कुछ व्यय किया जा सकता है। परन्तु रुपया लेते जाओ और परिणाम दिखाए जाओ।'

"अंजू ने डॉक्टर से कहा था, इस प्रकार धर्म का विस्तार तो धोखा देना हो गया। यह किसी भी सभ्य राज्य में वर्जित होगा।

"परन्तु डॉक्टर ने उसे समझाते हुए कह दिया, हमारा यह प्रयत्न है कि वर्तमान सैक्युलर राज्य में यदि हम भारतीय संसद् में एक ईसाई दल बना सकें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर उन्नति करने में मार्ग खुल जावेगा।

"मान लीजिए, अंजू का प्रश्न था, संसद् में आपका एक प्रवल दल बन भी जाता है तो आप धर्म-निरपेक्षता में कैसे उन्नति कर सकोगे ?

"डॉक्टर कहने लगा, अंजू ! तुम राजनीति नहीं जानतीं। एक संगठित और पीछे से राजनीतिक शक्तियों से संचालित दल देश में इन हिन्दुओं को नाकों चने चबवा सकता है। क्या तुम देखती नहीं कि नागालैण्ड में मुट्ठी-भर ईसाइयों ने वहाँ के बहुसंख्यक हिन्दू परन्तु असंगठित लोगों को दास बना रखा है।"

"अंजू राजनीति में और मत में अन्तर समझ रही है। अत: जैसा मैंने आपको बताया है कि वह मेरे विचारों के समीप होती जा रही है।"

"विचारों की समीपता का प्रश्न तो तुम जानो। मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि तुम हिन्दू रहोगे कि अथवा ईसाई हो जाओगे।"

नारायणदत्त चुपचाप बैठा भूषण की परीक्षा होती देखता रहा। भूषण ने उत्तर देने से पहले पूछ लिया, "पिताजी ! अब मैं क्या हूँ ? जो कुछ मैं अब हूँ, वही मैं विवाह के उपरान्त भी बना रहूँगा।"

"और अब तुम क्या हो ? मैं जो कुछ तुमको समझता था तुम उससे कुछ भिन्न दिखाई देने लगे हो।"

"देखिए पिताजी ! मैं भारत देश का नागरिक हूँ। मेरा नाम, मेरी वेश-भूषा मुझे हिन्दू प्रकट करती है। मैं हिन्दुओं के एक पन्थ आर्यसमाज का सदस्य भी रहा हूँ।"

"परन्तु तुम्हारे विचार ?"

"आप बताइए कि आप एक हिन्दू, भारत के नागरिक के कैसे विचार होने की आशा करते हैं। तब ही मैं बता सकूँगा कि मैं वह हूँ अथवा नहीं।"

प्रेमनाथ इस प्रश्न से कुछ घबराया और इसका उत्तर विचार करने लगा। भूषण ने पिता को मौन देख समझ लिया कि पिताजी अपने विचारों की बन्द गली में पहुँचे हुए मार्ग ढूँढ़ रहे हैं। इस कारण उसने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कह दिया, "पिताजी ! आप तो हिन्दू हैं न ? आप अपने वे कुछ गुण बताइए जो हिन्दू में होने के नाते आपमें हैं। तब मैं बता सकूँगा कि वे गुण मुझमें हैं अथवा नहीं। और यदि नहीं हैं तो मैं उन गुणों को अपने में उत्पन्न करने का यत्न करूँगा।"

इससे प्रेमनाथ ने बिना अपना मत अथवा अपने गुण बताए बात बदलकर कह दिया, "अच्छी बात है। तुम रात को उससे मिल लो। जो कुछ निश्चय करके आओगे, उसके बाद मैं तुमको अपने गुणों की बात बताऊँगा।"

प्रमिला इस समय तक सोफे पर बैठ गई थी। भूषण और प्रेमनाथ भी कुर्सियों पर बैठ गए। नारायणदत्त ने इस पारिवारिक समस्या से ध्यान हटाते हुए कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो आज सायंकाल की ही गाड़ी से जाना चाहता था परन्तु भूषणजी ने मुझे रोक लिया है। फिर भी मैं कल तो जाना ही चाहूँगा। अब मुझे बस से जाना पड़ेगा।"

: ४ :

अंजू की घर पर प्रतीक्षा हो रही थी। जब अंजू ने अपने माता-पिता को अकेले घर लौटने के लिए कहा तो उसकी माँ नोरा ने पूछा, "और तुम कहाँ जा रही हो?"

"मुझे भूषणजी की माताजी अपने साथ कोठी पर लिए जा रही हैं।"

"किसलिए?"

"उन्होंने बताया नहीं। परन्तु मम्मी! जो बात तुम अपने मन में विचार कर रही हो वही बात वे भी विचार कर रही प्रतीत होती हैं।"

"मैं मन में क्या विचार कर रही हूँ?"

"यह बात मैं आकर के बताऊँगी। अब समय नहीं। गाड़ी आपके लिए तैयार खड़ी है।"

इस कारण अंजू लौटी तो उसके घर की बैठक में प्रवेश करते ही नोरा ने पूछा, "क्या कर आई हो?"

"मैं कुछ करने तो गई नहीं थी। भूषण की माताजी ने मुझे अपने घर चलने के लिए कहा था तो मैं चली गई। मैं यह जानने गई थी कि उनका क्या उद्देश्य है? वह मैं जान आई हूँ।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि क्या जान आई हो?"

"उन्होंने स्पष्ट शब्दों में तो कहा नहीं। परन्तु मैं ऐसा समझती हूँ कि वे जानना चाहती थीं कि मैं उनके पुत्र की पत्नी बनने योग्य हूँ कि नहीं।"

"हाँ तो फिर उनके विचार में तुम उसके योग्य हो अथवा अयोग्य हो?"

"उनके कुछ भी बताने के अभाव में मैं क्या कह सकती हूँ। फिर भी इतना समझ में आया है कि वे अनुकूल थीं।"

"अच्छा देखो, रात भोजन के समय मैं बात चलाऊँगी। तुम मेरी बातों में बोलना नहीं।"

"परन्तु माँ! मैं अपने मन की बात भी कहूँ अथवा नहीं?"

"मेरी बात के विरुद्ध मत कहना।"

अंजू ने समझा कि यहाँ बैठे जल मथने से क्या लाभ। जब माँ कुछ ऐसी बात कहेगी जो अनधिकारयुक्त होगी तो फिर देख लेगी। इस कारण वह मौन रही।

उसके पिता ने कहा, "एक बात का मुझे सन्तोष हो रहा है कि भूषण का परिवार धनी-मानी है। इससे सम्बन्ध बनाने में लाभ तो होगा ही।"

"पर धर्म-ईमान बेचना भी ठीक नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे स्मरण है कि मेरे पिता ने भी धर्म-ईमान बेचा था। अब यदि मैं बेच दूँ तो कौन-सा अनर्थ हो जाएगा ?"

"उनकी बात छोड़ो जी। वे तो अनपढ़-गँवार थे।" नोरा ने कह दिया, "आप तो वैसे नहीं हैं।"

"वे गँवार तथा अनपढ़ नहीं थे। हाँ अंग्रेजी नहीं पढ़े थे। निर्धन माता-पिता के पुत्र थे। माँ के घर की रूखी-सूखी खाते ऊब गए तो वहाँ के पादरी के पास पहुँचे और अच्छा खाना खाने और पहरने के लोभ में अपने को ईसाई बना बैठे। एक गोआ से भगाकर लाई गई ब्राह्मण कन्या से उनका विवाह कर दिया गया। विवाह होने के उपरान्त तो वे और भी अधिक ईसाइयों की संस्था के आश्रित हो गए। वे तथा उनकी पत्नी दोनों ही मिशन के वेतनधारी कार्यकर्ता थे। इससे एक लाभ यह हुआ कि मेरी शिक्षा अंग्रेज़ी में हो गई और बी० ए० पास करके मैं एकाउण्टेंट बन गया। इसके उपरान्त यतीमखाने की एक लड़की नोरा से मेरा विवाह हो गया। नोरा की माता का तो पता है परन्तु उसके पिता के बारे में किसी को कोई ज्ञान नहीं। कहते हैं कि यतीमखाने के सुपरिण्टेंडेंट के प्रयत्न से यतीमखाने की लड़की के पेट से तुम्हारा जन्म हुआ है। और तुम मेरे गले बाँध दी गईं।

"मेरे पिता कहा करते थे कि मैं अपनी माँ पर गया हूँ और अंजू मुझ पर गई है। अब यदि वह पुनः किसी हिन्दू द्वारा खरीद ली जाती है तो अच्छा ही रहेगा।"

यह सब वृत्तान्त नोरा जानती थी। अंजू को इसका ज्ञान नहीं था। आज जब अंजू के विवाह का प्रबन्ध दिखाई देने लगा था तो पीटर ने अपने परिवार का यह इतिहास बता देने का यत्न किया था। परन्तु जब उसने श्वसुर के अज्ञात होने की बात बताई तो नोरा ने क्रोध में तमतमाते हुए कहा, "कितने कृतघ्न हो तुम ! मैं ही तुम्हारे जीवन में रस भरती रही हूँ। यह भूल गए हो ?"

"हाँ। अपने रस के साथ मधु रस भी तो भरती रही हो। जीवन-भर में कितने मूल्य की मद्य हम पी गए हैं ?"

"यह मैं क्या जानूं ! मूल्य तो आप चुकाते रहे हैं। परन्तु मैं पूछती हूँ कि पत्नी का मूल्य एक-दो पैग से भी कम है क्या ?"

शराब के विषय में पति-पत्नी में सदा ही झगड़ा रहता था। बात यह थी कि नोरा विवाह से पहले भी पीती थी और उसने पीटर को भी पीना सिखा दिया था। दिन-प्रतिदिन शराब महँगी होती जाती थी और पीटर के वेतन का अधिकांश मकान के भाड़े और मद्य पर ही व्यय होता था। इसी कारण अंजू से खाने-पीने का खर्चा लिए बिना उनका निर्वाह नहीं हो सकता था।

अंजू नहीं पीती थी। यही कारण था कि वह जब से सज्ञान हुई थी, उस समय उसके माता-पिता पीते थे, तब वह घर से बाहर निकल जाया करती थी। वह देख रही थी कि उसकी छोटी बहिन पीने लगी है। उसने बी० ए० पास कर लिया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक ईसाई युवक से विवाह कर बैठी थी। वह और उसका पति दोनों ही नौकरी करते थे। पति रेलवे में गार्ड था और वह स्कूल में पढ़ाती थी। दोनों के वेतन से भी उनका पेट नहीं भरता था। दो बहिनें और थीं। वे अभी छोटी ही थीं।

पिता समझता था कि यदि अंजू का विवाह भूषण के साथ हो जाय तो वह अपनी छोटी बहिनों की परवरिश में सहायक हो जाएगी। इस कारण वह चाहता था कि यह विवाह हो जाए।

नोरा को भी यह विवाह अरुचिकर नहीं था। परन्तु ईसाई यतीमखाने में पैदा होने और वहीं पलने के कारण वह कट्टर ईसाई थी। इस कारण वह चाहती थी कि उनका विवाह गिरजाघर में जाकर हो और इस प्रकार भूषण को ईसाई बना लिया जाए।

अंजू समझती थी कि उसकी माँ क्या चाहती है। परन्तु उसने घर पर किसी प्रकार का झगड़ा करना उचित नहीं समझा। वह चुप रही।

रात के साढ़े आठ बजे माँ-बेटी दोनों मिनर्वा रेस्टोराँ में जा पहुँचीं। भूषण और पण्डित नारायणदत्त कुछ देर से पहुँचे।

जब सब लोग एक मेज पर बैठ गए तो भूषण ने पूछा, "मम्मी ! अब बताओ, मुझसे पृथक् में क्या बात करना चाहती थीं ?"

"पर क्या यह स्थान पृथक् कहा जा सकता है ?" नोरा ने अर्थ-भरी दृष्टि से पण्डित नारायणदत्त की ओर देखकर कहा।

"मम्मी ! पण्डितजी तो मेरे गुरु हैं। इनको मैं अपना अंग ही मानता हूँ।"

नोरा विचारमग्न हो चुप रही। भूषण ने पुनः पूछा, "हाँ तो बताइये। आप क्या कहना चाहती हैं ?"

"मैं तो यही पूछना चाहती थी कि आप अंजू से रोज मिलते रहते थे। क्या इच्छा है आपकी उससे ?"

"आपने यह प्रश्न अंजू से पूछकर किया है अथवा बिना पूछे ? मैं यह इसलिए पूछ रहा हूँ कि अंजू मेरी इच्छा और आशय को जानती है।"

"मैंने उससे पूछा है। वह तो संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकी। इस कारण मैं आपसे जानने आई हूँ।"

"क्यों अंजू ! तुमने क्या बताया है जिससे मम्मी को संतोष नहीं हुआ ?"

"मम्मी पूछती थीं कि मेरा आपसे विवाह होगा अथवा नहीं। मैंने बताया है कि मुझे पता नहीं। इस पर उनको संतोष नहीं हुआ।"

"तो मम्मी !" भूषण ने पुनः पूछा, "आपको विवाह होने से सन्तोष होगा अथवा न होने से ?"

"विवाह तो होना ही चाहिए। परन्तु अंजू ईसाई की लड़की है। उसका विवाह किसी ईसाई से ही होना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मम्मी ! कोई ईसाई लड़का ढूँढ़ लो। क्यों अंजू ?"

"मम्मी ने ढूँढ़ा तो था एक ईसाई।" अंजू ने कह दिया—"किन्तु वह मुझे पसन्द नहीं था।"

"तो मम्मी कोई और ढूँढ़ देंगी।"

"किन्तु मैंने भी एक ढूँढ़ा है।"

"तो मम्मी को बता दो। कदाचित् उससे मम्मी को सन्तोष हो जाए।"

"पर वह ईसाई नहीं है।"

"तो फिर तुमने उसे ढूँढ़ा ही क्यों ?"

"मैंने उसे अपनी जाति-बिरादरी का ही समझकर ढूँढ़ा है।"

"तो तुम ईसाई जाति की नहीं हो ?" नोरा ने पूछ लिया।

"माँ ! ईसाई कोई जाति नहीं। वह तो एक मजहब है।"

"वही तो जाति होती है।"

"और इस्लाम क्या है ?"

"वह भी एक जाति है।"

"ईसाइयों से पृथक् है या उनकी ही जाति है।"

"वह एक पृथक् जाति है।"

"तो मुसलमान से ईसाई का विवाह हो जाने पर उनके बच्चे पैदा कैसे हो जाते हैं ?"

नोरा इसका अर्थ नहीं समझी। वह टुकर-टुकर मुख देखती रह गई। इस समय पण्डित नारायणदत्त ने अपनी ही बात अंजू द्वारा दोहराई जाती सुन अंजू की माँ से कहा, "मम्मी ! अंजू ठीक कहती है। सब मनुष्य एक जाति के हैं। यही कारण है कि ईसाई, मुसलमान, पारसी, हिन्दू आपस में बच्चे पैदा कर सकते हैं।

"किन्तु मनुष्य कुत्ते, बिल्ली आदि से बच्चे पैदा नहीं कर सकते। कुत्ता बिल्ली से और चूहा गिलहरी से बच्चा पैदा नहीं कर सकता। ये पृथक्-पृथक् जातियाँ हैं। जाति जन्म से होती हैं। परन्तु हिन्दू तो ईसाई होते रहते हैं और अब ईसाई भी हिन्दू होने लगे हैं।"

"तो ऐसा ही समझ लो।" नोरा ने बात समझते हुए कहा, "मैं चाहती हूँ कि अंजू किसी ईसाई धर्म को मानने वाले से ही विवाह करे।"

"माँ ! यही तो कह रही हूँ। मैंने बताया है कि वह लड़का मेरी ही जाति का है। मैंने यह भी कहा है कि वह मेरी बिरादरी का है अर्थात् जिस धर्म को मैं मानती हूँ उसी को वह भी मानता है।"

"सत्य ! तब तो ठीक है। बताओ कौन है वह ?"

"यही तो हैं वे।" अंजू ने भूषण की ओर संकेत किया।

"पर यह तो हिन्दू है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दू धर्म नहीं है मम्मी ! यह तो नेशनेलिटी है। हिन्दुस्तान में रहने के कारण ये हिन्दू हैं। वह मैं भी हूँ मम्मी ! तुम कहाँ रहती हो ?"

"मैं इण्डिया में रहने वाली इण्डियन हूँ।"

"मम्मी ! जिसे अंग्रेज़ी में इण्डिया कहते हैं उसे ही भारत कहते हैं और किसी ज़माने में हिन्दुस्तान कहते थे। इसी में रहने वाले एक भाषा में इण्डियन, दूसरी में भारतीय और उसे ही सर्व-साधारण भाषा में हिन्दू कहते हैं।"

"यह तुम मुझे धोखा दे रही हो। इंडियन कांस्टीट्यूशन में इस देश का नाम हिन्दुस्तान नहीं रहा।"

"नहीं मम्मी ! यह धोखा नहीं है। बात यह है कि नेहरू राज्य में देश का नाम बदल गया है और ये भूषणजी और मैं भी तो नेहरू राज्य से पहले पैदा हुए थे। पैदा होने के समय इसी हिन्दुस्तान में रहने से हिन्दू थे। जब नेहरू ने देश का नाम बदला है तो हम भारतीय हो गए हैं। यह तो ऐसे ही है जैसे पैदा होने के समय मेरा नाम 'सोनी' रखा था और फिर एक पादरी के कहने पर अंजू रख दिया गया। इससे मैं सोनी भी हूँ और अंजू भी। इस प्रकार हम हिन्दू भी हैं, इंडियन भी और भारतीय भी।"

"पर नाम बदला क्यों है ?"

"देखो मम्मी ! आज हम यहाँ खाना खाने आये हैं। राजनीति पर बात करने के लिए नहीं आये। इसलिए यह क्यों की बात मैं नहीं कहूँगी।"

"क्यों नहीं कहोगी ?"

"इसके लिए मुझे देश में राज्य करने वालों की बुद्धि की विवेचना करनी पड़ेगी और तुम पसन्द नहीं करोगी। इस कारण क्यों की बात छोड़ दो। भूषणजी हिन्दू हैं। ये भारतीय भी हैं, इंडियन भी हैं। ये पर्यावाचक शब्द हैं।"

"और इनका धर्म क्या है ?"

"क्यों भूषणजी, आपका धर्म क्या है ?"

"मेरे धर्म का नाम 'मानव धर्म' है।"

"वह क्या होता है ?" नोरा ने क्षुब्ध होते हुए पूछ लिया।

"मम्मी ! इसे अंग्रेज़ी में 'ह्यूमेनिज्म' कहते हैं।"

"मनुष्य का धर्म तो खाना-पीना, मज़े में रहना और···"

नारायणदत्त, जो इस बौद्धिक वार्त्तालाप में रस ले रहा था, उसने नोरा के वाक्य को पूरा कर दिया। उसने कहा, "और बच्चे पैदा करना और फिर मर जाना। ठीक है न ?"

"हाँ, ये भी।"

"पर मम्मी !" बातों का सूत्र पुनः अपने हाथ में लेते हुए भूषण ने कहा, "इतना कुछ तो कुत्ते, बिल्ली, चूहे, सूअर सब पशु भी करते हैं। यह धर्म मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म नहीं है। यह तो प्राणियों का धर्म है। मेरा मतलब है सब 'लिविंग बीइंग्स' (जीव-जन्तुओं) का है।"

"और मनुष्यों का क्या धर्म है।"

"मम्मी! बाइबल में दस खुदाई हुक्म (टेन कमाण्डमेंट्स) पढ़े हैं?"

"हाँ पढ़े हैं।"

"बस, वही मानवधर्म है।" भूषण ने कह दिया, "इनको मेरी भाषा में कहते हैं, धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि को निर्मल करना, ज्ञान प्राप्त करना, सत्य बोलना और क्रोध न करना। मम्मी! मैं ऐसा ही मानता हूँ।"

अंजू ने अपनी बात पर बल देते हुए कहा, "मम्मी! इसलिए मैंने कहा है कि मेरा निर्वाचित मेरी ही जाति का है। जन्म से हम एक ही मनुष्य जाति के हैं और धर्म से हम एक ही बिरादरी के हैं।"

"तो हजरत ईसामसीह का क्या हुआ?"

"वही, जो भगवान् कृष्ण, राम और अन्य साधु-सन्त-महात्माओं का हुआ है। सब अपने-अपने स्थान पर हैं। हम सबकी सुनते हैं। बुद्धि से विचार करते हैं और कभी मानते हैं और कभी नहीं मानते।"

बैरा मेज़ पर भोजन लगाने लगा था। सूप रख दिया गया और सब पीने लगे थे। अंजू ने समझा कि बात समाप्त हो गई और वह प्रसन्न और संतुष्ट थी। परन्तु नोरा अभी सन्तुष्ट नहीं थी। उसने एक-दो चम्मच लिये और सिर उठाकर पूछ लिया, "पर तुम तो कह रही थीं कि तुम्हारा विवाह कब होगा, यह तुम नहीं जानतीं?"

"हाँ मम्मी! मैंने यह विचार डेढ़ वर्ष पूर्व किया था। भूषणजी को बताया भी था। परन्तु भूषणजी ने हाँ या ना किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया।"

"क्यों भूषणजी! आपका क्या उत्तर है? क्या अंजू के बूढ़ी हो जाने पर उत्तर देंगे?"

भूषण ने भी अब सूप पीना छोड़, सिर ऊपर उठाकर नोरा से पूछा, "मम्मी! तुम किस प्रकार के उत्तर की इच्छा करती हो?"

"तुम अंजू को रिजेक्ट कर दो।"

"क्यों, वह सुन्दर है, सभ्य है, सुशील है, पढ़ी-लिखी है और फिर अपने माता-पिता की प्यारी लड़की है। भला इसको मैं क्यों रिजेक्ट कर दूँ?"

"तो पिछले डेढ़ वर्ष में इसके प्रस्ताव का उत्तर क्यों नहीं दिया?"

"मम्मी! हमारी जाति तो एक ही है। परन्तु हमारे धर्म एकसमान नहीं थे। यह हम परस्पर समझ-समझा रहे थे। मैं समझता हूँ कि अब हम समझ गए हैं और अपने-अपने विचार समान कर चुके हैं।"

"क्या समानता हुई है अब उनमें? दस कमाण्डमेण्ट्स तो हम आज से सदियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले भी मानते थे।"

"मानते होंगे। परन्तु मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ था कि मानते हुए भी पालन नहीं करते। देखिए, हमारे एक धर्मशास्त्र में लिखा है कि जो बात अपने लिए अच्छी न हो उसका दूसरे के साथ भी व्यवहार न करो। मैं यह समझा था कि इसकी बिरादरी के लोग ऐसा नहीं मानते। मुझे उस उसूल को इसको समझाने में डेढ़ वर्ष लग गया है।"

"तो अब तुम इससे विवाह करोगे?"

"हाँ, यदि अंजू स्वीकार करेगी, तो।"

"इसका उत्तर तो अपने पिता से पूछकर ही दे सकती है।"

"चाहिए तो यही कि अंजू जी को अपने माता-पिता से पूछकर ही प्रस्ताव को दोहराना चाहिए।"

भोजन के समय और अधिक बातचीत नहीं हुई। नोरा गम्भीर मुद्रा बनाए खाती रही।

पण्डित नारायणदत्त ने खाने की मेज़ पर से उठते हुए पूछ लिया, "भूषणजी! मुझे विवाह पर बुलाइएगा अथवा नहीं?"

"विवाह में पौरोहित्य तो आपको ही करना होगा।"

"विवाह गिरजाघर में होगा।" नोरा ने कह दिया।

: ५ :

भूषण अपनी मोटर गाड़ी में अंजू और उसकी माँ को उनके घर पर छोड़ अपनी कोठी की ओर चल पड़ा। मार्ग में पण्डित नारायणदत्त ने कहा, "आज रात लड़की की मुसीबत आ जाएगी।"

"क्यों?"

"उसकी माँ का मुख काला पड़ गया था। मैं समझता हूँ कि वह क्रोध के कारण था। क्रोध से बुद्धि मलिन हो जाती है और फिर सब कुछ नाश को प्राप्त होता है।"

"मुझे तो अंजू पर विश्वास है।"

"परन्तु इसके सम्बन्धी रंगीन चश्मा लगाए हुए हैं और उस चश्मे में से देखने से तुम कुरूप युवक दिखाई दे रहे हो। कदाचित् तुम्हारी धन-दौलत भी उन रंगीन चश्मों में मिट्टी का ढेर ही दिखाई देगा।"

"पण्डितजी! मैंने तो यत्न किया है। मैंने उसे अपने अनुकूल बना लिया है। अब सुशीला से मुक्ति पा लेने के बाद मैं ईश्वर के भरोसे पर ही हूँ।"

घर पर माता-पिता उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आते ही प्रमिला ने पूछ लिया, "क्या निश्चय किया है भूषण!"

"अभी तो प्रस्ताव हुआ है। उसके माता-पिता प्रसन्न प्रतीत नहीं होते। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल तक पता चल जाएगा।"

"मैं समझती हूँ कि यदि वे किसी प्रकार से बाधा खड़ी करें तो मैं तुम्हारा विवाह एक सप्ताह में एक अन्य लड़की से कर सकती हूँ। अभी-अभी एक स्थान से सन्देश आया है।"

"माँ ! अभी किसी को वचन नहीं देना। मेरा मन अंजू के लिए बन चुका है। मैंने डेढ़-दो वर्ष के निरन्तर प्रयत्न से उसको अपने अनुकूल करने में सफलता प्राप्त की है। मैं पण्डितजी को इसी कारण साथ ले गया था, जिससे ये अनुमान लगा सकें कि मैं कितना सफल हुआ हूँ।"

"हाँ, यह तो ठीक है कि लड़की सब प्रकार से विवाहने योग्य हो गई है। परन्तु माताजी ! यह विवाह होता प्रतीत नहीं होता।" नारायणदत्त का कहना था।

"अच्छी बात है, मैं इसकी एक सप्ताह तक प्रतीक्षा करूँगी।"

अगले दिन कारखाने के पते पर भूषण को अंजू का एक पत्र मिला। उसने लिखा था, 'माँ नहीं मानी, परन्तु पिताजी मेरे अनुकूल हैं और वे माँ से लड़कर भी मेरा पक्ष लेने को कहते हैं। इस कारण आपकी पचास प्रतिशत शर्त स्वीकार हो गई है। मैं चाहती हूँ कि आप वकील से कहकर कोर्ट में विवाह की अर्ज़ी तैयार करवा लीजिए। मैं कल आपके साथ कोर्ट में चलूँगी और यह अर्ज़ी दे आऊँगी। पिताजी मेरे साथ चलेंगे।

'मैंने यह पत्र इस कारण लिखा है कि आप वकील से मिलकर सबकुछ तैयार रखें। वैसे मैं सायं चाय पर नियत स्थान पर मिलूँगी।'

भूषण को यह पत्र बारह बजे मध्याह्न मिला था। इस कारण उसने उसी समय मोटर निकलवाई और अपने वकील विश्वम्भर दास के पास चला गया। वह ज़िला कचहरी में ही था। उसको कहकर अर्ज़ी तैयार करवाई और उसको यह कहा कि वह कल दिन के नौ बजे उसके घर पर आयेगा, लड़की भी साथ होगी और वहाँ से ही वे कचहरी चलेंगे, वह कारखाने में चला आया। वह उत्सुकता से सायंकाल के पाँच बजने की प्रतीक्षा करने लगा।

सायंकाल अंजू चाय पीने नहीं आई। छः बजे तक उसकी प्रतीक्षा कर वह उसके घर जा पहुँचा। घर पर अंजू की दो छोटी बहिनें और उनका पिता मिस्टर पीटर मिले। अंजू और उसकी माँ घर पर नहीं थे।

पीटर ने भूषण को आया देखकर पूछा, "अंजू को ढूँढ़ते हुए आये हैं ?"

"जी।"

"वह ब्रेकफास्ट करके मिशन के केन्द्रीय कार्यालय को चली गई थी। जाते हुए उसने कहा था कि वह आपको पत्र लिख रही है जिससे आप कचहरी में विवाह का प्रबन्ध कर रखें। मुझे कल बैंक से छुट्टी लेकर आप लोगों के साथ कचहरी चलना चाहिए। इस बात के समय उसकी माँ भी समीप ही बैठी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह गई तो मैं भी बैंक चला गया। वहाँ से मैं पाँच बजे आया हूँ। लड़कियाँ आज स्कूल नहीं गईं। स्कूल में छुट्टी थी। उनका कहना है कि उनकी माँ ग्यारह बजे यहाँ से गई हैं और फिर वापस नहीं लौटीं। अंजू तो नित्य साढ़े छः बजे आया करती है।"

भूषण की समझ में आ रहा था कि माँ की सहायता से अंजू का अपहरण कर लिया गया है। उसने पीटर से कहा, "आप मेरे साथ मोटर में चलिए। हमें मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में चलना चाहिए।"

"हाँ, यदि हो सके तो किसी पुलिस-अधिकारी को साथ ले चलिए।"

भूषण वहाँ से स्थानीय पुलिस थाने में चला गया। वहाँ पीटर ने रिपोर्ट लिखा दी और फिर दस रुपये का एक नोट थानेदार की जेब में डालते हुए उसने तहकीकात के लिए मोटर में साथ चलने के लिए कहा।

सेण्टर का कार्यालय रात-दिन खुला रहता था। रात के समय एक क्लर्क और चपरासी वहाँ रहते थे। थानेदार ने डाँटकर डॉक्टर ह्यूबर्ट के विषय में पूछा तो क्लर्क ने बताया, "वे नगर से बाहर गए हैं।"

"वे अकेले गए हैं अथवा कोई अन्य भी साथ गया है।"

"उनके साथ एक औरत थी, वे हमारे कार्यालय की एकाउंटैंट की माँ थीं। वे कार्यालय में आई थीं, परन्तु जाते समय वे मोटर में उनके साथ नहीं थीं।"

"यहाँ से किस समय गए हैं?"

"बारह बजे के लगभग गए हैं।"

"उनके साथ और कौन-कौन था?"

"मोटर ड्राइवर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था।"

क्लर्क के बयान लिखकर उसके हस्ताक्षर करा लिए गए। थानेदार ने कह दिया, "देखो जी! यह ईसाइयों के मिशन का प्रश्न है। हमें गृहमन्त्री की यह आज्ञा है कि इनके विषय में जब भी कोई बात आये तो उनसे पूछने के बाद ही कार्यवाही की जाए।"

"ठीक है चौधरी साहब! परन्तु कार्यवाही करने से पहले जाँच करने की तो मनाही नहीं। मेरी तो राय यह है कि इस विषय में पूरी जाँच करिये कि वह लड़की आज कार्यालय में आई थी अथवा नहीं और वह कब तक कार्यालय में रही है। उसके रजिस्टरों में उसके कार्य की जाँच की जाए कि उसने कितने बजे तक कार्य किया है। आप यह सब जाँच करिए। कार्यवाही करने से पहले आप गृहमंत्री से पूछताछ करिएगा।" इतना कहते-कहते भूषण ने एक सौ का नोट थानेदार की जेब में रख दिया। इससे बात बन गई। सौ रुपया गृहमन्त्री के आदेश से अधिक बलवान सिद्ध हुआ।

रात भूषण ने अपने माता-पिता से राय की तो उसके पिता ने कहा, "भूषण!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विवाह तो होगा नहीं। फिर भी मैं कहता हूँ कि तुमने लड़की का पता करने का ठीक प्रकार से यत्न नहीं किया।"

"पिताजी ! और क्या करना चाहिए था ?"

"थानेदार से अधिक तो अंजू के कार्यालय का कोई व्यक्ति सहायक हो सकता था। रुपया वहाँ खर्च करना चाहिए।"

"यह कैसे होगा ?"

"यह मैं करता हूँ।" प्रेमनाथ उसी समय अपनी गाड़ी लेकर चल पड़ा। माँ और पुत्र उसकी प्रतीक्षा करने लगे। रात के भोजन का समय व्यतीत हो गया। सोने का समय भी निकल गया। इस पर तो भूषण को चिन्ता लगने लगी। वह पुनः मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ वही क्लर्क रात की ड्यूटी पर था। उससे पूछताछ करने पर पता चला कि एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति आये थे और मिस अंजू के साथ कार्य करने वाले क्लर्कों का पता पूछकर चले गए हैं।

उनके पते भूषण ने भी नोट कर लिए और बारी-बारी वह भी सबके घर पर पता करने लगा। वे क्लर्क प्रायः सभी ईसाई थे। ईसाई क्लर्कों ने तो कुछ बताया नहीं। केवल एक वृद्ध क्लर्क था रामनाथ। वह पिछले बीस वर्ष से इस मिशन में नौकरी करता था। उसने भूषण को बताया कि मिस्टर ग्रोवर आये थे और वे अंजू के विषय में कुछ सूचना ले गए हैं।

"कितने बजे यहाँ आये थे ?"

"लगभग नौ बजे यहाँ से गए हैं।"

उस समय रात के बारह बज रहे थे। मिश्रजी ने पूछ लिया, "बात क्या है ?"

"अंजू लापता है।"

"ओह ! तो यह बात मिस्टर ग्रोवर ने क्यों नहीं बताई ? मैं बताता हूँ, मिस्टर ह्यूबर्ट उससे विवाह करने की इच्छा कर रहे थे। इस समय वे भोपाल में हो सकते हैं और जहाँ तक मेरा विचार है कि मिस अंजू इस समय तक मिसेज ह्यूबर्ट हो गई होंगी।

"ऐसा यहाँ होता रहता है। एक बन्द गाड़ी है। वह किताबें ले जाने के काम में आती है। परन्तु कभी-कभी मानव पार्सल भी उसमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर गुप्त रूप में ले जाए जाते हैं।"

"आप कोर्ट में यह बयान देंगे क्या ?"

"मैं इस समय बूढ़ा हो रहा हूँ। मेरी नौकरी और पेंशन का प्रबन्ध कर दिया जाय तो मैं इसमें सहायता कर दूँगा।"

"उसका प्रबन्ध हो जाएगा।"

"ठीक है, आप प्रबन्ध करिए। मैं आपकी इस विषय में बहुत सहायता कर सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा ग्रोवर साहब आपसे मिलेंगे।"

जब भूषण घर पहुँचा तो प्रेमनाथ उस समय तक घर पहुँच गया था और भूषण की प्रतीक्षा कर रहा था। भूषण के आने पर पिता ने बताया, "मिस्टर रामनाथ मिश्र से मिलने के उपरांत मैं यहाँ के डिप्टी कमिश्नर के पास गया था। उसने कहा है कि इस मिशन के विरुद्ध किसी प्रकार की कार्यवाही करने के पूर्व मुझे राज्य के गृहमन्त्री से पूछना होगा। रात के समय उसे जगाने से वे लोग डरते हैं। कल प्रातःकाल ही वह जाने के लिए राज़ी हुए हैं। मैं स्वयं गृहमन्त्री के पास जा पहुँचा। उनको जगाया गया और जब उनको बात बताई गई तो बोले कि उस केन्द्र के विरुद्ध उनके पास सप्ताह में एक-दो शिकायतें आती रहती हैं। परन्तु जाँच करने पर प्रायः सभी झूठी सिद्ध होती हैं। इस कारण वे सीधी कार्यवाही तो करेंगे नहीं। जब उचित मार्ग से यह बात उनके पास आयेगी तो वे जाँच कर उस पर कार्यवाही की आज्ञा दे देंगे।

"गृहमन्त्री ने यह भी कहा कि अधिकांश शिकायतें आर्यसमाजियों की ओर से आती हैं। आर्यसमाजी समझते हैं कि स्वराज्य होने से राज्य उनका हो गया है। वे झूठ-सच, मुसलमान तथा ईसाइयों को एक ही ठेले में हाँककर उन्हें समाप्त कर देना चाहते हैं।

"मैं उसका और अपना आधा घण्टा खराब करके यहाँ लौट आया हूँ।"

"यह तो घोर अन्याय और अनर्थ हो गया है।"

"यह ठीक है। परन्तु मैं तो यह समझा हूँ कि इस सेक्युलर स्टेट में हिन्दू अनाथ हो गया है।"

भूषण ने अपने पिता के कथन में संशोधन करते हुए कहा, "पिताजी! यह कहना और भी ठीक है कि इस राज्य में देश के भले लोग अनाथ हो गए हैं।"

"एक ही बात है भूषण!"

उस रात का भोजन साढ़े बारह बजे किया गया। सोते समय भूषण की माँ उसके पास आई, बोली, "अब क्या होगा?"

"माँ! कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

"देखो भूषण! विवाह का विचार छोड़कर उसे बलात्कार से तो बचाना ही चाहिए।"

"वह तो माँ, अब तक हो चुका होगा।"

"कुछ भी हो। यदि वह चाहे तो उसे बचाने का यत्न करना चाहिए। कुछ ऐसा करना चाहिए जिसे कहते हैं शठे शाठ्यं समाचरेत्।"

"देखूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

"मुझे यह लड़की पसन्द आ गई थी। मेरी समझ में आ रहा था कि उसके माता-पिता ही विवाह में बाधक हैं, परन्तु यह तो दूसरी ही बात निकली।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

भूषण बहुत प्रातःकाल ही घर से निकल गया। वह रामनाथ मिश्र के घर जा पहुँचा। रामनाथ स्नान कर रहा था। स्नान करने के उपरान्त वह भूषण से मिला तो भूषण ने कहा, "मैं आपसे उस लड़की की सहायता के लिए आया हूँ। बताइए, आप क्या कर सकते हैं?"

"मैं आपको डॉक्टर ह्यूबर्ट के शत्रुओं का पता दे सकता हूँ। यदि उनको अच्छा खिलाया-पिलाया जाए तो वह लड़की डॉक्टर के पंजे से छूट सकती है। मगर एक बात है। इसे हिन्दू और ईसाई का प्रश्न न बनने दिया जाए। यदि लड़की का कोई ईसाई सम्बन्धी उनके पास पहुँचे तो काम बन सकता है।"

भूषण ने कह दिया, "ऐसा हो सकता है। लड़की का पिता इसमें आगे आ सकता है।"

"तो फिर आइए। एक बात तो यह करिए कि थाने में रिपोर्ट लिखाइए कि लड़की को कोई आर्यसमाजी भगाकर ले गया है। इससे पुलिस लड़की की खोज में बाधक नहीं रहेगी। दूसरी बात यह करिए कि उसके पिता को मेरे पास ले आइए। मैं उसको डॉक्टर के शत्रुओं से मिला दूंगा। और फिर उनसे लेने-देने की बात करें तो मैं समझता हूँ कि लड़की एक-दो दिन में पिता के हवाले हो जावेगी।"

भूषण इस वृद्ध अनुभवी की बात सुनकर चकित रह गया। उसने निश्चय करने में विलम्ब नहीं किया। उसने कहा, "आप इसमें लड़की के पिता की सहायता करिए। आपकी सेवा तो की ही जावेगी और यदि किसी प्रकार की नौकरी इत्यादि में हानि हुई तो उसकी पूर्ति उचित रूप में कर दी जावेगी। हाँ, लड़की के पिता को कितना धन व्यय करना होगा?"

"अभी तो उसको केवल एक निर्धन उत्पीड़ित ईसाई के रूप में ही भेजिएगा, फिर भी कुछ तो देना पड़ेगा ही। वह मैं निश्चय करा दूंगा।"

भूषण उसी समय अंजू के पिता पीटर से मिलने के लिए गया। जब पीटर को बात समझाई गई तो वह बोला, "मान लीजिए, कि लड़की डॉक्टर के पंजे से छूट जाती है। तो क्या फिर भी आप उससे विवाह कर लेंगे?"

"देखिए साहब! भविष्य के लिए यही कहा जा सकता है कि लड़की की नीयत और इच्छा के अनुरूप ही व्यवहार होगा। हाँ, यह आप निश्चय जानिए कि उसकी इच्छा के विपरीत उससे बलात्कार किया जाना उसके चरित्र पर किसी प्रकार का लांछन नहीं माना जा सकता।"

"रुपया तो खर्च होगा। मेरा तो बैंक-बैलेंस निल है।"

"यह सब हो जाएगा। पहले तो आप थाने में लड़की के अगवा की रिपोर्ट में लिखाइए कि आपको सन्देह है कि उसे कोई आर्यसमाजी भगाकर ले गया है। दूसरे, मैं आपको एक जानकार आदमी के साथ कुछ लोगों के पास भेज रहा हूँ। वे लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को निकालने में आपकी सहायता करेंगे। वह मध्यस्थ व्यक्ति ही लेन-देन की बात करेगा। जो कुछ भी वह करेगा, आप मान जाइए। इस पर भी विवशता प्रकट करते रहिए। मैं आपकी उस व्यक्ति के घर पर ही प्रतीक्षा करूँगा।"

थानेदार को रिपोर्ट बदलने और मिशन सेण्टर में ली गई रिपोर्ट को फाड़कर फेंकने के लिए भी कुछ देना पड़ा। जब रिपोर्ट यह लिखाई गई कि लड़की के अगवा का सन्देह आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं पर है तो थानेदार हँस पड़ा और उसने कहा, "किसी का नाम भी लिखा दो।"

"लिख लीजिए। श्री प्रेमनाथ ग्रोवर के सुपुत्र भूषण कुमार, मैनेजर, सैंट्रल प्लास्टिक प्रा० लि०।"

थानेदार फड़क उठा और बोला, "आपकी तलाशी, आप पर पुलिस बैठाने की आज्ञा तो तुरन्त हो जाएगी।"

"कुछ हानि नहीं होगी।"

भूषण पीटर को वहाँ से रामनाथ के पास ले गया। मिश्र पीटर को लेकर कहीं चला गया और फिर एक घण्टे में वापस आ गया। उसने आते ही कहा, "आप यदि तुरन्त दो सौ रुपया इनके हाथ वहाँ भेज दें जहाँ मैं इनको ले गया था तो 'रेस्क्यू वर्क' आरम्भ हो जावेगा।

"कुल एक सहस्र रुपया लग जाएगा। और यदि डॉक्टर उसे लेकर कहीं अन्यत्र भाग गया होगा तो और अधिक खर्च हो सकता है। इस लड़की के मामले में कठिनाई यह है कि लड़की की माँ उसके साथ है और वह लड़की को निकालने में बाधक होगी।"

भूषण ने तीन सौ रुपया पीटर को दिया। उसने कहा कि दो सौ तो उसको तुरन्त दे देना चाहिए। एक सौ रुपया एहतियात के तौर पर अपने पास रखे। शेष कार्य की प्रगति बताने पर दे दिया जाएगा।

रामनाथ ने कहा, "शेष मेरे सामने दिलवाइएगा। अन्यथा कठिनाई हो जाएगी।"

"ठीक है।"

"ऐसा करिए, मेरे कार्यालय पहुँचने में देरी हो गई है। मैं आपकी ही गाड़ी में कार्यालय जाऊँगा। मिस्टर पीटर तो भाड़े की गाड़ी में आयेंगे।"

पीटर एक ओर को चल दिया और भूषण रामनाथ को लेकर उसे कार्यालय में छोड़ने के लिए चल पड़ा। सेण्टर के कार्यालय में हलचल मची हुई थी। पुलिस वहाँ रात से भिन्न प्रकार से जाँच करने आई हुई थी। सेण्टर के कर्मचारियों को यह जानकर सन्तोष हुआ कि लड़की के भगाने का सन्देह किसी आर्यसमाजी नेता के लड़के पर हो गया है। इस पर केन्द्र के वार्डन ने समाचार समिति को यह समाचार दे दिया कि एक नाबालिग ईसाई लड़की का अपहरण कर लिया गया है और यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देह किया जा रहा है कि अपहरण यहाँ के स्थानीय आर्यसमाज के एक प्रमुख नेता के सुपुत्र ने किया है। पुलिस जाँच कर रही है।

भूषण रामनाथ को कार्यालय में छोड़कर अपने घर पर पहुँचा तो पुलिस वहाँ भी पहुँची हुई थी। प्रेमनाथ इससे बहुत ही परेशानी अनुभव कर रहा था और विवश वह अपने बयान दे रहा था। जब वह लिखाने लगा कि मुझे सन्देह है कि लड़की का अपहरण सेण्टर के चीफ मिस्टर ह्यूबर्ट ने किया है तो थानेदार लिखते-लिखते रुक गया। उसने कहा, "आप यदि डॉक्टर पर सन्देह की बात न लिखाएँ तो अधिक अच्छा होगा।"

"वह क्यों?"

थानेदार उसको पृथक् में ले जाकर समझाने के लिए उठा ही था कि भूषण वहाँ आ गया। उसे देख थानेदार कहने लगा, "आप ज़रा अपने सुपुत्र से बात कर लीजिए।"

भूषण ने अपने पिता को नीति की बात बताई तो उसने अपना संशोधित बयान लिखाना आरम्भ किया। प्रेमनाथ ने कहा, "हाँ, परसों रविवार के दिन अंजू अपने माता-पिता के साथ हमारे कारखाने के उद्घाटन-यज्ञ में सम्मिलित हुई थी। उसके बाद वह मेरे लड़के के साथ यहाँ कोठी पर आई थी और मध्याह्न का भोजन उसने यहीं किया था। उसके उपरान्त वह मुझसे नहीं मिली। पिछली दोनों रात भूषण घर पर सोया है।"

भूषण के भी बयान हुए। उसने बताया कि रविवार की रात को उसने और उसकी माँ ने मेरे साथ रात का खाना मिनर्वा में खाया था। खाने के बाद मैं माँ-बेटी को उनके घर पर छोड़ गया था। अगले दिन लड़की का एक पत्र मुझे मिला। उस पत्र के अनुसार मैंने उस लड़की से अपने विवाह की अर्ज़ी विश्वम्भरनाथ वकील से तैयार करवाई थी। इसके उपरान्त वह मुझे नहीं मिली।

पुलिस ने सरसरी तौर पर कोठी की तलाशी ली और फिर चली गई।

तीन दिन तक देश में धूम रही कि आर्यसमाजी अब ईसाई लड़कियों का अपहरण करने लगे हैं। इसके विपरीत भूषण ने अपना बयान भी छपवाया।

बृहस्पतिवार रात के दस बजे एक टैक्सी में पीटर अंजू के साथ भूषण की कोठी में जा पहुँचा।

पीटर ने कहा, "लड़की तो अब यहाँ रहेगी। आप अभी मिश्रजी से मिल लीजिए। कुछ लोग वहाँ आपकी प्रतीक्षा में बैठे हैं। मिश्रजी का कहना है कि उन लोगों से निबटने के लिए तुरन्त वहाँ आइए और अभी लड़की के मिल जाने के विषय में किसी प्रकार का हल्ला-गुल्ला नहीं होना चाहिए।"

भूषण पीटर के साथ ही अपनी गाड़ी में रामनाथ मिश्र के घर जा पहुँचा।

अंजू को प्रमिला अपने कमरे में ले गई और उसे अपने सामने बैठाकर पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी, "कहाँ से आ रही हो अंजू ?"

उत्तर देने की अपेक्षा अंजू आँसू बहाने लगी। वह अश्रु बहाती हुई मुँदी आँखों से मौन उसके सामने बैठी रही। प्रमिला ने प्यार देना आरम्भ किया तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। प्रमिला उसे शान्त करने का यत्न कर ही रही थी कि प्रेमनाथ ग्रोवर आ गया। उसने कहा, "अंजू ! तुमको अभी छिपाकर रखना होगा। इस कोठी में किसी भी समय पुलिस आकर तुमको पकड़ ले जा सकती है।"

यह सुनकर तो अंजू इस प्रकार उठ खड़ी हुई कि मानो उसे बिच्छू ने डंक मारा हो। प्रमिला ने प्रश्न-भरी दृष्टि से प्रेमनाथ की ओर देखा तो उसने कह दिया, "मैं इसे अपने क्लर्क शांतिनारायण के घर ले जाकर रखता हूँ। मैं उसे सब समझा दूँगा और आशा करता हूँ कि एक-दो दिन में हम इसका दूसरा प्रबन्ध कर देंगे।"

प्रेमनाथ का यह विचार था कि यदि पुलिस में किसी ने अभी मुखबिरी कर दी कि लड़की यहाँ है तो लम्बा झगड़ा आरम्भ हो जाएगा। पुलिस इसमें रुपया बनाने का पृथक् से प्रयत्न करेगी। बदनामी भी बहुत होगी।

जब भूषण मिश्रजी के घर से लौटा तो प्रेमनाथ अंजू को शांतिनारायण के घर पर छोड़ आया था। भूषण ने बताया कि अंजू की माँ लड़की के साथ थी। इसका विवाह ह्यूबर्ट के साथ भोपाल के नर्सिंग बोर्डिंग हाउस के चैपल में रजिस्टर्ड हो चुका है। साक्षी के रूप में उसकी माँ के हस्ताक्षर भी वहाँ हैं।

"पीटर और ये लोग एक दिन तक लड़की से सम्पर्क बनाने का यत्न करते रहे। आज प्रातः दस बजे ही कोठी की भंगिन की सहायता से अंजू कोठी के बाहर आ सकी। वे तो जल्दी ही पहुँच जाते परन्तु मार्ग में टायर पंक्चर हो जाने के कारण से विलम्ब हो गया।"

प्रेमनाथ ने पूछा, "क्या देना पड़ा है ?"

"एक सहस्र रुपया अब दिया है। अब मिश्रजी का कहना था कि लड़की के बयान लिखाकर ह्यूबर्ट को दिखाने चाहिए। पीटर उसके बयान लेकर जाए और कहे कि अंजू मजिस्ट्रेट के सामने इस बयान के साथ हाज़िर होने वाली है। और यह बात सारे देश में विख्यात हो जाएगी। तब ह्यूबर्ट से समझौता हो सकता है। उसके बाद ही कुछ अन्य किया जा सकता है।

"कल प्रातःकाल पीटर यहाँ आवेगा और अंजू से बयान लिखवाकर ले जाएगा। अंजू अपना बयान तैयार रखे।"

"ठीक है, उसे आने दो।" प्रेमनाथ ने भूषण को यह बताना उचित नहीं समझा कि लड़की कहाँ है।

भूषण ने अपनी माँ से पूछा, "माँ ! अंजू क्या कहती है ?"

"वह यहाँ नहीं है। तुम्हारे पिता ने उसे कहीं अन्यत्र छिपाकर रखने का प्रबन्ध कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण देख रहा था कि माता-पिता दोनों ही अंजू को बचाने में रुचि ले रहे हैं, इससे उसे सन्तोष और प्रसन्नता हुई।

: ७ :

अगले दिन पीटर को अंजू से मिला दिया गया और अंजू ने अपना पूर्ण बयान लिखकर अपने पिता को दे दिया। उस बयान की तीन प्रतियाँ टाइप करा ली गईं और एक प्रति पीटर लेकर मिशन के केन्द्र में जा पहुँचा। ह्यूबर्ट तब तक छुट्टी से लौटा नहीं था। पीटर को ह्यूबर्ट का सहायक रैवरेंड स्टीन वहाँ मिला। पीटर ने उससे कहा, "मेरा नाम पीटर मैथ्यू है। मैं यहाँ अकाउण्टेंट का काम करने वाली लड़की अंजू का पिता हूँ। मुझे लड़की की चिट्ठी आई है और उस चिट्ठी के साथ उसका बयान है। मैं उसके हस्तलिखित बयान की नकल ले आया हूँ। ईसाई होने के नाते मैं, इस बयान को अंजू की इच्छानुसार मजिस्ट्रेट के पास ले जाने के पूर्व ह्यूबर्ट को दिखा देना चाहता था। इसमें मिशन की बहुत बदनामी होने वाली है।"

"अंजू कहाँ है?"

"पत्र भोपाल से आया है। वह अपना पता बताना नहीं चाहती। वह स्वयं मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होना चाहती है और इस बयान को देना चाहती है।"

"क्या लिखा है इस बयान में?"

"मैं यह डॉक्टर साहब को देना चाहता था। अंजू ने मुझे यह लिखा है कि उसका ईसाई धर्म और मिशन से सम्बन्ध रहा है। अतः वह सार्वजनिक रूप में उसकी निन्दा करना नहीं चाहती। परन्तु यदि उसकी स्वतन्त्रता पर आघात जारी रहा तो वह अपनी रक्षा के लिए सरकारी सहायता प्राप्त करने के लिए अपना बयान न केवल मजिस्ट्रेट के समक्ष देगी, वरन समाचार-पत्रों में भी देगी।"

रैवरेंड स्टीन ने क्रोध से उबलते हुए पीटर के हाथ से अंजू का टाइप किया हुआ वह बयान ले लिया जो वह अपने साथ लाया था। बयान अंग्रेजी भाषा में लिखा हुआ था। स्टीन ने बयान के नीचे हस्ताक्षर देखने चाहे किन्तु उसमें हस्ताक्षर नहीं थे। केवल उस स्थान पर अंजू का नाम टाइप किया हुआ था।

स्टीन ने क्रोध में पूछा, "यह क्या है? बिना हस्ताक्षरों के इसे प्रामाणिक कौन मानेगा?"

पीटर ने शान्ति से कहा, "आप जानते हैं कि डॉक्टर ह्यूबर्ट कहाँ हैं?"

"नहीं?"

"तो यह मुझे वापस कर दीजिए। आपका इससे कोई मतलब नहीं।"

स्टीन ने उस बयान को पढ़ना आरम्भ कर दिया। बयान में लिखा था—

"१० अगस्त को मध्याह्न बारह बजे मुझे डॉक्टर ह्यूबर्ट ने अपने पास बुलाया। वे अपने कार्यालय में बैठे थे। मेरी माँ नोरा मैथ्यू भी वहाँ उनके कार्यालय में एक कुर्सी पर बैठी थीं। जब मैं उनके समक्ष उपस्थित हुई तो डॉक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब ने मुझसे कहा, मैं तुमसे पृथक् में एक बात पूछना चाहता हूँ।

"वे मुझे पीछे के कमरे में ले गए। मेरी माँ हमारे साथ थी। वहाँ पहुँच डॉक्टर ने मुझे एक सोफे पर बैठाया और वहाँ तिपाई पर पड़े एक रूमाल को बल-पूर्वक मेरे मुख और नाक पर लगा दिया। मुझे वहाँ से भागने से रोकने के लिए डॉक्टर और मेरी माँ ने मुझे पकड़ रखा था। मैंने भागने का यत्न किया। मैं समझ गई थी कि मुझे अचेत किया जा रहा है। परन्तु उस हाथापाई में मेरा साँस चढ़ गया। और रूमाल पर लगी औषध बरबस मेरी नाक में जाने लगी। मैं अचेत हो गई।

"जब मुझे चेत हुआ तो मैंने देखा कि मुझे एक बन्द गाड़ी में तेज़ गति से ले जाया जा रहा है। गाड़ी चारों ओर से बन्द थी और भीतर सर्वथा अँधेरा था। मुझे चेतना प्राप्त करने में और अपनी स्थिति समझने में कुछ समय लगा। मोटर गाड़ी पर्याप्त वेग से भागी जा रही थी और मुझे बुरी तरह हिचकोले लग रहे थे। मैं समझ गई कि मैं उस वैन में बन्द हूँ जो केन्द्र की पुस्तकें बन्द कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए प्रयुक्त होती थी।

"मुझे किसी ने बताया था कि वह 'वैन' कभी-कभी किसी प्रलोभनों में न फँसने वाले व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए भी प्रयोग में लाई जाती थी। इस बात का अनुभव होते ही मेरे मुख से चीख निकल गई।

"उस समय किसी ने बिजली की टार्च जलाई और मेरे मुख पर रोशनी डाल कर कहा, 'अंजू! चुप रहो।'

"मैंने पहचान लिया। वह आवाज़ मेरी माँ की थी। मैंने कहा, 'तो तुम भी मेरे साथ ही हो?'

" 'हाँ, चुप रहो।' माँ ने कहा।

"मैंने पूछा कि हम जा कहाँ रहे हैं।

"माँ ने कहा, 'मुझे नहीं मालूम।'

" 'पर माँ, तुमने मुझे अचेत करते समय डॉक्टर की सहायता क्यों की थी?'

"माँ ने कहा—'यह आवश्यक था। तुमको उस आर्यसमाजी से मुक्ति दिलाने के लिए। उसने तुझे अपने सम्मोहन में फँसा रखा था।'

" 'और डॉक्टर ने मुझे अचेत कर पकड़ा है?' मैंने कहा। माँ का कहना था—'यह उससे ठीक है और तुम अब स्वतन्त्रता से अपना विवाह कर सकोगी।'

" 'किससे?'

" 'जिससे डॉक्टर कहेगा।'

" 'तो यह स्वतन्त्रता कहलाएगी?'

" 'हाँ, विधर्मियों के अत्याचार से।'

"मैं समझ नहीं सकी कि माँ क्या कह रही हैं। परन्तु मोटर गाड़ी भागी जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी और मैं देखना चाहती थी कि कहाँ जाकर ठहरती है।

"दोपहर लगभग बारह बजे मैं अचेत की गई थी और जब गाड़ी खड़ी हुई और मुझको बाहर निकाला गया तो मैं सर्वथा सचेत थी। मैंने अपनी हाथ की घड़ी में समय देखा तो साढ़े पाँच बजे थे। मेरा अनुभव ठीक था। मैं 'बुक्स वैन' में बन्द थी। गाड़ी एक कम्पाउण्ड में खड़ी थी और कुछ लोग हमारे चारों ओर खड़े थे। कुछ अन्तर पर डॉक्टर ह्यूबर्ट की मोटर गाड़ी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी गाड़ी में वहाँ हमसे पहले पहुँच गया था। डॉक्टर गाड़ी के पास नहीं था।

"माँ ने मेरी बाँह पकड़ी और मुझे कोठी में ले गई। डॉक्टर ह्यूबर्ट वहाँ बैठा था। हमें देखते ही कहने लगा, 'आ गई हो अंजू ! मैं जो बात तुमसे करना चाहता था वह वहाँ केन्द्रीय मिशन के कार्यालय में नहीं हो सकती थी। इस कारण तुमको यहाँ लाना पड़ा। अभी तुम दोनों बगल के कमरे में चलो। वहाँ चाय इत्यादि पीकर थकावट दूर कर लो।'

"माँ मुझे ड्राइंग-रूम के पिछले कमरे में ले गई। खाने की मेज़ पर खाने की चीज़ें और शराब रखी थी। माँ ने मेरी प्लेट में सैंडविचिज़ रखते हुए कहा, ज़रा खा लो, इससे बात करने में सहायता मिलेगी।

"मुझे भूख लगी थी। मैंने खाना आरम्भ कर दिया। माँ ने मेरे गिलास में ह्विस्की और सोडा डाल दिया। मैंने ह्विस्की लेने से इनकार कर दिया। माँ ने थोड़ा ले लेने के लिए कहा। उनका कहना था कि इससे बात करने में सुविधा रहेगी। मैंने अपना गिलास सोडा वाटर से भर लिया जिससे शराब हल्की हो जाए। दो घूंट पीकर मैंने गला गीला किया। दो सैंडविचिज़ और दो घूंट ह्विस्की के अलावा मैंने शेष कुछ भी लेने से इनकार कर दिया।

"इस समय पाँच-छः औरतों ने आकर मुझे चारों ओर से घेर लिया और विवाह के लिए गिरजाघर में जाते समय पहनने योग्य श्वेत वस्त्र लेकर मुझे जबरदस्ती पहनाने लगीं। पहले तो मैंने विरोध किया परन्तु उन्होंने मेरे मुख पर हाथ रखकर मुझे चुप करा दिया और बलपूर्वक मुझे कपड़े पहनाती रहीं। कपड़े पहनाने के बाद मुझे पकड़कर वे कोठी के पिछवाड़े के रास्ते से ले गईं और चैपल में ले जाकर खड़ा कर दिया। डॉक्टर ह्यूबर्ट मेरे समीप आकर खड़ा हो गया और एक पादरी सामने आ गया। एक रजिस्टर निकाला गया और मेरी माँ से पूछकर उस पर मेरा नाम-धाम लिखा गया और फिर मेरी आयु इत्यादि लिखकर डॉक्टर के हस्ताक्षर हो गए। माँ के हस्ताक्षर हो गए। तदुपरान्त मुझे हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया।

"मैंने इनकार किया तो बलपूर्वक मेरे अँगूठे पर स्याही लगाकर रजिस्टर पर निशान बना दिया गया। और उसके समीप पादरी ने कुछ लिखा और माँ ने पुनः हस्ताक्षर किए। फिर पादरी ने हम दोनों को 'मैन एण्ड वाइफ' घोषित कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने पादरी से उसी समय कहा, 'तुम कोई शैतान मालूम होते हो।'

"पादरी ने बहुत ही नम्र और विनीत वाणी में उत्तर दिया, 'मैं तो प्रभु यशु मसीह का अति विनीत सेवक हूँ।'

"उसी समय मुझे पकड़कर एक अन्य कमरे में ले जाया गया। वहाँ दस-बारह मर्द और औरतें एक खाने की मेज़ के चारों ओर खड़े थे। मेज़ खाद्य-पदार्थों से भरी पड़ी थी। मुझे वहाँ ले जाकर खड़ा किया गया और लोग मुझे तथा मेरी माँ को बधाइयाँ देने लगे।

"मैंने ऊँची आवाज़ में कहा, 'लेडीज एण्ड जैण्टलमैन; जो कुछ भी अभी हुआ है वह ग़ैरी-क़ानूनी बात थी। वह मेरे साथ अत्याचार था। आप लोग भी इस अपराध में सम्मिलित हो रहे हैं। आप लोग भी मुजरिम हैं।

"सब हँसने लगे। उनमें से एक ने कहा—इस पर भी तुम मिसेज ह्यूबर्ट हो गई हो। यह बन्धन अब बिना पोप की आज्ञा के नहीं टूट सकता।

"मैंने कहा—इसका अस्तित्व ही नहीं। यह जब है ही नहीं तो इसके टूटने का प्रश्न ही नहीं उठता।

"सब खाने-पीने लगे। मैं विना कुछ खाये-पीये खड़ी रही। माँ ने पेट भरकर खाया। वह मुझे खाने के लिए प्रोत्साहन देने लगी। मैं क्रोध और आशंका से उद्विग्न खड़ी रही। कुछ देर बाद माँ मुझे एक शयनागार में ले गई और मुझे समझाते हुए कहने लगी, 'अंजू! जो होना था हो गया। अब अपने अच्छे भाग्य पर सन्तोष करो। डॉक्टर तुमको लेकर दो-तीन दिन में हनीमून के लिए अमेरिका जाने वाला है।

" 'देखो, तुम बड़ी थकी मालूम होती हो। यहाँ आराम करो। मैं तुमको खाने के समय मिलूँगी।'

"इतना कहकर माँ एकाएक घूमी और मुझे वहाँ अकेली छोड़कर चली गई। मैं समझ रही थी कि डॉक्टर आने वाला है और मुझसे बलात्कार करेगा। मैं उसका विरोध करने की तैयारी करने लगी थी। मैं कमरे में कोई ऐसी वस्तु देखना चाहती थी जिससे मैं डॉक्टर की हत्या कर दूँ। परन्तु वहाँ तो कुछ भी नहीं था।

"मैं कुछ देर तक खड़ी रही। डॉक्टर की प्रतीक्षा करती रही। पर वह नहीं आया। आखिर मैं पलँग पर बैठ गई। वहाँ बैठते ही मुझे थकावट और भूख अनुभव हुई। मैंने उठकर वहाँ से भाग जाने का विचार किया। परन्तु कमरे का द्वार बाहर से बन्द था। कमरे के साथ बाथरूम था, मैंने उसके भीतर से बाहर जाने का मार्ग देखा। वह भी बाहर से बन्द था।

"हताश मैं फिर पलँग पर बैठ गई। बैठी-बैठी थक गई तो फिर लेट गई और मुझे नींद आ गई।

"इस बार डॉक्टर ह्यूबर्ट आया और मुझे प्यार करने लगा। मेरी नींद खुली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैंने उसको अपने समीप लेटा पाया। वह मुझसे आलिंगन कर प्यार कर रहा था। मुझे जब चेत हुआ और स्वयं को उस अवस्था में देखा तो मैं तमककर उठ खड़ी हुई। मैं डॉक्टर की बाँहों से निकलकर फर्श पर खड़ी हो गई। डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा, 'डरो नहीं! बलात्कार तो मैं अपनी पत्नी से भी करना पाप समझता हूँ। इसी कारण मैं तुमको समझा रहा था।"

"क्या यह समझाने का तरीका है ?

" 'हाँ, तुम्हारे मन को मैं अपने अनुकूल करने का यत्न कर रहा था। अच्छा, एक बात सुनो। यहाँ बैठो।' डॉक्टर ने पलँग पर अपने समीप बैठने का संकेत किया। परन्तु मैं बैठी नहीं। उस कमरे में उस पलँग के अतिरिक्त बैठने के लिए अन्य कोई कुर्सी अथवा स्टूल नहीं था। मैं खड़ी रही। वह भी खड़ा हो गया और बोला, 'अब तुम बैठ जाओ।'

" 'नहीं आप बात करिए' मैंने कहा और उसके सामने खड़ी रही। डॉक्टर ने कहा, 'तुमसे बलात्कार नहीं होगा। यह मेरा निश्चय है। मैं तुमको जब समझा-बुझाकर अपने अनुकूल कर लूँगा तब हम अपने विवाह का फल भोगेंगे।'

" 'क्या हमारा विवाह हुआ है ?'

" 'हाँ, बीस स्त्री-पुरुष इसके साक्षी हैं। गिरजाघर का रजिस्टर है। जिस पर तुम्हारे अँगूठे का निशान है और तुम्हारे हस्ताक्षर भी हैं। वह जब तुम चाहोगी तुमको रजिस्टर दिखाया जाएगा।

" 'अब सुनो, इस विवाह के उपरान्त मैं और तुम हनीमून के लिए अमेरिका जा रहे हैं। तीन मास का लम्बा अवकाश है। मैं समझता हूँ कि तब तक मैं और तुम परस्पर सुलह कर लेंगे।'

"इस समय तक मैं सतर्क और आश्वस्त हो गई थी। मैंने कहा, 'डॉक्टर, मैं आपका बहुत मान करती थी। परन्तु आप पढ़े-लिखे और धनी बाप के सुपुत्र होकर भी इस कुकर्म के लिए तैयार हो गए हैं। जहाँ मुझे इस पर विस्मय हुआ है वहाँ आपके विषय में मेरी धारणा को भारी आघात पहुँचा है।

"आप अपने धर्म का प्रचार करने के लिए घर से इतनी दूर और घर की सब सुविधा छोड़कर आये हैं, इस कुकर्म को करके आप अपने धर्म पर भी भारी लांछन लगाने वाले बन रहे हैं।

"डॉक्टर ने बीच में ही बात काटकर कहा, 'आओ, अब भोजन कर लें। और शेष बातें वहीं होंगी।'

"डॉक्टर ने मेरी बाँह-में-बाँह डालनी चाही। परन्तु मैंने झटककर बाँह छुड़ा ली। वह हँस पड़ा और दरवाजा खोल उसी कमरे में चलने का निमन्त्रण देने लगा जहाँ विवाह का भोज हुआ था।

"उस समय रात के साढ़े नौ बजे थे। मुझे विश्वास हो रहा था कि इस सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखा-धड़ी के उपरान्त भी मुझसे बलात्कार होगा। इस कारण मैं सतर्क थी।

"खाने के कमरे में मैं, डॉक्टर और मेरी माँ ही थे। माँ मुझे देख मुस्कराई और बोली, 'अंजू बेटा! हिन्दुस्तान में लड़कियों का विवाह माता-पिता ही करते हैं। पति-पत्नी विवाह से पहले एक-दूसरे की शक्ल से भी परिचित नहीं होते और फिर कुछ ही दिनों में घुल-मिल जाते हैं।

" 'यही ठीक है और तुमको भी अब इसी प्रकार अपने पति से सम्बन्ध समझ लेना चाहिए।'

"मैं मौन थी। सामने मेज़ पर गरम-गरम भोज्य पदार्थ रखे होने के कारण भूख सताने लगी थी। डॉक्टर खाने के लिए कुर्सी पर बैठा तो माँ ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे भी बैठा लिया। हम सब खाने लगे।

"डॉक्टर ने पुन: वही बात दोहराई जो उसने शयनागार में कही थी। वह कहने लगा, 'कुछ काल से मैं इस कम्बख्त हिन्दुस्तान में आने का अफसोस करने लगा था। परन्तु अंजू! जब से मैंने तुम्हें देखा है मैं अपनी इस कठिनाई के जीवन में भी रस लेने लगा था। मेरी समझ में कुछ ऐसा आ रहा था कि तुम ठीक वैसी हो जैसे किसी गन्दी नाली के समीप कोई गुलाब का फूल हो।'

"मुझे अपने देश के लिए इस प्रकार के अपमानजनक वाक्य सुनकर क्रोध आ रहा था। मैंने कहा, 'डॉक्टर! इस गन्दी नाली में पैदा होने वाले अन्नादि से तो तुम अपना पेट भर ही रहे हो।'

"'हाँ परन्तु उसका तो मैं मूल्य चुकाता हूँ।' उसका कहना था। मैंने कहा, 'मैं मूल्य की बात नहीं कर रही। मैं इसके इस स्थान पर पैदा होने की बात कह रही हूँ।'

" 'ठीक है, और तुम भी तो यहीं की पैदावार हो। तुम जैसी लड़की के यहाँ पैदा होने से इस देश के विषय में मेरी राय बदल गई है।

" 'फिर भी मैं तुमको अमेरिका ले चलूँगा। प्रकृति की इस सुन्दर देन को मैं अपने साथ ही रखना चाहता हूँ। पत्नी बनकर रहो अथवा मेरी असिस्टैंट बनकर रहो। मैं अब तुमको नहीं छोड़ सकता।'

" 'मेरी इच्छा के बिना मुझे यहाँ बन्द रखना अति घोर अपराध है। यह आप जैसा व्यक्ति कर सका है और जब यह बात विख्यात होगी तो यह आपसे बढ़कर ईसाई धर्म के लिए घोर अपमान का कारण होगा।'

"उसका कहना था, 'यह मैं अपने व्यक्तिगत प्रयास से कर रहा हूँ। प्रत्येक बात का मैं दाम दे रहा हूँ। यहाँ के मिशनफण्ड का मैंने एक पैसा भी व्यय नहीं किया।'

" 'और ये सब गिरजाघर, पादरी और भोज पर आये लोग क्या सब भाड़े पर एकत्रित किए हुए हैं?'

Central Library
167563
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'सब को कुछ-न-कुछ तो मिला ही है। कम-से-कम ऐसा बढ़िया खाना जो सायंकाल का था, वह तो उनको फोकट में मिला ही है। परन्तु वे तो यही समझते थे कि यह साधारण वैडिंग हुआ है। ऐसे यहाँ होते रहते हैं। यह भी उसी तरह का है। परन्तु जब तुमने उस समय घोषणा की थी तो ये लोग समझे थे कि या तो तुम पागल हो अथवा कुछ हँसी कर रही हो।

" 'ये भले लोग यहाँ पर ईसाई धर्म के नाम पर एकत्रित हुए थे। और वे समझ रहे थे कि धनी-मानी अमेरिका का नागरिक एक हिन्दुस्तानी लड़की को वहाँ का नागरिक बनाने की कृपा कर रहा है।'

"मैं समझती थी कि डॉक्टर मुझे धोखा देने के लिए और मुझे अपने भाग्य पर सन्तोष करने के लिए ये सब बातें बना रहा है। इस कारण मैं उसे बता देना चाहती थी कि वह भ्रम में है। मैंने बताया, 'डॉक्टर ! एक बात तुम समझ लो। जो कुछ यहाँ हो रहा है वह मेरी इच्छा के विपरीत हो रहा है। यह भारी अपराध है। यह अपने धर्म के भी विपरीत है। इस कारण तुम राज्य की दृष्टि में, अपने धर्म की दृष्टि में और मानवता की दृष्टि में भी महान अपराधी और पापी हो। इसका फल तुम जन्म-जन्मांतर तक भोगोगे।'

"वह हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'तुम इसकी चिन्ता मत करो। मैं सबसे निबट लूँगा।'

"मैं भोजन कर रही थी। भूख ज़ोर की लगी थी। सायंकाल मैंने कुछ भी नहीं खाया था। माँ ने तो तब भी पेट भरकर खाया था और अब भी खूब खा रही थी। ह्यूबर्ट बहुत कम खा रहा था। उसने सायंकाल पेट भर खा लिया प्रतीत होता था।

"माँ ने बातों में दखल देते हुए मुझे फिर समझाना आरम्भ कर दिया। मैं मौन हो गई और वहाँ से भाग जाने के विषय में विचार करने लगी।

"मैं तीन रात उस मकान में रही। अगले दिन कुछ लड़कियाँ मुझसे मिलने के लिए आईं। वे मुझको एक बहुत धनी अमेरिकन के साथ विवाह करने पर मुझे बधाई देने लगीं। मैं तो इसे विवाह मानती नहीं थी। मुझसे बलात्कार किया गया था।

"मैंने उनसे उस मकान के विषय में पूछना आरम्भ कर दिया। एक लड़की अन्य लड़कियों से कुछ अधिक समझदार प्रतीत होती थी और बहुत ही सभ्यतापूर्ण ढंग से बातें कर रही थी। उसने बताया, 'कुछ दिन हुए मेरा विवाह नगर के एक अफसर से इसी ढंग से हुआ है। विवाह के पूर्व हमने एक-दूसरे को देखा नहीं था। 'ऑल्टर' पर पहुँचकर ही मैंने उसको देखा। पहली बार में ही देखकर मैंने उसे पसन्द कर लिया। विवाह हुआ और अब हम एक-दूसरे से बहुत ही प्रेम करने लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने पूछा, 'क्या नाम है तुम्हारा ?'

" 'सोनी।'

" 'यह तो मेरा बचपन का नाम है। क्या तुम ईसाई हो ?'

" 'वह क्या होता है ? मैं तो लड़की हूँ। माता-पिता रहे नहीं। मौसी के घर पर रहती थी। वहाँ खाने-पहरने का कष्ट था। मुझे इस होस्टल में भरती करा दिया गया। मुझे यहाँ से खाना-पहरना और कुछ जेब-खर्च भी मिलता था। मैं और मेरे साथ की कुछ लड़कियाँ यहाँ के एक अस्पताल में नर्सिंग का काम सीखती थीं। मेरा चित्त वहाँ नहीं लगता था। एक दिन मैंने अपनी मैट्रन से कहा, 'मेरा मन इस पढ़ाई में नहीं लगता।' मैट्रन समझ गई। मेरे विवाह का प्रबन्ध हो गया। मेरे माता-पिता क्या थे, यह मैं नहीं जानती। हम भील जाति के हैं। मेरे मौसा नगर की एक कोठी में चपरासी का काम करते थे। उनके अपने भी बाल-बच्चे थे। मैं भी कोठी में काम करने लगी तो मालकिन ने मुझे पढ़ाना आरम्भ किया। मैं पढ़ गई और पिछले वर्ष जूनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा देकर पास हो गई और मुझे नर्सिंग का काम सीखने के लिए यहाँ भेज दिया गया।'

" 'मैंने पुनः पूछा, 'हिन्दुस्तानी लड़की तो हो। मैं पूछ रही हूँ कि तुम्हारा मज़हब क्या है ?'

"मैं कुछ नहीं जानती। मेरा घर वाला अच्छा वेतन पाता है और मुझको खाने-पीने को देता है। मैं उससे बहुत खुश हूँ।'

" 'तुम्हारे घर वाले का नाम क्या है ?'

" 'जौन फ्रांसिस।'

" 'तो तुम ईसाई हो।'

" 'हूँगी। मैं क्या जानूँ ! हाँ, वे मुझे गिरजाघर ले जाते हैं। परन्तु मैं तो वहाँ लोगों को देखती रहती हूँ।'

" 'यहाँ सब लड़कियाँ नर्सिंग का ही काम सीखती हैं ?'

" 'नहीं, नर्सिंग का काम सीखने वाली तो आठ थीं। हम पढ़ी-लिखी थीं। अनपढ़ों को दस्तकारी के काम सिखाए जाते हैं।'

" 'इस होस्टल को कौन चलाता है ?'

" 'पता नहीं। हम तो मैट्रन को जानते हैं। बहुत ही भली औरत है। विवाहिता है और यहीं अपने पति तथा बच्चों के साथ रहती है।'

" 'पर तुमको मेरे वैडिंग पर किसने बुलाया था ?'

" 'मैट्रन ने। यहाँ जब भी किसी का विवाह होता है मुझे डिनर के लिए बुला लिया जाता है। मैं इस होस्टल के बगल में ही रहती हूँ। मेरे पति भी कल के वैडिंग पर उपस्थित थे।'

"मैं उससे और अधिक कुछ नहीं जान सकी। किन्तु दूसरे दिन एक घटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटी।

"मैं स्नान करके कपड़े पहन गुसलखाने से निकली तो नौकरानी कमरा साफ कर रही थी। पिछले दिन वह उस समय आई, जब मैं गुसलखाने में थी। वह नौकरानी मुझे देख सलाम करने लगी। मैं उससे बात करने में रुचि नहीं रखती थी। इस कारण उसका ध्यान छोड़ अपने विचारों में ही लीन रही कि इस नरक-कुण्ड से किस प्रकार उद्धार होगा। जब भी वहाँ कोई आता था, उसे कमरे में भेज बाहर से द्वार बन्द कर दिया जाता था। इस प्रकार मैं चौबीस घण्टे की कैदी थी।

"उस दिन मैं दर्पण के समीप खड़ी हो अपने बाल सँवार रही थी कि उसने समीप आकर कहा, 'सरकार! यहाँ से भागना चाहती हैं?'

"मैंने घूमकर उसकी आँखों में देखा। मुझे सन्देह हो रहा था कि दो रातों के दुराचार के उपरान्त ह्यूबर्ट मेरे मन की बात जानना चाहता है। वह विचार करता होगा कि मेरे कमरे के द्वार खुले छोड़े जाएँ अथवा नहीं। इस सन्देह से मैंने घूरकर उस औरत की ओर देखा।

"वह मुस्करा रही थी।

"मैंने पूछा, 'किसलिए पूछ रही हो?'

" 'कोई है, जो आपको छुड़ाने में रुचि रखता है।'

"मेरा स्वाभाविक प्रश्न था, 'कौन है वह?'

" 'मैं जानती नहीं, कोई होगा तुम्हारा प्रिय। उसे पीटर-पीटर करके सम्बोधित करते हैं।'

"मैंने कुछ आश्वस्त हो पूछ लिया, 'कहाँ हैं?'

" 'यदि तुम कहो तो मैं निश्चय कराकर कल बताऊँगी।'

"मैंने आखिर कह ही दिया, 'मैं यहाँ से छूटना चाहती हूँ।' पापा के नाम ने मुझमें साहस भर दिया था। इससे पूर्व मैं ह्यूबर्ट की हत्या और आत्महत्या का विचार कर रही थी। इसके लिए अवसर की प्रतीक्षा में थी।

"उसने धीरे से कहा, 'तब ठीक है। ज़रा खुश रहो। झगड़ा न करो। इनके मन में विश्वास बैठाओ। मैं कल इसी समय मिलूँगी।'

"मैं उसको देखती रह गई। वह इतना कहकर अपने काम में लग गई।

"उस दिन ह्यूबर्ट प्रातः का अल्पाहार लेकर मेरे कमरे में मेरे साथ ही आ गया। वह मेरे साथ ही पलंग पर बैठ गया। पिछली दो रातों के व्यवहार के उपरान्त मैं विरोध करने में लाभ नहीं समझती थी। उस दिन पहली बार मैंने यह भाव प्रकट किया कि मैं अपनी स्थिति पर सन्तोष करने लगी हूँ। ह्यूबर्ट ने कहा, 'अंजू! तुम्हारे मिशन के कार्यालय से लापता हो जाने पर दो विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हुई हैं। एक तो तुम्हारे पापा ने पुलिस में रिपोर्ट लिखाई है कि उन्हें किसी आर्यसमाजी पर तुम्हारे अपहरण का सन्देह है। इससे नगर और राज्य-भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हलचल है।

"दूसरी प्रतिक्रिया हुई है मिशन के डायरेक्टोरेट में। उनको विदित है कि मैं तुमको कार्यालय के साधनों की सहायता से अपहरण कर लाया हूँ। वे मुझसे नाराज़ हैं और मिस्टर स्टीन ने मुझे सूचित किया है कि अब मुझे केन्द्रीय कार्यालय का चीफ़ नहीं बनाया जाएगा।'

" 'तो अब आप क्या करेंगे ?' मैंने पूछा।

" 'मैं अमेरिका तो जा ही रहा हूँ। अब वहीं रहूँगा।'

" 'तो धर्म का कार्य समाप्त ?'

" 'मेरी भी तो कुछ आवश्यकताएँ हैं। मैं तुम पर इतना मुग्ध हो रहा हूँ कि दुनिया के और सब कामों को तुम्हें पाने के मुकाबले में निरर्थक समझने लगा हूँ।"

" 'पर मैं तो इस कारण अपने भाग्य पर सन्तोष करने लगी हूँ कि आप जैसे धर्मात्मा आदमी से मेरा वास्ता पड़ा है।'

" 'वह मैं अमेरिका पहुँचकर किसी अन्य रूप में पूर्ण करने का यत्न करूँगा।'

"मैं चुप रही। यह बात पहले दिनों की बात से विलक्षण थी। मेरे व्यवहार से वह सन्तुष्ट प्रतीत होता था। मैंने पूछ लिया, 'अमेरिका के लिए कब चलना होगा ?'

" 'मैं कल कार्यवश दिल्ली जा रहा हूँ। वहाँ हवाई जहाज की सीटें भी सुरक्षित कराता आऊँगा। कल रात तक लौटूँगा। जिस दिन के लिए जगह मिलेगी उसी दिन यहाँ से चल देंगे।'

" 'मैं यहाँ रहती-रहती ऊब गई हूँ।'

" 'बहुत जल्दी प्रबन्ध कर रहा हूँ। मैं तुमको धन्यवाद देता हूँ कि तुमने मेरी जीवन-संगिनी बनना स्वीकार कर लिया है।'

"एक रात की और यन्त्रणा सहनी पड़ी। अगले दिन ह्यूबर्ट बहुत प्रातःकाल चला गया। मेरे सोकर उठने पर मम्मी आई और प्यार देकर समझाने लगी 'ऐसा सब औरतों के साथ होता है। आरम्भ में पुरुष-स्त्री में विरोध ही होता है। कहीं कम और कहीं अधिक। परन्तु यह परमात्मा का विधान है कि औरतों को अपने भाग्य को स्वीकार करना पड़ता है और इसमें औरत सदा सुखी और लाभ में रहती है।'

"मैं चुपचाप यह सब लाड़-प्यार और उपदेश सहन करती रही।

"उस दिन नियत समय पर नौकरानी आई। मैं उस दिन समय से पूर्व ही स्नानादि से निवृत्त हो, तैयार बैठी थी। नौकरानी आई और उसके भीतर आने पर जब बाहर से द्वार बन्द कर लिया गया तो वह समीप आकर बोली, 'ठीक दस बजे गुसलखाने के पिछले द्वार को आराम से खोलना और सामने दीवार में लगी चरखी वाले मार्ग से निकल जाना। बाहर मोटर खड़ी होगी। उसमें चढ़ जाना। वे लोग तुम्हें तुम्हारे घर ले जाएँगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अभी भी उस औरत पर सन्देह करती थी। पर उससे कुछ कह नहीं सकी। उसे नाराज करने में कोई भलाई नहीं थी।

"उस दिन प्रातः के नाश्ते के समय ह्यूबर्ट वहाँ नहीं था। केवल ममी थीं। खाने के उपरान्त मैंने उससे कह दिया, 'मैं आज बहुत थकी हुई हूँ। कुछ सोना चाहती हूँ।'

"ममी मुस्कराई। मैं बैड-रूम में चली गई। ममी वहाँ से चली गई। मैं सोई नहीं अपितु उत्सुकता से दस बजने की प्रतीक्षा करने लगी।

"जब ठीक दस बजे और सैकण्डों की सुई घूमती हुई साठ पर पहुँची, तो मैंने गुसलखाने के बाहर द्वार पर हाथ रख उसको बाहर को धकेला। वह खुल गया। मैंने झाँककर इधर-उधर देखा। उस समय वहाँ कोई नहीं था। मैं लपककर निकली और चरखी वाला रास्ता पार कर दीवार के उस ओर पहुँची ही थी कि दीवार के पीछे से दो आदमी निकलकर सामने आए। मैं डरकर खड़ी हो गई। इस पर एक बोला, 'डरो नहीं। वह देखो सड़क के उस पार तुम्हारे पापा खड़े हैं।'

"मैंने देखा। पापा मोटर का द्वार खोल हाथ के संकेत से जल्दी आने को कह रहे थे। उन्हें देखकर मैं भागी और मोटर के भीतर बैठ गई। वे दोनों व्यक्ति भी, जो दीवार के पीछे छिपे बैठे थे, मोटर में सवार हुए तो मोटर चल दी।

"हम नगर में पहुँच गए। मैं इस समय एक सुरक्षित स्थान से यह वक्तव्य लिख रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

मिस्टर पीटर ईसाई हुआ था क्योंकि उसका पिता ईसाई था। परन्तु उसकी माँ गोआ के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार की लड़की थी। एक ईसाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने जाती थी और जब वह चौदह वर्ष की आयु की हुई तो स्कूल की एक अध्यापिका के भाई के मोह-जाल में फँसकर घर से भाग आई थी। लगभग एक वर्ष तक वह इस व्यक्ति के पास रही और फिर एकाएक अध्यापिका का भाई लापता हो गया। उसको मिशन के यतीमखाने में प्रविष्ट करा दिया।

वहाँ से वह इस नगर में भेज दी गई और एक ईसाई अनन्त ऐण्ड्रयूज से उसका विवाह कर दिया गया। अनन्त उन दिनों मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में क्लर्क का काम करता था। पीटर वहीं पैदा हुआ, पला और फिर वहीं एक लड़की से उसका विवाह कर दिया गया। पीटर तो बी० कॉम० था, इसलिए उसको बैंक में नौकरी मिल गई।

पीटर समझने लगा था कि अच्छी शिक्षा के कारण किसी सम्भ्रान्त परिवार की लड़की से उसका विवाह होना चाहिए था। इस उच्च अभिलाषा में उसकी माँ सहायक हो रही थी। ब्राह्मण की लड़की होने के कारण वह अपने पुत्र के लिए श्रेय की अभिलाषा रखती थी। यद्यपि उसके माता-पिता अति निर्धन थे, फिर भी वे सदाचारी और सबके साथ दया का भाव रखते थे। सूसन ने अपने लड़के को यतीमखाने में चल रहे दुर्व्यवहार की ओर संकेत कर कहा था कि जो कुछ यहाँ हो रहा है वैसी बात तो हमारे घर में और गाँव में कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था।

परन्तु दुर्भाग्य से जब पीटर को नौकरी मिली तो तब तक उसके माता-पिता का देहान्त हो चुका था। यतीमखाने के प्रबन्धकों ने उसका विवाह नोरा के साथ कर दिया। उस समय तो पीटर को नोरा विवाह के योग्य लड़की प्रतीत हुई परन्तु बाद में उसे पता चला कि नोरा अविवाहितावस्था में भी अपनी मैट्रन की शराब चुराकर पिया करती थी।

विवाह के उपरान्त वह पति के धन से शराब पीने लगी। नोरा के घर एक-एक कर चार लड़कियों ने जन्म लिया। लड़का कोई नहीं था। पीटर इन लड़कियों को पैदा करने वाली पत्नी से ऊब चुका था। उसमें सबसे बड़ा कारण शराब का खर्च था। जब अंजू कुछ कमाने लगी तो घर के खर्च के लिए पचास रुपया देने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद में उसने पचहत्तर रुपया मासिक देना आरम्भ कर दिया। उससे छोटी बहिन ने जब बी० ए० पास कर लिया तो एक ईसाई युवक से विवाह कर लिया। उसकी दो और बहिनें थीं। वे अभी पढ़ती थीं।

अंजू को मिशन सेण्टर में नौकर कराकर नोरा उसके किसी अच्छे लड़के से विवाह किए जाने की आशा करने लगी थी। मिशन के द्वारा ही उसका फर्नेंडिस से परिचय हुआ था। इससे छुटकारा पाने में अंजू को पाँच-छः मास लगे थे।

इसके उपरान्त नोरा को पता चला कि डॉक्टर ह्यूबर्ट उसकी लड़की अंजू के सौन्दर्य और सलीके पर मुग्ध है। वह उसमें विशेष रुचि लेने लगा है। डॉक्टर ह्यूबर्ट के भाव से अंजू परिचित थी परन्तु वह सदा अपना व्यवहार ऐसे बनाए रखती थी मानो ह्यूबर्ट को वह सभ्य और नेक विचार का अफसर समझती है।

एक-दो बार ह्यूबर्ट ने उसे संकेत भी दिया था कि वह उसे अपने पिता के फार्म पर ले जाना चाहता है। अंजू का केवल इतना ही कहना था कि उस जैसी निर्धन लड़की के लिए वहाँ जाना सर्वथा असम्भव है। तब ह्यूबर्ट समझा देता, 'प्रभु की भक्ति से बहुत-सी बातें सहज ही सम्भव हो जाती हैं।'

"वह तो मैं नित्य ही देखा करती हूँ।"

"तो निश्चय जानो तुम एक दिन अमेरिका जाओगी।"

नोरा समय-समय पर ह्यूबर्ट से मिलती रहती थी और वह अंजू के व्यवहार से संतुष्ट ही प्रतीत होता था। बात उस समय बिगड़ी जब भूषण ने उनको अपने कारखाने के उद्घाटन का निमन्त्रण भेजा। नोरा अंजू को बताना चाहती थी कि ह्यूबर्ट उससे विवाह करने की इच्छा रखता है परन्तु फिर यह विचार करके कि पहले भूषण को देख ले बाद में बात करेगी, वह चुप रही।

जिस समय पीटर और नोरा उद्घाटन-यज्ञ से लौटे तो नोरा भूषण से असन्तुष्ट थी, परन्तु पीटर को भूषण में कोई बुराई नजर नहीं आई थी। विशेषतया जब उसने देखा कि वह धनी भी है।

उस रात मिनर्वा से खाना खा और भूषण से बात कर नोरा और अंजू लौटे तो पीटर के सम्मुख ही नोरा ने अंजू से कहा—

"मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि अंजू का विवाह भूषण के साथ नहीं हो सकता।"

पीटर ने अपनी लड़की से पूछा, "अंजू! तुम क्या चाहती हो?"

"मैंने तो भूषणजी से विवाह करने का निश्चय आज से डेढ़-दो वर्ष पूर्व ही कर लिया था। विलम्ब तो उनकी ओर से हो रहा था। मेरी आयु अब इक्कीस वर्ष से अधिक है। इस कारण मैं अपनी छोटी बहिन की भाँति आपसे कुछ भी लिये-दिये बिना चल दूँगी।"

"मैं समझती हूँ कि डॉक्टर ह्यूबर्ट से राय कर लेनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों, उससे क्यों राय करनी चाहिए ?" अंजू का प्रश्न था।

"क्योंकि वह भी तुम्हारे साथ विवाह करने का प्रत्याशी है।"

"प्रत्याशी होने से ही तो कोई राय देने का अधिकारी नहीं हो जाता ?"

"वह अपने धर्म में ऊँची पदवी पर नियुक्त होने से और तुम्हारा बॉस होने से राय देने योग्य है।"

"तो मम्मी ! आप उससे राय कर लीजिए।"

पीटर ने कह दिया, "देखो नोरा ! मैं उससे राय करने में कोई औचित्य नहीं समझता। मैंने भूषण को पसन्द किया है और मैं चाहता हूँ कि इसका विवाह उससे हो जाए।"

"आप तो सदा ही उलटी बात कहते हैं।"

"कारण यह है कि तुममें और मुझमें तो विवाह के काल से ही अन्तर है। विवाहोपरान्त तो हम किसी भी बात पर सहमत नहीं हुए। केवल एक बात में ही मैं और तुम सहमत रहते हैं।"

"वह क्या बात है ?"

"शराब पीना। उसमें भी मूल्य चुकाने के समय सहमति नहीं रहती। मैंने कई बार कहा कि यदि इतनी शराब पीनी है तो उसके लिए तुमको कमाई भी करनी चाहिए। वह तुम नहीं कर सकतीं। अतः अब तो मैं तुमसे इस विषय में भी सहमत नहीं रहा।"

"तो तुम मुझे तलाक दे दो।"

"दो छोटी लड़कियाँ हैं, उनका खयाल आता है।"

"उनके विषय में तुमको चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी।"

पीटर ने बात बदलने के लिए अंजू से प्रश्न कर दिया, "तुम विवाह कब कर रही हो ?"

"पापा ! परसों आपको बैंक से छुट्टी लेकर मेरे साथ चलना होगा। मैं सब प्रबन्ध करने के लिए भूषणजी को पत्र लिख दूँगी।"

"ठीक है।"

नोरा ने कहा, "मैं तो ह्यूबर्ट से मिलने को जा रही हूँ। और उससे कहना चाहती हूँ कि इस लड़की को इन आर्यसमाजियों के पंजे से छुड़ाए।"

"मैं कल अपनी नौकरी से त्यागपत्र देने वाली हूँ।"

"मैं इस सबके विरुद्ध हूँ।" नोरा ने कहा और सोने जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

पीटर ने भी उठते हुए कहा, "अंजू ! तुम प्रबन्ध करो, मैं परसों की छुट्टी ले लूँगा।"

अंजू उठ पड़ी। उसके बाद रात-भर नोरा और पीटर में झगड़ा होता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः माता-पिता दोनों ब्रेक-फास्ट की टेबल पर नहीं आये। पहले भी जब दोनों लड़ते-झगड़ते थे, तो यही हुआ करता था। अंजू और उसकी बहिनों ने कुछ खाया और अंजू कार्यालय जाने के लिए तैयार हो गई। जाने से पूर्व वह अपने पिता को कह गई, "पापा ! मैं जा रही हूँ। आप कल की छुट्टी ले लेना।"

"हाँ ठीक है।" उसने लड़की को कह दिया। " 'गो अहैड आई एम विद यू' ।"

उस दिन पीटर बिना खाना खाए बैंक को चल दिया। नोरा ग्यारह बजे उठी और छोटी लड़कियों से बोली, "मैं एक घण्टे में आऊँगी, सावधानी से रहना।"

यह कहकर वह घर से चली गई। जब वह सायंकाल तक नहीं लौटी तो पीटर का माथा ठनका। वह तो यह समझा था कि वह उसका घर छोड़कर भाग गई है। उसके मन में नोरा के लिए भी किसी प्रकार की आशंका उत्पन्न हो रही थी। वह उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।

साढ़े छः बजे सायंकाल भूषण अपनी मोटर में अकेला आया तो पीटर के मन में सन्देह हुआ कि अंजू के साथ कुछ किसी प्रकार की दुर्घटना हो गई है। जब भूषण ने पूछा, "अंजू यहाँ है क्या ?"

इससे ही पीटर समझ गया कि माँ-बेटी दोनों लापता हैं।

जिस दिन पीटर अंजू को छुड़ाकर लाया, वह घर पहुँचा तो उसकी दोनों लड़कियाँ बहुत उदास और भयभीत बैठी थीं। पिता ने द्वार खटखटाया तो लड़कियों ने तब तक द्वार नहीं खोला जब तक उन्होंने विश्वास नहीं कर लिया कि द्वार कौन खटखटा रहा है।

जब पीटर घर में दाखिल हुआ तो मेरी, जो इस समय चौदह वर्ष की थी, पिता से लिपटकर रोने लगी। उससे बड़ी लड़की सिलविया सोलह वर्ष की थी। वह अपने पिता से पूछने लगी, "पापा ! आप कहाँ गए थे ?"

"तुम्हारी ममी को ढूँढ़ने के लिए।"

"तो मिलीं ?"

"हाँ, परन्तु उसने आने से इन्कार कर दिया है।"

"और सिस्टर ?" मेरी ने पूछा।

"वह आ गई है। परन्तु ममी ने उसे पकड़ने के लिए पुलिस भेजी है। इस कारण उसे एक स्थान पर छिपा आया हूँ।"

"पुलिस क्यों भेजी है ?"

"यह तो तुम्हारी ममी ही बता सकती है। मैं इतना जानता हूँ कि तुम्हारी ममी ने अंजू का विवाह उसकी मर्जी के बिना कर दिया है। अंजू भाग आई है। कदाचित् इसीलिए उसने पुलिस पीछे भेजी है।"

दोनों लड़कियाँ इस पहेली को समझ नहीं पाईं। छोटी लड़की बोली, "मैं सिस्टर से मिलने जाऊँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कल ले चलने का यत्न करूँगा। तुम्हारी ममी को समझाना होगा।"

"कब ले चलेंगे ?" बड़ी लड़की ने पूछा।

"उसे कल पत्र लिखूँगा कि वह अंजू के पीछे से पुलिस वापस बुला ले और स्वयं घर लौट आवे। यह भी लिख दूँगा कि मेरी और सिलविया बहुत उदास हैं।"

: २ :

पीटर अगले दिन उठा और भूषण के घर जा पहुँचा। वहाँ से अंजू से सत्य-सत्य वक्तव्य लिखवाने के लिए शान्तिनारायण के घर गया। अंजू ने तीन घण्टे लगाकर वक्तव्य लिखा और फिर उसकी टाइप की हुई एक प्रतिलिपि लेकर पीटर मिशन के कार्यालय में जा पहुँचा।

मिस्टर स्टीन ने पूर्ण वक्तव्य पढ़ा तो उसका मुख विवर्ण हो गया। उसने पूछ लिया, "लड़की कहाँ है ?"

"मुझे ठीक पता नहीं।"

"यह पत्र कौन लाया है ?"

"मिस्टर वैस्टन ज़ेवियर।" यह उस व्यक्ति का नाम था जो अंजू को ह्यूबर्ट की कैद से छुड़ाने के लिए गया था। ज़ेवियर का नाम सुनकर स्टीन अवाक् रह गया। उसके मुख की विवर्णता और गहरी हो गई। कुछ विचार कर वह फिर धीमे स्वर में बोला, "तुम क्या चाहते हो?"

"मैं कुछ नहीं चाहता। मैं कल प्रातःकाल ह्यूबर्ट के उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा, यदि तब तक कुछ उत्तर न आया तो मामला पुलिस, गृहमन्त्री और कदाचित् राष्ट्रपति के पास पहुँच जाएगा।"

"ज़ेवियर तो गुण्डा है।"

"अंजू अब स्वतन्त्र है। यदि यह सत्य है तो मैं उसको फरिश्ता कहूँगा।"

"अब तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं अपने कार्यालय से छुट्टी लेकर आया हूँ। अब वहीं वापस जा रहा हूँ। ह्यूबर्ट को चाहिए कि वह मुझसे मिल ले।"

इतना कहकर पीटर उठ खड़ा हुआ। बिना एक भी शब्द कहे वह अपने कार्यालय को लौट गया। वह कार्यालय से एक सप्ताह की छुट्टी लेकर गया था, वह छुट्टी समाप्त होने से पूर्व ही लौट आया था। उसने अपनी शेष छुट्टियाँ 'कैंसिल' कराईं और अपने काम पर जा बैठा।

मिस्टर स्टीन जानता था कि अंजू ह्यूबर्ट के साथ भोपाल में है। जिस दिन ह्यूबर्ट अंजू को बुक-वैन में बन्द करके ले गया था उसी दिन कार्यालय में उसके व्यवहार की चर्चा हुई थी। कार्यालय में दो विचारों के व्यक्ति थे। एक तो ह्यूबर्ट के व्यवहार को पसन्द करते थे। स्टीन भी उन व्यक्तियों में से था जो इस व्यवहार को अपने मज़हब के प्रचार और प्रसार के लिए ठीक समझते थे। कुछ ऐसे थे जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको अत्याचार समझते थे।

जिस समय पीटर भूषण और थानेदार को लेकर कार्यालय में रात की ड्यूटी पर उपस्थित क्लर्क से बयान ले रहा था, मैनेजिंग बोर्ड की मीटिंग हो रही थी। स्टीन उसमें उपस्थित था। स्टीन ने अपनी सम्मति देते हुए कहा, "बोर्ड को इसे साधारण धर्म प्रचार का कार्य समझकर इसकी अवहेलना करनी चाहिए।"

परन्तु बोर्ड में एक भारतीय ईसाई था, उसने इस कार्य को धर्मप्रसार के मार्ग में बाधक समझ करके इसकी निन्दा की थी। उसका कहना था—

"आज भारत में ईसाई मिशन के धन और प्रलोभनों से धर्म-प्रचार की व्यापक निन्दा हो रही है। नियोगी कमेटी ने इस बात पर प्रकाश डाला है और इसे रोकने के लिए कई उपाय भी सुझाए हैं। इससे मैं समझता हूँ कि यदि यह मामला पुलिस में गया तो वे लोग भी जो सरकार में हमारे पक्ष में काम कर रहे हैं, हमारे विरुद्ध हो जाएँगे।"

स्टीन ने उत्तर दिया, "मिस्टर रौबिनसन! नियोगी कमेटी की रिपोर्ट मृतप्राय हो चुकी है। उससे भय करने की अब आवश्यकता नहीं। उस कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित होने के उपरान्त तो हम सहस्रों आदिवासियों को ईसाई धर्म की दीक्षा दे चुके हैं। किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगी।"

परन्तु बोर्ड के अन्य सदस्य भी थे, जो ह्यूबर्ट के कार्य की निन्दा करते थे। एक अन्य व्यक्ति का कहना था, "इस लड़की का सम्बन्ध नगर के प्रतिष्ठित आर्यसमाजी परिवार से बताया जाता है। इसी कारण मैं इस कार्य को निर्धन अशिक्षित और समाज से विच्छिन्न हुए आदिवासियों से विलक्षण मानता हूँ। मेरी यह सम्मति है कि इस विषय में मिशन अपने को इस काम से पृथक् कर ले।"

"कैसे ?" स्टीन का प्रश्न था।

"मिस्टर ह्यूबर्ट को चीफ पद से हटाकर उसे अमेरिका भाग जाने तथा वापस हिन्दुस्तान न आने की सम्मति देकर।"

अभी यह वार्तालाप हो ही रहा था कि ड्यूटी पर क्लर्क रिपोर्ट करने आ गया। उसने पुलिस द्वारा जाँच के लिए आने और उसके सम्मुख अपने बयान की बात बताई। क्लर्क की बात सुनकर उसे कह दिया गया कि भविष्य में उसको बोर्ड की नीति जाने बिना किसी प्रकार का बयान नहीं देना चाहिए। क्लर्क को ड्यूटी पर वापस भेजकर बोर्ड पुनः विचार करने में लग गया।

बोर्ड आशा करता था कि अब गृहमन्त्री द्वारा इस विषय में जाँच होगी। उसके लिए बोर्ड ने अपनी नीति निश्चय कर ली। बोर्ड का यह निर्णय था कि उन सब चिह्नों को मिटा दिया जाय जिनसे यह पता लगने की सम्भावना है कि केन्द्र के उपकरणों का इस अपहरण में प्रयोग हुआ है। बुक-वैन वापस बुला ली जाय। ह्यूबर्ट को कह दिया जाय कि वह 'चीफ' के पद पर नियुक्त नहीं और होस्टल की मैट्रन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कह दिया जाय कि वह स्वयं को इस कार्य से पृथक् कर ले।

यह भी निश्चय किया गया कि अगले दिन पुलिस की जाँच पर यह बताया जाय कि कार्यालय का चीफ ह्यूबर्ट इन दिनों यहाँ का मुलाजिम नहीं है। वह भी लड़की के साथ लापता है। यहाँ सबको ऐसा ही प्रतीत होता है कि वह अपहरण का मामला नहीं। वह केवल दो वयस्क व्यक्तियों का विवाह के लिए विदेश जाना है।

परन्तु अगले दिन स्थिति बदली, जब पीटर ने यह लिखाया कि उसे सन्देह है कि उसकी लड़की का अपहरण एक विख्यात आर्यसमाजी के लड़के ने किया है। पुलिस इसी आधार पर केन्द्र से पूछ-गीछ करने के लिए आई तो स्टीन ने नई परिस्थिति में अपने व्यवहार के विषय में बोर्ड के सेक्रेटरी से विचार-विमर्श कर लिया।

बोर्ड के सेक्रेटरी ने स्टीन को बताया, "जहाँ तक ह्यूबर्ट के चीफ-पद से हटाये जाने की बात है, वह तो बदली नहीं जा सकती। उसे इस नई परिस्थिति में भी अमेरिका तो चला ही जाना चाहिए। हाँ, पीटर की इस नई रिपोर्ट को समाचार-पत्रों में भेजकर आर्यसमाज को बदनाम करने का यत्न करना चाहिए।"

उसने यह भी कहा—"मिस्टर स्टीन! बड़े-बड़े पदाधिकारियों को अपने व्यवहार को बहुत ही शुद्ध, पवित्र बनाकर रखना चाहिए। इसीसे धर्म की उन्नति और प्रसार की आशा की जा सकती है। ह्यूबर्ट को कह दो कि जब तक पुलिस आर्यसमाजियों के पीछे लगी है, उसे इस अवसर से लाभ उठाकर देश को छोड़कर चला जाना चाहिए।"

इसी नई परिस्थिति का उल्लेल भी ह्यूबर्ट को कर दिया गया। मैट्रन को केन्द्र के मैनेजिंग बोर्ड की कार्यवाही की सूचना मिली। उसने ह्यूबर्ट से बातचीत की और यह निश्चय हुआ कि वे इतनी दूर जा चुके हैं कि अब वापस नहीं हो सकते। ह्यूबर्ट का धन मैट्रन को चुप कराने में सहायक हो रहा था।

इसके उपरान्त स्टीन ने दूसरे दिन अर्थात् बुधवार को ह्यूबर्ट से पुनः टेलीफोन पर बात की। ह्यूबर्ट ने कहा, "अंजू ने अब अपनी परिस्थिति पर सन्तोष कर लिया है और वह उसे खुले रूप में भारत से बाहर ले जाने में समर्थ हो जाएगा।"

स्टीन को इस पर सन्तोष था। वह यह समझा कि अंजू तो भारत से बाहर चली जाएगी और आर्यसमाजी बदनाम हो जाएँगे।

इस विचार से वह प्रसन्न था। परन्तु दो दिन उपरान्त पीटर को अपने सामने बैठा देखकर वह सतर्क हो गया। जब पीटर ने अंजू के वक्तव्य का उल्लेख किया और उस वक्तव्य को स्टीन ने पढ़ा तो वह पीतमुख विचार करने लगा कि अब क्या होगा?

एक ओर उसकी ह्यूबर्ट से मित्रता थी। वह उसको सब प्रकार की हानि से बचाना चाहता था। दूसरी ओर बोर्ड द्वारा ह्यूबर्ट का विरोध हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब पीटर अंजू के वक्तव्य की प्रतिलिपि देकर चला गया तो उसने थाने में रिपोर्ट करनी उचित समझी। वह विचार कर रहा था कि अवश्य अंजू अपने आर्य-समाजी मित्र के घर पर पहुँची होगी। इस कारण यदि पुलिस को वहाँ भेजकर अंजू को वहाँ पकड़ लिया जाय तो एक अन्य सनसनीयुक्त घटना हो जाएगी।

अतः उसने पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी। थानेदार ने कहा, "इस रिपोर्ट और पीटर के पूर्व की रिपोर्ट पर पुलिस मिस्टर ग्रोवर के घर की तलाशी ले सकती है।"

अतः उसने मिस्टर स्टीन को साथ लिया और ग्रोवर के घर की तलाशी लेने के लिए चल पड़ा।

तलाशी लेने पर लड़की वहाँ नहीं मिली। पुलिस पीटर के घर की तलाशी लेना चाहती थी। परन्तु स्टीन डर गया। वह समझ गया कि जिस समय पीटर को पकड़ा गया उसी समय लड़की अपने बयान लेकर मजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित हो जाएगी। सम्भव तो यह है कि पीटर स्वयं वे बयान, जो उसने पढ़े थे, कोर्ट में दाखिल कर देगा।

अभी तक वे जंगली अथवा अनपढ़ और निर्धनों की लड़कियों से अंजू जैसा व्यवहार करते रहते थे और उसमें इनको सफलता मिलती रहती थी। लड़कियाँ जब विवाह दी जाती थीं तो कुछ दिन के उपरान्त अपने भाग्य पर सन्तोष कर लेती थीं। काल व्यतीत हो जाने पर और उनके घर एक-दो सन्तान हो जाने पर तो वे औरतें अपने भाग्य की सराहना करने लगती थीं और ईसाई पादरियों की उदारता और दया-दृष्टि पर प्रसन्न होकर ईसाई धर्म की निष्ठावान प्रशंसक बन जाती थीं।

अंजू इस श्रेणी की स्त्रियों में नहीं थी। पढ़ी-लिखी और दो वर्ष निरन्तर मनोवांछित शिक्षा से प्रबुद्ध वह कृत्रिम प्रलोभनों और वासनाओं से परास्त नहीं हो सकी थी।

आठ-नौ मास तक केन्द्र में नौकरी करने से वह ईसाइयों की जनसंख्या की वृद्धि करने में उतावली को समझने लगी थी और वह इसके कारण भी जान गई थी। इस उतावली में कानून और नैतिकता के उल्लंघन को वह सुन चुकी थी। और वह प्रत्यक्ष देख रही थी।

यह तो वह जानती थी कि ह्यूबर्ट उस पर दृष्टि रखता है परन्तु वह उससे विवाह करेगा, यह वह स्वप्न में भी नहीं विचार सकती थी। उसके विषय में इतना कुछ उसको ज्ञात था कि वह अमेरिका के किसी धनी-मानी फार्मर का लड़का है, और ईसाई धर्म के प्रचार के लिए वह अपने जीवन का सर्वोत्कृष्ट भाग भारत में लगा रहा है। उसके त्याग और तपस्या का उसके मन पर बहुत प्रभाव हुआ था, ह्यूबर्ट का कभी-कभी उसके सौन्दर्य और स्वभाव की प्रशंसा करना वह उसके केवल वासनाभिभूत होने के कारण मानती थी। एक धनी युवक के एक सुन्दर, सभ्य, सुशील और युवती को अपने अधीन और कृपा के अनुगत देख वह उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलात्कार की तो सम्भावना मानती थी और उससे सतर्क रहती थी। कार्यालय के अतिरिक्त समय में उससे मिलने से बचती रहती थी। परन्तु वह उससे विवाह करेगा और उसके साथ अपने धर्म-कार्य का भी त्याग कर पुनः अपने देश को लौट जाने के लिए तैयार हो जाएगा, वह सोच भी नहीं सकती थी।

अंजू को अपनी माँ के व्यवहार पर तो और भी अधिक आश्चर्य हुआ था। उसने अपनी लड़की पर बलात्कार और विवाह की रस्म का स्वाँग होते देखा और उस दुष्कार्य में अपने सहयोग पर पश्चात्ताप भी नहीं किया था। उसका पूर्ण प्रयत्न यह रहा था कि वह स्वाँग सत्य मान लिया जाय और बलात्कार को प्रेम-प्रलाप का रूप समझ लिया जाय।

अंजू शान्तिनारायण के घर में बैठी-बैठी इन सब बातों पर विचार करती थी और उसके मन में बार-बार पण्डित नारायणदत्तजी का कथन आ रहा था। उन्होंने कारखाने के उद्‌घाटन-समारोह वाले दिन कहा था कि जब मनुष्य की दृष्टि दुर्बल हो जाती है तो वह चश्मा लगवाने चल पड़ता है और चश्मा ठीक अथवा गलत और फिर उसका रंग तो लगाने वाले के अधीन होता है। चश्मे के अच्छे-बुरे होने से ही संसार अच्छा और बुरा दिखाई देने लगता है।

वह समझती थी कि उसने तो अपनी दृष्टि को बलवती करने का यत्न किया है और उसने प्रथम तो किसी प्रकार का चश्मा पहना ही नहीं और यदि किसी प्रकार का चश्मा उसकी आँखों पर है तो वह विकृत नहीं है।

तो क्या उसकी माँ ने भी किसी प्रकार का विकृत चश्मा लगा रखा है? वह यही विचार कर रही थी कि यह विकृत चश्मा ईसाइयत का है। परन्तु उसी उद्‌घाटन-समारोह और उससे पहले भूषण से सुशीला का व्यवहार भी तो विकृत था। वह निराधार उसकी निन्दा कर रही थी। उसके भला कौन-से रंग का चश्मा लगा हुआ था?

इसी प्रकार के विचारों में दिन-भर वह घर में ही रही। वह आशा कर रही थी कि सायंकाल उससे उसका पिता मिलने के लिए आयेगा। परन्तु वह नहीं आया। उसकी अपेक्षा आया भूषण।

भूषण ने कहा, "मिशन के लोग सिर-तोड़ यत्न कर रहे हैं कि तुम्हारा पता करें। पिताजी का विचार है कि तुम्हें अब सीधा मजिस्ट्रेट के सम्मुख ही प्रकट होना चाहिए। फिर भी यदि बिना प्रकट हुए ह्यूबर्ट अपने किये पर पश्चात्ताप करे और सब झगड़े को दबा दिया जा सके तो अच्छा है। तुम्हारे पिता यहाँ आना नहीं चाहते। कारण यह है कि उन्हें सन्देह है कि पुलिस और ईसाई जासूस उनकी गतिविधियों को देख रहे होंगे। वे तुम्हारा इस घर में होना प्रकट होने से भारी गड़बड़ी की आशंका करते हैं।"

"भूषणजी! अब क्या होगा?" अंजू ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सब ठीक होगा। एक बात तुमको और बता दूँ। सुशीला का अपने होने वाले पति से झगड़ा हो गया प्रतीत होता है।"

"क्या झगड़ा हुआ है?"

"यह तो पता नहीं चला। हाँ, आज सागरचन्द मुझसे कारखाने में मिलने आया था। एक घण्टा-भर बैठकर बात करता रहा था। सुशीला के विषय में भी उसने बहुत बातें पूछी थीं। मैंने तो कुछ भी छिपाये बिना उसको सब प्रकट कर दिया है।

"उसने जाते समय एक बात कही है और उससे ही मुझे सन्देह हुआ है कि दोनों में पट नहीं रही। उसने कहा था, 'मुझे आश्चर्य हो रहा है कि कैसे आप जैसे समझदार व्यक्ति की सुशीला से इतनी देर तक पटती रही है?'

"वह इस समय कारखाने से बाहर आकर अपनी मोटर में सवार हो रहा था। मैं उसे बाहर तक छोड़ने के लिए आया था। वह राज्य का उच्च अधिकारी है और उससे मेरा बहुत वास्ता पड़ने वाला है। मैंने केवल इतना कहा, 'इसमें आश्चर्य की बात तो है नहीं। मैं तो मनुष्य को सब प्रकार की स्वतन्त्रता देने के पक्ष में रहता हूँ। मेरी इस छूट में केवल एक शर्त रहती है कि जो कोई मुझसे जिस विषय में छूट चाहता है उसे मुझे भी उस विषय में छूट देनी चाहिए। मैं स्वयं भी इस सिद्धान्त को स्वीकार करता हूँ।'

"वह मेरी बात और युक्ति को समझ नहीं सका। मैं उससे इस प्रकार की आशा भी नहीं करता था। परन्तु उसके उक्त कथन ने मेरे मन में सन्देह उत्पन्न कर दिया है।"

"तो आप पुनः सुशीला से अपने सम्बन्ध बनाना चाहते हैं?"

"अब तो यह सर्वथा असम्भव प्रतीत होता है। इतने काल में गंगा का बहुत-सा जल बहकर सागर में जा चुका है।"

"परन्तु भूषणजी! इधर भी तो बहुत-सा जल बहकर नाली में गिर चुका है।"

भूषण गम्भीर विचार में पड़ गया। परन्तु उसकी यह अवस्था चिरकाल तक नहीं रही। उसने मुस्कराते हुए कहा, "यह बात इस प्रकार नहीं, जैसे तुम विचार कर रही हो। और इस विषय पर अभी विचार करने का अवसर भी नहीं है। देखो अंजू! संसार में विवाह के अतिरिक्त अन्य भी तो कई कार्य हैं। उनमें से कई तो विवाह से भी अधिक रोचक हैं। इस पर फिर कभी कुछ दिन बाद विचार कर लेंगे।"

: ३ :

ह्यूबर्ट को स्टीन के पत्र का उत्तर नोरा मौखिक रूप में लाई। वह रेल के स्टेशन से सीधी अपने घर पहुँची। पीटर और लड़कियाँ तब तक सो ही रही थीं। उसने द्वार खटखटाया तो पीटर हड़बड़ाकर उठा और मकान का द्वार खोल प्रातः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घुसमुसे प्रकाश में नोरा को खड़ी पाकर आँखें मलकर देखने लगा, "तुम ? यहाँ किसलिए आई हो ?"

"अपनी लड़कियों के पास आई हूँ।"

"कौन लड़कियाँ, विवाहित अथवा अविवाहित ?"

"दोनों ?"

"दो का विवाह तो तुम कर चुकीं, अब शेष का भी इसी प्रकार करने वाली हो। यह मैं नहीं होने दूँगा। चली जाओ यहाँ से। नहीं गईं तो पुलिस को बुलाना पड़ेगा।"

"देखो ! बहुत हल्ला मत करो। पुलिस वगैरा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उसके बिना ही बात बनाने के विचार से आई हूँ।"

"कहाँ से आई हो ?"

"भोपाल से अंजू ने आपको अपने पत्र में लिखा तो है ?"

पीटर समझ गया कि वह स्टीन को दिये बयान की बात कह रही है। फिर भी उसने कहा, "और उस पत्र के अनुसार तो तुम्हें और तुम्हारे मित्र ह्यूबर्ट को सात वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड होना चाहिए।"

"पीटर ! मुझे भीतर आने दो और मेरी बात सुन लो।। कचहरी के बिना भी दण्ड भोगा जा सकता है। मैं तो उसके लिए तैयार होकर ही आई हूँ।"

पीटर नरम पड़ने लगा। वह द्वार से एक ओर को हटकर खड़ा हो गया। नोरा भीतर गई तो सीधी लड़कियों के कमरे में जा पहुँची। सिलविया और मेरी सो रही थीं। वहाँ से वह अंजू के कमरे में गई। किन्तु वह रिक्त था।

पीटर चुपचाप उसके पीछे-पीछे था। अंजू के कमरे को रिक्त देख नोरा ने प्रश्न-भरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखा। पीटर उसके देखने का आशय समझ कर बोला, "तुमको हमसे अधिक पता होना चाहिए।"

"वह यहाँ नहीं आई ?"

"यहाँ कैसे आती ?"

"उसका पत्र और बयान कौन लाया है ?"

"एक व्यक्ति लाया है। उसका नाम है जेवियर।"

"परन्तु वह तो गुण्डा, बदमाश और बरदाफरोश है।"

"तुम्हारा उसके साथ भी सम्बन्ध है ?"

"क्या मतलब ?"

"सम्बन्ध का मतलब नहीं समझतीं क्या ?"

नोरा चुप हो गई। एकाएक वह अंजू के कमरे से निकलकर अपने कमरे में गई और वहाँ पलंग पर बैठकर बोली, "मैं अत्यन्त थकी हुई हूँ। इस कारण मेरी बात सुन लो। मैं चाय पीकर सो जाना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद पीटर के कुछ कहने से पूर्व ही उसने कहना आरम्भ किया, "स्टीन ने डॉक्टर ह्यूबर्ट को लिखा है कि आपने उसे आज प्रातःकाल तक का समय दिया है और उसके उपरान्त अंजू मजिस्ट्रेट के सामने बयान देने चली जाएगी।

"मैं उसी अल्टीमेटम के उत्तर में आई हूँ। ह्यूबर्ट आज प्रातःकाल के पाँच बजे के हवाई जहाज से अमेरिका के लिए रवाना हो चुका होगा। नर्सिंग बोर्डिंग हाउस के चैपल के रजिस्टर में से अंजू का विवाह-सम्बन्धी पन्ना फाड़ दिया गया है। तीसरी बात यह है कि जो कुछ हुआ है उसके लिए डॉक्टर खेद प्रकट कर अंजू से क्षमा माँगता है।"

"कोई लिखित प्रमाण ?"

"डॉक्टर कहता था कि वह एक पत्र बम्बई एयरपोर्ट से आपकी मार्फत उसे भेजेगा। उसमें वह रिग्रेट प्रकट करेगा। उस पत्र के यहाँ पहुँचने तक वह भारत से बहुत दूर जा चुका होगा।"

इस समय तक घर में हो रही हलचल से मेरी और सिलविया जाग चुकी थीं और माँ के कमरे में पिता की आवाज सुनकर वहाँ आ गई थीं। सिलविया तो माँ को देख उससे लिपट गई।

नोरा ने सिलविया को प्यार दिया तो मेरी पिता के पास बैठ बहिन और माँ को तरल आँखों से मिलते देखने लगी। उसको इस प्रकार पहले कभी भी माँ की ओर से प्यार नहीं मिला था। वह पिता की प्रिय पुत्री थी। सिलविया को माँ से प्यार मिलता देख वह पिता के साथ सटकर बैठ गई थी। पीटर इसका आशय समझ रहा था। इस कारण उसने मेरी की पीठ पर प्यार देते हुए कहा, "देखो मेरी! तुम्हारी माँ कहती है कि उसने पुलिस को वापस बुला लिया है। इससे अब तुमको डरने की आवश्यकता नहीं।"

"तो अब सिस्टर आ जाएगी ?"

"हाँ।"

"कब ?"

"उसे आज चिट्ठी लिखूंगा। वह उसे मिलेगी और फिर परसों तक उसके आने की सम्भावना है।"

"वह कहाँ है ?"

"भोपाल में कहीं है।" पीटर अभी भी लड़की का पता अपनी पत्नी को बताना नहीं चाहता था।

नोरा ने भीगी आँखों से अपने पति की ओर देखकर कहा, "तो आपने इनको बताया था कि मैंने इनके पीछे पुलिस भेजी है ?"

"नहीं, इनके पीछे नहीं, अंजू के पीछे भेजी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब सुन लो। अंजू के पीछे पुलिस नहीं है। उसे शीघ्रातिशीघ्र बुला लेना चाहिए।"

"उसका पता उसके पत्र पर लिखा है। मैं स्वयं वहाँ जाने का विचार कर रहा हूँ। आज शनिवार है, कल रविवार की छुट्टी है। सायंकाल की गाड़ी से जाऊँगा।"

"उसका पत्र कहाँ है?"

"वह तो वकील के पास है। यदि मैं नौ बजे तक उसके पास नहीं गया तो वह दस बजे मजिस्ट्रेट के सामने अंजू के पत्र को लेकर पहुँच जाएगा और ह्यूबर्ट के वारंट निकलवाने का यत्न करेगा।"

नोरा उठी और रसोईघर की ओर चाय बनाने के लिए जाती हुई बोली, "मैं चाय पीकर सोना चाहती हूँ।"

"चाय तो सिलविया बना देगी। जाओ सिलविया, सबके लिए चाय बनाकर ले आओ। मेरी, जाओ तुम भी बहिन की सहायता करो।"

दोनों लड़कियाँ गईं तो पीटर ने नोरा से कहा, "तुमने जो कुछ किया है उस पर तो बाद में विचार करूँगा। परन्तु ह्यूबर्ट का लिखित पत्र आ जाने के उपरान्त ही अंजू प्रकट होना चाहेगी। मैं तुम्हारी बात को लेकर वकील के पास जाऊँगा। आगे की बात उसकी राय से ही होगी।"

नोरा अभी चाय पी ही रही थी कि घर के बाहर मोटर का हॉर्न बजा और पीटर ने समझा कि भूषण आया होगा। वह लपककर उठा और उसको नवीन समाचार बताने के लिए द्वार की ओर गया।

नोरा भी चाय का प्याला पकड़े उसके पीछे-पीछे द्वार के समीप जाकर खड़ी हो गई। पीटर ने द्वार खोला तो ह्यूबर्ट की गाड़ी खड़ी देख दोनों स्तब्ध रह गए।

गाड़ी से मिस्टर स्टीन निकला और उनके द्वार की ओर आया तो नोरा ने समझा कि भोपाल से ह्यूबर्ट की गाड़ी आ गई है और स्टीन ह्यूबर्ट के विषय में ही कुछ कहने के लिए आया होगा।

"मिस्टर पीटर! में तुमसे मिलने के लिए आया हूँ।"

"आइए, भीतर आइए।"

स्टीन ने नोरा को वहीं खड़ी देखा तो उसके मुख से निकल गया, "मिसेस मेथ्यू भी यहीं हैं?"

"आइए।" नोरा ने अपने पति के निमन्त्रण का समर्थन किया।

स्टीन भीतर आया तो पीटर ने सिलविया को एक प्याला चाय और बनाने के लिए कह दिया। सब घर की बैठक में पहुँच गए। जब लड़कियाँ पुनः रसोईघर में गईं तो स्टीन ने कहा, "मुझे पता नहीं था कि मिसेस मैथ्यू आ गई हैं। इन्होंने वहाँ की स्थिति बताई होंगी।"

"इन्होंने जो कुछ भी बताया है उसका समर्थन अभी तक मिला नहीं है। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजू के बयान और पत्र यहाँ के एक वकील को दे रखे हैं। उससे यह निश्चय है कि यदि मैं नौ बजे तक उसके पास सन्तोषजनक उत्तर लेकर नहीं पहुँचा तो वह मजिस्ट्रेट के पास कागजात लेकर चला जाए।"

"मैं यही कहने के लिए आया हूँ कि अब इन सब बातों की आवश्यकता नहीं रही।"

"परन्तु मिस्टर स्टीन! इस सबका जो नोरा कह रही है कुछ प्रमाण भी तो चाहिए। केवल जबानी जमा-खर्च से तो कुछ बनता नहीं।"

"यह आप निश्चय जानिए कि ह्यूबर्ट अमेरिका चला गया है। कल रात हमारे केन्द्र की कार्यवाही समिति की बैठक हुई थी। उसने एक प्रस्ताव से ह्यूबर्ट की सेवाएँ समाप्त कर दी हैं।"

"तो उस प्रस्ताव की प्रमाणित प्रतिलिपि दे देते तो मैं वह भी अपने वकील को दे देता।"

"वह प्रतिलिपि मैं लाया हूँ।" स्टीन ने अपने बैग से एक कागज निकालकर दे दिया। पीटर ने उसे पढ़ा। उस पर लिखा था, 'कई कारणों से डॉक्टर ह्यूबर्ट को केन्द्र के चीफ-पद से पृथक् किया जाता है और उसके स्थान पर मिस्टर जैक्स स्टीन को नियुक्त किया जाता है।'

पीटर ने कहा, "यद्यपि इस सबसे लड़की के विषय पर किसी प्रकार का प्रकाश नहीं पड़ता। फिर भी मैं इसे भी वकील को दिखा देता हूँ।"

नोरा कहने लगी, "मैंने इनको कहा है कि मिस्टर ह्यूबर्ट बम्बई से अंजू के नाम एक पत्र लिखने वाले हैं। उससे सब स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। अतः इनके वकील को तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

"देखिए मिस्टर स्टीन", पीटर ने कहा, "मैं इसमें किसी प्रकार का निर्णय करने वाला नहीं हूँ। वकील अथवा अंजू ही निश्चय करेंगे कि वे कब तक कोर्ट में जाने से रुके रहें। नोरा कहती है कि वह रजिस्टर जिस पर यह विवाह दर्ज किया गया था, विनष्ट कर दिया गया है। मैं तो यह समझा हूँ कि गिरजाघर के पादरी और उस पर साक्षी करने वालों ने जो जुर्म किया है उसे मिटाने का यत्न किया गया है और यदि वकील साहब दो-चार दिन और ठहर जाएं तो आप लोग क्या-क्या नहीं कर देंगे? इस कारण, मैं यह सब-कुछ, जो आपने बताया है, वकील को बता दूंगा और मैं कल अंजू से मिलने भोपाल भी जाना चाहता हूँ। वह जो निश्चय करेगी वही होगा।"

"तो उसका पता मुझे बता दीजिए। मैं उसको शान्त रहने के लाभ बताऊँगा।"

"पता वकील साहब के पास है।"

"और वे वकील साहब कौन हैं?"

"उन्होंने अपना नाम किसी को भी बताने से मना कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टीन गया तो नोरा सोने की तैयारी करने लगी। रात-भर वह रेल में सो नहीं सकी थी।

: ४ :

मध्याह्न के समय पीटर ने अपने कार्यालय से मिस्टर स्टीन को टेलीफोन किया। उसने बताया, "वकील का मुंशी भोपाल गया है। वह वहाँ अंजू से मिलेगा और उस चैपल में जहाँ विवाह हुआ कहा जाता है, जाकर रजिस्टर देखने का यत्न करेगा। वह टैक्सी से गया है और टैक्सी से ही रात तक लौट आयेगा। यदि नोरा का कथन सत्य निकला तो वकील ह्यूबर्ट के पत्र आने की दो दिन तक प्रतीक्षा करेगा। शेष कार्यवाही बाद में करेगा।"

स्टीन ने पीटर का धन्यवाद दिया और पूछ लिया, "आप कहाँ से बोल रहे हैं?"

"अपने बैंक से।"

"मुंशी कब गया है?"

"वह यहाँ से दस बजे गया है और उसके सायं छः बजे तक कोठी में लौटने की आशा है। यदि पादरी महोदय ने किसी प्रकार का लिखित बयान देने से इनकार किया तो बात गड़बड़ हो जाएगी। मैं एक बात आपसे कहता हूँ कि मिस्टर जेवियर ने मुकदमे में बहुत रुचि प्रकट की है। उन्होंने होस्टल के कुछ बोर्डरों को पूर्ण घटना के विषय में अंजू के समर्थन के लिए तैयार कर लिया है।"

"मैं समझता हूँ कि अपने धर्म और अपने समुदाय के मानापमान का विचार करते हुए इस मामले को बन्द करा दीजिए। मुख्य अपराधी तो अब देश में नहीं है। इस कारण अंजू को झगड़ा बढ़ाने में कोई लाभ भी नहीं। यदि वह कार्यालय में अपने काम पर आना चाहे तो आ सकती है। इतने दिन की अनुपस्थिति का उसका वेतन-सहित अवकाश माना जाएगा।"

पीटर ने उसका धन्यवाद किया और फोन बन्द कर दिया।

प्रेमनाथ ग्रोवर ने शान्तिनारायण को ही भोपाल भेजा था। उसका विचार था कि यदि गिरजाघर से ऐसा प्रमाण-पत्र मिल जाय कि वहाँ अमुक तारीख को कोई विवाह हुआ ही नहीं, तब अंजू के प्रकट हो जाने में कोई भय नहीं रहेगा।

शान्तिनारायण स्वयं ग्रोवर साहब की गाड़ी में गया और उसी गाड़ी में लौट आया। वह रात के दस बजे के लगभग वापस पहुँचा और सीधा ग्रोवर साहब को अपनी कार्यवाही की रिपोर्ट देने जा पहुँचा।

शान्तिनारायण ने बताया, "पादरी ने प्रमाण-पत्र दे दिया है कि पिछले दो सप्ताह से उसके गिरजाघर में कोई विवाह नहीं हुआ।"

इसके उपरान्त अंजू अपने माता-पिता के घर आ गई। रात के दस बजे शान्ति-नारायण अंजू को एक टैक्सी में बैठाकर पीटर के घर के बाहर उतार गया। द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोरा ने ही खोला। उसने अंजू को घर के द्वार पर खड़े देखा और एक मोटर गाड़ी को घर के द्वार से जाते देखा तो समझ गई कि वह भोपाल से चली आ रही है।

बिना एक भी शब्द कहे उसने लड़की के भीतर जाने के लिए मार्ग खोल दिया। अंजू ने भीतर जा पिता के कमरे के द्वार पर खड़ी हो कहा, "पापा ! मैं आ गई हूँ।"

"ओह ! अंजू।" पीटर ने पलंग पर से उठते हुए कहा। वह सोने की तैयारी में था। वह बाहर बैठक में चला आया। बच्चे भी भागे-भागे वहाँ आ गए। मेरी ने पूछा, "सिस्टर ! कहाँ थीं तुम ?"

"मम्मी से पूछा नहीं तुमने ?" मेरी को गले लगा उसके अभिवादन के रूप में मुख चूमते हुए अंजू ने उससे ही पूछ लिया।

"मम्मी तो कुछ बताती नहीं थीं।"

सिलविया ने कहा, "बताया तो है कि सिस्टर विवाह करने के लिए गई थी।"

अंजू के लिए यह नई बात नहीं थी। वह जानती थी कि सिलविया सदा माँ का पक्ष लिया करती थी। वह बात बदल देना चाहती थी। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। मेरी ने पूछ लिया, "तुम्हारा विवाह हो गया है ? सिस्टर ! हमें क्यों नहीं बुलाया विवाह में ?"

आखिर अंजू को बताना पड़ा, "देखो मेरी ! मैं विवाह करने के लिए नहीं गई थी। मुझे पकड़कर कैद कर लिया गया था। कैद में ही जबरदस्ती मेरा विवाह कर दिया गया और अब मैं उसे धोखा देकर वहाँ से भाग आई हूँ।"

"कौन कैद कर ले गया था ?"

"मम्मी !"

"मम्मी ? कैसे कैद किया था उन्होंने ? वह तो तुमसे बहुत ही दुर्बल हैं।" सिलविया ने अंजू की बात को झुठलाने के लिए कह दिया।

"पर मम्मी के साथ तो वह भी था जिसके साथ मेरा विवाह किया गया था।"

"वह बहुत बलशाली था ?" मेरी ने भय से आँखें फैलाते हुए बहिन से पूछ लिया।

"हाँ और फिर उसके कई साथी भी थे। सबने पकड़कर मेरा मुख बन्द कर दिया और मुझे एक बन्द गाड़ी में डालकर वहाँ ले गए। मेरा विवाह किया। मैंने झगड़ा किया। माँ ने उस आदमी की सहायता की थी। इसने झूठ बोल दिया कि मैं अभी सोलह वर्ष की हूँ। विवाह हुआ। माँ और उस आदमी से भूल हो गई। मेरे बाथरूम का दरवाजा खुला रह गया और मैं भाग आई।"

"माँ ने तुमको पकड़ने के लिए पुलिस भेज दी थी ?"

"हाँ, परन्तु पुलिस को मैंने बताया है कि माँ ने मेरी आयु के विषय में झूठ बोला है और मुझको पकड़कर बलपूर्वक मेरा अँगूठा विवाह के रजिस्टर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगवाया है। अब पुलिस जाँच कर रही है और मैं यहाँ आ गई हूँ।"

नोरा के मुख से अनायास निकल गया, "ओह! तो तुमने पुलिस में अपने बयान दे दिए हैं?"

"मम्मी! वकील ने ही यह किया है। उसका कहना है कि यदि चैपल के पादरी ने मुझसे लिखित क्षमा न माँगी तो तलाक के लिए प्रार्थना करनी ही होगी। और उसमें तुम्हारे झूठे बयान और पादरी का जबरदस्ती मेरा अँगूठा लगवाना ही तो तलाक स्वीकार करने में सहायक होंगे।"

"तो तुम मुझे जेल में डलवाने वाली हो?" नोरा का भय से पसीना छूटने लगा।

"मम्मी! मैं तो कुछ नहीं कर रही। चैपल का पादरी ही गड़बड़ कर रहा है। उसे सत्य बात लिखकर देनी चाहिए थी।"

"मेरे तो यह बयान होंगे कि तुम्हारा विवाह किसी के साथ हुआ ही नहीं। जब विवाह ही नहीं हुआ तो जबरदस्ती अथवा स्वेच्छा से, का प्रश्न ही नहीं बनता?"

"ठीक है। अदालत में यह बयान दे देना। यही तो मैं चाहती हूँ।"

"ह्यूबर्ट तो देश छोड़ गया।"

"सत्य?" अंजू ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए कहा, "क्यों? जेल की हवा खाने को जी नहीं चाहता था। मम्मी! वह कायर मेरा पति बनने के योग्य नहीं था।"

"परन्तु वह तो अपने मिशन की बदनामी के डर से गया है। अपने विषय में तो वह अदालत को अपने अनुकूल करने को तैयार था। यह तो सर्वविदित ही है कि इस समय यहाँ ऐसी हालत है कि सत्य को झूठ और झूठ को सत्य सिद्ध किया जा सकता है। धन एक बहुत बड़ी शक्ति है। और यह उसके पास पर्याप्त था। परन्तु केन्द्र के प्रबन्धकों ने उसके काम को पसन्द नहीं किया और उसे केन्द्र के मुख्य अधिकारी के पद से हटाकर उसे देश से चले जाने के लिए कह दिया गया।"

"जेवियर तो कहता था कि इस तरह की बातें केन्द्र में प्रायः होती रहती हैं?"

"उसकी ह्यूबर्ट से व्यक्तिगत शत्रुता है।"

"हाँ, वह बता रहा था कि उसकी शत्रुता मेरी मम्मी के कारण है।"

पीटर इस वार्तालाप को पसन्द नहीं करता था। वह चाहता था कि इसको बन्द कर दें और उसने एक बात का पहले भी नोरा से संकेत किया था परन्तु माँ-बेटी दोनों के हृदय में कटुता भरी होने के कारण वे कहती ही जाती थीं। जब नोरा का नाम जेवियर के साथ आया तो वह उठ बैठा और बोला, "अंजू! अब बस करो। कुछ तो अपने पिता के मान का विचार करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटर की इस प्रार्थना को अंजू ने सुना तो समझ गई कि वह अपनी छोटी बहिनों के सामने ही कह रही है। वह चुप हो गई।

जेवियर ने भोपाल से टैक्सी में आते हुए नोरा के विवाह के विषय में कुछ संकेत किया था और उसी संकेत के आधार पर अपनी कल्पना लगा माँ के विषय में वह कहने वाली थी। वह भी उठ पड़ी और बोली, "पापा ! मैं इस घर में रह सकती हूँ अथवा नहीं ?"

"क्यों नोरा ! अंजू यहाँ रह सकती है अथवा नहीं ?" पीटर ने नोरा को प्रसन्न करने के लिए उससे ही पूछ लिया।

नोरा ने कहा, "जब तक इसका विवाह नहीं हो जाता, यह यहाँ से जाएगी भी कहाँ ?"

"मम्मी ! अब विवाह नहीं होगा। अब तो मरणपर्यन्त तक की बात पूछ रही हूँ।"

"हो जाएगा, वह हिन्दू का बच्चा नहीं करेगा तो कोई अन्य मान जाएगा। चिन्ता की बात नहीं।"

"मिलने को तो कोई-न-कोई ह्यूबर्ट का बच्चा मिल ही जाएगा। परन्तु मैं विवाह नहीं करूँगी। अब बताओ।"

"अपने पापा से पूछो। घर उनका है।"

अंजू कुछ कहने वाली थी कि पीटर ने कहा, "लम्बे भविष्य की बात तो अभी कुछ दिन ठहर कर करेंगे। मैं समझता हूँ कि अब सोना चाहिए।"

"यह भोजन नहीं करेगी ?"

"कर चुकी हूँ।" अंजू ने कह दिया।

अंजू जब से भोपाल से लौटी थी वह अपने भविष्य के विषय में गम्भीरता-पूर्वक विचार कर रही थी। वह देख रही थी कि भूषण ने उसको ह्यूबर्ट के पंजे से छुड़ाने के लिए भारी रकम खर्च की है। साथ ही अपनी बदनामी भी सही है। एक बार तो उनके सब जानकार यह समझ बैठे थे कि भूषण ने ही ईसाई लड़की का अपहरण किया है।

एक बात और हुई थी। भूषण ने बताया था कि सुशीला की सागरचन्द से बनी नहीं और अब सुशीला ने उससे मिलने का अवसर बनाया है। वह अंजू के विषय में जानकारी करने के लिए आई थी।

अंजू के विषय में तो भूषण ने बता दिया था कि वह कुछ नहीं जानता। उसको केवल इतना पता है कि पुलिस उनकी कोठी की तलाशी लेने के लिए दो बार आ चुकी है। बातों-ही-बातों में भूषण ने पूछा था कि उसका विवाह कब हो रहा है। इस पर सुशीला ने कहा था, "सागरचन्द तो महा बदमाश और दुराचारी है।"

"सत्य ? यह खोज तुमने की है अथवा तुम्हारे पिताजी ने ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो मेरी ही जानकारी है। पिताजी तो अभी भी मुझको उसके गले में बाँध देने का विचार बनाए हुए हैं।"

भूषण ने सुशीला को यह नहीं बताया कि सागरचन्द उससे मिल चुका है और वह कुछ उसके विषय में कह गया है। यह बात भूषण ने अंजू को बताई थी। इससे वह यह समझी थी कि यदि भूषण और सुशीला में पुनः सुलह हो जाय तो विस्मय करने की बात नहीं। उसने भूषण को तो कुछ नहीं कहा था। हाँ वह अपने विषय में विचार करने लगी थी। उसके विचार का ही यह परिणाम था कि वह सबसे पहले अपने पिता के घर में रह सकने का विश्वास करना चाहती थी।

उस रात तो कुछ अधिक बात नहीं हो सकी। प्रातः शान्तिनारायण आया। पीटर तो उसके विषय में जानता था। नोरा को यही बताया गया था कि वह अंजू के वकील का मुंशी है। अंजू उसके साथ चली गई। अंजू के जाने के उपरान्त नोरा ने पूछा, "इस वकील और टैक्सियों का खर्चा कौन दे रहा है?"

"अंजू का अपना बैंक-बैलेन्स है। उसमें से ही दे रही होगी।"

"तो वह भूषण कहाँ गया?"

"वह तो नाराज है। एक सप्ताह में दो बार उसके घर की तलाशी हो चुकी है।"

"किन्तु अपने सात-आठ सौ के भरोसे यह कब तक और कहाँ तक मुकदमा चलाएगी?"

"अब कदाचित् मुकदमा नहीं होगा। फिर भी बिना मैजिस्ट्रेट के सामने सब बयान दिए उस विवाह के रचे गए स्वाँग से छुट्टी कैसे मिल सकती है?"

"मुझको कहती तो मैं उसका सारा काम बिना एक भी पैसा खर्च किए ठीक करवा सकती हूँ।"

"तो उसे कहो। पहले अपनी भूल स्वीकार करो।"

"मेरी बात तो वह अब कुछ दिन तक सुनेगी ही नहीं। आप उसे कहिए कि मैं उसकी नौकरी सैंटर में लगवा सकती हूँ। उसको जो हानि पहुँची है, उसके प्रतिकार में कुछ दिलवा सकती हूँ। साथ ही सब प्रकार की उचित लिखा-पढ़ी हो सकती है।"

अंजू गई थी भूषण के कार्यालय में। शान्तिनारायण उसे वहीं ले गया था। भूषण ने कहा, "देखो अंजू! अभी तक तो किसी वकील से हमने बातचीत की नहीं। अपनी बुद्धि से ही सब कुछ किया है। मैं अब तुमसे यह राय करना चाहता हूँ कि इस पूर्ण घटना पर पटापेक्ष करने से पूर्व वकील से राय करें अथवा नहीं।"

"कल ये", उसने शान्तिनारायण की ओर संकेत कर कह दिया, "कह रहे थे कि बोर्डिंग हाउस के चैपल के रजिस्टर को देख आये हैं। वहाँ पिछले दो सप्ताह से किसी का भी विवाह दर्ज नहीं है। पादरी ने यह भी लिखकर दिया है कि पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सप्ताह से वहाँ किसी का विवाह कराया नहीं गया। मैं समझता हूँ कि इस प्रमाण के उपरान्त कुछ करने को अवशिष्ट नहीं रहा है।"

शान्तिनारायण ने एक सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि आपकी और आर्यसमाजियों की जो बदनामी हो चुकी है, चुप रहने से तो वह दूर नहीं होगी। उसके उपरान्त जिस किसी से भी इनका विवाह होगा उनके पीछे-पीछे यह बदनामी चलती जाएगी। यदि किसी आर्यसमाजी से इनका विवाह हुआ तो आर्यसमाज और वह आर्यसमाजी इस अपहरण के मामले में सम्मिलित समझे जाएँगे।

"अतः मेरा यह सुझाव है कि एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुला ली जाय और उसमें अंजू जी एक वक्तव्य दें तथा पुलिस में लिखाई अपनी रिपोर्ट का प्रतिशोध करें।"

अंजू ने कहा, "खुली प्रेस-कॉन्फ्रेंस तो मैं चाहती नहीं। एक तो पापा को पुलिस में रिपोर्ट कर देनी चाहिए कि मैं मिल गई हूँ। दूसरे यदि किसी अच्छे-से समाचार-पत्र का संवाददाता अपने अनुकूल हो तो वह मुझसे भेंट करके अपनी ओर से मेरा वक्तव्य दे सकता है।"

अंजू का यह सुझाव भूषण को पसन्द आया। उसने उसी समय टेलीफोन उठाया और स्टेट्समैन के स्थानीय प्रतिनिधि को सायं चाय के लिए मिनर्वा में मिलने का निमन्त्रण दे दिया।

पत्र-प्रतिनिधि ने पूछा, "क्या बात है भूषणजी ?"

"भाई कुछ दिन हुए समाचार-पत्र में किसी ईसाई लड़की के अपहरण की बात छपी थी। उसमें यहाँ के एक प्रमुख आर्यसमाजी के लड़के की ओर संकेत था। वह लड़की कुछ समाचार-पत्रों को अपनी बात बताना चाहती है।"

"तो एक प्रेस-कॉन्फ्रेंस बुला लीजिए।"

"पहले आपसे बात करेगी। बाद में यदि आप राय देंगे तो प्रेस-कॉन्फ्रेंस भी बुलाई जा सकती है।"

"अच्छी बात है, मैं ठीक पाँच बजे आऊँगा। कहिए तो अपने एक-तो साथियों को भी लेता आऊँ ?"

"हम बहुत ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं चाहते। एक-दो की बात तो हो सकती है।"

इस प्रकार इतना निश्चय कर अंजू उठ खड़ी हुई। शान्तिनारायण उसी कारखाने में काम करता था। भूषण ने अपनी गाड़ी निकाली और कहा, "अपने पापा को लेकर पुलिस थाने में चली चलो। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

उसने अपनी गाड़ी निकलवाई और दोनों मोटर से बैंक में जा पहुँचे। वहाँ से पीटर को लेकर थाने में रिपोर्ट लिखवा दी गई। अंजू ने लिखवाया, "मैं बालिग हूँ। मेरी आयु मेरे स्कूल में और मेरे विश्वविद्यालय में दर्ज है। उसके अनुसार मैं इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय बाईस वर्ष की हूँ। मिस्टर बी० ह्यूबर्ट ने मेरा अपहरण किया था। वह मिशन के केन्द्रीय कार्यालय का अवैतनिक अधिकारी था। वह अमरीका के किसी बहुत बड़े धनी का लड़का है। उसकी इच्छा मुझसे विवाह करने की थी। मेरी माँ मेरे साथ थी। परन्तु जब मैंने बताया कि मैं बालिग हूँ और उससे विवाह करना नहीं चाहती तो वह तीन दिन तक मेरी मिन्नत करता रहा जिससे कि मैं स्वेच्छा से विवाह करने के लिए तैयार हो जाऊँ। मैं राजी नहीं हुई तो वह एक दिन मुझे और मेरी माँ को वहीं छोड़कर चला गया। अब पता चला है कि वह अमेरिका लौट गया है। मैं अपनी माँ के साथ लौट आई हूँ।"

इस रिपोर्ट के साथ भी थानेदार की जेब गरम करनी पड़ी।

: ५ :

रामनारायण टण्डन की स्त्री अपनी लड़की सुशीला से भी अधिक उत्सुक थी कि सागरचन्द से सम्बन्ध बन जाय। यह उसकी प्रेरणा का ही फल था कि भूषण के कारखाने में उद्घाटन-यज्ञ को जाते समय सुशीला माँ को कह गई थी, "अच्छा ममी! यदि तुम कहती हो तो ठीक है। इंजीनियर साहब आ जाएँ तो उनको कह देना कि मैं मान गई हूँ। और मुझसे आज किसी समय मिल लें।"

सागरचन्द को सूचना मिली तो उसने कान्तादेवी का धन्यवाद कर दिया और बोला, "आज तो मैं एक काम से भोपाल जा रहा हूँ। वहाँ से लौटते ही मिलूँगा।" परन्तु जब ग्रोवर के मकान पर सुशीला से भेंट हो गई तो उसने सुशीला से मिलने के लिए डेढ़ घंटे का समय निकाल लिया। सागरचन्द भूषण को बधाई देने और यह कहने आया था कि वह नगर से बाहर जा रहा है, इस कारण सायंकाल की चायपार्टी पर नहीं आ सकेगा। वहाँ भेंट हो गई सुशीला से और जल्दी-जल्दी बधाई दे वह सुशीला को लेकर चल पड़ा।

मोटर में चलते हुए सागरचन्द ने कहा, "मैं ढाई बजे यहाँ से अपनी गाड़ी में भोपाल जा रहा हूँ। अब ग्यारह बजे हैं। होटल में खाने का समय डेढ़ बजे है। बताओ इस समय कहाँ चलें?"

"हमारे घर चलें।"

"हमारे घर? अच्छा चलो।" इतना कह उसने मोटर सुशीला के नहीं अपने घर की ओर घुमा दी।

सुशीला को जब पता चला कि वे उलटे मार्ग पर जा रहे हैं तो उसने कहा, "इधर नहीं, हमारा घर उधर है।"

"नहीं देवीजी, भूल कर रही हैं। आज दिन के दस बजे से हमारा, मेरा अभिप्राय है तुम्हारा और मेरा घर इधर है। चलो तुम्हें दिखा दूँ कि कैसा है हमारा घर।"

वह सुशीला को अपने घर ले गया। वहाँ से वे दोनों डेढ़ बजे होटल पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन किया और वहाँ से वह सुशीला को उसकी माँ के घर ले गया।

कान्तादेवी ने सुशीला को अति प्रसन्न और सागरचन्द को गम्भीर देख पूछ लिया, "सागरजी ! कहाँ मिल गई यह आपको ?"

"मछली बिना सागर के तड़फड़ा रही थी। सो सागर ने इसे स्थान दिया तो यह प्रसन्न हो गई।"

कान्ता हँस पड़ी। सागर ने कहा, "आपके कथनानुसार मेरी इससे बातचीत हो गई है। और कल मैं भोपाल से लौटकर विवाह की पूर्ण योजना निश्चय कर लूंगा।"

"आपकी माताजी कब मिलेंगी ?"

"वे आजकल मामाजी के यहाँ गई हुई हैं। वे सब-कुछ मान जाएँगी, पहले सुशीलाजी से निश्चय होगा। तदुपरान्त आप और मेरी माताजी उसको स्वीकार कर लेंगे।"

सागरचन्द गया तो कान्ता ने सुशीला से पूछा, "कहाँ मिल गए थे ?"

"भूषण की माताजी उद्घाटन-समारोह से मुझे अपने घर ले गई थीं। भूषण का अंजू से विवाह लगभग निश्चित है। वह और उसके माता-पिता उद्घाटन-समारोह पर उसकी गाड़ी में गए थे और उसी गाड़ी में लौटे भी। भूषण की माताजी मुझे अपने घर ले गईं। वहाँ ये बधाई देने के लिए आये हुए थे। ये बोले कि मेरी मम्मी ने इनको बता दिया है कि मैं इनसे विवाह पर राजी हूँ।"

"हाँ, मैंने यह कहा था। और कहा था कि वह तुमसे मिल ले।"

"ये मिले तो वहाँ से मुझे अपने घर ले गए। वहाँ मकान का साजो-सामान और अन्य सुख-सुविधा की वस्तु दिखाते रहे। वहाँ से हम खाना खाने होटल में गए और फिर घर चले आये।"

माँ ने सन्तोष की साँस लेते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि इसके साथ रहकर तुम दीर्घकाल तक सन्तोष पाओगी।"

सुशीला सागरचन्द के घर पर की बहुत ही मधुर स्मृति लेकर आई थी। उसने वहाँ से आते समय कहा था, "मैं तो अविलम्ब इस घर में आ जाना चाहती हूँ।"

"मैं तो तुम्हारा अब अपने माता-पिता के घर जाना पसन्द करता ही नहीं। तुम यहीं रहो तो मैं अपना सौभाग्य मानूंगा।"

"पर आप पिताजी की अपनी समाज में पोजीशन जानते हैं। यदि मैं बिना विवाह के यहाँ रह गई तो उनकी कितनी बदनामी होगी।"

"पर गुरुजी महाराज ने कहा है—

साधो मन का मान त्यागो।
मान-अपमान सम कर जानो।
तिन्ही तत्त्व पहचानो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का मान त्यागो ।"

"ठीक है। पर पिताजी साधु तो नहीं न ? न ही आर्यसमाज साधु समाज है।"

"फिर कब दर्शन होंगे ?" सागरचन्द ने पूछ लिया।

"आप कब लौट रहे हैं ?"

"कल बारह-एक बजे तक लौट आऊँगा।"

"तो मैं सायंकाल आपको मिनर्वा पर मिलूंगी।"

"ठीक है।"

अगले दिन सुशीला मिनर्वा में सागरचन्द की प्रतीक्षा करती रही। वह वहाँ नहीं आया। सुशीला ने समझा कि वह देर से लौटा होगा और उसको वहाँ आने के लिए समय नहीं मिला होगा। इस कारण उसने वहाँ अकेली ही चाय पी और फिर अपने अनुमान की सत्यता जानने के लिए उसके घर पर जा पहुँची। घर खुला था। भीतर लैम्प जल रहा था। इससे उत्साहित हो उसने घंटी बजा दी।

दरवाजा खुला और एक युवती बाहर निकली। वह प्रश्नभरी दृष्टि से सुशीला को देखने लगी। सुशीला ने पूछ लिया, "सागरचन्द जी भीतर हैं !"

"इस समय तो नहीं हैं।"

"क्या भोपाल से लौट आये हैं ?"

"भोपाल से ? नहीं तो, हम तो बीना से आ रहे हैं। आपका क्या काम है उनसे ?"

"काम तो है। पर आप उनकी क्या लगती हैं ?"

"कुछ तो लगती हूँ। वे ऑफिस की एक मीटिंग में गए हैं। कह रहे थे कि भोजन वहीं होगा और दस बजे के बाद लौटेंगे।"

"अच्छी बात है। मैं कल मिलूंगी।"

"आप अपना नाम-धाम बता दें तो मैं उनको बता दूंगी।"

"कोई आवश्यकता नहीं। मैं कल उनको मिल लूंगी।"

सुशीला लौट आई। घर पर पहुँच रात के खाने के समय उसने माँ ने पूछा, "ममी ! उनकी कोई बहिन है ?"

"किनकी ?"

"आपके दामाद की।"

"नहीं तो। वह तो माँ की अकेली ही सन्तान है। वह जब छोटा-सा ही था, लगभग एक वर्ष का होगा, तभी उसके पिता का देहान्त हो गया था। उसका पालन-पोषण उसकी माँ ने ही किया है। इसकी माँ के भी सगे भाई नहीं हैं। मौसी के लड़के हैं और उनको ही वह भाई की भाँति मानती है।"

सुशीला गम्भीर हो सुनती रही। माँ ने पूछा, "क्या बात है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं ममी ! उनको मैंने एक लड़की के साथ कहीं देखा है। मैं समझी थी कि उनकी बहिन होगी।"

"किसी मित्र की पत्नी अथवा बहिन भी हो सकती है।"

"हाँ।" वह माँ के इस कथन से सान्त्वना अनुभव करती हुई चुप रही। फिर भी उसके मन में इस युवती के विषय में जानने की इच्छा बनी रही।

अगले दिन वह सागरचन्द से मिलने की इच्छा करती रही। परन्तु वह जा नहीं सकी। तब उस दिन समाचार-पत्रों में अंजू के अपहरण की बात चल पड़ी थी। अभी तक इतना ही समाचार छपा था कि ईसाई मिशन के केन्द्रीय कार्यालय की एक लड़की लापता है। यह सन्देह किया जाता है कि उसका किसी ने अपहरण किया है। उसके माता-पिता को उसका पता नहीं है और वे बहुत चिन्तित हैं।

वह विचार कर रही थी कि अंजू ने भूषण को धोखा दिया है। वह भूषण से दो वर्ष तक खाना-पीना लेकर अब उसको छोड़ गई है।

अगले दिन यह समाचार छपा कि पुलिस को सन्देह है कि ईसाई लड़की का अपहरण नगर के एक प्रमुख आर्यसमाजी के लड़के ने किया है। अतः उस आर्य-समाजी के घर की तलाशी हुई है और पुलिस लड़के की गतिविधियों पर दृष्टि रख रही है।

इससे उसकी सहानुभूति भूषण से हो गई। वह समझी कि कदाचित् उस ईसाई लड़की के माता-पिता को भूषण से उसका विवाह पसन्द नहीं है। इस कारण लड़की को भूषण उड़ा ले गया है और लड़की के माता-पिता से चोरी-चोरी विवाह कर उसको कहीं छिपा रखा है। वह पिछले दिन सागरचन्दजी के घर नहीं जा सकी थी। टंडनजी के घर मेहमान आये हुए थे और इस कारण सुशीला घर से अवकाश नहीं पा सकी। बुधवार को सागरचन्द ने समाचार-पत्र में जब यह समाचार पढ़ा तो वह भूषण से मिलने के लिए आया। वह उसको उसके कारखाने में मिला था।

सागरचन्द ने कहा, "भूषणजी ! यह समाचार-पत्रों में क्या छपा है ?"

"भाई समाचार-पत्रों में तो नाम नहीं छपा परन्तु आज कई टेलीफोन आ चुके हैं। मेरा नाम कैसे बीच में आ गया है, मैं नहीं जानता।"

"आपकी कोठी की तलाशी हुई है। किसी ने पुलिस को वहाँ खड़ी देख लिया होगा।"

"वह इस कारण कि लड़की हमारे मकान में आती-जाती रही है। इस कारण पूछ-गीछ हुई है।"

"तो यह बात है। पर आप क्या समझे हैं कि लड़की किसी अन्य आर्यसमाजी के लड़के ने उड़ाई है ?"

"मैं तो यह समझा हूँ कि उसका अपहरण किसी ईसाई ने ही किया है। केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस को मिथ्या दिशा में भेजने के लिए इस प्रकार की रिपोर्ट कर दी गई है और समाचार-पत्रों में भी छपवा दी है। वैसे हमारा विवाह होने वाला था। वह वयस्क है और मैं भी वयस्क हूँ। हमारे विवाह में किसी प्रकार की वाधा नहीं है। किसी ईसाई ने ही उसका अपहरण किया है और पुलिस को धोखे में रखने के लिए यह सब किया है।"

"और अब तो उससे आपका विवाह नहीं होगा?"

"अभी क्या कह सकता हूँ। जब तक वह छुड़ाई न जाए और उसकी अब की रुचि का ज्ञान न हो, तब तक क्या करूँगा, कहा नहीं जा सकता।"

"जिसने उसका अपहरण किया है, उसने अब तक उसका उपभोग भी तो किया होगा।"

"इससे क्या होता है? यदि उसका मन ठीक होगा तो शरीर की शुद्धि कर ली जाएगी।"

सागरचन्द मुस्कराता हुआ देखता रहा। भूषण ने बात बदलने के लिए कह दिया, "आपका विवाह कब हो रहा है?"

"किससे?"

"टण्डन की लड़की सुशीला से।"

"अब नहीं हो रहा है।"

"क्यों?"

"वह सर्वथा असुन्दर है।"

"देखने में तो अच्छी मालूम देती है?"

"आपने उसे देखा है?"

"उस दिन आपके सामने ही तो हमारे यहाँ वह मिली थी।"

"वैसे नहीं। वह देखना देखना नहीं कहाता।" इतना कहते-कहते वह हँस पड़ा। भूषण कुछ न कहता हुआ विस्मय में सागरचन्द का मुख देखता रहा। सागरचन्द ने धीरे-से कह दिया, "परमात्मा का धन्यवाद है कि मैं उससे बच गया हूँ।"

भूषण ने और आगे बात नहीं चलाई। सामने रखे टेलीफोन की घंटी बजी। भूषण ने चोंगा उठाकर पूछा, "कौन?

"हाँ···मन्त्रीजी···क्या बात है? समाचार?···ठीक है। हमारे घर की तलाशी हुई है। वह वहाँ नहीं मिली। वह रिपोर्ट तो किसी ने पुलिस को मिथ्या दिशा दिखाने के लिए की है। वैसे मैं तो जब भी उससे चाहता विवाह कर सकता था। मुझे उसके अपहरण करने की आवश्यकता ही नहीं थी। उसका अपहरण तो किसी ईसाई ने ही किया प्रतीत होता है।"

जब टेलीफोन बन्द हुआ तो सागरचन्द ने कह दिया, "आप अनायास ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशहूर हो गए हैं।"

"क्या यह मशहूरी है?"

"हाँ, नाम तो हुआ है। कुछ लोग इसको बदनामी मानते हैं और दूसरे नेकनामी।"

"भला नेकनामी कौन मानते हैं?"

"वही, जो हिन्दुओं को आज तक नपुंसक का नाम देते आये हैं। अपने-अपने दृष्टिकोण की बात है। देखिए, हिन्दू किसी समय पुंसत्वयुक्त और मिलिटेंट उग्रवादी थे। यह उस समय की बात है जब अर्जुन कृष्ण की बहिन को ले भागा था। कृष्ण रुक्मिणी को उठा लाया था और भीष्म काशिराज की तीन-तीन कन्याओं को ले आया था। अब तो पिछले एक सहस्र वर्ष से हिन्दुओं की कन्या और स्त्रियाँ ही भगाई जाती हैं और यदि कुछ हिन्दुओं ने देश-विभाजन के समय कुछ मुसलमान स्त्रियों को भारत में रख भी लिया था तो हिन्दुओं की प्रतिनिधि सरकार ने उन औरतों को पकड़-पकड़कर वापस भेज दिया है।"

"मैं इसको पुंसत्व ही मानना हूँ।"

"हाँ, यदि वहाँ से हिन्दू औरतों को भी निकलवाया होता।"

भूषण सागरचन्द से सहमत नहीं था। परन्तु वह चिन्तित था सुशीला के लिए। सागरचन्द ने कहा था कि वह असुन्दर है। उसका सौन्दर्य मुख की आकृति के अतिरिक्त किस बात से सम्बन्ध रखता था। उसने कहा था कि मुख मात्र देखने को देखना नहीं कहते। अर्थात् उसने सुशीला के मुख के अतिरिक्त भी देखा है। क्या देखा है? वह मन-ही-मन विचार कर रहा था कि उसने सुशीला का और क्या और कैसे देखा होगा।

बात आगे चल नहीं सकी। परन्तु सायंकाल उसको सुशीला मिल गई। वह रेस्टोराँ में चाय पीने के लिए जा रहा था कि द्वार पर सुशीला दिखाई दे गई। वहाँ पर भूषण नित्य ही अंजू के साथ चाय पिया करता था। आज भी वह स्वभाववश ही आया था परन्तु वहाँ मिल गई सुशीला। सुशीला सागरचन्द के घर से आ रही थी। सागरचन्द रविवार के बाद अभी तक उसको मिला नहीं था, अतः उस दिन बुधवार को वह पुनः उसके घर पता करने के लिए गई थी। आज भी सागरचन्द घर पर नहीं था। उसने घंटी बजाई तो पुनः वही युवती दिखाई दे गई।

सुशीला ने पूछा, "सागरचन्दजी की माताजी आ गई हैं?"

"नहीं। पर आप कौन हैं? मैंने आपकी रूपरेखा का वर्णन कर उनसे पूछा था। तो उन्होंने कह दिया कि वे इस रूपरेखा की किसी लड़की को नहीं पहचानते।"

"मेरा नाम सुशीला है। नाम से तो वे जान ही लेंगे।"

"क्या काम है आपका?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो केवल मिलने ही आई थी। दुर्भाग्य की बात है कि वे आज भी घर पर नहीं हैं।"

"तो आइए, भीतर आ जाइए। एक प्याला कॉफी का पी लीजिए।"

"आ सकती हूँ, यदि आप अपना परिचय दें तो। मेजवान के विषय में कुछ जानकारी तो होनी ही चाहिए।"

"मेजबान ? क्या मतलब ?" उस युवती ने सुशीला को भीतर बुला लिया।

: ६ :

दोनों मकान के ड्राइंग-रूम में बैठीं तो सुशीला ने अपना प्रश्न दोहराते हुए कहा, "आपका परिचय पा सकती हूँ क्या ?"

उस औरत ने घंटी बजाई तो एक नौकरानी आ गई। सुशीला ने उसे भी उस दिन नहीं देखा था जिस दिन वह सागरचन्द के साथ वहाँ आई थी। उसकी समझ में आया कि यह औरत सागरचन्द की कोई सम्बन्धिनी है और यह नौकरानी उसके साथ ही आई है। उस औरत ने नौकरानी को दो प्याले कॉफी बनाकर लाने के लिए कह दिया।

वह गई तो उसने बताया, "ये इंजीनियर साहब मेरे पति हैं ?"

"अच्छा, यहाँ तो यह विख्यात है कि इन्होंने विवाह ही नहीं किया।"

"हमारा विवाह हुए तो सात वर्ष हो चुके हैं। मैं अपनी माँ के पास आगरा में रहती थी। ये वहाँ आते रहते थे। मेरे एक लड़का भी है। पिछले मास मेरी माँ का देहान्त हो गया है, अब मैं यहाँ चली आई हूँ।"

"परन्तु यहाँ तो इनकी माताजी भी यही कह रही थीं कि इनका विवाह अभी होना है।"

"इन्होंने माँ से छिपकर विवाह किया था। यही कारण है कि मैं अपनी माँ के पास रहती थी।"

"आपका लड़का कहाँ है ?"

"वह बीना में एक नरसरी स्कूल में पढ़ता है। अब उसको यहाँ लाना ही पड़ेगा। वैसे मैं परसों यहाँ से जा रही हूँ और पन्द्रह दिन बाद अपने लड़के के साथ ही यहाँ आऊँगी। उसके यहाँ एक स्कूल में भरती करने का प्रबन्ध हो गया है।"

सुशीला को ऐसा अनुभव हो रहा था कि उसके पाँव तले से मिट्टी खिसक रही है। पिछले रविवार को दो घंटे के लगभग वह सागरचन्द के साथ एकान्त में रही थी। और वह समझ रही थी कि वह इंजीनियर साहब की पत्नी बन चुकी है। वह पीत-मुख बैठी रही। उसने इस औरत का नाम जानने का यत्न किया। उससे पूछा, "आपका शुभ नाम ?"

"निर्मल मणि।"

"ओह ! बहुत सुन्दर नाम है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वैसे क्या आप मुझे असुन्दर समझती हैं ?"

"जी नहीं। फिर भी नाम तो बहुत ही सुन्दर है। खैर, आपसे परिचय हो गया, चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है। अब तो आपसे मिलने का अवसर मिलता रहेगा। आप अब यहाँ आ जाइए।"

"हाँ, यह तो होगा ही। मैं अपना कुछ सामान यहाँ रख चली हूँ। लड़के को लेकर और माँ का मकान भाड़े पर चढ़ाकर यहाँ आ जाऊँगी। पन्द्रह दिन से अधिक नहीं लगेंगे।"

"इंजीनियर साहब की माँ से आपका झगड़ा हुआ तो ?"

"अभी तक तो हमने एक-दूसरे को देखा नहीं है। अब मिलूँगी तो उनको अपनी सेवा से प्रसन्न करने का यत्न करूँगी।"

"मेरी शुभ कामना आपके साथ है।"

कॉफी आ गई थी। सुशीला इसकी आवश्यकता अनुभव करने लगी थी। उसका हृदय बीच-ही-बीच बैठने लगा था। कॉफी पी गई और कुछ समय तक दोनों स्त्रियाँ इधर-उधर की बातें करती रहीं। सुशीला मन से चाहती थी कि सागरचन्द वहाँ आ जाय। परन्तु वह नहीं आया।

जब सुशीला उस मकान से निकली तो उसका चित्त उदास था। वह अपनी अवस्था पर विचार करने के लिए अकेली बैठकर विश्लेषण करना चाहती थी। सामने रेस्टोरां दिखाई दिया तो वह उसमें जा बैठी। द्वार पर प्रवेश ही कर रही थी कि भूषण अपनी मोटर से उतरकर रेस्टोरां में आता दिखाई दिया। उसने विचार किया कि इसके साथ वह अंजू के विषय में बात करेगी। दोनों में परस्पर अभिवादन हुआ तो सुशीला ने ही पहले बात करते हुए कहा, "यह समाचार अंजू के विषय में ही निकल रहा है क्या ?"

"हाँ, वह तीन दिन से लापता है।"

"आपसे भी ? मेरा मतलब है कि आपको तो विदित होगा ही कि वह कहाँ है ?"

"मुझसे ही तो उसको छिपाया गया है।"

"किसने छिपाया है।"

"मिशनरी सैंटर वालों ने। वे एक ईसाई लड़की का एक आर्यसमाजी के साथ विवाह पसन्द नहीं करते।"

दोनों एक मेज पर बैठ गए। भूषण ने पूछा, "क्या लोगी, चाय या कॉफी ?"

"जो आप अंजू के साथ पिया करते थे।"

"उसके साथ तो कॉफी पीता था।"

"तो मैं कॉफी पी लूँगी।"

भूषण को अंजू की नकल करने पर विस्मय हुआ। वह मुख देखता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीला ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "क्यों, अंजू का स्थान किसी अन्य को देने का मन नहीं करता।"

"नहीं। अच्छा सुशीलाजी ! आपका विवाह कब होगा?"

"किससे विवाह?"

"चीफ इंजीनियर सागरचन्द से।"

"वह तो महाबदमाश और दुराचारी है।" अनायास ही उसके मुख से निकल गया।

भूषण मुख देखता रह गया। सुशीला बताना नहीं चाहती थी कि उसके साथ उसने क्या व्यवहार किया है। परन्तु क्रोध में वह उसके विषय में उक्त बात कह बैठी थी। अब उसने अपने को नियन्त्रण में कर लिया था। उसने कुछ शान्त हो कह दिया, "मैं समझती हूँ कि सब पुरुष एक समान होते हैं।"

भूषण हँस पड़ा। यह कटाक्ष उस पर था। हँसकर उसने पूछ लिया, "तो वहाँ भी कोई अंजू पहुँच गई है?"

"हाँ, अब तो अंजुओं की भी इस नगर में भरमार-सी हो गई प्रतीत होती है।"

"मैं समझता हूँ कि नगर में सुशीला-जैसियों की भी कमी नहीं होगी।"

"सुशीला जैसी का क्या मतलब?"

"जिनको सब पुरुष एक समान चरित्रहीन ही दिखाई देते हैं। सुशीलाजी ! यदि रंगीन चश्मा उतारकर देखिए तो कदाचित् बेईमान भले दिखाई देने लगें।"

इतने में कॉफी आ गई। भूषण विचार कर रहा था कि सागरचन्द धनी बाप का बेटा, भारत में इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त और फिर राज्य में उच्च पदवी पर पहुँचा हुआ भी विवाह नहीं कर रहा था। सम्भव है कि उसने एक-आध मिस्ट्रेस रखी हो और उनका पता सुशीला को लग गया हो। परन्तु जब वह अपने विषय में विचार करता था तो उसे सुशीला में ही दोष प्रतीत होता था। इस कारण कॉफी का एक घूंट पीकर उसने सुशीला से कहा, "मेरी राय है कि आप दूसरों पर विश्वास करना सीखें। शान्ति से परिस्थिति का अध्ययन करें और दूसरों को गाली देने के बजाय अपने अवगुणों की ओर ध्यान दें।"

"तो आप समझते हैं कि मेरा अनुमान गलत भी हो सकता है?"

"इसमें कोई विस्मय करने की बात नहीं। आपका मेरे विषय में जो विचार था वह निराधार था और इसी प्रकार सागरचन्द के विषय में भी गलत हो सकता है।"

सुशीला गम्भीर हो गई और चुपचाप कॉफी पीती रही। कॉफी समाप्त होने पर भूषण ने बिल भुगतान किया और दोनों रेस्टोरां के बाहर आ गए। भूषण ने कहा, "यदि आप घर जा रही हों तो मैं आपको गाड़ी में छोड़ सकता हूँ, मैं भी उधर ही जा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीला चुपचाप गाड़ी में बैठ गई। भूषण गाड़ी लेकर चल दिया। सुशीला विचार कर रही थी कि क्या सत्य ही उसने भूषण के विषय में भूल की थी ?

कुछ भी हो, एक बात तो वह विचार करती थी कि सम्भव यही है कि अंजू अब भूषण को न मिल सके। यदि समाचार-पत्रों में बदनामी होने के बाद वह मिल भी गई तो भूषण के माता-पिता उसे स्वीकार नहीं करेंगे। अर्थात् भूषण फिर रिक्त है और यदि वह सागरचन्द को छोड़ दे तो यहाँ पुनः बात बन सकती है।

एक क्षीण-सी आशा थी कि कहीं वह निर्मल मणि उसकी हँसी न उड़ा रही हो। वह है उसकी रिश्तेदार और यह जानती हुई कि वह सागरचन्द की होने वाली पत्नी है, उसे तंग करने के लिए उसने सब-कुछ झूठ बोला हो। वह जानती थी कि सागरचन्द की माँ सागरचन्द के विवाह के लिए उसकी माँ से कई बार मिल चुकी थी।

वह इसी उधेड़-बुन में थी कि मोटर उसके पिता के घर पर जा पहुँची। भूषण ने मोटर कोठी के बाहर ही खड़ी की और ज्योंही सुशीला कार से उतरी कि सुशीला की माँ कान्ता अपनी मोटर में वहाँ आ पहुँची और वह अपनी मोटर कोठी के भीतर ले गई। उसे भूषण सुशीला को नमस्ते करते दिखाई दे गया था।

सुशीला जब कोठी में पहुँची तो कान्ता देवी अपनी कार से उतर ड्योढ़ी में खड़ी हो सुशीला की प्रतीक्षा करने लगी। सुशीला आई तो वह उसे लेकर भीतर चली गई और ड्राइंगरूम में पहुँचकर उसने पूछ लिया, "यह भूषण था क्या ?"

"हाँ।"

"तुम उसकी गाड़ी में आई हो ?"

"हाँ।"

"कहाँ से आई हो ?"

"आपके दामाद के घर से।"

"वहाँ किसलिए गई थी।"

"उनसे मिलने का समय निश्चित था। परन्तु ये तो मिले नहीं। और वहाँ एक औरत मिल गई है जो स्वयं को उनकी पत्नी कहती है।"

कान्ता ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "सुशीला ! होश में बात करो। किसी ने तुम्हारी हँसी उड़ाई है।"

"तो ममी, मैं उनसे मिलकर पूछूँगी। आप उनकी ममी से पता करिए।"

"यह बात तुमको भूषण ने बताई प्रतीत होती है।"

"नहीं ममी ! उसने यह कहा है कि मुझे भ्रम हो गया है। परन्तु मैं तो अपनी आँखों से वहाँ एक औरत को मालकिन की भाँति रहते देख आई हूँ।"

"तुमको वहाँ जाना नहीं चाहिए था। मुझे विश्वास हो रहा है कि भूषण ने किसी प्रकार का षड्यन्त्र रचा है। वह तुम्हारा सागरचन्द से झगड़ा कराकर तुमसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह करना चाहता है। सुना है कि वह ईसाई लड़की भाग गई है और भूषण हाथ मलता रह गया है।"

"पर ममी ! मैं न तो भूषण के कहने पर वहाँ गई थी और न ही भूषण मुझे वहाँ मिला है। इसके साथ ही जब मैंने उनके विवाह की बात बताई तो वह कहने लगा कि यह मेरा भ्रम भी तो हो सकता है।"

"और वह मिला कहाँ था ?"

"उस औरत से बातें कर तो मेरा दिल भीतर-ही-भीतर बैठने लगा था। समीप ही एक रेस्टोराँ था। वहाँ एक प्याला कॉफी पी दिल को स्थिर करने के विचार से गई तो भूषण वहाँ मिल गया। कॉफी पीने के बाद वह मुझे यहाँ छोड़ जाने की बात कहने लगा।"

"देखो सुशीला ! मैं सागरचन्द के विषय में पता करूँगी। तुम न तो सागरचन्द के मकान पर जाना और न ही कभी भूषण के साथ घूमो-फिरो।"

सुशीला चुप रही।

: ७ :

अंजू ने माँ का यह प्रस्ताव कि वह पुनः कार्यालय में नौकरी करने चली जाय स्वीकार नहीं किया। वह अपने माता-पिता के पास ही रहती रही। उसके पास बैंक में कुछ रुपया जमा हो गया था। उसमें से उसने माँ को मासिक खर्चा दे दिया था।

माता-पिता के घर जाने के कई दिनों बाद, वह एक दिन नियत समय पर रेस्टोराँ को चल पड़ी। रेस्टोराँ से वह भूषण के कारखाने में टेलीफोन करने का विचार करती थी। परन्तु वह वहाँ पहले ही उपस्थित था। भूषण तो उसके अपहरण के दिनों में भी नियम से आता रहता था। अंजू उसके सामने जाकर खड़ी हो गई। उसको देख भूषण ने कहा, "मैं आज कुछ जल्दी ही चला आया था।"

"मैं आपके यहाँ आने की आशा करके आई हूँ।"

"अच्छा बोलो, क्या लोगी ? चाय अथवा कॉफी ? साथ में क्या खाओगी ?"

"सैंडविचिज और चाय।"

ऑर्डर दे दिया गया तो अंजू ने कहा, "माँ ने पुनः मिशन के कार्यालय में नौकरी करने को कहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मिस्टर स्टीन ने उसको मेरे वहाँ पुनः कार्य पर लिये जाने का आश्वासन दिया है।"

"परन्तु अंजू ! क्या तुमको नौकरी करने की आवश्यकता है ?"

"तो निर्वाह कैसे होगा ? माँ को भी खर्चा देना होता है।"

"मैं समझता हूँ कि अब तुम अपना पृथक् घर बना लो।"

"कैसे बना लूँ ?"

"विवाह कर लो। बस बाल-बच्चे हो जाएँगे तो घर बन जाएगा और तुम्हारी नौकरी लग जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो कुछ पहले सप्ताह में हुआ है, उसके बाद विवाह से चित्त उचाट हो गया है। अब इस जीवन में विवाह करने को मन नहीं करता।"

"तब तो किसी स्थान पर नौकरी करनी होगी। कार्य तो करना ही होता है। कर्म के बिना रहा नहीं जा सकता। यदि उपयोगी काम नहीं करोगी तो शैतानी काम करने लगोगी।"

"यही विचार कर रही हूँ। एक बार आपने नौकरी लगवा दी थी। यदि अब भी सहायता कर दें तो आपकी आभारी रहूँगी।"

"नौकरी तो आज ही लग सकती है।"

"तो लगवा दीजिए।"

"मैं तुमको एक पता लिखकर देता हूँ। उस पते पर चली जाओ और मेरा नाम बताना कि मैंने तुमको भेजा है। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारी नौकरी लग जाएगी।"

"क्या वेतन मिल जाएगा ?"

"मेरा विचार है अभी तुमको प्रोवेशन पर रखा जाएगा। इस काल का वेतन तो रखने वाले की इच्छा पर होगा। मैं समझता हूँ कि तुमको जो कुछ भी मिले, स्वीकार कर लेना चाहिए। यदि तुम्हारी सेवाएँ स्वीकार हो गईं तो फिर वेतन के समय मैं सिफारिश कर दूँगा। और जो कुछ तुमको केन्द्र से मिलता था उतना तो मिल ही जाएगा।

"मैं यही राय दूँगा कि अब तुमको अपनी माँ के साथ नहीं रहना चाहिए।"

"यदि सुविधाजनक वेतन मिल गया तो पृथक् रहने का प्रबन्ध कर लूँगी। वह प्रोवेशन के समय तो हो नहीं सकेगा।"

"ठीक है। मेरी राय तो राय ही है। अनुकूल जान पड़े तो कर लेना। इसमें भी मैं सहायता कर दूँगा। किसी अच्छे परिवार में पेईंगगेस्ट के रूप में रहने का प्रबन्ध हो जाएगा।"

"आपकी कृपा है। हाँ, पता लिख दीजिए।"

भूषण मेज पर से उठा और रेस्टोराँ के कार्यालय में चला गया। वहाँ से एक कागज ले उसने उस पर एक पता लिखकर कागज को लपेटकर अंजू को लाकर दे दिया।

उस समय तक चाय का सामान और खाद्य वस्तुएँ आ गईं थीं। अंजू ने लपेटा हुआ कागज सामने रखकर भूषण के लिए चाय बनानी आरम्भ कर दी। यह उसका ही कार्य था।

भूषण ने बात बदलकर कहा, "सुना है सुशीला और सागरचन्द में अनबन हो गई है।"

"तब तो ठीक है, आप उससे विवाह कर लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब यह बहुत कठिन है। वह और उसके माता-पिता को विश्वास हो रहा है कि मैंने ही तुम्हारा अपहरण किया था। उनको समाचार-पत्रों में प्रकाशित तुम्हारे वक्तव्य पर भी विश्वास नहीं है। इस विचार से वे और विरोधी हो गए हैं।"

"मेरा मन कह रहा है कि आखिर में आपका विवाह उसके साथ ही होगा।"

"यों तो जो भाग्य में लिखा है वही होगा। परन्तु मैं समझता हूँ कि यह अच्छी बात नहीं होगी। सुशीला जैसी अस्थिर बुद्धि लड़की से विवाह होने में मैं कल्याण नहीं देखता।"

"तो अपनी माताजी से कहकर अन्यत्र कहीं प्रबन्ध कर लीजिए।"

"क्या विवाह करना आवश्यक है?"

"आपके लिए आवश्यक ही है। आपने एक बार बताया था कि जीवन के सब यज्ञ पति-पत्नी के साथ-साथ बैठ करने का विधान है। अब आप रुपया कमाने के राजपथ पर चल पड़े हैं। उस रुपये से यज्ञ तो होगा ही और बिना पत्नी की सहायता के यज्ञ करेंगे तो वह फलहीन होगा।"

"अंजू! बात तो ठीक है पर सुशीला इस कार्य के लिए उपयुक्त साथी नहीं होगी। अब इस विषय पर फिर इस दृष्टिकोण से विचार करूँगा।"

"हाँ, स्त्री के लिए यज्ञों का विधान तो है नहीं और वह आपकी भाँति लाखों अर्जन कर सकेगी अथवा नहीं, यह कहना कठिन है। अतः आपको पुरुष होते हुए विवाह कर ही लेना चाहिए।"

इस समय भूषण ने एक बात और कर दी। वह नहीं चाहता था कि अंजू उस कागज में लिखा पता उसके सम्मुख ही खोले। इस कारण उसने पूछ लिया, क्या "ह्यूबर्ट का पत्र आया है?"

"हाँ आया है। उसमें उसने पूर्ण घटना पर खेद प्रकट किया है। उसने लिखा है कि उसके उस व्यवहार में दो कारण बन गए थे। एक तो मेरी रूपरेखा, मेरा शान्त स्वभाव और मेरा सदा मुस्कराते रहना। इन बातों से मेरा आकर्षण उसके मन पर अप्रतिरोधनीय प्रभाव पैदा कर रहा था। इसके साथ भारत देश में ईसाई-धर्म-प्रचार की तथा ईसाई जनों की संख्या-वृद्धि की राजनीतिक आवश्यकता ने वह सब-कुछ करने की प्रेरणा दी थी। अब वह पूर्ण घटना को खेदजनक समझता है और उसने क्षमा माँगी है।"

"चलो, दिन-भर का भटका व्यक्ति सायंकाल भी घर पहुँच जाए तो भगवान् का धन्यवाद ही करना चाहिए।"

"जी। उसने लिखा है कि मैं मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में काम न करूँ।"

"क्यों?"

"कारण तो उसने लिखा नहीं। परन्तु उसके यह लिखने से कि भारत में जनसंख्या की वृद्धि में राजनीतिक आवश्यकता है, से कुछ संकेत मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचित् वहाँ पर और भी अधिक घिनौने कार्य होते हैं, जो मुझको पता नहीं और वह वहाँ का चीफ रहने के कारण जानता है।"

भूषण विचार कर रहा था कि क्या वह खेद प्रकट करना सत्य ही मानसिक परिवर्तन का लक्षण है अथवा किसी घोर धोखाधड़ी का सूत्रपात है। फिर भी वह इस विषय पर कुछ कह नहीं सकता था।

चाय समाप्त हुई तो अंजू ने वह कागज, जिस पर भूषण ने नौकरी पाने के लिए पता लिखकर दिया था– अपने हैण्ड बैग में रख लिया और दोनों उठ गए।

रेस्टोराँ से बाहर निकले तो सुशीला वहाँ आ पहुँची। बोली, "तो भूषणजी चाय हो गई? ओह!" उसने अंजू को उसके पास खड़े देखा तो पूछने लगी, "कब आई हो अंजू?"

"कहाँ से?"

"अपने हनीमून ट्रिप से।" सुशीला ने व्यंग्यात्मक हँसी हँसते हुए कहा।

अंजू का मुख इस व्यंग्य से लाल हो गया। उसने कह दिया,"सुशीला! तुम भी तो ऐसे ट्रिप पर जाने की तैयारी में हो?"

"वह भी होगा। अब तो मैं तुम्हारी बात पूछ रही हूँ।"

"मैं तो तीन दिन में ही लौटकर आ गई थी।"

"कैसा रहा ट्रिप?"

"बहुत मजेदार रहा है। भगवान् करे कि तुमको भी वैसा ही ट्रिप मिल जाय।"

अंजू ने वहाँ और अधिक ठहरना उचित नहीं समझा और भूषण को नमस्ते कर पैदल ही चल दी। भूषण और सुशीला उसे देखते ही रह गए।

जब कुछ दूर वह निकल गई तो भूषण ने कहा, "सुशीलाजी! यह बात तो घाव पर नमक छिड़कने के समान हो गई है।"

"इस लड़की ने मेरा जीवन बरबाद कर दिया है। मैं उसे पुनः बनाने का प्रयत्न कर रही हूँ।"

"मैं तुम्हारी सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता रहता हूँ।"

"सत्य? तो आइए। एक प्याला चाय और सही।"

"नहीं, सुशीलाजी, यहाँ नहीं। किसी अन्य स्थान पर चलिए।"

"तो आइए हमारे घर चलिए।"

"तुम्हारे पिताजी के जूते खाने के लिए?"

"नहीं, अब अवस्था बदल चुकी है।"

"तो भी नहीं। मेरा चित्त वहाँ जाने से डरता है।"

"तो चलिए आपके घर चलें।"

"आज नहीं। पहले किसी अन्य स्थान पर चलकर बैठो तो ठीक रहेगा। आओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटर में, तुम्हें मिनर्वा में ले चलता हूँ।"

सुशीला ने इसे स्वीकार कर लिया। दोनों मिनर्वा होटल में जा पहुँचे।

सुशीला ने चाय मँगवा ली। एक प्याला भूषण के लिए बनाते हुए वह कहने लगी, "क्या हमारी फिर सुलह नहीं हो सकती ?"

"सुशीला ! क्या कभी हमारी लड़ाई हुई थी ?"

"मैं आपसे लड़ पड़ी थी।"

"तो तुम सुलह का भाव बना लो। मेरे मन में तुम्हारे प्रति कभी भी द्वेष नहीं रहा।"

"वह तो मैं देख रही हूँ। इस पर भी आप इस लड़की से विवाह करने वाले थे न ?"

"क्या जब किसी एक लड़की से विवाह करना होता है तो दूसरी से झगड़ा हो जाता है ?"

"सबसे तो नहीं। परन्तु जिससे पहले विवाह होना हो, उससे तो झगड़ा होता ही है।"

"क्या वह झगड़ा मैंने किया था ? देखो सुशीला ! मैं तुमको सदा अपने मित्रों में मानता था। इसी कारण उद्घाटन-यज्ञ के समय अपने मित्रों के साथ-साथ तुमको भी निमन्त्रण भेजा था। अब भी तो तुम्हारे मिलने से मुझे प्रसन्नता ही होती है।"

"मेरा मतलब है कि हमारा विवाह करने का पुनः विचार नहीं हो सकता क्या ?"

"पहले यह प्रबन्ध तुम्हारी और मेरी माताजी ने किया था। अब भी वे ही निश्चय करेंगी। तुम अपनी मम्मी को मेरी माताजी से मिलने के लिए क्यों नहीं कहतीं ?"

"मम्मी मान गई हैं।"

"तो उनसे कहो कि मेरी माताजी से मिलें। आखिर विवाह तो करना ही है। अंजू भी कह रही थी कि मुझे अब अपना विवाह शीघ्र कर लेना चाहिए।"

"उससे ?" सुशीला ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा।

"नहीं, वह तो मैं चाहता था। परन्तु उसने इनकार कर दिया है। फिर भी वह चाहती थी कि मैं विवाह कर लूँ क्योंकि जब तक अनुकूल पत्नी यज्ञ पर बैठने के लिए साथ न हो, पति के सुकृत कार्य चल नहीं सकते।"

"मैं समझती हूँ कि वह सब ठीक कहती है। तो मम्मी को आपके घर भेजूं ?"

भूषण के उस दिन के वार्तालाप से सुशीला अति प्रसन्न, अपने घर गई। उसने अपनी माँ को सब बातें सुना दीं।

कान्ता ने सुशीला की बात सुनी तो कह दिया, "तुम्हारे पिताजी सागरचन्दजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिले हैं। उन्होंने कहा कि निर्मल मणि उनकी विवाहिता पत्नी नहीं है। वह उसके पीछे कई वर्ष से पड़ी है और पिछले चार-पाँच दिन से वह उसके घर में पड़ी थी। आज वह जा रही है और वह यत्न करेगा कि वह यहाँ पुनः मुख न दिखाए।"

"पर माँ उसका सम्बन्ध तो निर्मल मणि से है ही। इससे तो वह इनकार नहीं कर सका। इसी कारण तो ग्रोवर-परिवार से सम्बन्ध टूटा था।"

"पर एक बात तुमको समझ लेनी चाहिए कि आज देश में युवकों में चरित्र-हीनता तो व्यापक होती जाती है। किस-किस को अस्वीकार करती जाओगी?"

इस बात पर सुशीला मुख देखती रह गई।

: ८ :

अंजू ने घर जाकर ही वह पता पढ़ा जो भूषण ने उसको नौकरी पाने के लिए दिया था। उस पर लिखा था– श्रीमती प्रमिला देवी ग्रोवर, रेलवे रोड। वह जानती थी कि यह नाम भूषण की माताजी का है और वह पता भूषण के घर का है।

यह पता पढ़कर वह स्तब्ध रह गई। इसका अर्थ एक तो वह यह समझी कि कदाचित् उसके पिता के आडिटिंग कार्यालय में रिक्रूटिंग का कार्य उसकी माताजी कर रही हैं। इसके अतिरिक्त इसका अभिप्राय यह भी हो सकता है कि यह प्रोबेशन तो भूषण से विवाह के लिए है। यदि दोनों पक्षों ने इस परीक्षाकाल में सन्तोष अनुभव किया तो विवाह हो जाएगा। वह समझती थी कि यह दूसरा विचार उसको स्वीकार नहीं करना चाहिए। यही बात भूषणजी को रेस्टोराँ में वह कह आई थी।

अब उसके मन में प्रश्न उपस्थित हुआ कि यह विचार क्यों स्वीकार नहीं होना चाहिए। उत्तर आया कि वह पतित हो चुकी है। वह भूषण जैसे सरल स्वभाव वाले पति के योग्य पत्नी नहीं रही। यह आत्मग्लानि के कारण ही था कि वह अब भूषणजी से अपने-आपको निम्नकोटि का प्राणी समझने लगी थी। अपने साथ घटी घटना पर जब वह विचार करती थी तो एक से अधिक दृष्टियों से वह अपने को भूषण से विवाह के अयोग्य पाती थी। वह समझती थी कि एक ईसाई के घर में जन्म लेना ही इस घटना का सूत्रपात करने वाला हुआ है।

इस पर वह अपने परिवार के व्यवहार पर विचार करने लगी। उसके समुदाय में नित्य मद्य पीना प्रतिष्ठा की बात मानी जाती थी। जिनके घर में इसका पान होता था वे घर सुख-सुविधा सम्पन्न समझे जाते हैं। इसका कारण वह यह समझती थी कि ईसाई मत जिस स्रोत से भारत में आया था, वह मद्यसेवी था और ईसाई समुदाय में मद्य का सेवन सम्मानित माना जाने लगा है।

वह स्वयं घर की सबसे बड़ी सन्तान थी और कॉलेज छोड़ने के साथ ही वह इसका सेवन करने लगी थी। उस पर यदि प्रतिबन्ध था तो धनाभाव का था। वह अभिलाषा करती थी कि जब वह स्वतन्त्र आय करने वाली होगी तो इच्छानुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्यसेवन कर सकेगी। उसकी संगति भी अपने समुदाय के लड़कों में होने लगी थी और वे भी मद्य की गन्ध को मान-प्रतिष्ठा का लक्षण मानने लगे थे।

इस समय उसका सम्पर्क भूषण से हुआ और जब उसकी सहायता से वह नौकरी पा गई तो कृतज्ञतावश उससे मेल-मुलाकात होने लगी। इन मुलाकातों में वह उससे प्रेम करने लगी। साथ ही अपने जीवन के विषय में वह उससे नई दृष्टि भी पाने लगी।

जब तक उसे पता चला कि वह किसी लड़की से विवाह के लिए वचनबद्ध है तब तक वह अपने जीवन को नई दिशा दे चुकी थी। जीवन, स्वभाव और परम्पराओं को छोड़, बुद्धि और विचारशीलता के अधीन चलने लगा था।

भूषण का सुशीला से वचनबद्ध होने में भी एक विशेषता ही प्रतीत हुई। उसने पूछा था, "तो क्या आप मुझे सुशीला से सौन्दर्य, शील, स्वभाव और आचरण में हीन समझते हैं?"

"नहीं अंजू।" भूषण का उत्तर था। "तुम उससे सब प्रकार से श्रेष्ठ हो परन्तु जब एक बार वचन दे दिया गया तो यह सत्यधर्म का प्रतीक हो जाता है और मेरी जीवन-मीमांसा में धर्म का हनन करने वाला महान् पातकी माना जाता है।"

इस पर उसने पूछा था, "यह वचन एकपक्षीय है अथवा दोनों पक्षों से?"

"वचन एक-पक्षीय होता ही नहीं। विशेष रूप में विवाह-सम्बन्धी वचन तो दोनों ओर से होता है।"

"और यदि दूसरा पक्ष वचन भंग कर दे तो क्या होगा?"

"तब वह वचन नहीं रहेगा।"

अंजू को मन में इस बात से सान्त्वना मिली थी। तब तक उसका सुशीला से परिचय हो चुका था और वह उसके स्वभाव का ज्ञान प्राप्त कर चुकी थी।

इस समय उसकी बहिन अन्ना ने बी० ए० पास कर लिया था। वह भी मद्य का सेवन करने लगी थी। परीक्षाफल घोषित होते ही वह पीकर घर आने लगी थी। एक दिन अंजू ने उससे पूछा भी था, "अन्ना! यह कहाँ से पीकर आती हो?"

"कोई पिला देता है।"

"फोकट में ही?"

"नहीं, मेरा उससे विवाह होने वाला है।"

"कब होगा?"

"शीघ्र ही।"

"तो कर लो।" अंजू को सन्देह होने लगा था कि वह मद्य का मूल्य चुकाकर आती है।

विवाह हुआ, किन्तु माता-पिता को बताए बिना। विवाह हो जाने पर माँ ने पूछा, "तुमने हमको बताया भी नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आवश्यकता नहीं समझी। मैं बालिग हूँ और मेरे हस्बैंड भी बालिग हैं।"

माता-पिता विस्मित रह गए। माता ने एक प्रश्न और किया, "वह है कौन?"

"एक व्यक्ति है। उसका नाम है कार्ल माइकेल। रेल विभाग में नौकरी करता है।"

नाम सुनकर माँ को सन्तोष हो गया। पिता असन्तुष्ट रहा, परन्तु कुछ कर नहीं सका।

इस घटना के उपरान्त अंजू की नौकरी छूटी और माँ ने तथा मिस्टर फर्नेंडिस ने उसे मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में नौकर करा दिया। उसे यह बात विदित हो गई थी कि सुशीला और भूषण में झगड़ा हो गया है। इस सूचना के आधार पर उसने पूछा था, "अब तो आप वचनमुक्त हो गए हैं?"

"देखो अंजू! जब तक सुशीला और उसके माता-पिता सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा नहीं कर देते तब तक वचनभंग में मैं पहल नहीं करूँगा।"

"मेरा मन कहता है कि आपका विवाह वहाँ नहीं होगा।"

"मन तो मेरा भी नहीं करता। परन्तु मन की कल्पना को साकार रूप तो वे ही देंगे। मैं नहीं।"

परिणामस्वरूप अंजू ने और भी यत्न से अपने को भूषण के योग्य बनाने का प्रयास किया। वह मिशन के केन्द्रीय कार्यालय में नित्य होने वाली अनियमितताओं को देखती थी और परिणाम में वह ईसाई मतावलम्बियों से दूर होती जा रही थी। दूसरी ओर जब से भूषण को यह दिखाई देने लगा था कि सुशीला से उसका विवाह होना अनिश्चित-सा हो गया है वह अंजू को मन-बुद्धि और कर्म से अनुकूल बनाने में यत्नशील हो गया था और अंजू ध्यान से उसकी बातों को सुनने और उनका अर्थ समझने का यत्न करने लगी थी। जब किसी बात को समझ नहीं सकती थी अथवा अशुद्ध या अनुचित समझती थी तो वह पूछती थी और जब तक समझ नहीं लेती थी अथवा समझा नहीं देती थी, वह विवेच्य विषय पर बातचीत करती रहती थी।

परिवार में विभिन्न लोगों के रहने पर भी समन्वय की बात पर विचार हो गया था। भूषण का कहना था, "विचार और कर्म में अन्तर है। विचार में स्वतन्त्रता तो मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। परन्तु कर्म धर्म के बन्धन में बँधा हुआ है।"

"वह क्या होता है?"

"परस्पर व्यवहार के नियम हैं। यों तो धर्म अपने निजी आचरण से भी सम्बन्ध रखता है। परन्तु एक संगठन में रहते हुए तो निजी बातों को पृथक् कर परस्पर सम्बन्ध की बातों पर नियन्त्रण रखना ही होगा।"

"और यह नियन्त्रण क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आधारभूत धर्म तो बहुत ही सरल है। इसको सनातन धर्म भी कहते हैं। सनातन इस कारण कि ये अपरिवर्तनशील हैं। ये हैं धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शुचि, इन्द्रिय-निग्रह; धीः, विद्या, सत्य और अक्रोध। एक संगठन में वह चाहे राष्ट्रीय हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक हो अथवा किसी समुदाय का हो, अथवा नगर, मुहल्ले, परिवार का, इन धर्मों का पालन आवश्यक है। जब इनका उल्लंघन हो तो संगठन नहीं रह सकता।"

"और नीति ?"

"नीति तो आचरण को कहते हैं। यह धर्मयुक्त भी हो सकती है और अधर्म-युक्त भी। अधर्मयुक्त नीति तो वैमनस्य का कारण होती है।"

"शत्रु के साथ भी ?"

भूषण हँस पड़ा। "मैं संगठन की बात कर रहा हूँ। शत्रु तो कभी भी संगठन में सम्मिलित हो ही नहीं सकता। इस कारण उससे व्यवहार धर्म के व्यवहार से अतिरिक्त है।

"परन्तु अंजू ! अपने लोग जब उन सनातन धर्मों का उल्लंघन करते हैं तब वे अपने नहीं रह सकते। वे पराये हो जाते हैं और यही संगठन को भंग करने वाला होता है।"

अंजू का अगला प्रश्न था, "पति-पत्नी का भी क्या किसी प्रकार का संगठन है ?"

"पति-पत्नी परिवार का आदि और बीज हैं। इस कारण ये पारिवारिक संगठन के केन्द्र होते हैं। अतः ये धर्म-बन्धन से किस प्रकार मुक्त हो सकते हैं ?

"धर्म-अधर्म के निर्णय करने का भी एक सरल उपाय हमारे विद्वान् लोगों ने बताया है। वह है जैसा व्यवहार हम अपने साथ किया जाना पसन्द करते हैं, वैसा ही दूसरों के साथ करेंगे, और जो व्यवहार हम अपने साथ पसन्द नहीं करते वह दूसरों के साथ भी नहीं करेंगे। इनको पूर्ण धर्म का सार बताया है।"

"और इस सिद्धान्त को यदि कोई न माने तो ?"

"तो वह संगठन के भीतर नहीं रह सकता। उसे शत्रु-धर्म में समझना चाहिए।"

"परन्तु आज हम देखते हैं कि देश का प्रधानमन्त्री भी संसद् में झूठ बोल जाता है।"

"यदि तो वह जान-बूझकर अपने दल अथवा अपने मन्त्रिमण्डल के किसी प्रकार के स्वार्थ के लिए ऐसा करता है तो उसे भी शत्रु मानना चाहिए। ऐसे प्रधानमन्त्री से किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता।"

"परन्तु भूषणजी ! झूठ बोलते हुए पकड़े जाने पर तो वह वही कह देगा कि देश की शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए उसने ऐसा किया है। तो क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी अवस्था में झूठ बोलना धर्म हो जाएगा ?"

"नहीं, वास्तव में शान्ति और व्यवस्था रखना सरकार का काम है। यदि सरकार शान्ति-व्यवस्था बिना झूठ बोले रख नहीं सकती तो सरकार अयोग्य है। और यह झूठ अयोग्य सरकार को बचाने के लिए ही होगा। यह तो पाप होगा, इसका दूरगामी प्रभाव बहुत बुरा होगा।

"देखो अंजू ! झूठ, दगा और फरेब तो शत्रुओं के साथ प्रयुक्त करने के लिए हैं। अपनों के साथ यह व्यवहार नहीं होना चाहिए। यदि कोई मन्त्री या प्रधानमंत्री संसद् अथवा संसद् के बाहर झूठ बोल देता है तो वह अपनी प्रजा तथा संसद्-सदस्यों से ऐसा व्यवहार करता है, जैसा शत्रु से किया जाता है। परिणाम यह होता है कि अनजाने में प्रधानमन्त्री और जनता में शत्रुता का भाव बनने लगता है और यह अति भयंकर परिणाम उत्पन्न करने वाला होता है।"

इस प्रकार भूषण अंजू को दिनानुदिन अपने अधिकाधिक समीप करता जाता था।

कुछ दिनों बाद ह्यूबर्ट ने अंजू का अपहरण किया। उसके बाद जब वह उसके पंजे से छूटकर आई तो उसके पिता ने उससे अपने पर बीती का एक वक्तव्य लिख देने के लिए कहा। पीटर और भूषण के पिता का यह प्रस्ताव था कि उन्हें व्यभिचार और बलात्कार का ज्ञान नहीं था जिसकी वह शिकार हुई थी। और जब अंजू लिखने बैठी तो उसके मन में यह प्रश्न उठा कि वह क्या-क्या बताए और क्या-क्या न बताए। परन्तु उसको निर्णय करने में एक क्षण ही लगा। भूषण की पिछले नौ मास की शिक्षा ने उसे निश्चय करने से देर नहीं लगने दी कि उसे सब-कुछ स्पष्ट और सत्य बता देना चाहिए। वह जानती थी कि यह वक्तव्य भूषण और उसकी माता के हाथों में भी जाएगा और इसके प्रकट हो जाने पर उसका विवाह भूषण से असम्भव हो जाएगा। वह इस बात से प्रभावित हुई थी कि यदि किसी संगठन में असत्य व्यवहार चलेगा तो वह संगठन न रहकर शत्रुओं का एक समागम-मात्र रह जाएगा। अंजू ने मन में निश्चय कर लिया कि विवाह हो, चाहे न हो परन्तु वह भूषण की शत्रु नहीं हो सकती। न ही वह भूषण को अपने शत्रु-पक्ष में समझ सकती है। अतः उसने सब-कुछ सत्य-सत्य लिख दिया।

पीटर ने बयान को टाइपिस्ट के पास ले जाने से पूर्व पढ़कर अंजू को कहा, "इतना कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। बहुत कम से भी ह्यूबर्ट को डराया जा सकता है।"

"पापा !" अंजू का कहना था, "ह्यूबर्ट डरता है अथवा नहीं, यह विचारणीय नहीं है। मैं तो अपने वक्तव्य में सत्य और पूर्ण सत्य ही लिखना चाहती हूँ।"

"परन्तु भूषण भी तो इसे जान जाएगा।"

"उनको बताने के लिए ही तो यह सब लिख रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटर मुख देखता रह गया। अंजू ने अपने पिता को आश्वासन देते हुए कहा, "पापा! विवाह से भी अधिक आवश्यक मुझको उनको मित्र बनाकर रखना है।"

"और यह मित्र बनाने का तरीका है?"

"हाँ। आप उनको नहीं जानते। मैं जानती हूँ। मैत्री का यही सब मार्ग है।"

इस प्रकार सब-कुछ प्रकट कर वह मन में समझ बैठी थी कि उसे अब भूषण से विवाह की कामना त्याग देनी चाहिए। इससे जीवन चलाने का प्रश्न उपस्थित हो गया। वह दो वर्ष से ऊपर दो संस्थाओं में लेखाकार का कार्य कर चुकी थी और वह समझती थी कि इसके आधार पर उसको नौकरी मिल जाएगी।

उसकी माँ ने मिस्टर स्टीन का प्रस्ताव कि वह पुन: सेण्टर में नौकरी पर जा सकती है, उसको बताया था। वह उसने मन से निकाल दिया था। अब उसके मन में भूषण से इस दिशा में सहायता लेने की इच्छा हुई तो उसे स्मरण आया कि उससे उस रेस्टोराँ में मिला जा सकता है, जहाँ वह उससे नित्य सायंकाल चाय पिया करती थी। जब से वह पुलिस में रिपोर्ट और समाचारपत्रों के संवाददाताओं को अपना वक्तव्य देकर आई थी तो वह घर से निकली नहीं थी।

इन दिनों वह पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में ही समय व्यतीत किया करती थी। प्रातः-सायं वह अपनी बहनों की पढ़ाई में सहायता कर दिया करती थी। भूषण से अन्तिम भेंट तो उसी समय हुई थी जब वह संवाददाताओं को अपना बयान देने के लिए गई थी। वहाँ भी उसने जितना कुछ बताया था सत्य ही था। इस बात को बीते पाँच दिन हो गए थे।

वह साहस पकड़कर रेस्टोराँ में गई और उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने भूषण को एक कोने में बैठे देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

कई दिन के विचारोपरान्त अंजू प्रमिलादेवी से मिलने के लिए गई। वह सन्देह करती थी कि वहाँ उसे किसी प्रकार का आदर मिलेगा भी अथवा कि नहीं?

घर पर उसकी माँ उसको निरन्तर किसी काम पर लगने के लिए आग्रह करती रही थी। वह कह रही थी कि मिशन सेण्टर में अभी भी उसके लिए स्थान रिक्त है। वह वहाँ काम कर ले। अब पहले जैसी बात नहीं हो सकती। किन्तु अंजू अपने मन को माँ की बात मानने के लिए तैयार नहीं कर पाई थी। माँ के बार-बार कहने पर और बैंक में एक न्यून-सी धनराशि का विचार कर वह भूषण की माँ से मिलने के लिए चल पड़ी।

घर के दोनों पुरुष सदस्य अपने-अपने कार्य पर गये हुए थे। अंजू ने घंटी बजाई तो प्रमिला बाहर आई और अंजू को बाहर द्वार पर खड़ी देखकर मुस्कराती उसे दोनों हाथों से पकड़कर भीतर ले गई। फिर कहने लगी, "अंजू, तुम तो हमसे ऐसे नाराज़ हो गई हो जैसे हमने तुमसे कोई बहुत ही बुरा व्यवहार किया हो।"

दोनों ड्राइंग-रूम में जा बैठीं। अंजू ने कह दिया, "माताजी! आपसे नाराज़ होने का पापकर्म मैं नहीं कर सकती। भला मैं आपसे क्यों नाराज होती? असल बात यह है कि मैं अपने साथ घटित दुर्घटना पर इतनी लज्जित हूँ कि मैं घर से बाहर निकलती ही नहीं। एक दिन भूषणजी से मिलने का यत्न किया था और उसी सम्बन्ध में आज आपसे मिलने के लिए आई हूँ।"

"हाँ, बोलो क्या बात है?"

"आपके विषय में पापा ने कल ही बताया था कि मेरे छुड़ाने में आपने बहुत धन व्यय किया था। जिसके लिए मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए था। इसके अतिरिक्त भी मैं आपके पूर्ण परिवार की बहुत ही आभारी हूँ। मेरे कारण आप लोगों को बहुत बदनामी सहनी पड़ी है।"

"छोड़ो, इस बात को। वह तो हम अपना कर्तव्य मानकर ही कर रहे थे। तुम आई हो, यही बहुत प्रसन्नता की बात है।"

"एक बात और है। मैंने भूषणजी से कहा था कि कहीं मेरी नौकरी के लिए सिफारिश कर दें। आखिर जैसी कैसी भी हूँ, जीवन तो चलाना ही होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूषणजी ने एक पता बताया है, जहाँ मुझे कुछ काम मिल सकता है।"

प्रमिला गम्भीर हो पूछने लगी, "कहाँ का पता बताया है?"

इस पर अंजू ने वही कागज़ जिस पर भूषण ने वहाँ का पता लिखकर दिया था, प्रमिला के सामने रख दिया और बोली, "वे कहते थे कि ये देवीजी इस विषय में मेरी सहायता कर देंगी।"

प्रमिला ने अपने नाम पर एक क्षण ही विचार किया। तदुपरान्त वह मुस्कराते हुए पूछने लगी, "नौकरी तो है। एक स्थान रिक्त भी है। पर अंजू! यह बताओ कि तुम कितने वेतन पर काम करने के लिए तैयार हो?"

"भूषणजी ने कहा था कि कुछ काल के लिए मुझे प्रोबेशन पर रखा जाएगा। उस काल का वेतन आप जो भी दिला दें, मुझे वह स्वीकार कर लेना चाहिए। बाद में यदि मेरी सेवाएँ स्वीकार की गईं तो पक्की नौकरी लगने के समय वे मेरी सिफारिश कर देंगे।"

"काम तो है। मैं तुमको जानती भी हूँ। इसलिए प्रोबेशन पर रखने की आवश्यकता नहीं समझती। परन्तु काम कुछ ऐसा है कि तुम कर सकोगी अथवा नहीं, यह तुम्हारे विचार करने की बात है। एक स्थान है जहाँ चपरासी से लेकर मैनेजर तक का सब काम तुमको करना ही होगा। एक अमेरिकन ढंग का कार्यालय है, जहाँ चीफ़ ही मेज़-कुर्सी भी झाड़ता है।"

अंजू काम के विषय में विचार करने लगी। वह समझ रही थी कि कदाचित् वे कोई नया व्यवसाय चलाने वाले हैं और उसमें अभी केवल एक ही व्यक्ति रखना चाहते हैं। उसे इस प्रकार काम करने पर कोई आपत्ति नहीं प्रतीत हुई। उसने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि मैं कर लूंगी।"

"फिर भी, मैं भूषण के विचारों से सहमत हूँ। तुम्हें अभी एक-आध महीने परीक्षा के लिए इस कार्यालय में काम स्वीकार करना चाहिए। इस परीक्षण-काल में मैं तुमको तीन सौ रुपया मासिक वेतन दूंगी। मध्याह्न की चाय और नाश्ता तुम्हें कार्यालय की ओर से मिलेगा। कुछ समयोपरान्त जब तुम कार्य को अनुकूल पाओ तो पक्के वेतन पर विचार कर लिया जावेगा।"

अंजू विस्मय कर रही थी कि प्रोबेशन-काल में, जिसका वेतन तीन सौ रुपया मासिक है तो पक्की नौकरी पर तो पाँच सौ से कम क्या होगा?

उसने कहा, "माताजी! मुझे इस काम के लिए कब और कहाँ उपस्थित होना होगा?"

"मैं एक नया कार्यालय चलाने वाली हूँ। भूषण को मैंने उसी के लिए कोई योग्य लड़की ढूँढ़ने के लिए कहा था। अब उसने तुम्हें उस काम के योग्य समझा है तो मुझे तुम पसन्द हो। यदि तुम्हें आपत्ति न हो तो आज से ही काम आरम्भ हो सकता है। अभी काम यहीं पर होगा। जब काम का विस्तार होगा तो उसके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथक् स्थान की योजना भी हो सकती है।"

"हाँ तो अभी से काम पर हाजिर होने के लिए तैयार हूँ।"

"तो आओ, मैं काम बताती हूँ।"

प्रमिला उठी और अंजू को लेकर कोठी के एक अन्य कमरे में चली गई। यह कमरा अध्ययन-कक्ष था। दीवारों के साथ लगी अलमारियों में पुस्तकें रखी थीं। कमरे के बीच एक मेज़ और उसके समीप दो-तीन कुर्सियाँ रखी थीं। मेज़ के समीप एक शेल्फ रखा था। उसमें भी कुछ पुस्तकें रखी थीं। प्रमिला ने अंजू को एक कुर्सी पर बैठा स्वयं एक अन्य कुर्सी पर बैठकर कहा, "यह है वह कमरा, जिसमें मेरा नवीन कार्यालय चल रहा है। पहला काम तो यह है कि इन पुस्तकों की सूची बनाओ। एक तो वर्णानुक्रम से नामों की और दूसरी वैसी ही विषयानुक्रम से। यह देखो, मैंने दो रजिस्टर बनाए हैं। मैं इसमें सूची बनाने का यत्न कर रही थी। परन्तु एक तो शिक्षा कम होने के कारण और दूसरे घर के अन्य काम होने के कारण यह काम उचित गति से नहीं चल रहा था। जब तुम यह काम कर लोगी तो दूसरा काम बताऊँगी।

"देखो अंजू! यह स्थान और कार्यालय घर का विज्ञान भवन है। इसमें मैं घर के किसी अन्य नौकर अथवा नौकरानी को नहीं आने देती। अब यह तुम्हारे अधीन है। इसको साफ-सुथरा रखना, मेज़, कुर्सियों, अलमारियों और पुस्तकों को झाड़-फूंककर तथा नियत स्थानों पर रखना तुम्हारा काम है।

"मैं तो अब जा रही हूँ। मध्याह्न के भोजन का प्रबन्ध करना है। तुम यह काम करो और डेढ़ बजे मध्याह्न के नाश्ते के लिए तुमको बुला लिया जाएगा। यदि तुम चाहो तो यहाँ भी तुम्हारे लिए एक पृथक् मेज़-कुर्सी लगा दी जाएगी।"

प्रमिला गई तो अंजू उसे जाती देखती रही। एक बार तो उसे विचार आया कि यह तो भूषण से विवाह की तैयारी है। कदाचित् यह भूषण का अध्ययन-कक्ष है और उसे इसका प्रबन्ध करने पर लगाया गया है। धीरे-धीरे भूषणजी के घर के अन्य कार्य भी उसको सौंप दिए जाएँगे।

फिर भी वह विचार करती थी कि वह इस सबकी सम्भावना समझते हुए भी क्यों स्वयमेय मुख से कहकर स्वीकार करे। जब एक घर के नौकर के पद से घर के स्वामी के पद पर आसीन करने का अवसर आयेगा तब देख लिया जाएगा। उस समय की परिस्थिति पर वह उसी समय विचार कर लेगी।

अतः उसने मेज़ के नीचे के कप बोर्ड में से रजिस्टर निकाला और उसको देखना आरम्भ किया। वास्तव में उनमें सूचियाँ बनाने का यत्न किया गया था।

उसने मन में विचार किया कि रजिस्टरों के स्थान पर कार्ड-प्रथा को क्यों न प्रचलित किया जाय। इसके लिए उसने पुस्तकों को अलमारियों में ढंग से लगाने का निश्चय किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उठी और पुस्तकों को देखने लगी कि वहाँ पर किस-किस प्रकार की और किन-किन विषयों की पुस्तकें हैं। उन्हें देखते-देखते वह विषयत: उनको पृथक्-पृथक् रखने लगी। उसने संस्कृत की मूल पुस्तकें एक ओर को कर दीं। संस्कृत के हिन्दी में अनुवाद और फिर संस्कृत के अंग्रेजी में अनुवाद पृथक्-पृथक् कर दिए। इस प्रकार के कार्य में वह लगी हुई थी कि नौकर आया और पूछने लगा, "आपके लिए अल्पाहार यहीं ले आऊँ या आप माताजी के साथ भोजन के कमरे में चलकर करेंगी?"

"वहाँ और कौन-कौन हैं?"

"बड़े बाबूजी हैं और छोटे बाबू भी हैं।"

"तो यहीं कुछ थोड़ा-सा ले आओ।"

नौकर ने एक तिपाई लगाकर एक कोने में रख दी। फिर वह उस पर उबली सब्ज़ियाँ और स्लाइसेज तथा मक्खन लाकर रख गया। अंजू ने कमरे के बाहर लगे वाश बेसिन पर हाथ धोये और खाने बैठ गई। उसके खाते-खाते नौकर एक कप बौर्न विटा का लाकर रख गया।

अल्पाहार करके अंजू पुन: अपने कार्य पर लग गई। उसने अनुमान लगाया कि दो सहस्र से अधिक पुस्तकों का संग्रह होगा। कुछ तो अभी बंडलों में ही बन्द थीं जो हाल ही में पुस्तक-विक्रेताओं से मँगाई गई थीं। एक ही भाषा की पुस्तकों को उसने विषयक्रमानुसार लगाना आरम्भ कर दिया।

साढ़े चार बजे प्रमिला आई और अंजू को अलमारियों की पुस्तकें इधर-उधर करते देख मुस्कराने लगी। अंजू ने समझा कि प्रमिला ने पुराने प्रबन्ध को इतस्तत: करना अच्छा नहीं समझा। इस कारण उसने कुछ-कुछ अपनी सफाई प्रस्तुत करने के स्वर में कहा, "मैंने मिशन के केन्द्र में पुस्तकालय का प्रबन्ध देखा है और उसी के ढंग पर यहाँ का काम बाँधना चाहती हूँ। आप इन रजिस्टरों की अपेक्षा मुझे कार्ड प्रथा चालू करने की स्वीकृति दीजिए।"

"तो उसके लिए कार्ड और डिब्बे बनवाने होंगे।"

"हाँ, वह तो है ही। परन्तु एक बार यह हो जावे तो जीवन-भर का झगड़ा समाप्त हो जाएगा। तब जो भी पुस्तक नई आएगी, स्वयमेव वह नियत स्थान पर चली जाया करेगी और उसका कार्ड बनाकर रख देना होगा।"

"ठीक है। ऐसा ही करो। उसके लिए कार्ड इत्यादि की व्यवस्था भी तुमको ही करनी होगी।"

"किसी बढ़ई को ढूँढ़ना होगा जो ठीक डब्बे बना दे। कार्ड तो बाजार में मिल जाएँगे।"

"बढ़ई मैं यहाँ बुलवा दूँगी। वह यहाँ बैठकर तुम्हारे सामने सब काम करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो ठीक है। मैं आज सायंकाल बाजार से कार्ड खरीदकर ले आऊँगी।"

अंजू अपनी उस दिन की कारगुजारी बताने के लिए तैयार हुई थी कि इतने में भूषण आ गया। भूषण ने कमरे में प्रविष्ट होते ही पूछ लिया, "अंजू, मिल गई नौकरी?"

"हाँ, माताजी ने मुझे अपने नये कार्यालय को सुव्यवस्थित करने के कार्य पर लगा दिया है।"

"तो ठीक है। मैं समझता हूँ कि तुम मिशन के केन्द्रीय कार्यालय से यहाँ घाटे में नहीं रहोगी।"

"देखें, अभी तो प्रोबेशन पर हूँ।"

"हाँ, यह तो होने ही वाला था। प्रोबेशन का अर्थ दोनों ओर से परीक्षण का काल होता है, अब चाय यहीं पर पिओगी अथवा अपने नियत स्थान पर?"

"नियत स्थान पर तो सुशीला जी आती होंगी?"

"उस दिन के उपरान्त तो वह आई नहीं और यदि कभी आ भी जाए तो क्या तुमको उससे ईर्ष्या होती है?"

इस प्रश्न पर अंजू को अपने कथन पर लज्जा आने लगी। उसने कहा, "नहीं जी, ईर्ष्या नहीं। मैं डरती हूँ कि वह मिले और फिर वही हनीमून की बातें न करने लगे।"

भूषण समझ गया कि अंजू का उससे मिलना इसको अपमानित करना होगा। उसने कहा, "अच्छा, अब कभी उसने इस विषय पर बात की तो मैं उससे बात करूँगा। तुमको उस समय कुछ कहने की आवश्यकता न होगी।"

अंजू मुख देखती रह गई। प्रमिला भी समीप खड़ी दोनों की बातें सुन रही थी। उसने अब उनकी बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "आज सुशीला की माँ आई थी। वह कह रही थी कि सुशीला के विवाह की तिथि निश्चित हो गई है। उसका विवाह आगामी रविवार को मध्याह्नोत्तर तीन बजे होगा। विवाहोपरान्त चाय-पानी का प्रबन्ध होगा। उसके बाद सायं सात बजे उसकी विदाई हो जाएगी।

"कान्ताजी यह कहने के लिए आई थीं कि हमारा पूर्ण परिवार उस सुअवसर पर आमंत्रित है। वे छपे निमन्त्रण-पत्र भी दे गई हैं।"

"किन-किन के नाम हैं?" भूषण ने पूछा।

"तीन कार्ड हैं। मेरा, तुम्हारे पिताजी का और तुम्हारा।"

"तीन क्यों?"

"इसलिए कि तुमने अपने कार्यालय के उद्‌घाटन के समय तीन कार्ड अलग-अलग भेजे थे।"

भूषण हँस पड़ा। फिर बोला, "तो यह निमन्त्रण उसका बदला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और मैं यही ठीक समझती हूँ कि केवल तुमको ही जाना चाहिए। हम नहीं जाएँगे। उस समय भी तो केवल सुशीला ही आई थी।"

"माँ! वे कुछ मूर्ख हैं। मेरी राय मानो तो तुम सुशीला के लिए कुछ भेंट लेकर जाओ और उसको अपनी लड़की मानकर जो कुछ उचित समझो, वह भेंट दे आओ।"

प्रमिला मुस्कराती हुई भूषण का मुख देखती रह गई। भूषण ने कह दिया, "विवाह और उद्‌घाटन-समारोह में अन्तर है। उस समय की और वर्तमान परिस्थिति में भी अन्तर है। इस कारण मेरा तो यही विचार है कि आपको जाना चाहिए और उसे आशीर्वाद तथा बधाई देनी चाहिए।"

"अच्छी बात है। तुम्हारे पिताजी से राय करूँगी।"

: २ :

अंजू घर पहुँची तो उसने देखा कि उसकी माँ और मिस्टर स्टीन परस्पर विचारमग्न हैं। अंजू लगभग सात बजे घर पहुँची थी। उसके वहाँ पहुँचते ही मिस्टर स्टीन ने पूछ लिया, "कहाँ गई थी अंजू?"

"क्यों आपको मुझसे कुछ काम है?"

"हाँ, मैं डेढ़ बजे आया था। तुम्हारी माताजी ने मुझे बताया था कि तुम घर पर ही रहती हो। परन्तु तुम घर पर नहीं थीं। मैं पुनः साढ़े चार बजे आया था और उस समय से अभी तक यहीं पर बैठा हूँ।

"तुम्हारी बहिन सिलविया बता रही थी कि तुम आज दिन के दस बजे से घर से गई हुई हो।"

"हाँ, मैं एक स्थान पर नौकरी पा गई हूँ। अभी तो नया-नया कार्य है। उनके कार्यालय को सुव्यवस्थित करना है। इस कारण कुछ मेहनत करनी पड़ रही है। कार्यालय सुव्यवस्थित होने के बाद काम सुगम लगने लगेगा।"

"कहाँ काम मिला है?" नोरा ने पूछा।

"यह काम भूषणजी द्वारा मिला है।" अंजू उनको यह नहीं बताना चाहती थी कि वह कहाँ काम कर रही है।

स्टीन ने कहा, "मैं भी तो तुम्हारे काम के सम्बन्ध में ही आया था। अपने जबलपुर कार्यालय में एक अकाउण्टेण्ट का स्थान रिक्त है। मैं कहने आया था कि यदि तुम वहाँ चली जाओ तो स्थानान्तर होने से पिछला इतिहास भी छूट जाएगा।"

"पर मिस्टर स्टीन! अब तो प्रबन्ध हो गया है। मैं एक दिन वहाँ काम भी कर आई हूँ। अब मैं उस काम को नहीं छोड़ सकती।"

"पर तुम कह सकती हो कि तुम्हें वह काम पसन्द नहीं है।"

"काम तो बहुत ठीक है। उसको गलत कहकर झूठ क्यों बोलूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या काम है ?"

"काम की अध्यक्षा एक महिला हैं। उनको कार्यालय के कार्य में सहायता देनी है। वे कार्यालय के सब कामों में सहायता चाहती हैं। चपरासी के कार्य से लेकर अध्यक्ष के कार्य तक में।"

"और वेतन क्या दे रही हैं ?"

"अभी तो तीन सौ रुपया मासिक दे रही हैं। बाद में यदि काम सन्तोषजनक हुआ तो उन्नति कर देंगी।"

"पर एक प्राइवेट काम और संस्था के काम में अन्तर तो है। वहाँ एक व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति करनी होती है और संस्था में तो सब कुछ नियमबद्ध होता है।"

"मिस्टर स्टीन ! मैंने यह नौकरी स्वीकार कर ली है और उसे छोड़ देने में मुझे कोई भी कारण समझ में नहीं आ रहा है।"

स्टीन मुख लटकाए हुए चला गया। जब वह गया तो अंजू ने पूछ लिया, "माँ ! तुम इसे यहाँ क्यों ले आई थीं ?"

"मैं सैंटर में गई थी। उस समय इसने तुम्हारे काम के विषय में पूछ लिया। जब मैंने वह स्थिति बताई जो मुझे विदित थी, तो यह साथ ही चला आया। उस समय यह कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद चला गया था। और अब दोबारा आया तो फिर बैठा ही रहा।"

"पर माँ ! तुम सैंटर गई ही क्यों थीं ? क्या काम था तुम्हें वहाँ ?"

"मैं स्वयं वहाँ नौकरी करना चाहती हूँ।"

"ओह ! तो क्या पिताजी से झगड़ा हो गया है ?"

"झगड़ा तो नहीं। हाँ, महँगाई बढ़ जाने के कारण परिवार में केवल एक ही आय से निर्वाह नहीं होता। तुम्हारे पिता का आधे से अधिक वेतन तो हमारी शराब में ही व्यय हो जाता है। अब तो सिलविया को भी उसका चसका लग गया है।"

"पर माँ ! तुम इस फजूलखर्ची को छोड़ क्यों नहीं देतीं ?"

"तुम्हारे पिता तो छोड़ रहे हैं। तीन-चार पैग नित्य से अब दो पैग पर आ गए हैं। परन्तु मुझसे नहीं छूटती। इसी कारण मैं अपनी पृथक् आय करना चाहती हूँ।"

"सिलविया को तो मना कर दो ?"

"उसका कहना है कि तुम नहीं पीतीं तो तुमको उचित पति नहीं मिल रहा। अन्ना तो परीक्षा पास करते ही काम भी पा गई और पति भी।"

अंजू हँस पड़ी। उसने कहा, "तो सिलविया को शराब और पति में परस्पर सम्बन्ध प्रतीत हुआ है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, आज सब युवक, विशेष रूप में अपने समुदाय के, तो इसका सेवन चाय-कॉफी की भाँति करना चाहते हैं। आज ही फ्रांसिस कह रहा था कि हम तो फ्रांस की भाँति यहाँ भी सस्ती बढ़िया शराब चाहते हैं।"

अंजू इसको विकृत मस्तिष्क की उपज समझ रही थी। वह वहाँ से उठकर अपने कमरे में जाने ही लगी थी कि उसका पिता आ गया। भीतर प्रवेश करते हुए उसने कहा, "तो आ गई हो अंजू ?"

"हाँ पापा !"

"स्टीन मिला है ?"

"मिला है।"

"तो क्या निश्चय किया है तुमने ?"

"किस विषय में ?"

"नौकरी के विषय में।"

"सैंटर की नौकरी ? मैं वहाँ नौकरी नहीं कर रही।"

"ठीक है। मैं भी यही चाहता हूँ। देखो अंजू ! मैंने घर में मितव्ययिता से रहने की योजना बनाई है। इससे तुम बिना काम के जब तक चाहो यहाँ रह सकती हो। मैंने डेढ़ सौ रुपया मासिक की शराब खरीदना बन्द कर दिया है। तुम्हारी माँ कहती है कि वह बिना शराब के नहीं रह सकती। इस कारण मैंने इसको कह दिया है कि वह अपनी शराब के लिए स्वयं पैसा कमाए।

"सिलविया भी तो अब चोरी-चोरी पीने लगी है। इसलिए मैंने घर में शराब लानी बन्द कर दी है। परिणामस्वरूप उसे तो छोड़नी ही पड़ेगी।"

"मेरी भाँति वह भी कहीं नौकरी करके ले आयेगी।" नोरा ने कहा।

"हाँ अन्ना की भाँति न ? सुना है उसका समाचार ?"

"क्यों, क्या हुआ है उसको ?"

"उसके बच्चा होने वाला था ? कल उसके लड़का हुआ है और कल से ही उसका पति घर से लापता है।"

"अपने काम पर गया होगा। पहले भी तो यह अपनी नौकरी पर दो-दो तीन-तीन दिन घर से बाहर रह चुका है ?"

"पर अन्ना कह रही है कि इस बार वह लड़कर गया है।"

"अन्ना ही लड़ी होगी।"

"मैंने उसे तो यही कहा है कि उसे चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वह दो-चार दिन में लौट आयेगा। परन्तु अन्ना को विश्वास हो रहा है कि वह अब नहीं आयेगा।"

"यह एक और झगड़ा है।"

"मैं भी विचार करता हूँ कि तुमसे लड़ पड़ूँ तो कैसा रहे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन लड़कियों को ले जाओ और जहाँ मन करे वहाँ चले जाओ।"

"आधी-आधी बाँट लेते हैं। दो की तुम परवरिश करो, दो की मैं कर लेता हूँ।"

"स्टीन ने आज वचन दिया है, मुझे मिशन के केन्द्रीय यतीमखाने में नौकरी मिल जाएगी। वेतन लगभग दो सौ रुपया मासिक होगा। मैं समझती हूँ कि सिलविया भी कहीं काम कर ले तो तुम जैसे झगड़ालू आदमी से छुट्टी मिल जाएगी।"

"तो कर लो छुट्टी।

"मैंने शराब पीनी छोड़ दी है, इस कारण न पीने वाली मेरे साथ रहेंगी और पीने वाली तुम्हारे साथ।"

"यह तो ठीक बँटवारा न हुआ। देखो जी! अंजू और सिलविया मेरे पास रहेंगी और अन्ना तथा मेरी तुम्हारे साथ।"

"मैं तो किसी के साथ भी नहीं रहूँगी।" अंजू ने कह दिया।

"क्यों?"

"बस, अब मैं बड़ी हो गई हूँ। मैं पृथक् रहूँगी। हाँ, यदि पापा चाहें तो कुछ रुपए मासिक उस खर्च के एवज़ में देती रहूँगी जो उन्होंने मेरी परवरिश और पढ़ाई पर व्यय किया है।"

"और मैंने तुम पर कुछ खर्च नहीं किया?" माँ ने पूछा।

"ममी! तुमने ह्यू बर्ट से कितना पाया है?"

"कुछ भी नहीं।"

"मुझे अब तक सब पता लग चुका है। मैं समझती हूँ कि तुम्हें मेरी परवरिश का मूल्य मिल गया है।"

"नोरा!" पीटर के मुख से निकला, "तुमने मुझे भी नहीं बताया।"

"अंजू को किसी ने मूर्ख बनाया है। मैंने तो केवल अपने धर्म की रक्षा के लिए उसकी सहायता की थी। यदि यह किसी ईसाई युवक से विवाह करने वाली होती तो मैं उसकी सहायता नहीं करती।"

अंजू चुपचाप बैठी मुस्कराती रही। पीटर को एक बात का सन्तोष था कि अंजू उसका वज़ीफा लगाने की बात कर रही है। इस घोषणा से वह विचार करने लगा था कि कितना मासिक वह दे सकेगी। जब वह नौकरी करती थी तो उस समय घर के खर्चों के लिए पचहत्तर रुपया मासिक और दोनों पढ़ने वाली लड़कियों को बीस-बीस रुपया मासिक देती थी। घर का खर्चा तो उसने भोपाल से लौटने के उपरांत भी दिया था। लड़कियों को अभी कुछ नहीं मिला था।

माता-पिता को गम्भीर मुद्रा में देख उसने कह दिया, "पापा! मुझे नौकरी मिल गई है। इस बार मैं अपना पृथक् घर बनाना चाहती हूँ। यदि ममी कहे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं और मेरी कहीं पृथक् घर बनाकर रह सकेंगी। मैं समझती हूँ कि आपका कुछ तो बोझा कम हो ही जाएगा।"

"पर तुम दोनों अकेली कैसे और कहाँ रहोगी?"

"यह तो कुछ दिन बाद बताऊँगी। अभी तो आज ही मेरी नौकरी लगी है।"

नोरा ने कह दिया, "मेरी नहीं तुम सिलविया को अपने साथ रख लो।"

"नहीं ममी! वह अन्ना की बहिन है। मेरी बहिन तो मेरी ही है।"

पीटर हँस पड़ा। नोरा के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने पूछ लिया, "क्या मतलब?"

पीटर ने बात बन्द करने के लिए कहा, "देखो नोरा! बच्ची से झगड़ा करने में कोई लाभ नहीं। अपनी-अपनी रुचि और पसन्द है।"

नोरा ने भी समझा कि बात सीमा से बाहर जा रही है। इस कारण वह उठी और अपने कमरे में चली गई। पीटर उसके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचा।

अंजू अपने कमरे में जाकर उस दिन की घटना पर विचार करने लगी। उसका मन रह-रहकर यह कह रहा था कि प्रमिला ने उसे अपने घर का अंग बनाने के लिए ही यह नौकरी का बहाना किया है। उसे ऐसा लगने लगा कि माँ और पुत्र दोनों ने मिलकर योजना बनाई है। एक बात का उसको सन्तोष था कि यदि परीक्षाकाल का अर्थ यही है कि उसे इस काल के उपरांत भी यदि वहाँ विवाह न करना अभिप्रेत हो तो वह वहाँ का काम छोड़ सकती है।

अब वह अपने कमरे में लेटी-लेटी विचार करने लगी कि यदि भूषण अभी भी विवाह करना चाहे तो वह क्यों स्वीकार न करे? उसका मन कहता था कि वह उसके योग्य नहीं रही। उसके मन में एक बात रह-रहकर आ रही थी कि उस घटना के उपरांत वह उससे वह प्रतिष्ठा नहीं पा सकेगी जो इससे पूर्व पाने की आशा रखती थी। यह विचार उसके मृदुल और मधुर मन की अवस्था को कठोर और कटु कर देता था। वह शरीर में कँपकँपी अनुभव करती थी।

इससे उसे अपने माता-पिता के होने वाले झगड़े के बीज का स्मरण हो आता था। एक बार मद्य के नशे में उसके माता-पिता उसके सामने ही लड़ते-लड़ते बक गए थे। माँ ने स्वीकार किया था कि अन्ना और सिलविया पापा की सन्तान नहीं हैं। उस समय भी पिता ने उसकी माँ के मुख पर हाथ रखकर कुछ और अधिक कहने से रोका था। आज भी जब अंजू ने कहा था कि मेरी उसकी बहिन है तो नोरा का मुख क्रोध से लाल हो गया था। पीटर ने आज भी इस बात को आगे बढ़ने से रोक दिया था।

वह अब समझ चुकी थी कि माता को पिता के प्रति निष्ठा में शिथिलता के दौरे पड़ते रहते हैं। और कदाचित् उन दिनों में ही अन्ना और सिलविया का जन्म हुआ था। वह अनुभव कर रही थी कि इन दिनों में भी वैसे ही दौरे का काल चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। इसी कारण पिता ने माँ को शराब लाकर देनी बन्द कर दी है।

इसका एक अन्य कारण भी हो सकता है। भोपाल से लौटने के उपरान्त एक दिन अंजू ने माँ के बैंक की किताब देखी थी। नोरा के हिसाब में उन्हीं दिनों पाँच सहस्र की राशि जमा हुई थी। उसे सन्देह हुआ था कि यह राशि ह्यूबर्ट ने नोरा का मुख बन्द करने के लिए दी होगी।

इसी प्रकार की बातों में लेटी-लेटी वह सो गई। उसे जगाया मेरी ने। मेरी दसवीं श्रेणी में पढ़ती थी। यद्यपि वह सज्ञान हो गई थी तो भी परिवार की सब बातें उसे विदित नहीं थीं। यों भी वह घर के सभी प्राणियों से पृथक् रहती थी। उसका व्यवहार केवल अंजू से ही था। वह भी केवल मात्र औपचारिक। वह मौन और अपने कार्य में लीन रहती थी। वैसे पढ़ाई में वह अपनी श्रेणी में प्रथम थी। वह आशा कर रही थी कि वह मैट्रिक की परीक्षा में सरकारी छात्रवृत्ति पा जाएगी।

: ३ :

अंजू जागी तो मेरी ने बहिन के गले में बाँह डालकर कहा, "सिस्टर ! पापा और ममी में मारपीट हो रही है।"

अंजू लपककर उठी और पूछने लगी, "कहाँ हैं वे ?"

"अपने कमरे में हैं, पर भीतर से द्वार बन्द है।"

"अंजू अपने कमरे से निकल माँ के कमरे के बाहर जा द्वार पर कान लगाकर सुनने लगी। भीतर दोनों के धीरे-धीरे बातें करने का स्वर हो रहा था। इससे अंजू का भय कम हुआ। वह तो समझी थी कि पापा ने कहीं ममी की हत्या ही न कर दी हो। ह्यूबर्ट काण्ड में उसकी माँ का काम तो ऐसा ही था कि पापा उसको क्रोध में घर से बाहर भी निकाल सकते थे और हत्या भी कर सकते थे। अब उन दोनों को शान्त हो धीरे-धीरे बातें करते सुन उसने आश्वस्त हो द्वार खटखटाया। पीटर ने पूछा, "कौन ?"

"पापा ! मैं !"

"क्या काम है ?"

"खाने का समय हो गया है।"

"जाओ, किसी होटल में खा लो। ममी ने खाना नहीं बनाया है।"

"पर खाना तो ममी को भी होगा ?"

माँ की मरियल-सी आवाज आई, "मुझे भूख नहीं है।"

"पापा ! सिलविया ने खाना बनाया है। आपके लिए भी और ममी के लिए भी।" मेरी ने कहा।

"अच्छा, ठहरो। मैं अभी आता हूँ।"

दोनों लड़कियाँ द्वार के बाहर खड़ी रहीं। कुछ देर के बाद अंजू ने फिर द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खटखटाया तो पीटर ने द्वार खोल दिया।

दोनों लड़कियाँ भीतर घुस गईं। नोरा के माथे पर और सिर पर पट्टी बँधी थीं। बिस्तर की चादर रक्त से लथपथ थी। नोरा पलंग पर बैठी थी।

"ममी ! क्या हुआ है ?"

उत्तर देते हुए पीटर ने कहा, "तुम्हारी ममी पर डेविल ने 'अटैक' कर दिया था। बहुत कठिनाई से इसे बचाया है।"

"और अब वह डेविल कहाँ गया है ?" अंजू ने पूछा।

"उससे खूब कुश्ती करनी पड़ी है। और वह इस खिड़की से बाहर भाग गया है।"

मेरी ने इस पहेली को सुलझाने का यत्न करने की अपेक्षा कहा, "पापा ! भोजन तैयार है।"

पीटर ने नोरा की ओर देखकर पूछ लिया, "भूख लग आई हो तो आओ।"

नोरा भीगी बिल्ली की भाँति उठी और अंजू के कन्धे पर हाथ रख आश्रय लेते हुए खाने के कमरे में चल पड़ी।

सिलविया ने एग करी, डबलरोटी और मक्खन मेज़ पर रख दिया। अण्डों की सब्जी अति सुगमता से बनती है। और जब सिलविया और मेरी को पता चला कि माँ और पिता अपने कमरे में झगड़ा कर रहे हैं तो दोनों उठीं और अण्डे उबालकर सब्जी आदि बनाने लगीं।

मेरी को ऐसा लगा कि उनके कमरे में कुछ खटाखट हो रही है। वह भागी-भागी अंजू के कमरे में गई और उसको जगाने लगी।

जब पाँचों खाने बैठ गए तो अंजू ने पूछ लिया, "पापा ! यह क्या कर दिया ?"

उत्तर माँ ने दिया, "मैं कल घर छोड़ रही हूँ ?"

पीटर कहने लगा, "मैं तो तुमसे अभी घर छुड़ाने वाला था। तुम इस घर में रहने के योग्य नहीं हो।"

"अच्छा पापा !" अंजू ने तरल नेत्रों से उसकी ओर देखकर कहा, "घर में किस-किस को रहने दोगे ?"

"किसी को भी नहीं। जहाँ जिसके सींग समाएँ, जा सकता है। जब बीवी ही नहीं तो यह घर भी नहीं। तुम सबके पर निकल आये हैं। अब तुम्हें घोंसले की आवश्यकता नहीं रही।"

"तो पापा, ऐसा करो कि तुम इस घर का भाड़ा देना बन्द कर दो। तुम हमारे खाने का खर्चा देना भी बन्द कर दो। हमारे पास किराये के लिए और खाने के लिए पैसे होंगे तो हम जी लेंगे, नहीं तो यहीं मर जाएँगे।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि मैं मकान छोड़कर चला जाऊँ।"

"पापा ! मैंने ऐसा नहीं कहा। तुम इस मकान में रह सकोगे। माता-पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को तो दूसरे मकानों में भेज सकते हैं परन्तु बच्चे तो ऐसा करते नहीं देखे जाते।"

"यदि मैं मकान का भाड़ा नहीं दूंगा तो रहूँगा किस प्रकार?"

"जैसे हम अभी तक बिना भाड़ा दिए रहते थे।"

नोरा मुस्कराते हुए बोली, "आपको पता होना चाहिए कि अंजू किसी अति ही योग्य उस्ताद की पढ़ाई हुई है। आप इससे बातों में पार नहीं पा सकते।"

पीटर ने अभी भी बात में परास्त न होते हुए कहा, "और तुम ममी के साथ मकान में रहोगी?"

"पापा! लड़कियाँ माता-पिता को घर में नहीं रखतीं। यह संसार का नियम है। परन्तु लड़कियाँ माता-पिता को घर से विदा भी नहीं करतीं। वरन् माता-पिता लड़कियों को विदा करते हैं।"

अब तो नोरा हँस पड़ी और अपने पति से बोली, "अब बताओ क्या कहते हो?"

पीटर समझ गया कि बात उलटी हो गई है। वह तो घर छोड़ नहीं रहा था। घर तो नोरा छोड़ रही है। इस कारण उसने कह दिया, "देखो अंजू! तुम्हारी माँ नया विवाह करना चाहती है। और यह कह रही थी कि कल यह अपने नए खाविन्द के घर चली जाएगी। यह जाती नहीं थी और मैंने इसकी हत्या कर इसको जल्दी ही घर से निकालना चाहा था। परन्तु इसने मरने से पहले रक्त बहाना आरम्भ कर दिया। और तुम जानती हो कि रक्त देखकर मेरा पसीना छूटने लगता है। बस एक ही वार कर पाया था। उससे काम तमाम नहीं हो सका। और यह अभी भी यहाँ बैठी खाना खा रही है।"

अंजू कुछ ऐसी ही बात के सुनने की आशा कर रही थी। हाँ, मेरी के लिए यह समाचार नवीन था। वह परेशानी अनुभव कर रही थी। सिलविया को कदाचित् यह पता था कि माँ कहाँ जाना चाहती है। इससे वह मुस्कराती हुई भोजन कर रही थी। अंजू कुछ न जानती हुई भी सब समझ रही थी।

पीटर के उक्त रहस्योद्घाटन के उपरान्त अंजू गम्भीर विचार में पड़ गई। वह नहीं जानती थी कि माँ क्या चाहेगी। इस कारण वह मौन थी। भोजन लगभग समाप्त हो गया था। अंजू ने किसी प्रकार का निर्णय करने के लिए पूछ लिया, "तो मम्मी! अब क्या करने का विचार है?"

"मैं शराब पिए बिना नहीं रह सकती। इनकी आय इतनी नहीं है कि मुझे मद्य लाकर दे सकें। इस कारण मेरे लिए यहाँ पड़ा रहना कठिन है।"

"प्रतिमास कितने रुपये की शराब चाहिए?" अंजू ने पूछा।

"कम-से-कम एक सौ रुपये की। यदि उसमें से कोई और न ले तो मेरा निर्वाह हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटर को पाँच सौ रुपया वेतन मिलता था। उसमें से डेढ़ सौ मकान का भाड़ा देता था। जब पति-पत्नी दोनों पीते थे और बीच में से सिलविया भी चुरा लेती थी तो इसके लिए दो सौ रुपये का खर्चा करना पड़ता था। शेष बचते थे डेढ़ सौ रुपये। जब से अंजू घर के खर्चे के लिए और बहिनों को पाकेट खर्च के लिए धन देने लगी थी, तब से निर्वाह तो होता था परन्तु बहुत कठिनाई से। जब अंजू ने मिशन से नौकरी छोड़ी तो पीटर ने मद्य पीनी कम कर दी थी। उसने निश्चय कर लिया था कि वह एक पैसा भी इस काम पर व्यय नहीं करेगा। इससे नोरा लगभग मद्य के सम्बन्ध में उपवास ही कर रही थी, इससे उसका मन बुझा हुआ था। मिशन के यतीमखाने में दो सौ रुपये की नौकरी उसको मिल तो गई थी परन्तु मद्य का इतना बड़ा खर्चा होते हुए वह दो सौ रुपया अपर्याप्त समझती थी। उसने स्टीन से कहा था और स्टीन ने उसका भी एक उपाय बताया था। उसने कहा था कि वह पीटर का घर छोड़कर हैनरी के घर पर पेइंगगेस्ट के रूप में रहने लगे।

यही बात नोरा ने अपने पति को बताई थी। उससे झगड़ा आरम्भ हो गया। इसी पर पीटर ने उसकी हत्या करनी चाही थी। परन्तु ब्राह्मण की लड़की का पुत्र होने से उसका स्वभाव धर्मभीरु बन गया था। रक्त देख वह घबरा उठा।

"ममी ! शराब का इतना मूल्य तो यहाँ निकल नहीं सकता।" अंजू ने गम्भीर होकर कहा, "साथ ही मैं भी तो इस घर को इसी कारण छोड़ने वाली थी कि यहाँ मद्य का सेवन होता है। अत: देख लो। यदि तुम बिना पिए रह सको तो तुम्हें नौकरी करने की भी आवश्यकता नहीं और न घर छोड़ने की।"

"आज चार दिन से पीने को एक बूँद भी नहीं मिली है और मेरी टाँगें लड़खड़ा रही हैं।"

"ममी !" अंजू ने कहा, "जब आदत छूट जाएगी तो ठीक हो जाओगी। यह एक-आध महीने में ठीक हो जाएगा।"

"पर मैं सोचती हूँ कि जब यह मुझको सहज ही मिल सकती है तो मैं क्यों न करूँ।"

"सहज में तो प्राप्ति होगी नहीं। सबसे बड़ी बात यह होगी कि हमारी माँ छिन जाएगी।"

"क्यों छिन जाएगी ? मैं माँ तो तब भी रहूँगी। देखो अंजू ! यदि शराब न देने के आधार पर तलाक हो सकता तो मैं तलाक दे देती और हेनरी से नया विवाह कर लेती ! परन्तु इस आधार पर तलाक लिया नहीं जा सकता। इसलिए तलाक लिए बिना विवाह कर रही हूँ। तुम्हारे लिए तो वैसा ही होगा जैसा तलाक देकर होता।"

"पर ममी ! यह तो 'एडलट्री' होगी। यह महापाप है।"

"तुम तब की बात कर रही हो जब तलाक भी नहीं होता था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटर ने बात समाप्त करते हुए कहा, "मैं एक बात पर समझौता करने के लिए तैयार हूँ।"

"किस बात पर?" नोरा ने पूछा।

"तुम एक फर्स्ट क्लास एक्सा नम्बर वन की एक बोतल पर महीने-भर निर्वाह कर लो।"

"अर्थात् तीन के स्थान पर एक पैग पर निर्वाह कर लूँ?"

"हाँ। और नित्य मत पियो। सप्ताह में दो दिन पिया करो।"

"इससे क्या होगा?"

"कमजोरी नहीं होने पाएगी और बचत भी हो जाएगी।"

"मैं यत्न कर सकती हूँ।"

"हाँ तो मैं तुमको एक बोतल लाकर दे सकता हूँ। आज मास की सात तारीख है। अगले मास की सात तारीख को फिर लाकर दे दूँगा।"

"और यदि मैं नौकरी करके यह कमी पूरी कर लूँ तो?"

"नहीं, इस रिआयत में शर्त यही है कि तुमको नौकरी नहीं करनी होगी। और हेनरी से सम्बन्ध नहीं रखना होगा।"

"एक मास परीक्षा के रूप में रहकर देख सकती हूँ।"

"अच्छी बात है।"

: ४ :

जब नोरा अपने कमरे में चली गई तो मेरी अंजू के कमरे को चल पड़ी। सिलविया ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "कहाँ जा रही हो मेरी?"

"सिस्टर से एक बात करूँगी।"

"और आज पढ़ाई नहीं करोगी?"

"अभी आती हूँ।"

सिलविया अपने कमरे में जाती-जाती रुक गई। जब मेरी अंजू के कमरे में गई तो सिलविया भी वहाँ जा पहुँची। अंजू ने पूछा, "तो तुम भी आ गई हो? आ जाओ।"

अंजू के पलंग पर तीनों बैठ गईं। मेरी ने पूछा, "सिस्टर, अब क्या होगा?"

"तुम क्या चाहती हो?"

मेरी मुख देखती रह गई। सिलविया ने अपने मन की बात कह दी।

"मेरी परीक्षा में अभी दो वर्ष रहते हैं। तब तक के लिए तो मैं 'स्टैटस को' चाहती हूँ।'

"मुझे आशा नहीं कि यह स्थिति कुछ अधिक काल तक चल सके।" अंजू का कहना था।

"यही तो पूछ रही थी कि अब क्या होगा?" मेरी ने अपना प्रश्न दोहराया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होगा यह कि सिलविया को शिक्षा बन्द कर कहीं नौकरी करनी पड़ेगी।"

"पर मैं तो विवाह करना चाहूँगी।"

"यह तो ठीक है। परन्तु विवाह करोगी किससे? किसी ईंट-पत्थर से तो विवाह होगा नहीं।"

"एक लड़का है जिससे मैं विवाह करना चाह रही हूँ। परन्तु वह इंजीनियरिंग पढ़ रहा है। उसके पढ़ाई समाप्त करने तक निर्वाह का प्रबन्ध चाहिए।"

"तब तक नौकरी करनी होगी।"

"पापा खर्चा नहीं देंगे?"

"यह तो पापा ही बताएँगे।"

"और मेरी का क्या होगा?"

"यह मेरे साथ रहेगी।"

"और मैं क्यों नहीं?"

"इसलिए कि तुम सदा मेरा विरोध करती रही हो और माँ का साथ देती रही हो।"

सिलविया मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचारकर पूछने लगी, "सिस्टर, तुम्हारा विवाह कब होगा?"

"अब नहीं होगा।"

"तो जीवन-भर नौकरी करोगी?"

"यदि नौकरी नहीं करूँगी तो खाऊँगी-पिऊँगी कहाँ से?"

सिलविया को अंजू की बात पसन्द नहीं आई। वह उठकर कमरे से बाहर चली गई।

अंजू ने मेरी से कह दिया, "देखो मेरी! तुम मेरे साथ चलकर रहने के लिए तैयार रहो। मैं पृथक् रहने का स्थान ढूँढ़ रही हूँ।"

अगले दिन घर की अवस्था सामान्य थी। माँ के सिर पर पट्टी बँधी थी परन्तु वह खाना बनाने के लिए रसोईघर में गई हुई थी। अंजू ने प्रातःकाल का अल्पाहार लिया और नौकरी पर चल पड़ी।

प्रमिला देवी ने बढ़ई बुला रखा था। अंजू ने उसे कार्ड के डिब्बे बनाने का ढंग समझाया और चार डिब्बे बनाने को कह दिया। प्रत्येक में पाँच-पाँच सौ कार्ड रखने की व्यवस्था थी। यह आर्डर देकर वह बाजार गई और खाली कार्ड खरीद लाई। उन कार्डों में इंडैक्स कार्ड उसने स्वयं बना लिए। कुछ समय उसने पुस्तकों को विषयवार अलमारियों में रखने का काम किया।

इतने में दिन व्यतीत हो गया। तब तक भूषण नहीं आया था। इससे वह स्वयं ही चाय पीने रेस्टोराँ में जा पहुँची। वह चाय पी ही रही थी कि भूषण आ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण ने उसके सामने बैठते हुए कहा, "मैं तो सीधा ही कारखाने से आ रहा हूँ। मुझे विश्वास था कि तुम यहाँ मिलोगी।"

"हाँ, अब तो यहाँ चाय पीने का स्वभाव बन गया है। मैं स्वभाववश ही यहाँ चली आई हूँ।"

भूषण ने अपने लिए भी चाय और कुछ खाने के लिए मँगवा लिया। अंजू ने कहा, "मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आप लोग मुझे फोकट में ही वेतन देने का प्रबन्ध कर रहे हैं।"

"फोकट में किसलिए ?"

"जो काम मुझसे लिया जा रहा है वह तो घर का कोई भी आदमी कर सकता है।"

"पर यह काम तो एक सप्ताह में खत्म हो जाएगा। तब असली काम आरम्भ होगा।"

"वह क्या होगा ?"

"माताजी तुमसे पुस्तकें सुना करेंगी और उनके अर्थ समझा करेंगी। वैसे तो यह पुस्तकालय पिताजी का है। उनको समय नहीं मिलता कि वे पुस्तकों को नियम से रखें और जब भी उनको कोई पुस्तक ढूँढ़नी पड़ती है तो कितनी देर तो उसे ढूँढ़ने में लग जाती है।

"रात वे देख रहे थे और कह रहे थे कि उनको बहुत लाभ होगा। तुम एक बार इनको तरतीब से रख दो तो वे अपने कार्यालय की बहुत-सी पुस्तकें भी यहाँ ले आवेंगे और फिर उनको पढ़ने में बहुत सुगमता हो जाएगी।"

"इस पर भी यह काम कुछ ऐसा नहीं कि इसके लिए तीन सौ रुपये मासिक का साधारण नौकर रखा जाय।"

"पर तुम साधारण नौकर नहीं हो। माताजी रात पिताजी को कह रही थीं कि उन्होंने अपनी एक प्राइवेट सेक्रेटरी रखी है और उसको वे पाँच सौ रुपये तक वेतन देने का विचार करती हैं।"

"आप मेरी हँसी उड़ा रहे हैं।"

"अंजू ! हँसी-मज़ाक करना तो कोई निन्दनीय बात नहीं। इससे तुम रुष्ट क्यों होती हो ?"

"मैं तो यह चाहती थी कि आप मुझे किसी ऐसे काम पर लगाते जो लाभ देने वाला होता। तब मुझे विश्वास हो जाता कि माताजी मुझे निकालेंगी नहीं। अब कुछ ऐसा लग रहा है कि मुझपर दया कर मेरी परवरिश हो रही है।"

"परवरिश तो ठीक है, परन्तु दया अथवा बहाना नहीं। वास्तव में माताजी अब घर में एक सहायक की आवश्यकता अनुभव कर रही हैं। यह ठीक है कि अभी तक तुमको कोई ऐसा काम नहीं दे सकीं जिससे तुम्हारी योग्यता का पूरा लाभ उठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकें। परन्तु वैसा काम उनके पास है। पहले पुस्तकालय सेट हो जाय फिर तीन घण्टा नित्य वे तुमसे किताबें सुना और समझा करेंगी। वे वर्ष-भर में एक बार पहाड़ अथवा सागर-तट पर भ्रमण के लिए जाती हैं। वहाँ भी वे एक साथिन चाहती हैं। और भी अनेक अन्य काम उनको हैं। रात को वे कह रही थीं कि यदि अंजू छोड़ न गई तो वे तुमको घर पर का पूर्ण उत्तरदायित्व दे देंगी।"

"और स्वयं क्या करेंगी ?"

"वे सोएँगी, खाएँगी, पहनेंगी और फिर स्वाध्याय और भगवद्भजन करेंगी।"

"और घर-गृहस्थी का बोझा मेरे कन्धों पर !"

"हाँ, यदि तुमने इनकार न कर दिया तो।"

"इनकार करने की सामर्थ्य तो मुझमें है नहीं। परन्तु···।"

"परन्तु क्या ?"

"मुझे माताजी के साथ आकर रहना पड़ेगा। दूर रहती हुई मैं वे सब काम नहीं कर सकूँगी।"

"तो तुम्हारे लिए मकान का एक कक्ष खाली करना पड़ेगा।"

"मकान का एक कक्ष ?"

"हाँ, जब तुम आओगी तो कदाचित् तुम्हारे साथ रहने वाला कोई और भी आयेगा। तब उसके लिए स्थान बनाना पड़ेगा।"

"हाँ, मैं समझती हूँ कि एक व्यक्ति तो मेरे साथ ही आयेगा।"

"कौन है वह व्यक्ति ?"

"मेरी छोटी बहिन। यदि मैं पिता के घर से आई तो वह मेरे साथ ही आयेगी और तब तक मेरे साथ रहेगी जब तक उसका विवाह नहीं हो जाता।"

"यह तो अस्थायी प्रबन्ध ही करना होगा। कितनी बड़ी है वह ?

"मैं माताजी को बता दूँगा कि उसकी प्राइवेट सेक्रेटरी अपने साथ अपनी छोटी बहिन को भी लेकर ही आ पाएगी।"

"आप पर बहुत ज़िम्मेदारी हो जाएगी।"

"नहीं अंजू ! हमारी कोठी की ऊपर की मंज़िल आजकल खाली पड़ी है। मैं माँ को कह दूँगा कि अब वे उस भाग को भाड़े पर न दें।"

"कितना भाड़ा मिलता है उसका ?"

"तीन सौ रुपया।"

"इतना तो मेरा वेतन भी नहीं ?"

"प्राइवेट सेक्रेटरी को तो मकान मुफ्त में मिलना चाहिए।"

अंजू अब बात के अर्थ समझने लगी। वह भी रात माँ की बातें सुन मन में निश्चय कर चुकी थी कि वह माँ के साथ अब उस घर में नहीं रहेगी। वह अपनी बहिन को भी माँ के सम्पर्क से निकालना चाहती थी। अब वह विचार करने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि जब भूषण के माता-पिता के घर पर आकर ही रहना है तो फिर उससे विवाह करके ही क्यों न रहा जाय। बिना विवाह के रहने पर तो भूषण और उसके परिवार की और भी बदनामी होगी।

इस कारण उसने एक बात और कह दी, "यह प्रबन्ध तो ठीक है। आपकी माताजी के प्राइवेट सेक्रेटरी का काम भी ठीक है। साथ ही चौबीस घण्टे के काम से वेतन भी हलाल हो ही जाएगा। परन्तु एक बात से मन डरता है कि जो कुछ मेरे साथ बीत चुकी है उसकी विद्यमानता में आपकी बदनामी होगी।"

"क्यों, बदनामी किस बात की होगी?"

"लोग यही कहेंगे कि आपने एक ईसाई लड़की को बिना विवाह के घर में डाल लिया है।"

"हाँ, यह तो है। परन्तु मैं इससे भी अधिक बदनामी की सम्भावना इससे मानता हूँ कि एक लड़की जिसके साथ मेरा विवाह होने वाला था, वह अकेली रहती है अथवा किसी अन्य के साथ रहती है।"

"तो बदनामी से बचने का उपाय किया जाय?"

"वही तो करना चाहता हूँ। परन्तु तुम मानो भी तो। एक ही उपाय है कि तुम मेरे साथ विवाह के लिए राज़ी हो जाओ। उसके अभाव में तो यही है कि तुम हमारे घर में रहो। परन्तु भूषण की होने वाली पत्नी नौकरी करती हुई किसी अन्य स्थान पर रहे और किसी ऐसे स्थान पर नौकरी करे जहाँ लोग गलत अर्थ निकालने लगें, इसको मैं अधिक अपमानजनक समझता हूँ।"

"मैं चाहती थी कि अब विवाह न करूँ। मैं एक ऐसी दूषित वस्तु बन गई हूँ कि जिसके भी सम्पर्क में मैं आऊँगी उसे भी दूषित करती चली जाऊँगी। परन्तु घर पर स्थिति ऐसी होती जाती है कि बिना नौकरी के गुज़र नहीं और फिर घर पर भी कुछ अधिक काल तक रहना कठिन है।

"मैंने आपसे नौकरी दिलवाने के लिए कहा और आपने एक नौकरी के स्थान का पता लिखकर दे दिया। मैं समझी थी कि किसी मित्र के कार्यालय में नौकरी की सिफारिश कर रहे हैं। घर जाकर आप द्वारा लिखकर दिया पत्र पढ़ा तो स्तब्ध रह गई। मैं समझी कि माताजी को पिताजी के कार्यालय में किसी अकाउंटेण्ट की आवश्यकता है। इस पर भी साहस नहीं होता था कि आपके परिवार में जहाँ मालिक बनने वाली थी, नौकरी करने चल पड़ूँ। परन्तु आवश्यकता ने विवश किया और कई दिन के मानसिक संघर्ष के उपरान्त माताजी के पास पहुँची और उन्होंने नौकरी दे दी।

"मैं देख रही हूँ कि माताजी तो मुझे घर का एक अंग बनाकर रखना चाह रही हैं। इसलिए आपके घर में रहना पड़ेगा। तब विचार आया कि इससे आपकी बदनामी होगी, इसी कारण इस विषय पर बात चलाई है कि कहीं अन्यत्र नौकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलवा दें तो ठीक रहेगा।''

''देखो अंजू ! तुम विवाह करो अथवा न करो, अब मैं तुमको अन्य स्थान पर नौकरी नहीं करने दूंगा। उससे तो मेरे मन में आत्मग्लानि होने लगेगी।

''कारखाने के उद्घाटन के दिन तक तो मेरी तुम्हें पत्नी बना सकने की आशा नहीं थी। उसी दिन सुशीला के व्यवहार से मेरा तुम्हारे प्रति व्यवहार का निश्चय हुआ था और उसी दिन मैंने निश्चय कर लिया था कि अब तुम नौकरी नहीं करोगी।

''परन्तु ह्यूबर्ट वाली घटना हो गई। इससे मैं तुम्हें दूषित नहीं मानता। न ही तुमसे विवाह कर मैं स्वयं को दूषित हुआ मानूँगा।

''परन्तु जब तुमने विवाह से इनकार किया और नौकरी करने की इच्छा व्यक्त की तो विवाह से कम अच्छी बात यही थी कि तुम माताजी की नौकरी करो। माताजी मेरे मनोभावों को जानती हैं और वे इस नौकरी देने को इसी रूप में मानी हैं कि तुम घर में मालिक बनकर रहोगी, चाहे बहू बनो अथवा न बनो।''

''यदि मैं आपको इस सारी विडम्बना से बचाने के लिए इस नगर से ही भाग जाऊँ तो ?''

''जब तुमको यहाँ से भगाकर ले जाया गया था मैं तब भी क्या कर सका था ? यदि ज़ेवियर इत्यादि न मिल जाते तो क्या हो सकता था, कहना कठिन है। इसी प्रकार तुम भाग जाओगी तो एक दुर्बल प्राणी की भाँति जो कुछ कर सकूँगा, करूँगा। वह क्या होगा, अभी तो बताया नहीं जा सकता।''

''बहुत प्रबल बन्धन डाल रहे हैं भूषणजी !''

''इसका श्रीगणेश तो तुम्हारी ओर से हुआ था और अब यह अपने परिवार के मानापमान का प्रश्न बन गया है। यह तो बन्धन के अतिरिक्त ही है।''

''अच्छा अभी तो माताजी की सेवा के लिए उनकी सुविधानुसार एक कमरा कोठी में तैयार रखिए। हम दोनों बहिनें वहाँ रहने के लिए कभी भी आ सकती हैं। जब वे इतना बड़ा वेतन दे रही हैं तो मुझे उनको अधिक-से-अधिक सुख पहुँचाने की व्यवस्था करनी चाहिए।''

''यह हो जाएगा। कब तक आने की बात है ?''

''आज पिताजी से सब बात करूँगी।

: ५ :

अंजू घर पहुँची तो सुशीला के विवाह का निमन्त्रण-पत्र उसकी मेज़ पर पड़ा था। उसने माँ से पूछा, ''माँ ! यह कौन दे गया है ?''

''एक लड़की एक मोटर-गाड़ी में आई थी। उसने तुम्हारे विषय में पूछा और जब मैंने बताया कि तुम नौकरी पर गई हो तो वह पूछने लगी, 'वहीं, मिशन के कार्यालय में ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा, नहीं, कहीं अन्यत्र कर ली है। मुझे स्थान मालूम नहीं।"

"इस पर वह कुछ देर तक विचार करती रही। फिर बोली, उससे कहिएगा कि मैं उससे सायंकाल चाय पर मिलने का यत्न करूँगी।"

अंजू ने कार्ड पढ़ा। आगामी रविवार को, दिन के तीन बजे मध्याह्नोत्तर विवाह था और सायं सात बजे विदाई थी। वह समझ रही थी कि इस अस्थिर-चित्त लड़की को किनारा मिल गया है। इससे वह स्वयं विवाह की इच्छा करने लगी थी। इच्छा तो पुरानी थी परन्तु उस पर ह्यूबर्ट वाली घटना ने पानी फेर दिया था। वह पानी अब हवा द्वारा वाष्पायित हो रहा था। एक तो भूषण के कथन से और दूसरे प्रमिला देवी के व्यवहार और योजना से। शेष अब सुशीला के विवाह के निमन्त्रण से।

रात के भोजन करते समय उसने अपने पिता से कहा, "मैं आपसे अपनी नौकरी के विषय में कुछ राय करना चाहती हूँ।"

"कब ?"

"भोजन के उपरान्त।"

"माँ के सामने नहीं ?"

"हाँ, यदि ममी को उसमें रुचि हो तो मुझे आपत्ति नहीं।"

"बताओ नोरा ! तुमको अंजू की नौकरी के विषय में रुचि है अथवा नहीं ?"

"मैं तो इसको मिशन में नौकरी करने की राय दे रही थी। इसको चार सौ रुपया तुरन्त मिलता। मिशन के अहाते में रहने के लिए क्वार्टर भी मिल जाता और फिर किसी अच्छे ईसाई युवक से विवाह भी हो जाता।"

"तो तुमको इसकी वर्तमान नौकरी में राय देने की रुचि नहीं है ?"

"रुचि तो है, परन्तु वहाँ की नौकरी छुड़वाने में···"

"पर कहाँ से ? तुम्हें विदित है कि वह कहाँ नौकरी करती है ?"

"नहीं, इसने बताया ही नहीं।"

"तो बिना जाने ही वहाँ से निकालने का विचार कर रही हो ?"

"इसके लिए अब किसी ईसाई युवक के अतिरिक्त अन्यत्र विवाह के लिए स्थान रहा नहीं है। इस कारण मैं समझती हूँ कि इसको अपने समुदाय में ही काम-धन्धा करना चाहिए।"

"तो तुमको इस नौकरी के विषय में किसी प्रकार की कोई राय देने की कोई दिलचस्पी नहीं है ?"

"नहीं।"

"तब ठीक है। अंजू ! खाने के उपरान्त मैं तुम्हारे कमरे में आ जाऊँगा।"

अपने कमरे में पिता को कुर्सी पर बैठा और स्वयं पलंग पर बैठकर उसने कहा, "मैं आपको बताना चाहती थी कि मुझे नौकरी कहाँ और किस प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली है ?"

"हाँ, बताओ।"

"भूषणजी की माँ ने मुझे अपनी प्राइवेट सेक्रेटरी के रूप में नौकर रखा है।"

"सत्य ?"

"हाँ, अब उन्होंने ऐसा काम बताया है जिससे मुझे उनके साथ चौबीस घण्टे रहने की आवश्यकता रहेगी।"

"अर्थात् वे तुमको बहू बनाकर घर पर रखना चाहती हैं ?"

"बहू नहीं। आज भूषणजी अपनी माताजी के मन की बात बता रहे थे। वे समझती हैं कि वे आयु में बड़ी होती जा रही हैं, उनको अब एक सहायिका की आवश्यकता है। तो वे मुझको अपने पास रखकर घर का सब काम-धन्धा धीरे-धीरे समझा देंगी।"

"और अपने लड़के की सेवा भी।"

"हाँ, सिवाय पत्नी के कार्य के जो मेरी रज़ामन्दी के बिना नहीं होगा।"

"तो वह भी हो जाय। तुम विवाह का प्रस्ताव कर दो।"

"वह तो भूषण जी ने स्वयं किया है। मैंने अस्वीकार कर दिया है।"

"महामूर्ख हो तुम। क्यों अस्वीकार किया है भला ?"

"ऐसे ही। ट्यूबर्ट की दुर्घटना के उपरान्त मैं अपने को बहुत ही छोटी और पतित अनुभव करने लगी हूँ।"

"हीन-भावना तो मिथ्या कल्पना है। तुम इसमें दोषी नहीं थीं। मिथ्या कल्पना ज्ञान से सुधारकर सत्य कल्पना बन जाएगी और मैं समझता हूँ कि तुमको भूषण की माताजी तुम्हें ज्ञान करा रही हैं, जिससे तुम्हारा मन ठीक कल्पना करने योग्य हो जाय।"

"तो मैं उनके घर पर जाकर रहने लगूँ ?"

"कब से ?"

"आज भी हो सकता है।"

यह सुनकर पीटर गम्भीर विचार में मग्न हो गया। उसने विचार कर कहा, "पहले विवाह हो जाय तो ठीक है।"

"यह आपकी पक्की राय है ?"

"हाँ। अब भूषणजी से विवाह तो तुम्हारे मान में वृद्धि ही करेगा। तुम्हारी माँ तो कहती थी कि किसी ईसाई लड़के से विवाह ठीक रहेगा। परन्तु मैं यह समझता हूँ कि यदि भूषणजी के साथ तुम्हारा विवाह हो जाय तो तुम्हारा सब काल्पनिक कलंक धुल जाएगा।"

"तो कैसे हो ? मैं समझती हूँ कि उनकी माताजी मुझे उनके घर जाकर रहने के लिए कहने वाली हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि तुम भूषणजी के द्वारा विवाह का प्रस्ताव करा दो। विवाह एक-दो दिन में हो जाय और फिर तुम्हें वहाँ जाकर रहना ही होगा।"

"तो पापा ! ऐसा करो, आप भूषणजी को टेलीफोन पर कहो कि कचहरी में प्रार्थना-पत्र का प्रबन्ध कर दें।"

"इसकी भी क्या आवश्यकता है। मैं तो समझता हूँ कि हिन्दू रीति से विवाह हो। देखो अंजू, जिस समुदाय में जाकर तुमको रहना है—उनके रीति-रिवाज ही चलने चाहिए।"

यह बात अंजू के मन की थी। इस कारण उसने कहा, "इस विषय में भी तो बात करनी ही होगी।"

"हाँ, कहो तो मैं भूषण से बात कर दूं ?"

"यदि ऐसी बात है तो मैं स्वयं बात कर लूँगी। आज शुक्रवार है। एक सप्ताह के भीतर विवाह हो जाय तो ठीक रहेगा। आप क्या कहते हैं ?"

"उनके मकान में जाकर रहना तो विवाह के बाद ही होना चाहिए।"

"यत्न करूँगी।"

"पर अपनी ममी को मत बताना। यह उसकी रुचि के अनुकूल नहीं है।"

अगले दिन प्रमिला देवी ने ही बात चलाई। उसने कहा, "बढ़ई डिब्बे घिसा गया है। मैंने उसको पॉलिश करके लाने को कहा है। अंजू ! तुम माँ का घर छोड़कर यहीं रहने के लिए नहीं आ सकतीं ?"

"रह तो सकती हूँ माताजी ! किन्तु इसमें दो बातें विचारणीय हैं। एक तो मेरी छोटी बहिन मेरे साथ ही रहेगी।"

"हाँ, भूषण बता रहा था। और दूसरी ?"

"पहले आप काम कराकर तो देख लीजिए कि मैं आपके काम के योग्य हूँ कि नहीं।"

"रात भूषण और उसके पिता में बात हो रही थी। तुम्हारे कार्य पर विचार हुआ तो यह उचित समझा गया कि तुम यहीं आकर रहो तो ठीक है। जहाँ तक काम का सम्बन्ध है, भूषण के पिताजी का यह विचार है कि तुम पढ़ी-लिखी और बुद्धिमती लड़की हो। यदि किसी काम का तुम्हें अभ्यास न भी हुआ तो उसे करने से तुम शीघ्र ही समझ जाओगी। अतः हम सब का यही निर्णय है कि तुम्हारे जीवन का प्रबन्ध करने के विचार से ही योजना बनाई जाय।"

"तो कोई योजना बनी है ?"

"हाँ, अभी तो तुम्हारे यहाँ आकर निवास करने पर ही विचार हुआ है। उसका कुछ प्रबन्ध किया गया है।"

"क्या प्रबन्ध हुआ है ?"

"आओ, दिखाती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमिला अंजू को कोठी की ऊपरी मंज़िल पर ले गई। कोठी के भूमि तल पर सात कमरे थे। और ऊपर की मंज़िल पर चार कमरे। वहाँ अन्य सुविधाएँ भी थीं। रसोईघर भी पृथक् बना हुआ था।

अंजू ने देखकर कहा, "यह तो बहुत ही बढ़िया स्थान है।"

"हाँ," भूषण का कहना है कि नीची मंज़िल से ऊपर की मंज़िल अधिक सुविधाजनक रहेगी।"

"और इतना सुन्दर स्थान आप अपनी नौकर को रहने के लिए दे रही हैं?"

"यदि वह चाहे तो उसके जीवन-भर के लिए और फिर उसकी सन्तान के लिए भी दिया जा सकता है।"

"इस विषय में तो विचार करना पड़ेगा। इतनी बड़ी सुविधा के साथ उतना ही बड़ा उत्तरदायित्व भी तो होना चाहिए।"

"उत्तरदायित्व पर विचार करने का काम तुम्हारा है। सुविधा का विचार हमने कर लिया है। जितना-जितना उत्तरदायित्व तुम सँभालती जाओगी, उतनी-उतनी वेतनादि की सुविधाएँ भी बढ़ती जाएँगी। बताओ, कब आओगी यहाँ?"

"भूषणजी से बात करके फिर बताऊँगी। इस मकान पर कुछ उनका भी तो अधिकार है।"

"हाँ, मैंने उसके साथ विचार कर लिया है। शेष तुम मिलकर विचार कर लेना।"

उसी सायंकाल अंजू किताबें समेट ही रही थी कि भूषण बढ़ई को लेकर आ गया। वह अपने साथ पॉलिश किये हुए डिब्बे भी लाया था। डिब्बे अंजू को दिखाए गए। अंजू ने उनमें कार्ड रखकर देखे। वे ठीक थे। जब बढ़ई डिब्बे छोड़कर चला गया तो भूषण ने पूछ लिया, "चाय के लिए चलोगी?"

"चलूँगी। वह रेस्टोराँ मेरे लिए प्रिय और पवित्र स्थान बनता जाता है।"

भूषण मुस्कराया और उसे अपनी मोटर में बैठाकर रेस्टोराँ को चल पड़ा। अंजू आशा कर रही थी कि वहाँ सुशीला आएगी और दो-चार व्यंग्य कसेगी। और वह अपने मन की वर्तमान अवस्था में उसके व्यंग्य सुनने के लिए उत्सुकता अनुभव करने लगी थी।

सुशीला रेस्टोराँ में नहीं थी। अतः मतलब की बात उसके आने से पहले ही समाप्त करने के लिए अंजू ने बैठते ही कहा, "माताजी ने तो मेरे रहने के लिए स्थान बना लिया है।"

"कौन-सा स्थान दिखाया है?"

"जिसकी राय आपने दी है।"

"हमने रात दो स्थान तजवीज़ किए थे। एक तो ऊपर की मंज़िल का पूरा फ्लैट। यदि तुम वह स्वीकार न करो तो मेरे दोनों कमरे। उस अवस्था में मैं ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिफ्ट कर जाऊँगा।"

"आपको तो ऊपर का ही फ्लैट लेना चाहिए। वे नीचे के कमरों से अच्छे बने हैं।"

"तो भी, माताजी का कहना है कि प्रथम चुनाव तुम पर है।"

"मैं यह कह रही हूँ कि ऊपर का फ्लैट तो घर की बहू के लिए ही रहना चाहिए।"

"तो तुम बन जाओ। यहाँ सब इस बात की प्रतीक्षा में हैं।"

"ठीक है, आप प्रबन्ध कर दीजिए। मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया है।"

"तो कचहरी चलना होगा ?"

"नहीं, आप अपने रीति-रिवाज के अनुसार विवाह कराइए। कचहरी की आवश्यकता नहीं है।"

"तुम्हारे माता-पिता के आदर के लिए मैंने यह विचार किया था।"

"माता तो कचहरी का प्रबन्ध भी स्वीकार नहीं करेगी। पिताजी हिन्दू रीति से विवाह को मेरे लिए अधिक मान की बात समझते हैं। वे विवाह में आयेंगे भी।"

"और तुम क्या समझती हो अंजू ?"

"मुझे जिन लोगों में जाकर रहना है, रीति-रिवाज तो उनके ही चलने चाहिए।"

"तो ऐसा करो, अपने पापा से कहो कि वे मुझसे मिल लें। हम परस्पर मिल-कर सब बातों का निर्णय कर लेंगे।"

"वे आपको टेलीफोन करेंगे।"

"कल तो रविवार है, हम घर पर ही रहेंगे।"

रविवार की बात पर उसको सुशीला की याद आ गई। उसने कहा, "सुशीला मुझे अपने विवाह का निमन्त्रण देकर गई है।"

"सत्य ?"'

"जी। माताजी घर पर थीं। जब माताजी ने उसको बताया कि मैं नौकरी करने लग गई हूँ तो वह गम्भीर विचार में पड़ गई। फिर कुछ विचार कर उसने माताजी को कहा कि वह आज यहाँ मुझको मिलेगी।"

"तो तुम उसके विवाह पर जा रही हो ?"

"यदि आप चलेंगे तो मैं भी जाना चाहूँगी। मैं भी उसे बधाई और कुछ भेंट दे आऊँगी।"

"ठीक है। पहले तो मेरा जाने का विचार नहीं था। माताजी जा रही हैं। यदि तुम चलो तो मैं भी जा सकता हूँ।"

"तो आप मुझे अपनी गाड़ी में ले चलिएगा।"

भूषण मुस्कराता हुआ प्रेम-भरी दृष्टि से अंजू की ओर देखने लगा। अंजू ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कथन का अभिप्राय समझा दिया। उसने कहा, "मैं अब आपके संरक्षण में रहती हुई सुख का अनुभव करती हूँ।"

: ६ :

अगले दिन भूषण पीटर से मिलने के लिए उसके घर पर आया। वह उसको अपने पिता के पास ले जाकर विवाह का कार्यक्रम निश्चित करना चाहता था। रविवार होने के कारण पीटर घर पर ही था। नोरा तो घर पर नहीं थी, पर अंजू की बहिनें घर पर ही थीं।

साथ ही वह अंजू को सुशीला के विवाह पर ले जाना चाहता था। इस प्रकार वह दोनों—पिता-पुत्री को अपनी गाड़ी पर बैठाकर अपने घर ले गया।

अंजू ने अपने पिता से कह रखा था कि आज भूषण उससे विवाह के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए आयेगा। इस कारण जब भूषण आया तो वह बातचीत के लिए तैयार था। परन्तु भूषण ने कह दिया, "आपको हमारी कोठी तक चलना पड़ेगा। विवाह की बात वर-वधू के माता-पिता ही निश्चय करेंगे।"

"पर अंजू की माता तो है नहीं और कदाचित् वह इस विषय में सहमत भी नहीं होगी।"

"तो आप अकेले ही चल सकते हैं।"

"मैं तो तैयार हूँ।"

इस प्रकार अंजू और पीटर भूषण के पिता से मिलने के लिए चल पड़े। विवाह की बात तो पाँच मिनट में ही समाप्त हो गई।

पीटर ने कहा, "मेरा इस विवाह के लिए आशीर्वाद तो पहले से ही था। वह अब भी है। मेरा केवल इतना ही कहना है कि इस अवसर पर व्यय करने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है। सबकुछ आपको ही करना होगा।"

"वह तो ठीक है। भूषण की माताजी यह जानना चाहती हैं कि आप विवाह मजिस्ट्रेट के सामने करवाना चाहते हैं अथवा गिरजाघर में।"

"मैंने लड़की को सही सम्मति दी है कि वह हिन्दू रीति से विवाह कर ले, इसी में उसका मान है।"

'गिरजाघर में क्यों नहीं?"

"जी नहीं। वैसे तो विवाह की रस्म का मैं मज़हब से कुछ भी सम्बन्ध नहीं समझता। यह विशुद्ध सामाजिक व्यवहार है। परन्तु अंजू की माँ और गिरजाघर का पादरी यह समझने लगते हैं कि इस प्रकार विवाह कराने वाले वर और वधू ईसाई हो गए हैं।

"मैं उन मूर्खों की इस मिथ्या धारणा को प्रोत्साहन न देने के लिए ही यह कह रहा हूँ। आप अपने रीति-रिवाज से विवाह कराएँगे तो मैं उसे इतने मात्र से हिन्दू बन गई भी नहीं समझता। परन्तु मूर्खों की बात छोड़कर मेरा यह कहना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समुदाय में रहना हो, उसीके रीति-रिवाज ग्रहण कर लेने चाहिए। रीति-रिवाज मज़हब नहीं। ये देश-जाति के सामाजिक व्यवहार के प्रतीक हैं।"

"ठीक है, ऐसा ही होगा।" ग्रोवर का कहना था।

इसके उपरान्त सबने मिलकर एक-मत से यह निर्णय कर दिया कि आगामी रविवार को ग्रोवर की कोठी में अंजू और भूषण का विवाह होगा। विवाह ढाई बजे प्रारम्भ होकर पाँच बजे समाप्त हो जाएगा। साढ़े पाँच बजे जलपान का कार्यक्रम होगा और रात को फिर दोनों परिवारों का सहभोज। रात को ही अंजू और भूषण भ्रमण के लिए चल देंगे। सम्बन्धियों के घर आना-जाना उसके लौटने के बाद होगा।

इसके उपरान्त सुशीला के विवाह पर जाने की तैयारी होने लगी। इस समय टण्डन साहब की कोठी से टेलीफोन आया। टेलीफोन कान्ता ने प्रमिला को किया था। प्रमिला देवी ने टेलीफोन सुना और उसके उत्तर में कह दिया, "नहीं, यहाँ नहीं है। हम तो विवाह पर आने के लिए तैयार बैठे हैं।"

इसके उपरान्त कान्ता ने कुछ और कहा और प्रमिला देवी ने "बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।" यह कहकर रिसीवर रख दिया।

सब ड्राइंगरूम में बैठे थे और वहीं पर प्रमिला बैठी टेलीफोन सुन रही थी। उसने टेलीफोन का चोंगा रख गम्भीर भाव में सबकी ओर देखकर कह दिया, "सुशीला घर से लापता है।"

"ओह !" भूषण के मुख से निकल गया।

प्रमिला ने बताया, "वह परसों मध्याह्नोत्तर कुछ निमंत्रण कार्ड लेकर अपनी सहेलियों को बाँटने के लिए गई थी। परन्तु कुछ ही बाँटकर लौट आई थी।

"माँ के पूछने पर उसने कहा था, 'मेरी तबियत खराब हो गई है।'

"माँ ने कह दिया, 'लेट जाओ और आराम करो। यदि तबीयत ठीक नहीं होगी तो बताना। डॉक्टर को बुला दूँगी।'

"इसके उपरान्त वह अपने कमरे में जाकर लेट गई। रात डॉक्टर बुलाया गया था। उसने बताया कि 'नर्वस टेंशन' प्रतीत होता है। वह रात सोने की दवाई दे गया था। शनिवार को वह ठीक थी। कार्ड माँ ने डाक द्वारा भेज दिए थे। आज प्रातः उसका कमरा खाली मिला और उसके कपड़ों का सूटकेस भी नहीं है।

"इसका अभिप्राय मैं तो समझी हूँ कि सुशीला घर से भाग गई है। विवाह स्थगित हो गया है।"

भूषण प्रश्नभरी दृष्टि से अंजू की ओर देखने लगा। अंजू ने अपनी माता से भेंट का वृत्तान्त बता दिया।

प्रमिला का कहना था, "ऐसा मालूम होता है कि यह लड़की अस्थिर बुद्धि है और यदि इसका विवाह भूषण के साथ नहीं हो सका तो यह ठीक ही हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण भारी विपत्ति से बच गया है।"

अंजू और उसके पिता भूषण की गाड़ी में अपने घर लौट आये। नोरा तब तक घर आ गई थी। नोरा ने पूछा, "बाप-बेटी कहाँ गए थे?"

"मैं इसके विवाह का निश्चय करने के लिए गया था।"

"कहाँ?"

"भूषण के माता-पिता के पास।"

"तो क्या निश्चय हुआ है?"

"अगले रविवार को मध्याह्न दो बजे भूषण के पिता की कोठी में दोनों का विवाह होगा। सायंकाल चाय-पार्टी होगी। रात का भोजन दोनों परिवारों के सदस्य एकत्रित करेंगे। और फिर अंजू अपने पति के साथ भ्रमणार्थ चली जाएगी।"

"यह सब कैसे हो गया?"

"भूषण यहाँ आया था और हमको ले गया था। हमने वहाँ पर बैठकर कार्यक्रम बनाया है।"

"पर मैं तो जा नहीं रही।"

"क्यों?"

"क्योंकि मुझसे पूछकर बात नहीं की गई।"

"परन्तु तुमने तो कहा था कि तुम्हारी अंजू में रुचि नहीं रही।"

"ठीक है। मैं उसके विवाह में सम्मिलित नहीं हूँगी।"

लड़कियाँ सामने बैठी थीं। अंजू ने पूछ लिया, "सिलविया तुम?"

सिलविया के उत्तर देने से पूर्व ही मेरी बोल पड़ी, "मैं तो सिस्टर के वैडिंग पर अवश्य जाऊँगी।"

"और सिलविया?" माँ ने उसको घूरकर देखते हुए पूछ लिया।

सिलविया ने कह दिया, "जाने को मन करता है। परन्तु…"

"तो तुम भी जा सकती हो।" नोरा ने उठते हुए कहा।

पीटर ने इस विवाह पर अपने समुदाय के लोगों को आमन्त्रित नहीं किया। हाँ, उसने अपने बैंक के साथी कर्मचारियों को निमन्त्रण दिया था। वे प्रायः सब के सब हिन्दू थे।

विवाह से पूर्व एक घटना और घटी। शुक्रवार के दिन नोरा मध्याह्न के समय घर से गई तो फिर लौटकर नहीं आई। अगले दिन पीटर स्टीन से मिला तो उसने बताया कि नोरा वहाँ नहीं आई। उसने यह भी बताया कि नोरा का कहना था कि वह अपना घर छोड़ रही है। परन्तु कब छोड़ रही है और छोड़कर कहाँ जा रही है, यह उसने उसको नहीं बताया।

स्टीन ने कहा, "मुझसे वह कुछ आर्थिक सहायता भी चाहती थी। वह मैं दे नहीं सका। इसके उपरान्त वह चली गई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटर यह समझा कि जैसे सिलविया और अन्ना के जन्म के समय वह एक-एक वर्ष के लिए घर से लापता हो गई थी वैसे ही अब भी गई है और फिर वह लौट आयेगी। किन्तु एक अन्तर था। उस समय वह पूर्ण यौवना थी। पहली बार उसकी अवस्था उन्नीस वर्ष की थी और दूसरी बार इक्कीस वर्ष की थी। इस बार वह बयालीस वर्ष की थी।

फिर भी वह लापता थी। और यह आशा की जा सकती थी कि वह लौट आयेगी। पीटर ने घर पहुँचकर बताया, "तुम्हारी ममी तो सेंटर में भी नहीं है।"

"पापा! कहीं तो होगी ही। वह आत्महत्या करने का साहस तो कर नहीं सकती।" अंजू का कहना था।

"हाँ, मैं भी समझता हूँ कि उसका दिमाग अब की बार शीघ्र ही ठीक हो जाएगा।"

"विवाह तो कल होगा ही। अब रुक नहीं सकता।"

और वह हो गया।

भूषण ने बंगलौर जाने के लिए हवाई जहाज में सीट रिजर्व करा रखी थी। दोनों रविवार रात्रि के बारह बजे बंगलौर के लिए चल दिए। हवाई जहाज बम्बई, बम्बई से बंगलौर और वहाँ से त्रिवेन्द्रम जा रहा था। भूषण का विचार बंगलौर पहुँचकर वहाँ से मैसूर और ऊटी जाने का था।

वे बंगलौर के सैण्ट्रल स्टेट होटल में ठहरे। चौबीस घंटे वहाँ रहकर टैक्सी से वे मैसूर चले गए। दो दिन वहाँ रहे और वहाँ से टैक्सी से ही वे ऊटी जा पहुँचे। ऊटी में एक सप्ताह तक रहकर वे वापस लौट आये।

लौटने पर प्रमिला ने अपनी पुत्रवधू से पूछा, "बहू! कैसा रहा है यह भ्रमण।"

"बहुत अच्छा रहा है।"

"भूषण ने कष्ट तो नहीं दिया?"

"माताजी, कष्ट और आनन्द तो चित्त की दो वृत्तियाँ ही हैं।"

"तो यह भ्रमण सुखकारक रहा है?"

"जी बहुत।"

"अच्छा अब तुम अपने ऊपर वाले कमरे में चली जाओ।"

"और मेरी प्रावेट सेक्रेटरी की नौकरी?"

"अब तुम्हारी उन्नति हो गई है। तुम सेक्रेटरी के साथ-साथ अब बहू हो गई हो। इस उन्नति के साथ तुम्हारा वेतन भी पाँच सौ रुपया हो गया है।"

अंजू ने धन्यवाद के रूप में माँ के चरणस्पर्श किए और फिर ऊपर के कमरे में चली गई। भूषण उसके पीछे था। वह ऊपर जाकर अंजू को बताने लगा था कि कौन-कौन-सा कमरा किस-किस कार्य के लिए होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण ने बताया, "ड्राइंगरूम तो नीचे ही रहेगा। पुस्तकालय भी वहीं रहेगा जहाँ इस समय है। हाँ, सोने का कमरा ऊपर आ जावेगा। एक कमरा बैठकघर रहेगा।"

"और इन दो कमरों का क्या होगा?"

इनमें एक का प्रयोग तो तुम 'नर्सरी' के रूप में करोगी। परन्तु उसमें अभी समय है। तब तक यह बन्द रहेगा। और वह दूसरा कमरा पूजागृह होगा।"

"तो घर में चैपल भी रहेगा?"

"हाँ, पूजा का काम तो नित्य का है। नित्य तो हम मन्दिर में जा नहीं सकते। साथ ही यह किसी भी समय प्रयुक्त हो सकता है। किस समय पूजा, चिन्तन, ध्यान इत्यादि की आवश्यकता होती है, कहना कठिन है।"

"इसकी भी रोटी-कपड़े की भाँति आवश्यकता पड़ती है?"

"हाँ, यह आत्मा का भोजन है।"

"पूजा तो मैं भी किया करती हूँ। परन्तु प्रार्थनाएँ अंग्रेजी में हैं।"

"वे धीरे-धीरे मौन भाषा में हो जावेंगी।"

"वह क्या होती है?"

"वह मन की भाषा है, जो शब्दों में नहीं होती। वह चिन्तन और अनुभव की भाषा है। यह अंग्रेजी, हिन्दी अथवा कोई भी मानव भाषा के शब्दों में नहीं होती।"

अगले दिन अंजू अपने पिता तथा बहिनों से मिलने के लिए गई। उसकी माँ तब तक भी लौटकर नहीं आई थी। केवल एक बात का पता चला था कि वह कालीकट में फर्नेंडिस के पास गई है। यह सूचना मिशन के सैण्टर में ही काम करने वाले व्यक्ति हैनरी स्मिथ से मिली थी। जाते समय वह उससे दो सौ रुपया एक चैक के बदले में ले गई थी। उसने बताया था कि मिस्टर फर्नेंडिस के पास कालीकट जा रही है। उसने उसको अपने चाय के बागों में काम देने का वचन दिया है।

पीटर ने बताया कि उसने फर्नेंडिस के पते पर नोरा को एक पत्र भेजा था किन्तु अभी तक उसका उत्तर नहीं आया।

मेरी ने इच्छा प्रकट की कि वह अंजू के साथ जाकर रहेगी। यों तो अब सिलविया भी नहीं चाहती थी कि मेरी वहाँ से जाय, तभी अंजू ने कह दिया, "तुम दोनों को पापा के साथ रहना चाहिए। खाना तुम्हें बनाना चाहिए। एक को सुबह का और दूसरी को रात का।"

इससे दोनों बहनों को निराशा तो हुई परन्तु वे समझ रही थीं कि पिता का घर बनाए रखने के लिए उनको वहीं रहना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: १ :

निर्मल मणि का सागरचन्द से नियमित विवाह नहीं हुआ था। फिर भी वह सागरचन्द की निष्ठावान पत्नी की भाँति रह रही थी। जब सागरचन्द आगरे में पढ़ता था वह अपनी माता के साथ वहाँ रहती थी। दोनों में कॉलेज में ही परिचय हुआ था तब सागरचन्द बी० एस-सी० की दूसरी श्रेणी में था और लड़की इण्टरमीडिएट में। परिचय के उपरान्त मेलजोल हुआ। जब निर्मल की माँ को पता चला कि सागरचन्द धनी पिता का लड़का है तो उसने दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहने की स्वीकृति दे दी। निर्मल मणि के एक लड़का तो तब ही हो गया था जब सागरचन्द इंजीनियरिंग के कॉलेज में पढ़ता था। सागरचन्द निर्मल और उसके लड़के का खर्चा दे देता था।

सागरचन्द ने परीक्षा पास की और नौकर हो गया। निर्मल मणि की माँ ने आगरा छोड़ दिया और बीना में जाकर रहना आरम्भ कर दिया।

वहाँ निर्मल की नानी रहती थी। सागरचन्द धन और चतुराई के बल पर उन्नति करता गया।

सागरचन्द की माँ सौभाग्यवती लड़के के विवाह के लिए उत्सुक थी। परन्तु लड़का यह बहाना करता रहता था कि उसको अपनी उन्नति के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। विवाह उसमें बाधक होगा। माँ को सन्देह तो था कि लड़का लड़कियों से अछूता नहीं है। परन्तु जहाँ-जहाँ भी इसे नौकरी के लिए जाना पड़ा, उसके चरित्र की प्रशंसा सुनकर वह चुप रह जाती थी।

आखिर वह राज्य का चीफ इंजीनियर बना और माँ ने पूछा, "सागर! अब ?"

"किस विषय में पूछ रही हो माँ ?"

"तुम्हारे विवाह के विषय में।"

"वह तो होगा ही।"

"तो यत्न करूँ ?"

"यत्न की क्या आवश्यकता है। जिसको आवश्यकता होगी अपने आप आ जावेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वही तो हो रहा है। मेरा यत्न तो इस दिशा में होगा कि मैं देखूँ परिवार कैसा है। लड़की कैसी है और माता-पिता दहेज में क्या देने वाले हैं।"

"तो देख लो माँ।"

माँ का तो देखा हुआ था। सुशीला उसको पसन्द आ गई थी। इन तीनों विचार से रामनारायण टण्डन का घर वह ठीक समझती थी। सौभाग्यवती टण्डनजी के घर जाने लगी। कठिनाई यह हो रही थी कि कान्तादेवी और सौभाग्यवती भी चाहती थीं कि लड़का उनसे मेलजोल उत्पन्न करे। सागरचन्द को अवकाश ही नहीं होता था। वह सप्ताह में पाँच दिन दौरे पर रहता था। इन भ्रमणों में उसे बीना भी जाना पड़ता था।

निर्मल मणि एक बच्चा उत्पन्न कर बीमार हुई तो डॉक्टरों ने उसके बच्चा न होने का ऑपरेशन कर दिया। उसका लड़का सोमनाथ अब चार वर्ष का हो गया था। वह इन दिनों नरसरी स्कूल में पढ़ता था। निर्मल मणि भी अब इस बात पर बल देने लगी थी कि वह और उसका लड़का इंजीनियर साहब के परिवार में स्थान प्राप्त करे। वह अपने पति के घर पर जाकर रहने के लिए आग्रह करने लगी थी।

इस आग्रह में बाधाएँ थीं। सागरचन्द ने अभी तक अपनी माता को अपने विवाह की बात नहीं बताई थी। सागरचन्द की माता एक धनी माता-पिता की लड़की से विवाह का हठ कर रही थी। इसके साथ ही निर्मल मणि की माँ दमा रोग से पीड़ित थी। और जब भी निर्मल अपने पति के साथ बाहर जाने का विचार करती थी, उसका श्वास चलने लगता था।

ईश्वर की करनी से बाधाएँ हटने लगीं। निर्मल की माँ का एकाएक देहान्त हो गया। इसकी सूचना सागरचन्द को पहुँची तो वह बीना गया और निर्मल मणि को अगली बार अपने साथ ले चलने का वचन देकर लौट आया। परन्तु दिल्ली में माँ ने सुशीला से विवाह के प्रबन्ध में बहुत प्रगति कर ली थी। सुशीला ने कह दिया था कि इंजीनियर साहब को तो दर्शन देने तक का अवकाश नहीं। भला, उनको आने में कष्ट क्यों होता है? सागरचन्द की माँ ने उसको उसके बीना से लौटते ही टण्डन साहब और लड़की से मिलने की आज्ञा दे दी।

सागरचन्द सुशीला से मिला और उसे दो-तीन दिन तक होटलों तथा क्लबों में ले जाता रहा।

जिस दिन सागरचन्द सुशीला से प्रेमनारायण ग्रोवर की कोठी पर मिला था वह निर्मल मणि को मिलने के लिए बीना जाने वाला था। वह सुशीला को वहीं से अपने साथ घर ले गया।

माँ लड़के के विवाह के विषय में विचार-विमर्श करने के लिए अपने भाई के पास झाँसी गई हुई थी। घर में केवल रसोइया ही था। सागरचन्द और सुशीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेढ़ घण्टे घर में एकान्त में रहे और दोनों में प्रथम भेंट में ही समागम हो गया। इस समागम में सुशीला भयभीत थी परन्तु फिर भी वह इन्कार नहीं कर सकी। सागरचन्द इस विषय में अनुभवी युवक था और उसने निर्मल मणि की तुलना में सुशीला को असुन्दर पाया। वह सुशीला से पहली ही भेंट में सम्बन्ध को घाटे का सौदा समझने लगा। परन्तु टण्डन साहब लड़की के विवाह पर एक लाख रुपया देने वाले थे और सागरचन्द अब तक अर्थ से भोग की प्राप्ति का अनुभव प्राप्त कर चुका था, इसलिए लोभ में फँस गया। उसने बीना जाकर निर्मल मणि को वहीं रहने की प्रेरणा देनी उचित समझी। परन्तु निर्मल की रूपरेखा और सभ्य, सुशील एवं बुद्धियुक्त व्यवहार देखकर वह असमंजस में पड़ गया।

निर्मल ने कह दिया कि वह चलेगी और माताजी के पाँव पकड़कर वहाँ रहने की स्वीकृति ले लेगी। सागरचन्द जानता था कि माँ वहाँ है नहीं। इस कारण वह उसे अपने साथ ले चलने के लिए तैयार हो गया। लड़के को अभी वहीं एक नौकर के पास रख दिया गया। निर्मल पहले अकेली ही माताजी को राजी करने के लिए जाना चाहती थी। सागरचन्द निर्मल को तो वहाँ छिपाकर रख सकता था परन्तु लड़के के साथ होने से बात बिगड़ जाने की अधिक सम्भावना थी।

निर्मल आई तो कार्यालय में काम और अफसरों से मीटिंगों के बहाने बनाकर वह दिन-भर घर से बाहर रहने के लिए निकल गया। चार दिन तक निर्मल वहाँ रही और इन चार दिनों में उसकी सुशीला से दो बार भेंट हुई। दूसरी भेंट में जब निर्मल ने उसको अपना परिचय दिया तो सुशीला के बहुत यत्न करने पर भी उसका विवर्ण हुआ मुख छिपा नहीं रह सका। उसे भी सन्देह हुआ तो उसने उसी रात सागरचन्द से कह दिया, "वह लड़की फिर आई थी।"

"कौन ?"

"वह नाटे कद की गेहुँआ रंग की और मोटी-मोटी आँखों वाली।"

"क्या कहती थी ?"

"अपना नाम बता गई है। कहती थी कि उसका नाम सुशीला है।"

"और उसको काम क्या था ?"

"मैं समझती हूँ कि काम आप जानते हैं। मुझसे कब तक छिपाकर रख सकेंगे। बताइए यह आपकी कौन है ?"

"निर्मल ! तुमने अपना परिचय दिया है अथवा नहीं।"

"मैंने अपना परिचय दिया था और वह जानकर उसका मुख विवर्ण हो गया था। कॉफी पीने के उपरान्त ही उसके गले से आवाज़ निकल पाई थी।"

"तो इससे तुम क्या समझी हो ?"

"यही कि वह मेरी सौत है।"

"नहीं, सौत नहीं अपितु सौत बनने की उम्मीदवार।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मल गम्भीर हो गई। बहुत देर तक वह विचार करती रही। कितनी देर के उपरान्त वह बोली, "देखिए ! वह लड़की आपके प्रति पति की भावना रखती है। साथ ही यदि वह अभी उम्मीदवार ही होती तो मेरा परिचय पाकर क्रोध से लाल हो जाती। परन्तु उसके मुख का रंग फीका पड़ गया था। इससे मैं इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि आप उसका भोग कर चुके हैं। मुझे देखकर वह चिन्ता में डूबी-सी प्रतीत होती थी।"

सागरचन्द ने बात स्पष्ट कर देने के विचार से कह दिया, "माँ इस लड़की से मेरे विवाह का प्रबन्ध कर रही है। यह एक दिन यहाँ आई थी और मैं स्वयं को वश में नहीं रख सका था।"

"अब आप क्या करना चाहते हैं ?"

"तुम बताओ। मुझे तो कोई राह सूझ नहीं रही। यह बहुत धनी परिवार की कन्या है। एक लाख रुपए के लगभग दहेज मिलने वाला है।"

"तो आप विवाह करेंगे ?"

"करने पर विवश किया जा रहा हूँ।"

"कौन विवश कर रहा है ?"

"माताजी और धन का लोभ।"

"मैं आपके विवाह की चिन्ता नहीं कर रही। अभी तक भी तो आप पूर्णरूपेण निष्ठावान पति नहीं हैं। मैं तो अपने ही विषय पर विचार कर रही हूँ। अपने से अधिक मुझे सोम की चिन्ता है। वह बड़ा होकर मेरे और आपके विषय में क्या समझेगा।"

"मैं उसे तीन-चार वर्ष में पढ़ने के लिए अमेरिका भेज दूँगा। वह वहाँ के समाज में रहता हुआ सब कुछ जान जाएगा। देखो निर्मल ! तुम यदि बीना में ही रह सको तो जैसे अभी तक चलता रहा है वैसे ही आगे भी चल सकता है।"

"माताजी के देहान्त के उपरान्त बहुत कठिन हो गया है।"

"यत्न करो। इस छोटे से जीवन में यह पर्दा थोड़ी-सी सावधानी से चल जाएगा। हमारे सम्बन्ध बने छः वर्ष हो गए हैं। सोम भी चार वर्ष का हो चुका है। शेष बीस वर्ष भी बीत ही जाएँगे।"

निर्मल ने कुछ उत्तर नहीं दिया। अगले दिन वह बीना लौट गई। वह निराशा और क्रोध से भरी हुई थी। वह देख चुकी थी कि सुशीला उससे बहुत घटिया लड़की है। इस कारण वह उससे विवाह करने पर पति का कल्याण नहीं मानती थी। एक बात वह समझ गई थी कि धन के लोभ में फँसा हुआ उसका पति यह झगड़ा खड़ा करना चाहता है।

सोम का पिता धन का लोभी नहीं था, यह बात भी वह जानती थी। क्योंकि उससे सम्बन्ध बनने के समय उसको विदित था कि निर्मल निर्धन लड़की है। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय वह अपने पिता की सम्पत्ति के बल पर कह रहा था कि वह दहेज की परवाह नहीं करता। वह अपनी पूर्ण सम्पत्ति भी निर्मल पर न्योछावर कर सकता था। उसने निर्मल की माँ के सम्मुख पति-पत्नी होने का वचन देने के उपरान्त उसे, उसकी माँ को और फिर उसके लड़के को किसी प्रकार का आर्थिक कष्ट नहीं होने दिया।

इंजीनियर की नौकरी पाते ही उसने माँ-बेटी के रहने के लिए सुविधा-युक्त मकान बनवा दिया था। और फिर उसमें रहने के लिए पाँच सौ रुपया मासिक देता चला आ रहा था। इसके अतिरिक्त जब भी वह बीना जाता था, निर्मल तथा उसकी माँ और लड़के के लिए भेंटस्वरूप बहुत कुछ देता रहता था।

अब निर्मल इस नवीन परिस्थिति से निकलने के उपाय पर विचार करने लगी थी। एक बार उसके मन में आया कि अपनी सास के पास जाकर वह सारा रहस्योद्घाटन कर दे। परन्तु इस योजना को वह व्यावहारिक और सफल होने योग्य न मान किसी अन्य उपाय पर विचार करने लगी थी।

वह यह भी विचार करने लगी थी कि वहाँ पर विवाह होने के प्रमाण एकत्रित करे अथवा प्रमाण निर्माण करे। उसमें कठिनाई यह थी कि सोम के जन्म के समय परिवार तथा सम्बन्धियों के सम्मुख किसी प्रकार का समारोह नहीं मनाया गया था। इस कारण साक्षी ढूँढ़ने कठिन थे।

इन सब समस्याओं पर विचार करती हुई वह वहाँ पड़ी थी। एकाएक उसके मन में विचार आया कि उस लड़की को ही विवाह से पीछे क्यों न हटा दे जिससे सागरचन्द का विवाह होने वाला है। यह योजना उसे पसन्द आई। वह उस लड़की से सम्पर्क उत्पन्न करने पर विचार करने लगी।

एक दिन साहस कर वह अपने लड़के को साथ लेकर उस लड़की से मिलने के लिए चल पड़ी।

नगर में पहुँच वह एक होटल में जाकर ठहर गई। वहाँ उसने होटल के एक बैरे द्वारा लड़की का पता लगाने का विचार बनाया। दिन के समय वह होटल से निकलना नहीं चाहती थी। अतः उसने किसी बैरे को भेजकर उसका पता करने का यत्न दिया।

उसको इस काम के लिए साधुराम नामक बैरा मिल गया। उसे कमरे में बुला उसने पाँच रुपए का नोट दिया और उसे सागरचन्द के घर का पता देकर यह जानने के लिए भेज दिया कि सागरचन्दजी का विवाह किस स्थान पर हो रहा है। उसने बैरे से कह दिया, "देखो, यदि तुम वहाँ के किसी नौकर को बिना बताए कि तुमको किसने भेजा है, ठीक-ठीक पता लगाओ तो दस रुपए इनाम दूँगी।"

बैरा गया और दो घंटे में पता ले आया। उसने कहा, "इंजीनियर साहब के ड्राइवर से सब पता ले आया हूँ। रामनारायण टंडन नगर के एक विख्यात और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनीमानी और व्यापारी आदमी हैं। वे सात नम्बर मालरोड पर रहते हैं। उनकी लड़की का नाम है सुशीला देवी। उसके साथ आगामी रविवार को विवाह होने वाला है।"

वह शुक्रवार का दिन था। निर्मल ने टैक्सी पकड़ी और टंडन साहब की कोठी पर जा पहुँची। सोम उसके साथ था। जब इसकी टैक्सी वहाँ पहुँची तो कोठी से सुशीला घर की गाड़ी में बाहर निकली। निर्मल की टैक्सी कोठी में जाने के लिए भीतर से आनेवाली मोटर को रास्ता देने के लिए खड़ी थी। निर्मल ने सुशीला को पहचान लिया। उसने टैक्सी ड्राइवर को सुशीला की मोटर का पीछा करने के लिए कह दिया।

उसने कहा, "देखो उस गाड़ी से कुछ पीछे रहकर चलो।"

सुशीला अपनी सहेलियों को अपने विवाह का निमन्त्रण देने के लिए जा रही थी। तीन-चार स्थान जो नगर में थे, वह वहाँ पहले गई और फिर वह नगर की चारदीवारी के बाहर गई। वहाँ अंजू को निमन्त्रण-पत्र देकर निकली तो निर्मल ने उससे साक्षात्कार करने का निश्चय कर टैक्सी मोटर के सामने खड़ी कर दी और स्वयं उसके घर से निकलने की प्रतीक्षा करने लगी।

सुशीला घर से निकली तो निर्मल टैक्सी से निकलकर उसके मार्ग पर खड़ी हो गई। सुशीला ने उसे पहचाना तो वह स्तब्ध खड़ी रह गई।

निर्मल ने कहा, "मैं आपकी कोठी पर आपसे मिलने गई थी। और वहीं से आपका पीछा कर रही हूँ। यहाँ आपको पकड़ पाई हूँ।"

"किसलिए पीछा कर रही हैं?"

"आपसे पाँच मिनट कुछ बात करना चाहती हूँ।"

"कहाँ?"

"जहाँ मैं ठहरी हुई हूँ।"

"कहाँ ठहरी हैं आप? इंजीनियर साहब के घर में?"

"नहीं, होटल मिनर्वा में।"

"मैं भी आपसे बात करना चाहती थी। कैसे चलेंगी?"

"मेरी टैक्सी में आ जाइए।"

"नहीं, टैक्सी को छोड़ दीजिए और मेरी गाड़ी में आ जाइए।"

वास्तव में सुशीला अंजू की माँ से यह सुनकर आई थी कि अंजू कहीं नौकरी करने लगी है। इससे वह यह समझी थी कि उसका भूषण से विवाह नहीं हो रहा। यह विचार आते ही उसे फिर उस दिशा से एक आशा की किरण-सी आती दिखाई देने लगी थी।

: २ :

सुशीला ने होटल में पहुँचकर निर्मल के कमरे में रखे एक सोफे पर उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने बैठते हुए उससे पूछा, "हाँ, क्या कहना चाहती हैं आप ?"

"मैंने आपको इंजीनियर साहब से अपने सम्बन्ध के विषय में बताया था। यह उनका लड़का है। इसका नाम सोमनाथ है।"

"परन्तु निर्मलजी ! आपका तो विधिवत् विवाह नहीं हुआ।"

"उससे क्या होता है। क्या उन्होंने इस लड़के का पिता होने से इनकार किया है।"

"ममी ने उनसे पूछा था और वे मान गए थे कि आपसे उनका एक लड़का है। मेरे सामने उन्होंने वचन दिया है कि आपको और लड़के को वे बीना में ही रखेंगे। मुझे यहाँ रहने देंगे।"

"परन्तु मेरे विवाह में तो ये ढोल-ढमाके और बाजे-गाजे तो नहीं हुए। इस कारण आप इस प्रकार विवाह कर मुझे और मेरे पुत्र को हमारे उचित अधिकार से वंचित कर देंगी। सुना है आपके पिता आर्यसमाज के नेता हैं। क्या अबला और निरीह बालक के नाम और अधिकार पर डाका डालने को वे धर्मसंगत मानेंगे ?"

"उनकी बात छोड़ो। वे इसको नीति मानेंगे। तुम मुझसे क्या चाहती हो ?"

"मैं कुछ नहीं चाहती। केवल यह बताना चाहती हूँ कि आप एक लाख रुपए के बल पर एक निर्धन विधवा की लड़की और नाती को पति के जीते-जी विधवा और अनाथ करने लगी हैं—"

निर्मल की आँखों में आँसू आ रहे थे। चार वर्ष का लड़का समीप खड़ा माँ की आँखों में आँसू ढुलकते देख रहा था। उसने माँ के घुटने हिलाते हुए पूछ लिया, "माँ ! क्या बात है, तुम क्यों रो रही हो ?"

इस बात से सुशीला का ध्यान लड़के की ओर आकर्षित हो गया। वह उसे देखने लगी। लड़का उसे बहुत ही भोला-भाला और सुन्दर दिखाई दिया। वह पर्याप्त सुघड़ भी था। इस लड़के को अनाथ करने की बात पर वह विचार करने लगी थी।

निर्मल ने लड़के के प्रश्न का उत्तर न देते हुए सुशीला से ही कहा, "देखो बहिन सुशीला ! तुम उनके मोह में कितना फँसी हो मैं नहीं जानती। मैं इतना जानती हूँ कि तुम्हारे पिताजी का रसूख, प्रतिष्ठा और धन तुम्हारे लिए अच्छे-से अच्छा प्रबन्ध करने की सामर्थ्य रखते हैं। इधर मैं हूँ। निस्सहाय, निर्धन और अभी भी इसके पिता के प्रेम-जाल में फँसी हुई। देख लो, न्याय और धर्म क्या कहता है।

"बस मैं और कुछ नहीं कह सकती।"

निर्मल मणि ने अपने हैंडबैग में से रूमाल निकाला और उससे अपनी आंखें और गाल पोंछने लगी।

वह उठकर बोली, "मैंने आपसे पाँच मिनट माँगे थे। वे पूरे हो गए हैं। अब आप जाइए और मैं अपने भगवान से प्रार्थना करूँगी कि वे आपके मन में दया का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव उत्पन्न करें।"

वह उठ खड़ी हुई। उसकी आँखों में अभी भी आँसू ढुलक रहे थे। सुशीला अभी बैठी थी और सोमनाथ माँ की टाँगों से चिपटा बैठा था।

सुशीला का मन भीतर-ही-भीतर बैठने लगा था, उसने उठते हुए कहा, "बहिन ! मैं तुमसे फिर मिलूँगी। तुम कब तक यहाँ रहोगी ?"

"मैं जिस काम से आई थी, वह समाप्त हो गया है। यहाँ केवल आपसे ही मिलना था।"

"नहीं, अभी ठहरो। मैं सायंकाल अथवा कल आकर तुमसे मिलूँगी।"

निर्मल मणि ने कुछ उत्तर नहीं दिया। सुशीला गम्भीर विचार में मग्न वहाँ से बाहर निकल आई।

उसके जाने के उपरान्त निर्मल मणि बैडरूम में चली गई। सोम उसके साथ था। वह बैडरूम में लेटकर विचार करने लगी कि अब क्या करना चाहिए। सोमनाथ कुछ न समझता हुआ पलंग के समीप खड़ा था। एकाएक निर्मल ने उसे उठाया और गले लगाकर फिर रोने लगी।

सोम ने फिर अपना प्रश्न दोहराते हुए पूछा, "माँ, क्या बात है ?"

निर्मल मणि इस चार वर्ष के बालक को समझा नहीं सकती थी कि क्या हो गया है अथवा हो रहा है। इस कारण विह्वल होकर रोते हुए उसने पुत्र को और भी कसकर अपनी छाती से लगा लिया। इस कारण अपने मन के उद्‌गार शान्त कर वह विचार करने लगी कि वह यहाँ से जाए अथवा सुशीला के कथनानुसार उसकी प्रतीक्षा करे। उस समय वहाँ ठहर सुशीला के मन की प्रतिक्रिया जानने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय उसे नहीं सूझा। अतः उसने सुशीला की प्रतीक्षा करने का निर्णय कर लिया।

जब वह कुछ और शान्त हुई तो उसने घंटी बजाई और जब घंटी सुनकर बैरा आया तो उसने उसको चाय लाने के लिए कह दिया।

उस दिन सायंकाल तो सुशीला आई नहीं। हाँ अगले दिन दस बजे के लगभग एक नौकर आया। उसने कहा, "सुशीलाजी कहती हैं कि वे कल नौ बजे तक आपसे मिलने के लिए आयेंगी। वे कल शाम से कुछ बीमार पड़ गई हैं।"

निर्मल इससे यह समझी कि उसके कथन का कुछ तो प्रभाव उस पर हुआ है। वह आशा और निराशा में होटल में ठहरी रही।

अगले दिन प्रातः पाँच बजे उसका द्वार खटखटाया गया। उस समय वह सो रही थी। खटखटाने का शब्द सुनकर उसकी नींद खुली तो वह उठकर द्वार तक गई। द्वार पर होटल का नौकर खड़ा था। निर्मल मणि ने उससे प्रश्न किया, "क्या बात है ?"

"कोई देवीजी आई हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मल ने द्वार के बाहर निकलकर देखा तो उसने पाया कि एक औरत दूसरी ओर मुँह किए खड़ी है और उसके साथ में एक नौकर-सा व्यक्ति हाथ में अटैची केस लिए हुए खड़ा था।

"आइए।" निर्मल ने कहा।

निर्मल के कहने पर वह औरत घूमी और उसने अपने मुख पर उँगली रखकर चुप रहने का संकेत कर दिया।

निर्मल ने उस घुसमुसे में समीप आने पर ही सुशीला को पहचाना। उसने उसकी मुख पर रखी उँगली को देख लिया था। अतः उसने नौकर से कह दिया, "सूटकेस भीतर रख दो।"

नौकर गया तो सुशीला को कमरे में बुलाकर उसने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया। फिर उसने उससे पूछा, "सुशीलाजी ! यह क्या है ?" उसने सूटकेस की ओर संकेत कर पूछा था।

"इसमें मेरे पहनने के कपड़े हैं। मैं घर से भाग आई हूँ। विवाह रोकने का अन्य कोई उपाय ही नहीं था।"

"तो विवाह रुकेगा ?"

"यहाँ से शीघ्र भागने का उपाय होना चाहिए। मैं अब इस स्थिति में पकड़ी जाना नहीं चाहती।

"मेरा नौकर जानता है कि मैंने कल आपसे यहाँ मिलने के लिए उससे कहलवाया था। वह बक सकता है और एक घण्टे के अन्दर-अन्दर मुझको यहाँ से पकड़कर ले जाया जा सकता है। यदि ऐसा हुआ तो फिर विवाह होगा ही।"

निर्मल मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचारकर बोली, "पर सुशीला बहिन ! तुम सख्त बदनाम हो जाओगी।"

"मेरी चिन्ता न करो। रुपया बकवास करने वालों का मुख बन्द कर सकता है।

"देखो निर्मल ! होटल वालों को कहो कि वह किसी टैक्सी का प्रबन्ध करें। मुझे कहीं बाहर जाना है।"

"ठीक है।"

निर्मल ने घंटी का बटन दबाया। वही नौकर जो सुशीला को छोड़ गया था फिर आया और पूछने लगा, "क्या बात है ?"

निर्मल ने कहा, "किसी टूरिस्ट टैक्सी वाले को बुला दो। और देखो तीन प्याले चाय ले आओ।"

"कहाँ जाना है साहब !"

"यहाँ से जम्मू और श्रीनगर।"

सुशीला अवाक् खड़ी थी। होटल के नौकर ने कहा, "होटल में ही एजेन्सी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं किसी ड्राइवर को बुला देता हूँ।"

"हाँ, जल्दी करो। हम ठंड-ठंड में कुछ दूर तक निकल जाना चाहते हैं।"

होटल का नौकर गया और पाँच मिनट में टैक्सी ड्राइवर आ गया।

होटल का नौकर समीप खड़ा था। निर्मल ने उससे कहा, "जाओ चाय का प्रबन्ध करो।"

निर्मल होटल के नौकर की अनुपस्थिति में बात करना चाहती थी। इसी कारण उसने नौकर को बहाने से बाहर भेज दिया।

नौकर के जाने के बाद निर्मल ने ड्राइवर से कहा, "हम अभी आगरा जाना चाहते हैं। बताओ चल सकोगे?"

"वहाँ से लौटना भी होगा?"

"नहीं।"

"तो जाने का आठ आना प्रति मील और खाली लौटने का चार आना प्रति मील। आगरा यहाँ से एक सौ उनतालीस मील है। एक सौ पाँच रुपया टैक्सी का और दस रुपए ड्राइवर की रोटी-पानी आदि खर्चे के।"

सुशीला ने कहा, "ठीक है। कितनी देर में टैक्सी आ जाएगी।"

"दस मिनट में।"

"ठीक है, ले आओ।"

वह जाने लगा तो निर्मल ने कहा, "होटल वालों को बताना नहीं कि हम कहाँ जा रहे हैं।"

ड्राइवर मुस्करा दिया और बोला, "ठीक है, मैं आ रहा हूँ।"

अभी तक चाय नहीं आई थी। निर्मल ने जल्दी-जल्दी बिस्तर बाँधकर रख दिया।

सोमनाथ को जगाया गया। इतने में चाय आ गई। सोमनाथ को चाय पिला-कर चुस्त किया गया।

जिस समय टैक्सी आई उस समय सवा छः बजे थे। उसी समय वे होटल से निकल गए। आगरा पहुँचकर वे लोग ताज होटल में गए और वहाँ कमरा किराए पर ले, अपना बिस्तर आदि रख जब चैन से बैठे तो निर्मल ने सुशीला से पूछा, "आगे का क्या कार्यक्रम है?"

सुशीला ने उससे ही पहले पूछ लिया, "आप अब कहाँ जा रही हैं?"

"मैं तो बीना जा रही हूँ।"

"मैं भी वहाँ तक आपके साथ चलूँगी। वहाँ जाकर फिर आगे के विषय में निश्चय करूँगी।"

"तो सायंकाल रेलगाड़ी से चलेंगे। पेसेंजर गाड़ी तीन बजे चलकर रात के बारह बजे बीना पहुँच जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है।"

यद्यपि भविष्य अभी अन्धकारमय था, फिर भी मुसीबत की घड़ी एक बार तो टल ही गई थी।

वे लगभग दस बजे आगरा पहुँच गई थीं। खाना खाकर कुछ आराम कर मध्याह्नोत्तर ढाई बजे के करीब वे स्टेशन के लिए चल दीं।

बीना पहुँचकर सुशीला रात को वहीं रही। अगले दिन उसने बम्बई का टिकट लिया और वहाँ के लिए चल दी। बम्बई पहुँच उसने मैरीन ड्राइव पर ग्रीन होटल में कमरा ले लिया।

एक सप्ताह तक तो उसने मौन साधन ही उचित समझा। और जब सप्ताह बीत गया तो उसने अपनी माँ को एक पत्र लिख दिया। उसने लिखा—"माताजी ! मैं पिछले एक सप्ताह से बम्बई में ग्रीन होटल में कमरा नम्बर सात में ठहरी हुई हूँ। कहो तो मैं लौट आऊँ अन्यथा एक सहस्र रुपया भेज दो।"

उस पत्र का परिणाम यह हुआ कि पत्र भेजने के तीन दिन के भीतर ही रामनारायण टण्डन और उसकी पत्नी कान्ता देवी बम्बई आ पहुँचे। होटल में टिक कर स्नानादि से अवकाश पा चाय आदि पीने लगे तो कान्ता देवी ने पूछ लिया, "अब क्या कार्यक्रम है ?"

"मैं इण्टर तक पढ़ी हूँ। समझती हूँ कि मैं कॉलेज में भरती हो जाऊँ और एम० ए० कर लूँ।"

रामनारायण हँस पड़ा। हँसते हुए पूछने लगा, "और फिर ?"

"इसमें कम-से-कम चार वर्ष लग जाएँगे। और इतने आगे की बात मैं अभी कैसे बता सकती हूँ।"

"देखो सुशीला ! तुमको कॉलेज में भरती होने की आवश्यकता नहीं। कॉलेज की पढ़ाई का तुमको कुछ भी लाभ नहीं होगा। कदाचित् तुम उसके योग्य भी नहीं हो।

"वापस घर लौट चलो और वहाँ एकाउण्टैंट का कार्य सीख लो। टाइपिंग सीख लो तो और भी ठीक है। यह सब करने के बाद मेरे कार्यालय में मेरे आय-व्यय का हिसाब रखने का कार्य सँभाल लो।"

इस पर सुशीला गम्भीर हो गई। उसे प्रतीत हुआ कि यह कार्य तो नीरस है। कार्यालय में नित्यप्रति निरन्तर मक्खियाँ मारते रहना उसे एक अति कठिन-सा कार्य प्रतीत हुआ।

एकाएक उसने अपनी माँ की ओर देखा और फिर पूछने लगी, "मेरे घर से चले आने का ग्रोवर-परिवार पर क्या प्रभाव हुआ है ?"

"विवाह के दिन मैंने प्रमिलाजी को फोन किया था। उसने बताया कि उनके घर के प्राणी विवाह पर आने के लिए तैयार हो रहे हैं। और जब मैंने तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लापता होने की बात बताई तो वह बहुत दुःख प्रकट करने लगीं। इसके उपरान्त प्रमिला और उसके पति घटना का वृत्तान्त जानने के लिए आये थे। प्रमिला का कहना था, "सुशीला अभी सात वर्ष की बच्ची ही प्रतीत होती है। उसको अभी बड़ी होने दीजिए। जब मन का विकास हो जाएगा तभी उसका विवाह करना ठीक रहेगा।"

"पिछले रविवार को भूषण का उसी ईसाई लड़की से विवाह हो गया है। वे आजकल कहीं भ्रमण के लिए गए हुए हैं।"

भूषण के समाचार से तो सुशीला का मुख विवर्ण हो गया। उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर पूछ लिया, "घर कब तक चलोगी ?"

उत्तर में उसके पिता ने उससे पूछा, "यह तो तुम बताओ कि तुम घर कब चल रही हो।"

"मैंने तो माँ को लिखा था कि यदि ये कहें तो मैं लौट आती हूँ। नहीं तो एक सहस्र रुपया मासिक का यहाँ खर्च है। वह भेज दिया जाय।"

"किसलिए भेज दिया जाय।"

"आप मेरे विवाह पर एक लाख रुपया व्यय करने वाले थे। इतना तो उसका ब्याज ही बनता है।"

"अब मैं विचार करता हूँ कि विवाह पर भी मैं इतना खर्च क्यों कर रहा था। अंजू के पिता ने तो एक पैसा भी खर्च नहीं किया। विवाह ग्रोवर की कोठी पर हुआ था और सुना है कि सब कुछ उन्होंने ही व्यय किया है।"

"भूषण इस विवाह से प्रसन्न था ?"

"प्रसन्न ही प्रतीत होता था। अपने मित्रों तथा सहयोगियों के साथ खूब हँसी-मजाक कर रहा था। शेष तो उसके भ्रमण से लौटकर आने पर पता चलेगा।"

"तो मैं वापस चलूँगी।"

"कब ?"

"जब आपका लौटने का मन हो।"

"मैं अभी स्टेशन जाकर सीट के विषय में पता करता हूँ। जिस दिन की सीट मिलेगी उसी दिन चल देंगे।"

: ३ :

घर पहुँचने के कई दिन बाद भूषण को सुशीला का स्मरण हो आया और उसने उसका समाचार जानने के लिए टंडन साहब को फोन किया। फोन पर टंडन साहब ही मिले, उसने उनको नमस्ते करने के बाद कहा, "मैं भ्रमण से लौट आया हूँ। कहिए, सुशीला का कोई समाचार मिला है ?"

"वह तो घर पर है। वास्तव में वह सागरचन्द से विवाह करना नहीं चाहती थी और यहाँ विवाह की तैयारी हो चुकी थी। इस कारण उसको घर से भाग जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही विवाह से मुक्ति पाने का उपाय प्रतीत हुआ।"

"मैं समझता हूँ, अपने जीवन में उसने एक तो बुद्धिमत्ता का काम किया है। सागरचन्द से उसका विवाह कभी भी सुखकारक नहीं सिद्ध होता। सुना है उसकी पहली पत्नी अब उसके घर में आकर रहने लगी है?"

"हमने तो यह सुना था कि उसका उसके साथ विधिवत् विवाह नहीं हुआ था।"

"वह अब हो जाएगा। मुझसे वह पूछ रहा था कि क्या करना चाहिए।"

"तो क्या बताया तुमने?"

"मैंने बता दिया कि कोर्ट में जाकर विवाह कर लेना चाहिए।"

"वह मान गया है?"

"यह बात मानने की यदि उसके मन में किंचित् भी अभिलाषा होती तो यह विवाह आज से कई वर्ष पहले हो चुका होता।"

"यह क्या हो रहा है भूषण जी?"

"मैं तो कुछ यह समझ रहा हूँ कि वर्तमान स्कूलों और कॉलेजों की शिक्षा मन और बुद्धि में चंचलता उत्पन्न करने वाली सिद्ध हो रही है।"

"पर तुम और तुम्हारी पत्नी में यह चंचलता क्यों नहीं आई?"

"जब कोई बात सामान्य व्यवहार से विलक्षण हो तो हमारे शास्त्र कहते हैं कि वह अदृश्यों के कारण होती है। अदृश्य का अभिप्राय है पूर्वजन्म के कर्म।"

टण्डन इस शास्त्र की बात को समझ नहीं सका। उसने कह दिया, "अच्छा, कभी तुम से मिलूँगा।"

"मैं इस रविवार को अपने कुछ मित्रों को चाय-पान पर आमन्त्रित कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सपत्नीक आयें और साथ में सुशीला को भी लाइए। मैं इस अवसर पर अंजू का परिचय कराना चाहता हूँ।"

"निमन्त्रण-पत्र भेज देना। हम आने का यत्न करेंगे।"

भूषण को इस बात का सन्तोष था कि सुशीला कम-से-कम सागरचन्द के पंजे से बच गई है।

सायंकाल अपने नियत रेस्टोराँ में चाय पीते हुए भूषण ने अंजू से कहा, "मैंने अपने कार्यालय से सुशील के पिता को फोन किया था। उनसे विदित हुआ कि सुशीला सागरचन्द से विवाह से बचने के लिए ही घर से भागी थी। अब वह लौट आई है।"

"रविवार की पार्टी में उसको भी बुला लीजिए।"

"आज उसको तथा साथ ही उसके माता-पिता को भी निमन्त्रण-पत्र भेज दूँगा।"

"मुझे उस पर दया आती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि उससे सम्पर्क बनाकर उसको सन्मार्ग दिखा सको तो तुम्हारा तो कल्याण होगा ही, साथ ही वह भी इस कठोर परिस्थिति से निकलने में समर्थ होगी।"

"मेरा क्या कल्याण होगा ?"

"तुम यह कार्य निःस्वार्थ भाव से करोगी और उस स्थिति में तुम्हारा यह कर्म यज्ञरूप माना जाएगा। यज्ञ-कर्म मोक्ष दिलाने वाले होते हैं। इसके साथ ही सब प्रकार के यज्ञों में ज्ञान यज्ञ की महिमा और प्रभाव अधिक श्रेष्ठ है। किसी को सन्मार्ग दिखाना तो ज्ञान यज्ञ ही माना जाएगा।"

"आप भी खूब हैं। प्रत्येक बात को दार्शनिक दृष्टि से देखने लगते हैं।"

"देखो अंजू! भारतीय दर्शनशास्त्र में यही तो श्रेष्ठता है। वह मनुष्य और विश्व को एक कड़ी में पिरोया हुआ ही मानता है। व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राष्ट्र, विश्व का मानव समाज और फिर सूर्य, चन्द्र, तारागण, अभिप्राय यह है कि सकल ब्रह्माण्ड एक ही ईश्वरीय नियम के अधीन चलते हुए सिद्ध किए जाते हैं। अतः जो नियम मनुष्य की छोटी-से-छोटी गतिविधि में कार्य करता देखा जाता है वह ही सूर्य, चन्द्र, तारागण इत्यादि का भी संचालन करता है।

"यही कारण है कि जब मैं इस व्यापक नियम, जिसे दर्शनशास्त्र में धर्म समझा जाता है, को जान गया हूँ तो मेरे सामने पूर्ण ब्रह्माण्ड एकाएक सरल, सुगम्य-सा यन्त्र दिखाई देने लगा है।"

"और वह व्यापक धर्म क्या है ?"

"वेद के प्रथम मन्त्र में ही यह बताया है कि परमात्मा अग्निस्वरूप है और वह अपने इस स्वरूप से पुरोहित बन इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को यज्ञरूप में निर्माण करता है। अर्थात् इस जगत् की रचना में परमात्मा का अपना कुछ भी स्वार्थ नहीं। वह कर्म-बन्धन में से जीवों को मुक्ति प्राप्त करने का अवसर देने के लिए ही इस यज्ञ का सम्पादन कर रहा है।"

"और भगवद्गीता में लिखा है कि परमात्मा ने यज्ञ से ही इस सृष्टि की रचना की है। अतः सब प्राणियों को वैसा ही करना चाहिए। जो अपने जीवन को यज्ञ-रूप नहीं बनाता, वह पाप कमाता है।"

अंजू मुस्करा रही थी। इससे भूषण ने अनुमान लगाया कि यह बात उसकी समझ में नहीं आई है। उसने पूछ लिया, "तो तुमको इस बात में कुछ सन्देह है ?"

"बहुत भारी। वर्तमान युग के दार्शनिकों का सिद्धान्त है कि मनुष्य जो कुछ भी करता है अपने स्वार्थ के लिए करता है। इस कारण जब भी किसी मनुष्य से कुछ काम कराना हो तो उसका स्वार्थ उस काम के साथ जोड़ दिया जाय तो वह काम सुगमता से हो जाता है।

"देखिए, मैं उदाहरण देती हूँ। मेरे लापता होने की रिपोर्ट लिखाने के लिए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप थाने में गए थे। आप कहते हैं कि थानेदार को अनुकूल करने के लिए आपको एक ही दिन में डेढ़ सौ रुपया उसको देना पड़ा। क्या इससे यह अर्थ नहीं निकलता कि आपने अपने कार्य में थानेदार का स्वार्थ जोड़ दिया तो आपका कार्य सम्पन्न हो गया।

"तो यदि हम भी अपने स्वार्थ को परमात्मा के कार्यों में जोड़ देते तो हमारे कार्य सिद्ध हो सकते हैं। इसका अर्थ यह भी निकलता है कि जब परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की थी तो अपने किसी स्वार्थ के लिए ही की थी।"

भूषण इस लम्बी विवेचना को मन्त्रवत् सुनता रहा। वह अंजू के युक्ति करने के ढंग पर विचार कर रहा था। जब अंजू बात समाप्त कर चुकी तब भी भूषण उसके सुन्दर मुख पर देखता रहा था। वह विचार करता रहा था कि क्या तुलना है इस बुद्धिशील प्राणी की उस मूढमति सुशीला से। उसे स्मरण नहीं आ रहा था कि उसके साथ कभी भी जीवन की इन गहराइयों के विषय में डुबकी लगाई हो।

फिर भी वह अंजू की युक्ति को ठीक नहीं समझता था। जब अंजू ने भूषण को उसका मुख देखते हुए पाया तो वह बोल उठी, "तो यह ठीक है न कि संसार में प्राणी स्वार्थरत हैं और संसार में रहने का सहज उपाय ही यह है कि सबके स्वार्थों का समन्वय करते चले जाओ।"

आखिर भूषण ने गम्भीर होकर कहा, "देखो अंजू! तुमने तो वही बात कही जो मैंने कही थी। जिसको तुमने स्वार्थ कहा है, उसी को मैंने 'सर्व हिताय' कहा है। मनुष्य को सबके हितों का समन्वय करते हुए कार्य करना चाहिए। इसी को यज्ञ कहते हैं। केवल एक बात तुमने कही है, जिससे यह प्रतीत होता है कि तुमने कर्म करने वाले का विचार तो किया ही नहीं। परन्तु कर्म से लाभ प्राप्त करने वालों की ओर ध्यान करने लगी हो।

"देखो, मैं उसी थानेदार वाली बात की विवेचना करता हूँ। पिताजी ने तुम्हें छुड़ाने के लिए डेढ़ सहस्र रुपये के लगभग व्यय किया था। और मिशन के कार्यालय में पुराने दिनों से कार्य करने वाले मिश्रजी को लगभग पाँच सौ रुपये मूल्य का एक दुशाला भेंट में दिया है। इस प्रकार यह रकम लगभग दो सहस्र के लगभग जा पहुँची है। उस समय यह निश्चय नहीं था कि तुम छूट भी जाओगी अथवा नहीं। साथ ही तुम्हारे साथ मेरे विवाह की योजना भी बिलकुल अन्धकार में डूब चुकी थी। इस पर भी कार्य तो करना ही था और वह किया गया। इस विचार से कि न्याय और धर्म का पलड़ा ऊँचा रखना चाहिए। इसकी स्थापना से सब भले पुरुषों का कल्याण होगा। इसमें किस-किस का स्वार्थ सिद्ध हुआ, यह कर्म करने वाले के विचार का विषय नहीं है।

"हमें इस यज्ञ से तो तुरन्त लाभ हो गया है। यह लाभ अप्रत्याशित ही था। ऐसा तो प्रायः यज्ञों में होता है। उस दिन ऊपर के कमरों में रहने के लिए जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समय हमने हवन किया था। तुमने कहा था कि उससे चौबीस घंटे तक मधुर सुगन्धि कमरों में भरी रही है। यह उस हवन यज्ञ का तत्कालीन लाभ था। उसके अतिरिक्त दूरगामी लाभ भी हुआ है। चौबीस घंटे तक और कदाचित् उससे भी अधिक काल तक हम पौष्टिक, स्वास्थ्यप्रद वायु का सेवन करते रहे थे। उसका शरीर पर दूरगामी लाभ होगा।

"इसी प्रकार तुमको छुड़ाने का भी एक तो दूरगामी लाभ हुआ है। ह्यूबर्ट भारत से भाग गया है। मिशन के केन्द्रीय कार्यालय के लोग सावधान हो गए हैं। पिताजी ने तुम्हारा बयान गृहमन्त्री को दिखाया है। उसके मस्तिष्क में आर्य-समाजियों के विषय में भ्रम का कुछ तो निवारण हुआ है।

"रही बात थानेदार और जेवियर के स्वार्थ को अपने अनुकूल करने की। यदि उन्होंने यह कार्य शुद्ध स्वार्थ के लिए ही किया था तो पाप के भागी वे होंगे। वह पाप भी हमारे यज्ञ की भाँति तुरन्त और दूरगामी प्रभाव उत्पन्न करने वाला होगा। उसका प्रभाव पापमय ही होगा। जो भी उस प्रभाव में आयेगा, वह स्वयं और देश को संकट में डालने वाला ही होगा।"

"तो क्या सब कर्म यज्ञ-रूप किए जा सकते हैं?"

"यज्ञरूप का सम्बन्ध तो भावना से है। कर्म करते हुए उसमें लोक-कल्याण की भावना बनाने से यज्ञ का लाभ होता है।"

अंजू ने मुस्कराते हुए परन्तु आँखें मूँदकर पूछ लिया, "और जो व्यवहार आप नित्य रात मेरे साथ करते हैं, वह भी क्या यज्ञ-रूप ही है?"

भूषण हँस पड़ा। वह बोला, "है तो। परन्तु इसकी विवेचना तो कर्म करते हुए ही की जाए तो ठीक है।"

चाय समाप्त हो चुकी थी। दोनों हँसते हुए बाहर निकल आये और मोटर में भ्रमण को चल पड़े।

: ४ :

सुशीला को उसके पिता ने "उसी दिन घर लौटकर बताया, आज भूषण का टेलीफोन आया था।"

सुशीला और उसके समीप बैठी उसकी माँ, कान्तादेवी यह बात सुन सतर्क होकर रामनारायण टण्डन का मुख देखने लगीं। रामनारायण ने आगे कहा, "वह तुम्हारे आने के विषय में पूछ रहा था। जब मैंने बताया कि तुम विवाह से बचने के लिए घर से चली गई थीं तो वह कहने लगा कि तुमने जीवन में कम-से-कम एक काम तो बुद्धिमत्ता का किया है।"

"बताओ ममी!" उसने अपनी माँ की ओर देखकर पूछ लिया, "अब क्या कहती हो? तुम तो कहती थीं कि मैंने घर से भागकर जीवन-भर की भूल की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्ता ने कहा, "हाँ, यह भूल न होती यदि अंजू की भाँति तुम्हारे स्वागत के लिए कोई भूषण खड़ा होता।"

टण्डन साहब कहने लगे, "वह कहता था कि यह कॉलेज-स्कूल की शिक्षा का ही प्रभाव है कि आजकल के नवयुवकों में चंचलता बढ़ती जाती है। मैंने उससे पूछा कि उसके और अंजू के मन में स्थिरता क्यों है, और शिक्षा से चंचलता क्यों नहीं आई?

"वह कहने लगा कि जब सामान्य से विलक्षणता दिखाई दे तो समझ लेना चाहिए कि यह मनुष्य के अपने अदृश्यों के कारण हुआ है। अदृश्यों से उसका अभिप्राय पूर्वजन्म के कर्मों से था।"

कान्ता ने कह दिया, "कुछ तो बात है। नित्य आर्यसमाज में पूर्व-जन्म के कर्म की बात सुनते रहते हैं। परन्तु उस ओर कभी किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। हम सदा वर्तमान के पुरुषार्थ से निर्माण करने में लीन रहते हैं।"

"यही तो मेरे साथ हुआ है। सुशीला बोल उठी, "दस दिन तक बम्बई में अकेली पड़ी-पड़ी मैं यही विचार करती रही हूँ। अंजू पर संदेह से पूर्व जीवन सुखद और सुलभ चल रहा था। एकाएक अंजू और भूषण में मेल-मुलाकात की सूचना मिली और मैं चल पड़ी अपने भाग्य को सुधारने के लिए। मैं अब विचार करती हूँ कि मैं निराधार ही भड़क उठी थी। अनिल की बात की परीक्षा मुझे स्वयं करनी चाहिए थी अथवा उसके अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति से करवानी चाहिए थी। मैं निराधार ही कल्पना के घोड़े दौड़ाने लगी थी।

"झगड़ा करने से बहुत पहले एक बार भूषणजी ने कहा था, 'सत्य आधार पर कल्पना भी ठीक हो सकती है। आधार की परीक्षा बहुत यत्न और ध्यान से करनी चाहिए'।"

कान्ता ने बात बदल दी और कहा, "तो अब किस आधार पर कल्पना कर रही हो? और वह आधार सत्य है क्या?"

"अभी तो कोई आधार मिला नहीं है। सत्य और मिथ्या का निर्णय तो मिलने पर ही किया जा सकता है।"

इस पर टण्डन साहब ने पूछ लिया, "तो तुम भूषण का निमन्त्रण स्वीकार कर लोगी?"

"मैं समझती हूँ कि मैं स्वयं उनसे मिलकर उनको बधाई दूँ। फिर उनका निमन्त्रण स्वीकार करने अथवा न करने का विचार होगा।"

"कहाँ मिलोगी?"

"यों तो अब उनके घर भी जा सकती हूँ। परन्तु मैं जानती हूँ कि वे अंजू के साथ सायंकाल सवा पाँच और साढ़े पाँच बजे के करीब एक रेस्टोराँ में चाय पीने के लिए जाया करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब फिर कान्ता बोल पड़ी, "घर पर क्यों नहीं जाती ? मैं भी तो उसके माता-पिता को बधाई देने के लिए जाना चाहती हूँ।"

"हाँ चलो। पर ऐसे समय पर चलना होगा जब दोनों नव दम्पती घर पर ही मिलें।"

"यह तो प्रातःकाल के समय ही हो सकता है। दिन में तो भूषण काम पर चला जाता होगा।"

"तो ममी ! कल प्रातःकाल सात बजे चली चलो।"

"ठीक है।"

अगले दिन प्रातः दोनों माँ-बेटियाँ प्रेमनाथ ग्रोवर की कोठी पर जा पहुँचीं।

कोठी के भूमि-भाग पर निर्मित कमरों में से एक कमरा आजकल यज्ञशाला के रूप में प्रयुक्त होने लगा था। यह वही कमरा था जहाँ विवाह से पूर्व भूषण सोया करता था। कान्ता और सुशीला कोठी में पहुँचीं तो उस कमरे में से शान्ति-पाठ की ध्वनि आ रही थी। सुशीला ने कहा, "मालूम होता है परिवार सन्ध्योपासना कर रहा है।"

घर की नौकरानी उनको उस कमरे में ले गई जहाँ वे बैठे थे। अंजू भूषण के बगल में बैठी थी। प्रेमनाथ और प्रमिला एक ओर बैठे थे। एक ओर पन्द्रह वर्ष की एक लड़की बैठी थी। यह मेरी थी। वह अंजू के साथ रहने के लिए आ गई थी।

बात यह हुई थी कि अंजू ने माँ की अनुपस्थिति में मेरी और सिलविया को पिता के घर में रहने के लिए कह दिया था, परन्तु एक दिन उनकी माँ नोरा अचानक घर लौट आई।

सायंकाल की चाय और अल्पाहार हो रहा था। पीटर बैंक से आ चुका था। द्वार खुला ही था और नोरा भीतर आकर पूछने लगी, "क्या मैं भी आ सकती हूँ ?"

"ममी !" लड़कियाँ एकाएक माँ को देख कुर्सियों पर से उठ खड़ी हुईं। पीटर ने देखा और बोल उठा, "यह अब खुदा का घर हो गया है। खाने के समय किसी को भी इन्कार नहीं हो सकता।"

"तब तो ठीक है।" इस समय तक सिलविया माँ की बगल में बाँहें डालकर उसको बैठा चुकी थी।

माँ के बैठने पर उसने पूछा, "माँ ! कहाँ गई थीं ?"

"जहन्नुम में।"

जहन्नुम का नाम सुनते ही दोनों लड़कियाँ मुख देखने लगीं।

पीटर ने बैठे-बैठे ही एक प्लेट और प्याला नोरा के सामने रख दिया। सिलविया ने दो उबले अण्डे माँ की प्लेट में रखकर दे दिए। साथ ही मक्खन डबल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोटी के टोस्ट बनाकर दे दिए।

सब खाने लगे। नोरा ने अण्डा छीलते हुए पूछ लिया, "अंजू कैसी है?"

"मैं कल उससे मिलने के लिए गई थी।" मेरी ने कहा, "बहुत मजे में मालूम होती है।"

"तो अपने पति के घर में है?"

"हाँ।" पीटर ने कहा, "जिस दिन वह हनीमून से लौटी थी मैं उससे मिलने के लिए गया था। उसने एक नई बात सीखी है।

"सब बड़ों को हाथ जोड़कर और झुककर नमस्कार करती है। मुझे भी उसने झुककर प्रणाम किया।"

"तो वह हिन्दू हो गई है।"

"मैंने उससे इस विषय में पूछा था। वह कहने लगी कि बड़ों के पाँव छूने से कोई हिन्दू नहीं हो जाता। ये सब रीति-रिवाज की बातें हैं जो देश और समुदाय से सम्बन्ध रखती हैं।"

"बड़ी अजीब लड़की है। उस दिन विवाह से पूर्व मिनर्वा में खाना खाते हुए कह रही थी कि वह हिन्दू है क्योंकि उसका जन्म हिन्दुस्तान में हुआ था और आज वह कहती है वह हिन्दू नहीं है।"

"देखो नोरा! उसने मुझसे यह नहीं कहा कि वह हिन्दू नहीं है। उसके कहने का केवल यह अभिप्राय था कि बड़ों के चरण-स्पर्श करने से कोई हिन्दू नहीं हो जाता। अर्थात् यह हिन्दू होने के अतिरिक्त बात है।

"उसका कहना था कि यह मानव धर्म है। जब मैं इसका अभिप्राय नहीं समझ सका तो उसने बताया, 'एक भद्र महापुरुष हुए हैं। उन्होंने एक 'कोड आफ लाइफ' अर्थात् जीवन-चर्या की पुस्तक लिखी है। उसमें संसार के मनुष्यों के लिए बातें लिखी हैं। उसमें ही यह लिखा है कि जब बड़ों से मिलो तो माता-पिता के चरण छुओ, भाई और मित्रों को हाथ जोड़ नमस्कार करो और अपने से छोटों को आशीर्वाद दो।"

"न जाने यह लड़की कहाँ से ये सब बातें सीख रही है?"

"उसके श्वशुर के घर में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है। उसकी सास नित्य तीन घंटे उन पुस्तकों को सुनती और मनन करती है। अंजू उसको पढ़-पढ़कर सुनाया करती है। इससे वह स्वयं भी सीख रही है।"

"वह तो गई।"

"माँ मैं भी जाऊँगी।" मेरी ने बात बीच में काटकर कहा।

"कहाँ?"

"सिस्टर के पास रहने के लिए।"

"तो निकल जाओ अभी। सिलविया तुम बताओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ममी ! मैं तो अगले मास विवाह कर रही हूँ।"

"सत्य ! कहाँ ?"

"एक है, किसी दिन दिखा दूँगी।"

मेरी अपनी चाय समाप्त कर अपने कमरे में गई और अपनी पढ़ने की पुस्तकें एकत्रित करने लगी। सिलविया माँ के कमरे में जा अपने होनेवाले पति का परिचय देने लगी। पीटर ड्राइंगरूम में अपने दो सप्ताह के शान्त जीवन में पुन: इस हलचल के परिणामों पर विचार कर रहा था।

वह विचार कर रहा था कि अवश्य ही फर्नेंडिस ने इसे बैरंग ही वापस कर दिया है। इस बूढ़ी स्त्री को सबके द्वारा अपने घर पर रखने से इन्कार होने पर यह लौट आई है।

वह अपने भविष्य के विषय में विचार करने लगा था। सिलविया ने एक साधारण कर्मचारी से विवाह करना स्वीकार कर लिया था।

और थोड़े ही दिनों में उसके इस घर से चले जाने की सम्भावना थी। मेरी अपनी बहिन के पास जाने वाली थी। उसका इस घर से चला जाना वह भी पसन्द करता था।

तब…तब…तब वह इस औरत के पास अकेला रह जाएगा। यह शराब पीकर बदमस्त पड़ी रहेगी अथवा उसके साथ झगड़ा किया करेगी और जीवन दूभर हो जाएगा।

वह इस प्रकार के विचार में बैठा भविष्य की मुसीबतों की कल्पना कर रहा था कि नोरा सिलविया के साथ निकल आई।

आते ही उसने पूछ लिया, "तो आपने इस लड़की को अपने पति के निर्वाचन पर आशीर्वाद दे दिया है।"

"हाँ मैडम।"

यह मैडम शब्द नोरा से दूर हो जाने का सूचक था। यह उसके अन्तर्भावों का ही प्रतीक था।

नोरा स्वयं को 'मैडम' कहा जाता सुन मुख देखती रही, आखिर बोली—"तो मैं मैडम रह गई हूँ।"

"नोरा ! प्रभु का धन्यवाद करो कि मेरे मुख से इससे भी अधिक दूरी प्रकट करने वाला कोई शब्द नहीं निकला।"

"और क्या कह देते ?"

"फिर किसी समय बताऊँगा। अब तो यह बातचीत का विषय नहीं है। सिलविया ने जेवियर के लड़के जोन को पसन्द किया है। वह किसी कारखाने में लेथ पर काम करता है। इस समय उसको तीन सौ रुपया मासिक वेतन मिलता है। मैं इसे अन्ना के पति, रेल के गार्ड, से अच्छा निर्वाचन समझता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर जेबियर तो महा गुण्डा है। पूर्ण समुदाय उससे घृणा करता है।"

"ठीक है। परन्तु यह तो जोन से विवाह कर रही है। उसके पिता से नहीं।"

नोरा कुछ कहने ही वाली थी कि मेरी अपने कमरे से बाहर निकल आई। उसने बाहर जाने के वस्त्र पहन रखे थे। उसने आते ही कहा, "पापा! मैं जा रही हूँ।"

"कहाँ?" नोरा ने अपनी बात का ध्यान छोड़कर उससे पूछ लिया।

"सिस्टर के पास रहने के लिए।"

"बिना उससे पूछे ही?"

"उससे और उसके पति से पूछ चुकी हूँ। उन्होंने कहा है कि मैं उनके घर रहने के लिए आ सकती हूँ।"

"तो क्या तुम मुझको किसी छूत की बीमारी समझती हो?"

"ममी नहीं।"

"तो मेरे आते ही भाग क्यों रही हो?"

"मैं सिस्टर से भी अधिक पढ़ूँगी। एम० ए० पास करूँगी। सिस्टर का कहना है कि वह सब इस घर में सम्भव नहीं।"

नोरा मुख देखती रह गई। वह इस बात की वास्तविकता को समझती थी। उसकी दो लड़कियों ने अपने पिता से कम पढ़े-लिखे के साथ विवाह कर लिया था। यदि अंजू ने अपने पिता और अपने से अधिक योग्य लड़के से विवाह किया है तो उनकी स्वीकृति के बिना ही किया है। नोरा अभी इस बात को समझ रही थी कि पीटर ने कह दिया, "चलो, मैं तुम्हें छोड़ आता हूँ।"

वह उठा तो मेरी प्रसन्न हो चल पड़ी। ड्राइंगरूम से निकलती-निकलती वह लौट आई और बोली, "ममी! गुड बाई।"

"गुड बाई। तो तुम मुझे कभी नहीं मिलोगी?"

"मिलूँगी तो सही। पर जल्दी-जल्दी मिलना नहीं हो सकेगा। जब मिलूँगी तब गुड मौर्निंग कह दिया करूँगी।"

इससे तो नोरा के मुख पर भी मुस्कराहट आ गई। मेरी अपने कमरे में गई और एक हाथ में पुस्तकों का वण्डल और एक हाथ में कपड़ों का सूटकेस उठाये हुए निकल आई। पीटर सड़क पर खड़ा टैक्सी देख रहा था।

टैक्सी तो मिली नहीं। हाँ ताँगा मिल गया और बाप-बेटी दोनों उसमें बैठकर ग्रोवर साहब की कोठी पर जा पहुँचे।

तब से मेरी अंजू के साथ कोठी की ऊपर की मंजिल में उस कमरे में जो बच्चों के लिए रिक्त रखा हुआ था, रहने लगी थी।

यह मेरी के अंजू के घर आने के दो दिन बाद की बात है जब सुशीला और कान्ता ग्रोवर साहब की कोठी पर आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में कान्ता देवी अब अपनी पुत्री सुशीला को लेकर मित्रों और सम्बन्धियों के घरों में जाना चाहती थी। सुशीला के घर से भाग जाने और उसके विवाह रुक जाने से जो बदनामी हुई थी उसको धोने के प्रयास में यह सब था। सुशीला को भी कुछ समझ में आने लगा था। वह समझ रही थी उसके विचार करने में कहीं भूल है। और उस भूल को ढूँढ़ निकालने तथा उसकी पुनरावृत्ति होने से बचने के लिए वह जीवन में सफल व्यक्तियों से मेल-जोल पैदा करना चाहती थी। सुशीला को यह समझ में आया था कि अंजू से सम्पर्क उत्पन्न करना चाहिए कि कैसे वह भूषण पर अपना प्रभाव जमा सकी है। वास्तव में उसकी दृष्टि एक अन्य की ओर गई थी और वह उस दिशा में विचारों को परिमार्जित करना चाहती थी।

माँ-बेटी हवन समाप्त होने पर पहुँचीं। प्रमिला ने उन दोनों को देखा तो तुरन्त उठकर दोनों हाथों से सुशीला को पकड़कर कमरे में ले गई और हवन कुण्ड के समीप ले जाकर बैठा दिया। अंजू सुशीला को जानती थी। इस कारण समझ गई कि उसके साथ आने वाली उसकी माँ होगी। उससे दोनों को हाथ जोड़ नमस्ते कही तो कान्ता ने उसकी पीठ पर हाथ फेरकर उसको प्यार किया। और कहने लगी, "तो तुम हो घर की बहू !"

उत्तर प्रमिला ने दिया, "जी यह अंजू है। हमने इसका नाम अंजना रख दिया है।"

"और यह कौन लड़की है ?" कान्ता ने मेरी की ओर संकेत कर कहा।

"यह मेरी बहू की छोटी बहिन है। यह बहिन के पास रहने के लिए आई हुई है।"

"हम तो प्रमिला बहिन ! आपको बधाई देने के लिए आये हैं। भूषण की नौका तो पार लगी। सुशीला बेचारी अभी मंझधार में ही भटक रही है।"

"हाँ, क्या हुआ था सुशीला ! घर से भाग क्यों गई थीं ?"

इस समय अंजू सबको यज्ञ के प्रसाद-स्वरूप प्लेटों में हलवा डाल-डालकर देने लगी। उसने सुशीला और उसकी माँ के लिए भी दो प्लेट लगा दीं।

"हम तो अल्पाहार करके आये हैं। इतनी सुबह उठने का प्रयोजन यह था कि भूषणजी और भाई साहब भी घर पर ही मिल जाएँगे।

"विवाह के दिन तो हम आ नहीं सके थे। सुशीला ने तब तक अपना ठिकाना नहीं बताया था और हम चिन्ता में थे। परसों सुशीला बम्बई से लौटी है और आज हम बधाई देने के लिए आ पहुँचे हैं।"

अंजू ने हलवा उनके सामने रखते हुए कहा, "माताजी ! यह तो यज्ञ का प्रसाद है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता।"

"ओह ! तो तुमको भी इसका ज्ञान हो गया है।"

अंजू उत्तर में केवल मुस्करा-भर दी। सब हलवा खाने लगे। नौकर सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए दूध ले आया। सबसे पहले मेरी उठकर अपने कमरे में चली गई। वह अपने स्कूल जाने की तैयारी में थी। उसके उपरान्त प्रेमनाथ ने उठते हुए कान्तादेवी को हाथ जोड़ दिए और कहा, "आप आई हैं। मुझे इससे बहुत प्रसन्नता हुई है। अब सुशीला के लिए घर-वर ढूँढ़ना हमारा कर्तव्य हो गया है। मैं टंडन साहब से मिलूँगा।"

उधर सुशीला, भूषण और अंजू को बता रही थी, "मैंने आपको एक दिन बताया था कि यह सागरचन्द बहुत बुरा आदमी है। तब तो मेरा अनुभव ही था। परन्तु बाद में उसकी बदमाशी के प्रमाण मिलने लगे। विवाह से एक दिन पूर्व मुझे उसकी पत्नी और लड़के के दर्शन हुए। बस उसी समय मेरा विवाह रोकने का निश्चय पक्का हो गया। इसके लिए घर से चला जाना ही उचित प्रतीत हुआ।"

"गई कहाँ थीं?"

"बम्बई में ग्रीन होटल में मजे से रहती हुई मैरीन ड्राइव की सैर करती रही हूँ।"

"और अब?"

"अब अंजू बहिन से कुछ शिक्षा लेने का निश्चय कर लिया है।"

"खैर, दिन-भर का भटका प्राणी रात को भी घर लौटकर आ जाए तो गनीमत ही समझनी चाहिए।"

इस समय कान्ता देवी ने एक हाथी दाँत की माला जिसमें कुछ दाने सोने और मोतियों के थे भेंट में अंजू को देते हुए कहा, "देखो बेटा अंजू! इसे पहन लो। भगवान् तुम्हें दीर्घकाल तक सौभाग्यवती रखे।"

भूषण उठा तो सुशीला भी उसके साथ-साथ उठकर पूजागृह से बाहर निकल आई। दोनों ड्राइंग-रूम में आ गए।

वहाँ नोरा और पीटर बैठे थे। भूषण ने उनको देखा तो आगे बढ़कर हाथ जोड़ नमस्ते करते हुए कहा, "आप लोग यहाँ कबसे बैठे हैं?"

"अभी-अभी आये हैं। आपके चपरासी ने कहा कि आप लोग पूजा कर रहे हैं। इसलिए हम प्रतीक्षा करने के लिए यहाँ बैठ गए।"

"ममी! सुनाइए, आपका स्वास्थ्य कैसा है?"

"स्वास्थ्य तो ठीक है पर तुमने हमारे घर में लूट मचा दी है।"

"मैं आपका आशय समझा नहीं।"

तब तक सब बैठ गए थे। सुशीला समझ गई थी कि ये अंजू के माता-पिता हैं। वह रुचिपूर्वक इनसे भूषण के व्यवहार का निरीक्षण करने लगी।

"भूषण!" नोरा ने उलाहना देते हुए कहा, "एक को बीवी बनाकर ले आये हो और दूसरी को साली।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं ममी ! साली नहीं, बहिन। घर में कोई बहिन नहीं थी न? इस कारण जब मेरी ने यहाँ आने की इच्छा प्रकट की तो माताजी ने कहा, पली-पलाई लड़की मिल रही है। इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है?

"वे तैयार हो गईं। अब मेरी अपना अधिकांश समय अपनी पढ़ाई में व्यय कर सकती है।"

"पर हमारा घर तो सूना हो गया है। सिलविया का हम अगले मास विवाह कर रहे हैं।"

"सत्य ! यह तो बहुत ही भला काम कर रही हैं आप। पापा ने हमें बताया नहीं।"

पीटर ने मुस्कराते हुए कहा, "देयर आर मेनी ए स्लिप्स बिटवीन द कप एण्ड लिप्स। सो भूषण जी ! जिस दिन वह पति के घर जाएगी उसी दिन इसकी बधाई स्वीकार करूँगा।"

"तो यह भी बात है।"

"हाँ, बेल मढ़े चढ़ेगी तब ही जानूँगा। जब लड़के-लड़कियाँ अपने मन से निश्चय करने लगते हैं तो प्याला होंठों तक पहुँचने से पहले भी छूट सकता है।"

"पर पापा ! अंजू ने भी तो यही कुछ किया है। और मैं समझता हूँ कि वह बड़े-बड़े घूँटों में दूध पी रही है।"

अब तक अंजू को समाचार मिल चुका था कि उसके माता-पिता उससे मिलने के लिए आये हुए हैं। वह अपनी सास के पास से उठकर बाहर आ गई।

अंजू ने जब माँ के चरणस्पर्श किए तो नोरा ने कह दिया, "क्यों अंजू ! बड़े-बड़े घूँटों में दूध पी रही हो?"

अंजू इसका अर्थ नहीं समझी। उसने साधारण-सा उत्तर देते हुए कहा, "नहीं ममी।"

नौकर दो ग्लासों में नोरा और पीटर के लिए दूध ले आया। अंजू का वाक्य समाप्त हो गया था। उसने ग्लास अपनी माँ की ओर बढ़ाते हुए कहा, "लो ममी ! गरम है। छोटे-छोटे घूँट से पीना।"

"तो पी लूँ।" नोरा ने प्रश्नभरी दृष्टि से अंजू की ओर देखकर पूछ लिया।

पीटर तो पहले भी एक-दो बार खा-पी गया था। वह दूध लेकर पीने लगा। अंजू ने अपनी माँ से कहा, "घर की गाय का दूध है। ममी, दूध को मना करना अपशकुन माना जाता है।"

: ५ :

अंजू माँ को अपने और मेरी के रहने का स्थान दिखाने ऊपर की मंज़िल पर ले गई। भूषण, सुशीला और पीटर नीचे ड्राइंग-रूम में बैठे रह गए।

ऊपर की मंज़िल पर पहुँच नोरा ने मेरी को पुस्तकों की थैली हाथ में लटकाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए अपने कमरे से निकलते देखा तो आवाज़ लगा दी, "मेरी।"

"ममी ! तो तुम यहाँ भी आ गई हो ?"

"क्यों न आती यहाँ ? तुमसे मिलने को जी किया तो चली आई हूँ।"

"पापा से कहलवा देतीं, मैं वहीं चली आती। अब तो मेरी स्कूल बस का समय हो गया है। अच्छा मैं सायंकाल आऊँगी। अभी तो जा रही हूँ।"

इतना कहकर वह नीचे भाग गई।

अंजू माँ को अपने कमरे में ले गई। कमरा और कोठी को देखकर तो नोरा को सन्तोष हुआ। इसको उसने बाहर प्रकट नहीं होने दिया। वह देखकर चुप रही और फिर ऊपर की मंज़िल पर बनी बैठक में दोनों जा बैठीं।

"अब बताओ अंजू ! क्या देखा है तुमने यहाँ ?"

"देखो ममी ! यहाँ शराब, सिगरेट, मांस, मछली और अण्डा इत्यादि नहीं खाये-पीये जाते। परमात्मा की नित्य पूजा होती है और हम अपना समय पढ़ने-लिखने में व्यतीत करते हैं।

"मध्याह्न के समय माताजी बाजार जाती हैं तो मुझको साथ ले जाती हैं और मेरी ही सम्मति से खरीद करती हैं।

"घर का वातावरण बहुत शान्त है। इतने दिन में मैंने किसी को लड़ते नहीं देखा।"

"शराब पीना तो मैं भी छोड़ रही हूँ।"

"सच ममी !"

"हाँ तुम्हारे पिता कह रहे थे कि उसी के कारण मेरी मति सदा भ्रष्ट रहती है।"

अंजू हँस पड़ी और कहने लगी, "पापा ठीक कहते हैं।"

"तुम क्या इनकी पूजा-पाठ भी करने लगी हो ?"

"ममी ! शराब छोड़ने के छः मास बाद तुम कुछ समझ सकने की स्थिति में आ जाओगी। अभी तो तुम्हारे कथनानुसार ही तुम्हारी अक्ल ठीक काम नहीं कर रही है।"

"तुम इतना बता तो कि वहाँ पूजा के कमरे में क्या करती हो ?"

"वहाँ पूजा होती ही नहीं। वास्तव में यहाँ तो कोई भी पूजा नहीं करता। यहाँ तो आत्मशुद्धि होती है। ममी ! मेरे श्वशुर तो परमात्मा अथवा खुदा किसी को भी मानते नहीं हैं। पर वे भी वहाँ बैठे अग्नि में घी और सामग्री डाला करते हैं।"

"यही तो पूजा है।"

"नहीं ममी ! पूजा तो होती है जब परमात्मा की तारीफ की जाए और फिर उससे धन-दौलत माँगी जाए अथवा कोई अन्य आराम और भोग की बात माँगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए।"

"तो वहाँ क्या होता है।"

"वहाँ हम विचार करते हैं कि हमारी अक्ल ठीक काम करे। हमारे आँख, कान, नाक, हृदय, पेट, बाँहें और टाँगें ठीक-ठीक काम करें। हमारा मन और आत्मा ठीक काम करें।

"फिर हम विचार करते हैं कि हम धनवान हों और फिर उस धन को भले कामों में व्यय करें। संसार में कोई दुखी न हो, ऐसा भी हम विचार करते हैं।"

"यही तो गिरजाघर में भी कहा जाता है। हाँ, वहाँ हम कहते हैं—और जगत पिता जो सातवें आसमान पर है हमको आज की रोटी दे और सुख तथा आराम दे।"

अंजू हँस पड़ी और बोली, "यहाँ हमारे घर वाले और उनकी माताजी तो ऐसा ही कहते हैं। मगर ये भी कहते हैं कि परमात्मा इस प्रकार कहने से खुश नहीं होता और उसका नाम न लेने से वह नाराज़ नहीं होता।"

"तो फिर नाम लेते क्यों हैं ?"

"इसलिए कि उसने इस जगत् को बनाकर हम सबका भला किया है, उसको ऐसा जानकर हम भी सबका भला करें। उसमें बहुत अच्छे-अच्छे गुण हैं और उसे ऐसा देख हम भी अच्छे बनें। वैसे यह भला-बुरा श्रेष्ठ और नीच जो कुछ भी हम बनते हैं अथवा करते हैं अपने करने से ही बनते करते हैं।"

"यही तो हम ईसाई मानते हैं।"

"पर मम्मी ! ये कहते हैं कि ईश्वर प्रभु सातवें आसमान पर नहीं हैं। वह हमारे पास, हमारे भीतर-बाहर सब जगह हैं।"

"तो वह हमको बुरा काम करने से मना क्यों नहीं करता।"

"भले लोग खुद भले बनकर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे न तो लम्बे-चौड़े उपदेश देते हैं न ही किसी की डाँट-डपट करते हैं।

"पर ममी ! एक बात तो यहाँ आकर और पता चली है। वह यह कि बाइबल की पुरानी पुस्तक में बहुत-सी बातें सत्य और नवीन विज्ञान के अनुसार लिखी हैं।"

"यह तो है ही।"

"पर तुम तो जानती नहीं थीं। अभी तो तुम कह रही थीं कि परमात्मा सातवें आसमान पर रहता है।"

"और ये लोग क्या कहते हैं ?"

"ममी ! ये तो कहते हैं कि परमात्मा ही सब जगह पर जगत् के परमाणु-परमाणु में रहता है। यह तो हम सातवें खाने में छिपकर बैठे हैं। हम उनको तोड़ कर बाहर निकलते ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बात एक ही नहीं है क्या ?"

"है तो एक ही, पर समझने का अन्तर है। वह हमसे दूर नहीं। हम उससे छिपकर बैठे हुए हैं। जरा आँखें खोलो तो वह हमारे पास ही दिखाई देने लगता है। समीप होने से उसे फरिश्तों की आवश्यकता नहीं पड़ती।

"पर ममी ! मेरे श्वशुर तो परमात्मा को मानते ही नहीं। और वे भी पूजा-गृह में जाते हैं। वे कहते हैं कि वहाँ जाने से और केवल चिन्तन करने से उनकी बुद्धि निर्मल और तेज हो जाती है। और वे प्रत्येक कठिनाई को पार कर उस पर सफलता प्राप्त कर लेते हैं।"

"और बाप-बेटा आपस में लड़ते नहीं ?"

"बाप-बेटा की बात तो इतनी विचित्र नहीं। यहाँ तो पति-पत्नी भी इस बात पर लड़ते नहीं।"

"तो किस बात पर झगड़ते हैं ?"

"अभी इतने दिनों में मेरे सामने तो केवल एक दिन एक बात पर बहस हुई थी। मेरी सास ने कहा, 'हमारे घर बहू आ गई है। इस कारण कुछ दान-दक्षिणा देना चाहिए।'

"श्वशुर बोले, 'मैंने कन्या पाठशाला को पाँच सौ रुपया दिया है।'

"सास कहने लगीं, 'यह तो कम है। कम से कम इस अवसर पर पाँच सहस्र देना चाहिए था।"

"श्वशुर मुख देखते रह गए। एकाएक वे मेरे मुख की ओर देखकर पूछने लगे, 'क्यों बहू ! तुम क्या कहती हो ?'

"मैंने कहा, 'यदि आप बिना कष्ट के इतना दे सकें तो दे दीजिए।'

"दे तो मैं इससे भी अधिक सकता हूँ।"

"तो और ज्यादा दे दीजिए।"

"वे कहने लगे, 'मैं इस समय सुगमता से दस सहस्र दे सकता हूँ।'

"फिर वे कहने लगे, 'अच्छा प्रमिला बताए कि वह उन साढ़े चार सहस्र का कहाँ दान करवाना चाहती है। तथा तुम यह बताओ कि वह पाँच सहस्र कहाँ दान करूँ।'

"यह सुनकर मेरी सास कहने लगी, 'पिछले वर्ष मैं ऋषिकेश गई थी। वहाँ एक स्थान पर नित्य पाँच सौ साधुओं को भोजन दिया जाता है। उनमें से कई अच्छे साधु भी हैं। मेरे विचार से कुछ रुपया वहाँ भेज दीजिए।'

" 'और बताओ।'

" 'वहाँ साधुओं के लिए एक पाठशाला भी है, जिनमें उनको वेद शास्त्र पढ़ाए जाते हैं। कुछ वहाँ दे दीजिए।'

"एकाएक मेरे श्वशुर मेरी ओर घूमकर पूछने लगे, 'और तुम क्या चाहती हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजना रानी !'

"मैंने कहा, 'मिशन में अंधे लड़के-लड़कियों का एक स्कूल है, वहाँ उनके योग्य पुस्तकों का सदा अभाव रहता है। आप इसके लिए कुछ दे दें तो मैं समझती हूँ कि बहुत कल्याण होगा।'

"मैंने तो यह बात बहुत डरते हुए कही थी। मिशन वालों ने मेरे साथ जो व्यवहार किया था वह सब उनको ज्ञात था। परन्तु उन बेचारे अपंग बच्चों की दशा देखकर मुझे सदा उन पर दया आती रहती है।

"मेरे श्वशुर ने उसी दिन मिशन को चिट्ठी लिख दी कि वे अन्धे बच्चों की किताबें तैयार करने के लिए पाँच सहस्र तक दान देने के लिए उद्यत हैं। मिशन किताबें बनवा-बनवाकर बिल उनके पास भेजता जाए। रुपया मिलता जाएगा।

"ममी ! सास-ससुर में तो अभी तक इसी प्रकार की बातों पर वाद-विवाद होता देखा है और श्वशुर अपनी पत्नी के सम्मोहन में इतने फँसे हैं कि वे उनकी बात को कभी टाल नहीं सकते।"

"और तुम्हारा घर वाला।"

"उनके सम्मोहन में तो मैं फँसी हुई हूँ। मैं उनकी किसी बात को नहीं टाल सकती।"

"देखो, प्रति रविवार गिरजाघर जाया करो।"

"वह तो हम आर्यसमाज में जाते हैं।"

"कभी वहाँ भी जाया करो।"

"उनसे कहूँगी। वे भी मेरे साथ ही जाएँगे।"

"मैं रेवरेंड फ्रांसिस से कह रखूँगी। वह तुम्हारे घर वाले से मिलेगा।"

"वहाँ गिरजाघर में अथवा हमारे घर पर?"

"मैं समझती हूँ कि घर पर ठीक रहेगा।"

नीचे ड्राइंगरूम में सुशीला, भूषण तथा पीटर बैठे थे। भूषण की माँ कान्तादेवी को अपने पुस्तकालय में ले गई थी। वह उसको बता रही थी कि अंजू के आने से उसे कितना लाभ हो रहा है। कान्ता को इन बातों में रुचि नहीं थी। वह अंजू के माता-पिता तथा उसकी छोटी बहिन की बातें पूछती रही। प्रमिला ने निस्संकोच पूर्ण स्थिति का वर्णन कर दिया। उसने कहा, "हमने घर में अंजू के घर से लापता हो जाने की बात पर विचार किया था। हमने इस सम्भावना पर भी विचार किया था कि उससे बलात्कार किया होगा। हम सब इस बात पर सहमत थे कि बलात्कार ने उसके मन एवं बुद्धि पर किसी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न नहीं किया। न तो उसके मन पर किसी प्रकार का दूषण उत्पन्न हुआ है, न ही हीन-भावना। अतः यही निश्चय किया था कि वह विवाहने योग्य है।

"वह अपनी अपहरण की घटना के उपरांत विवाह के लिए राजी नहीं होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उसको भय था कि हम उसका उचित आदर न कर सकेंगे। हमने उसे विश्वास दिलाया कि हम पाप का बीज मन में मानते हैं, शरीर में नहीं, शरीर से किया पाप मन के द्वारा ही आत्मा पर प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। और हम उसके मन को तो पवित्र मानते हैं। वह इस बात को समझी तो विवाह के लिए राजी हो गई। और फिर विवाह हो गया।"

"सुना है, वह माता-पिता के घर से कुछ भी नहीं लाई ?"

कान्तादेवी ने पूछ लिया।

"अपनी बीस-पचीस पढ़ने की किताबें और पहने हुए कपड़ों के अतिरिक्त वह कुछ नहीं लाई। उसके पिता ने विवाह से पहले ही हमको बता दिया था कि उनके पास देने के लिए कुछ नहीं है। भूषण के पिता कहते थे कि हमारे पास पहले ही पर्याप्त धन है, और लेकर क्या करेंगे। देखो कान्ता बहिन ! भूषण हमारी एक ही सन्तान है। अतः हमने उसके विवाह पर बीस हजार रुपया व्यय किया है। चार-पाँच के बीच लड़की के वस्त्राभूषण इत्यादि पर व्यय किया है। पाँच-छः के बीच हमने विवाह पर सजावट और खाने-पीने पर व्यय किया है। दस सहस्र के लगभग भूषण के पिताजी ने दान में दिया है।"

"अच्छा ? कहाँ-कहाँ दिया है ?"

"दान बताने के लिए नहीं किया जाता। इस कारण गुप्त ही है।"

कान्ता मुस्कराई। उसे इस बात पर विश्वास नहीं आया। प्रमिला यह बात जानती थी तो भी उसने भ्रम का निवारण नहीं किया।

: ६ :

ड्राइंगरूम में सुशीला अंजू के पिता पीटर से पूछ रही थी, "पापा ! आपके मज़हब में विवाह कैसे किया जाता है ?"

"मज़हबी बात तो इतनी है कि पति-पत्नी यदि बालिग हों तो गिरजाघर में अपना नाम रजिस्टर्ड करवा देते हैं। पादरी को यदि उनके कथन पर सन्देह हो तो वह जाँच करवा लेता है और फिर गिरजाघर की फीस लेकर विवाह की तिथि निश्चित कर देता है। लड़का-लड़की और दोनों परिवारों के लोग गिरजाघर में चले जाते हैं। वहाँ लड़के-लड़की के बयानों के नीचे सम्बन्धियों में से कुछ के हस्ताक्षर हो जाते हैं और विवाह में निष्ठा इत्यादि की बातें बताकर उनके पति-पत्नी होने की घोषणा कर दी जाती है।"

"और आपके समुदाय के संभ्रांत परिवारों का जीवन कैसा होता है ?"

"मैं तो कुछ धनवान हूँ नहीं। यद्यपि अपने समुदाय में मुझे अनेक पढ़े-लिखे लोगों में समझा जाता है। फिर भी धन-दौलत के विषय में मैं अपने समुदाय में नगण्य हूँ। हाँ, कभी-कभी किसी अच्छे परिवार में जाता हूँ तो देखता हूँ कि जीवन शांतिमय नहीं है। इसमें सबसे बड़ा कारण है, हम लोगों का जीवन-स्तर औसत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानियों से ऊँचा होता है। हमारे यहाँ बड़े होने की यह निशानी मानी जाती है कि घर में शराब का बजट कितना है, सिगरेट कितने के फूँके जाते हैं, हम सब प्रकार का भोजन खाते हैं। बीफ खाने को अच्छे परिवारों में फैशन माना जाता है। अण्डे, मुर्गी और मच्छी उनका प्रिय भोजन है।

"हम घरों में प्रायः अँग्रेजी बोलते हैं और हिन्दुस्तानी में बात करना ठीक नहीं समझते। यहाँ के रहने वालों का भोजन, वस्त्र और बोल-चाल तथा पूजा-पाठ की विधि घृणा की दृष्टि से देखी जाती है।"

"पर आप भी ऐसा ही करते हैं और मानते हैं?"

"देखो बेटी! मैंने बताया न कि मैं बहुत धनीमानी नहीं हूँ। मेरा वेतन पाँच सौ रुपया मासिक है और बैंक में ऊपर की आय नहीं होती। पाँच सौ रुपयों में से दो-ढाई सौ रुपया मासिक तो शराब पर ही व्यय होता था। फिर उस वेतन का सबसे बड़ा भाग टीपटाप के अन्य सामानों में व्यय होता था। यहाँ तक कि लड़कियों की पढ़ाई तक के लिए बचता नहीं था। अंजू तो मिशन से वजीफा पाती रही है। उस वजीफे में से ही उसने अपनी बहिनों की सहायता की थी। वह अभी भी अपनी सबसे छोटी बहिन मेरी को अपने पास रखे हुए है। जब वह नौकरी करती थी, अपने खाने-पीने का खर्चा भी देती थी।

"यह तो अंजू ने ही एक दिन मुझको समझाया था कि पाँच सौ रुपया मासिक में बड़े मजे में रहा जा सकता है। बहुत से फिजूल खर्च बन्द किए जा सकते हैं।

"उसने मुझे शराब पीने से मना किया है। मांस आदि खाना उसने व्यर्थ बताया। देशी ढंग की पोशाक पहनने के गुण भी बताए। मैंने अंजू के विवाह से बहुत पहले से ही इस दिशा में प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया था और अब मुझे उसमें लाभ प्रतीत होने लगा है।

"पिछले दिन मैं धोती-कुर्ता पहने बैंक में पहुँचा तो मेरे वहाँ के साथी मुझे देख-देखकर हँसने लगे। जब मैंने बताया कि गरमी के मौसम में कोट, पतलून, टाई, कॉलर वगैरा पहनते-पहनते ऊब गया था तो उनको विश्वास नहीं आया। और वे यह मानते रहे कि यह मेरे अपनी लड़की के हिन्दू के घर विवाहने का परिणाम है। मैंने यद्यपि उनको यह भी बताया कि मेरी लड़की के श्वशुर तो कोट-पतलून धारण करते हैं, और हैट भी लगाते हैं। परन्तु उनको विश्वास नहीं हुआ।

"सबसे विचित्र बात तो मैनेजर साहब ने की। वे मुझे अपने कमरे में बुलाकर कहने लगे, 'मिस्टर मैथ्यू! प्रोपर ड्रेस में आना चाहिए।'

"मैंने उनसे पूछ लिया, 'हजूर प्रोपर ड्रेस क्या होती है?'

"वे बोले, 'जो सब लोग पहनते हैं।'

"मैंने बताया, 'साहब! बैंक में आने वाले ग्राहकों में बहुसंख्यक तो यही पहनते हैं—जो मैं पहनकर आया हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"'सत्य ? परन्तु···' वे कुछ आगे कहना चाहते थे। परन्तु उस समय सेठ माणकचन्द मैनेजर से मिलने के लिए आ पहुँचा। वह कुरता, धोती और गांधी टोपी धारण किये हुए थे। मुझे ज्ञात था कि उसका बैंक-बैलेंस चालीस-पचास लाख से कम कभी होता ही नहीं। मैंने तुरन्त कह दिया, 'उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत है। हुजूर ! मैं भी इन जैसा धनी बनना चाहता हूँ।'

"मैनेजर आगे बात नहीं चला सके। सेठजी उनसे प्राइवेट बात करने आये थे। इस कारण मुझे छुट्टी मिल गई।

"देखो बेटी ! मुझे अंजू की बात पर व्यवहार करने में बहुत लाभ दिखाई देता है। इस मास मेरे पास डेढ़ सौ रुपए के लगभग बच गया है। अण्डों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार का मांसाहार मैंने त्याग दिया है। हमारे परिवार में एक दर्जन अण्डे प्रतिदिन लगते थे। अब वे भी कम कर दिये गए हैं। नोरा तो खाती है, मैंने कम कर दिए हैं। इस प्रकार तीस-चालीस रुपए की बचत तो एक ही मद में हो जाती है। सिगरेट पीना बन्द कर दिया है। इससे तीस रुपए मासिक की बचत होती है। शराब तो खरीदनी ही बन्द कर दी। सवा सौ, डेढ़ सौ रुपया मासिक बचत इसमें भी होने लगी है।

"मैं समझ रहा हूँ कि ये सेठ लोग कैसे धनी हो रहे हैं।"

सुशीला हँस पड़ी। हँसकर बोली, "पापा ! धनी होने का ढंग यह नहीं है। उसके लिए नौकरी छोड़कर व्यापार में आना होगा।"

"हाँ, यह मैं जानता हूँ। परन्तु बेटी ! व्यापार अथवा उद्योग बिना पूंजी के तो हो नहीं सकते। मैं पूंजी निर्माण करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"

भूषण उठ खड़ा हुआ और बोला, "मुझे कारखाने जाना है।"

"तो मोटर में जा रहे हो ?" सुशीला ने पूछ लिया।

"जी हाँ।"

"मुझे साथ ले चलिए। मैं आपसे बातचीत करने के लिए आई थी।"

"सायंकाल अपने निश्चित रेस्टोराँ में आ जाना।"

"नहीं, वहाँ अंजू होगी। मैं उसके सामने बात करना नहीं चाहती।"

भूषण विचार करता हुआ सुशीला का मुख देखता रहा। कुछ विचार कर उसने कहा, "और तुम्हारी माताजी !"

"वे अपनी मोटर में घर चली जाएँगी। मुझे आप अपनी कार में वापस भेज दीजिएगा।"

"अपनी माताजी से कह दो। वे कहीं यह न समझने लगें कि मैंने तुम्हारा अपहरण किया है।"

सुशीला हँस पड़ी। वह अपनी माताजी को ढूंढ़ने चली तो भूषण ने उसको बता दिया कि वे अध्ययन-कक्ष में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह किधर है ?"

भूषण ने उसे उस कमरे का मार्ग बताकर कहा, "यह नया बनाया है। पहले यह दावतों के लिए प्रयुक्त होता था।"

"अच्छा, कोठी का रिसेप्शन-रूम अब स्टडी-रूम बन गया है ?"

"हाँ।"

सुशीला बाहर गई और जाते ही अपनी माताजी से कहने लगी, "ममी ! मैं ज़रा भूषणजी के साथ उनके कारखाने तक जा रही हूँ।"

"वहाँ क्या है ?"

"वह आकर बताऊँगी। वहाँ से मैं सीधी घर पर ही पहुँचूँगी। आप अपनी कार में चली जाइए।"

पूर्व इसके कि माँ किसी प्रकार का उत्तर दे, वह स्टडी-रूम से बाहर निकल आई और भूषण के समीप आकर खड़ी हो गई।

"मिल गई छुट्टी ?"

"मैं उनकी बन्दिनी नहीं हूँ।"

भूषण के कारखाने में कार्यालय के कमरे में बैठते ही भूषण ने कहा, "हाँ तो अब बताओ। क्या जानना चाहती हो ?"

"मैं यह जानना चाहती हूँ कि अंजू से आपकी कैसे पट रही है ?"

"बहुत अच्छी पट रही है। अभी विवाह के तीन सप्ताह ही हुए हैं। जब दो-चार बच्चे हो जाएँगे, तभी तो मैं अनुमान लगा सकूँगा कि जीवन सरस और सुलभ हुआ है कि नहीं। देखो सुशीला ! अभी तो जीवन में वासना का राज्य प्रभावी है और जीवन की वास्तविकता बहुत कम है।"

"परन्तु वह आपके हवन, सन्ध्या और खान-पान में आपत्ति नहीं करती ?"

"इस पर तो मुझे विवाह से पहले ही विश्वास हो गया था। विवाह से पहले दो वर्ष से अधिक मैं नित्य उससे मिलता रहा था। और उसको जीवन के इन बाहरी कार्यों में अनुकूल बनाने का यत्न करता रहा था। मेरे सम्पर्क में जाने से पहले वह मद्य सेवन करती थी। मांस-मछली खाती थी, शृंगार पर बहुत व्यय करती थी।

"उन दिनों वह सिगरेट भी पीने लगी थी। जेब में पैसा नहीं था और वे सब व्यसन उसको लग रहे थे। यह माता-पिता के आचरण का अनुकरण करने का कारण ही था। मैंने उस समय उसको समझाना आरम्भ किया था। तब विवाह का विचार नहीं था। केवल उसके कल्याण के आधार पर ही समझा रहा था। वह मरुभूमि नहीं थी। उसका मन अति उर्वर सिद्ध हुआ। और वह मेरे बीज-रूप विचारों को हृदयंगम कर आचरण करने लगी।

"विवाह की बात तो बहुत बाद में हुई थी। तब भी तुम्हारे साथ वचनबद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, परन्तु उस समय तक वह कम-से-कम बाहरी आचरण से अनुकूल हो ही चुकी थी। जब तुमने सागरचन्द से विवाह करने का निश्चय किया तब ही मैंने उससे विवाह की बात की। परन्तु उसके अगले दिन ही उसका अपहरण हो गया।

"अभी आभ्यन्तरिक, मेरा अभिप्राय है अन्तःकरण और आत्मा से हुए सामंजस्य को जानने का अवसर नहीं मिला।"

सुशीला गम्भीर विचारों में मग्न हो गई। भूषण उसके मुख से उसके मन के भावों को जानने का यत्न कर रहा था। एकाएक सुशीला के मुख से निकल गया, "परन्तु ऐसा 'इनडॉक्ट्रीनेशन' (अनुकूलीकरण) का अवसर तो सबको मिलता नहीं।"

"क्या विचार कर रही हो सुशीला ?"

"यदि किसी को बताएँ नहीं तो एक रहस्य की बात बता सकती हूँ।"

"हाँ, यदि कोई पाप-कर्म नहीं होगा तो रहस्य की बात को गुप्त रखूँगा।"

"पाप-कर्म नहीं है। कम-से-कम मैं उसको ऐसा नहीं मानती। मैं घर से लापता होकर बम्बई गई थी, वहाँ एक होटल में ठहरी हुई थी कि एक युवक से परिचय हुआ। उससे विवाह की बातचीत होने लगी। वह ईसाई है।

"कल उसका पत्र आया है और उसने यहाँ आकर पापा से मुझको विवाह में माँगने का प्रस्ताव किया है। मैं निश्चय नहीं कर सकी कि उसे क्या लिखूँ ?"

"हाँ तो तुम मुझसे क्या जानना चाहती हो ?"

"यही कि मैं उससे विवाह स्वीकार करूँ अथवा नहीं।"

"तुम्हारा मन क्या कहता है ?"

"मन तो कहता है कि कर लूं। परन्तु मज़हब का अन्तर होने से मन डरता है।"

"मज़हब का विवाह से क्या सम्बन्ध है ? धर्म का तो है।"

"तो क्या ये दोनों बातें भिन्न हैं ?"

"तुमको क्या वह अन्तर दिखाई नहीं देता ? मज़हब कहते हैं मोक्ष प्राप्त करने के विधि-विधान को। कुछ लोग मोक्ष इसी पृथ्वी पर और इसी जन्म में मानते हैं। वे हैं जड़वादी। मार्क्सवादी भी इन्हीं में सम्मिलित किए जा सकते हैं। वे भी इस मोक्ष को प्राप्त करने का उपाय बताते हैं। इसी कारण ये भी 'इज़्म' माने जाते हैं। जैसे कम्युनिज्म, सोशलिज्म इत्यादि। ये ईसाइयत, इस्लाम, वैष्णवमत, बौद्धमत इत्यादि के समकक्ष हैं। इसीलिए मैं इनको विवाह में बाधक नहीं मानता।

"परन्तु कुछ हैं जो मज़हब को धर्म मानकर मज़हब की बातों में हस्तक्षेप करते रहते हैं। उनके इस व्यवहार से उनके मज़हब भी अमान्य हो जाते हैं। इसके उदाहरण दिए जा सकते हैं। एक ईसाई मज़हब है। इसमें हज़रत ईसा अपने भक्तों को मोक्ष दिलाता है। यद्यपि मैं ऐसा नहीं मानता। मेरे विचार में कोई बड़े-से-बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति भी किसी को मोक्ष नहीं दिला सकता। मनुष्य अपने आचार से ही स्वर्ग अथवा नरक पाता है और आचरण को मैं धर्म मानता हूँ। फिर भी मैं उस व्यक्ति को जो हजरत ईसा का आश्रय हो स्वर्ग पाना चाहता है, बुरा नहीं कहता। और उसके ऐसा होने से विवाह मानना चाहिए अथवा नहीं होना चाहिए व्यर्थ की बात मानता हूँ।

"परन्तु आचरण तथा धर्म की बात दूसरी है। इसका तो विवाह से घना सम्बन्ध है। उदाहरण के रूप में हमारे धर्म का सार है कि हम दूसरों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा अपने साथ किया जाना पसन्द करते हैं। जो ऐसा नहीं मानता उससे विवाह करना तो बड़ी बात है, मैं तो उससे व्यापार भी करना पसन्द नहीं करूँगा।

"अब अंजू की बात फिर कहता हूँ। दो-ढाई वर्ष तक मैंने उसको उसके मज़हब के विपरीत कुछ भी नहीं कहा। न ही उसको मज़हब बदलने के लिए कहा। हाँ, उक्त धर्म की व्याख्या उसके हृदयंगम कराता रहा हूँ। अब वह इस धर्म को मानती है। और जब तक हम इसके अनुसार आचरण करते रहेंगे हमारा दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा।"

सुशीला को विचारों की इतनी बड़ी मात्रा मिली थी कि वह इसको हजम करने में कठिनाई अनुभव करने लगी थी। इस कारण वह मुख देखती रह गई। उसे मौन खोई-खोई देख भूषण ने पूछ लिया, "और कुछ जानना चाहती हो सुशीला?"

"कह नहीं सकती। अभी तो आपने जो बातें कही हैं, उनको ही समझने का यत्न कर रही हूँ।"

"तो ऐसा करो। अब तुम जाओ। मेरी मोटर गाड़ी तुमको घर तक छोड़ देगी। यदि कुछ और जानने की बात होगी तो फिर किसी दिन मिल लेना। सायं-काल चाय के समय तो तुम सदा आमन्त्रित हो।"

: ७ :

सुशीला उसके बाद पुनः भूषण से मिलने के लिए नहीं आई। भूषण अपने काम में उसे भूल चुका था। उक्त वार्तालाप के एक मास उपरान्त उसको एक छपा कार्ड मिला।

कार्ड में लिखा था—

श्रीमान् भूषणकुमार टण्डन और श्रीमती अंजना को नीचे लिखे दम्पत्ति अपने शुभ विवाह पर आशीर्वाद देने के लिए आमन्त्रित करते हैं। विवाह दस अगस्त, सन् १९६६ को श्री सी० वाई० रानाडे मैजिस्ट्रेट के समक्ष सम्पन्न हो रहा है। आशीर्वाद के आकांक्षी : एन० वी० क्रिस्टो तथा मिसेज सुशीला क्रिस्टो।

कार्ड पर उनके घर बम्बई का पता लिखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे पढ़कर भूषण हँस पड़ा। इस बार उसको उसके बम्बई अथवा घर से बाहर तक जाने तक की भी सूचना नहीं थी। उसने कार्ड अंजू को दिखाने के लिए अपने थैले में रख लिया। उसने तुरन्त टण्डन साहब के घर पर टेलीफोन किया। टेलीफोन कांता ने उठाया।

भूषण ने कहा, "मैं भूषण हूँ। कौन बोल रहे हैं?"

"कांता।"

"माताजी, मुझे सुशीला के नाम से एक निमन्त्रण मिला है।"

"हाँ।"

"तो ठीक है वह?"

"जरूर ठीक है। उसे घर से गए तो बीस दिन से ऊपर हो चुके हैं।"

"तो आपको कार्ड नहीं मिला?"

"मिला है।"

"तो बधाई भेजनी चाहिए?"

"जैसा समझ में आये, करो।"

"आपको भी मैं बधाई देना चाहता हूँ। परन्तु जानता नहीं कि मन की प्रतिक्रिया क्या है?"

"कुछ नहीं। न प्रसन्न हूँ और न ही नाराज़।"

"तो भी माताजी! सुशीला देवी की एक मंज़िल तो पूरी हुई। ईश्वर करे इसी प्रकार जीवन की मंज़िलें पूरी करती हुई वह श्रेयस् की भागी बने।"

एकाएक कान्ता देवी ने टेलीफोन बन्द कर दिया। भूषण ने उससे यही समझा कि कान्ता देवी उसके आशीर्वाद से प्रसन्न नहीं हैं। कदाचित् वह मन से इस विवाह को पसन्द नहीं करती। जो कुछ भी हो, वह समझता था कि उसने अपने विचार से कुछ अनुचित नहीं कहा।

सुशीला के सब परिचितों और सम्बन्धियों को निमन्त्रण-पत्र आये थे। इस कारण प्रायः आमन्त्रित लोग नाराज़ थे। वे कान्ता देवी और रामनारायण टण्डन को टेलीफोन कर अपने मन के उद्गार और नाराज़ी प्रकट कर रहे थे।

इनमें से एक पत्र सागरचन्द और निर्मल मणि को भी आया था। कार्ड घर पर आया था। इस समय तक निर्मल मणि सागर के घर पर अपना स्थान प्राप्त कर चुकी थी। उसका लड़का सोमनाथ भी यहाँ आया हुआ था और नगर के एक बहुत महँगे नरसरी स्कूल में भरती हो चुका था।

सागरचन्द की माँ भी बहू के शील-स्वभाव और सेवा-भाव को देखकर सन्तोष कर चुकी थी।

सुशीला का कार्ड आया तो वह पढ़कर खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी सास सामने बैठी हिन्दी का एक समाचार-पत्र पढ़ रही थी। सौभाग्यवती स्त्री आर्यसमाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सदस्या थी। उसी नाते वह मिसेज टण्डन और उसकी लड़की सुशीला के सम्पर्क में आई थी और वह सुशीला से लड़के का विवाह करने का आग्रह करने लगी थी।

सौभाग्यवती ने निर्मल को हँसते देखा तो पूछ लिया, "बहू क्या है इस कार्ड में ?"

"आपकी होने वाली बहू सुशीला देवी ने वम्बई में एक मिस्टर ए० बी० क्रिस्टो से विवाह कर लिया है और अब वह आपके सुपुत्र और मुझसे आशीर्वाद माँग रही है।"

सौभाग्यवती को बात समझने में कुछ देर लगी। जब कुछ समझ में आया तो वह पूछने लगी, "तुम उसको कैसे जानती हो ?"

"माताजी ! सुशीला के प्रस्तावित विवाह से पहले मैं यहाँ तीन दिन के लिए आई थी। आप अपने भाई के घर गई हुई थीं। उन दिनों वह आपके पुत्र से मिलने के लिए दो बार आई थी। वे तो मिले नहीं घर पर वह मुझको मिली थी। जब उसने मुझे पूछा कि मैं कौन हूँ तो मैंने उसको बता दिया। वह अवाक् बैठी रह गई। बाद में इन्होंने बताया था कि उससे इनका विवाह होने वाला है। मैं आई तो थी कि आपको अपनी सेवा से प्रसन्न कर यहाँ रहने की स्वीकृति लूँ। परन्तु इनके विवाह के लिए राजी हो जाने पर मैं नाराज होकर यहाँ से चली गई थी।

"बाद में जब यह विवाह नहीं हुआ तो मुझे पता चला कि मेरा परिचय पाकर ही उसने विवाह को तोड़ा था। इसके पीछे मैंने फिर यहाँ आने का यत्न किया और आपने दया कर मुझे स्वीकार कर लिया है।"

निर्मल मणि ने यह नहीं बताया कि उसने इस विवाह को तोड़ने के लिए प्रयत्न किया था।

सुशीला के घर से भाग जाने पर ही निर्मल मणि अपने पति और सास को तथा उसका पुत्र अपने पिता एवं दादी को प्राप्त कर सका था।

: ८ :

अंजू अपने पति से पूछ रही थी, "आप आशीर्वाद भेजेंगे ?" उसी रात पति-पत्नी सुशीला के निमन्त्रण पर विचार कर रहे थे।

"अंजू !" भूषण ने अपने मन के भावों को प्रकट करते हुए कह दिया, "आशीर्वाद देना और किसी के कार्य को पसन्द करना दोनों पृथक्-पृथक् बातें हैं।"

"क्या आपको सुशीला का यह कार्य पसन्द नहीं ?"

"कह नहीं सकता कि इसे पसन्द करूँ अथवा नहीं। कारण यह कि उससे विवाह करने वाले को मैं जानता नहीं। इस कारण इस विषय में क्या कह सकता हूँ कि उसके इस कार्य को अच्छा समझूँ अथवा बुरा। परन्तु आशीर्वाद का अर्थ तो यह है कि परमात्मा से उसके भावी जीवन में ऋद्धि-सिद्धि की कामना करूँ। यह तो एक मानव का कार्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजू चुप रही। अगले दिन प्रमिला देवी ने हीरे की नगीने वाली एक अँगूठी का पार्सल बनवा अंजू को डाकखाने में बीमा कर भेज देने के लिए कहा। अंजू यह सुनकर मुख देखती रह गई।

प्रमिला ने उसके मन के भावों को समझते हुए कहा, "यह तो लेन-देन की बात है। उसकी माँ ने तुम्हें भेंट में एक माला दी थी। इस कारण मेरा उसको यह देना बनता ही है।

"आशीर्वाद का पत्र साथ में भेज रही हूँ।"

"और बधाई भी?"

"नहीं अंजू! मैंने उसे तथा उसके पति को यहाँ आकर इस घर में ठहरने का निमन्त्रण दे दिया है। यदि वह आई और मुझे उसका पति और दोनों का जीवन सुखी प्रतीत हुआ तो बधाई दे दूंगी।"

अंजू विचार करती थी कि माता और पुत्र में अधिक सामंजस्य है। पिता-पुत्र में समन्वय है, परन्तु सामंजस्य नहीं।

वह पार्सल ले डाकखाने में गई और दो सहस्र के बीमे पर बम्बई के लिए भेज कर आई। उसने अपनी ओर से भी एक पत्र सुशीला को लिख दिया और उसने अपने पति-सहित आने के अपनी सास के निमन्त्रण का समर्थन कर दिया।

इन दिनों बत्राजी आर्यसमाज के मन्त्री-पद पर आसीन थे। वे वही सज्जन थे जो प्रेमनाथ ग्रोवर के पक्ष में तब थे जब टण्डन साहब ने उनको प्रधान पद से निकाला था। बाद में वही टण्डन साहब के प्रधानत्व में मन्त्री-पद पर नियुक्त हो गए।

बत्रा को किसी ने बताया कि आर्यसमाज के प्रधान लाला रामनारायण टण्डन की लड़की ने घर से भागकर ईसाई युवक से विवाह कर लिया है। इस समाचार से उसे वे बातें स्मरण हो आईं जो टण्डन साहब ने ग्रोवर साहब के विरुद्ध प्रचार करते हुए कही थीं।

बत्रा साहब बहुत देर तक इस समाचार पर विचार करते रहे। वह यह जानने के लिए कि टण्डन साहब के इस सम्बन्ध में क्या विचार हैं, एक दिन सायं-काल के समय उनके घर जा पहुँचे।

बत्रा को आया देखकर टण्डन ने उनको कोठी के ड्राइंगरूम में बैठाया। चाय-पानी के विषय पर पूछकर फिर पूछने लगे, "समाज के किसी कार्य से आये हैं क्या?"

"जी नहीं। मुझे तो आज किसी ने आपकी लड़की सुशीलादेवी के विवाह के विषय में बताया है। इस कारण इस शुभ समाचार की बधाई देने न आने पर क्षमा माँगने आया था।"

"इसकी आवश्यकता नहीं थी। उसने यह विवाह हमारी रुचि के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया। हमने उसे बधाई नहीं भेजी।"

"हाँ, इस विषय में आपकी बदनामी तो खूब हो रही है।"

"क्या कह रहे हैं लोग ?"

"बाहर के लोग क्या कहते हैं यह तो मैं नहीं जानता। हाँ, आर्यसमाज के लोग तो आपसे सहानुभूति प्रकट करते हैं।"

"और आप वास्तव में मुझसे सहानुभूति प्रकट करने के लिए आये हैं ?"

"टण्डनजी ! सहानुभूति तो है ही। परन्तु यदि मैं अपने मन की सत्य बात बताऊँ तो मुझे इस विवाह से विस्मय नहीं हुआ। मैं कुछ इसी प्रकार की दुर्घटना की सम्भावना कर रहा था।"

"अच्छा ! भला क्यों ?"

"बात यह है कि आर्यसमाज कहो अथवा वैदिक धर्म कहो, इसमें ज्ञान-ध्यान की महिमा तो है परन्तु आचरण की कुछ अधिक महिमा नहीं मानी जाती। कर्म ही मोक्ष दिला सकता है, ऐसा आर्यसमाज मानता है। परन्तु क्षमा करें, आपके परिवार में बातों की महिमा को आचरण से ऊँचा समझा जाता था।"

टण्डन एक निर्धन व्यक्ति को अपने घर पर अपने पर ही टीका-टिप्पणी करता देख मन-ही-मन जल-भुन रहा था। परन्तु अपनी वर्तमान परिस्थिति का विचार कर वह चुप ही रहा।

मन्त्री ने आगे कह दिया, "मैं देखता था कि आपके परिवार में अंग्रेजी भाषा का प्रचार, 'ममी-डैडी' का चलन, विदेशी पहिनावा और पठन-पाठन का अभाव होना ही इस दुर्घटना का कारण बना है।"

"पर क्या तुम यह जानते हो कि यह दुर्घटना है ?"

"यह तो आपने भी स्वीकार किया है।"

आर्यसमाज के मन्त्री के विचार अधिकांश आर्यसमाजियों के विचार का प्रतिबिम्ब ही था। अतः वे सब लोग जो लगभग दो वर्ष पूर्व प्रेमनाथ ग्रोवर के विपरीत थे अब मिस्टर टण्डन के विपरीत हो गए। यह चर्चा होने लगी थी कि जिस सदस्य की लड़की पिता की अनुमति से ईसाई हो गई है वह आर्यसमाज का प्रधान नहीं रहना चाहिए।

मिस्टर बत्रा तो प्रेमनाथ के पक्ष का व्यक्ति था। आर्थिक दृष्टि से भी वह ग्रोवर से अधिक सम्बन्ध रखता था और टण्डन से कम। अतः अब वह टण्डन साहब का विरोध करने में सबसे आगे था। वह कहता फिरता था कि रामनारायण जी से जब उसने कहा कि यह दुर्घटना उनके परिवार में अंग्रेजी वेशभूषा और भाषा का परिणाम है तो वे कहने लगे कि यह दुर्घटना कैसे हो गई ?

बत्रा घूम-घूमकर सदस्यों को उक्त वार्तालाप का विवरण सुना रहा था। उसका कहना था कि टण्डन साहब की लड़की का एक ईसाई युवक से विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टण्डन साहब की इच्छा से हुआ है।

यह चर्चा भूषण और अंजू के कानों में भी पड़ी थी। भूषण यद्यपि आर्यसमाज का सदस्य नहीं था, तथापि वह साप्ताहिक सत्संग में जाया करता था। अंजना देवी भी उसके साथ जाया करती थी। अंजना को आर्यसमाज का वातावरण गिरजाघर से विलक्षण दिखाई देता था। गिरजाघर में प्रार्थना के समय वातावरण सर्वथा शान्त रहता था। आर्यसमाज में जब उपदेश अथवा प्रार्थना हो रही होती थी, लोग परस्पर बातें करते थे। भजनों के समय तो हो-हल्ला ही होने लगता था।

एक दिन अंजना ने दोनों स्थानों की तुलना करके बताया भी था कि वहाँ जाकर किसी प्रकार की शान्ति प्राप्त नहीं होती। भूषण ने अपने उन सत्संगों में जाने का प्रयोजन बताते हुए कहा, "जहाँ तक प्रार्थना का सम्बन्ध है, मैं सामूहिक प्रार्थना, उपासना में विश्वास नहीं रखता। इसी कारण मैं घर पर प्रार्थना कर लेता था। नित्य हवन, सन्ध्या हम घर पर करते हैं और तुम जानती हो ध्यान, धारणा और समाधि तो मैं घर वालों से भी पृथक् करता हूँ। यहाँ सत्संग में तो मैं उपदेश सुनने आता हूँ। उपदेश में शास्त्रों की चर्चा होती है और उसमें सीखने के लिए सदैव कुछ-न-कुछ रहता है।"

अंजना ने भी कुछ ऐसा ही अनुभव किया था। समाज के सत्संग में बाहर के उपदेशक आते रहते थे और उनमें कभी-कभी उच्चकोटि के विद्वान् भी आ जाते थे। इस प्रकार पति-पत्नी दोनों इन विद्वानों के उपदेशों से लाभ उठाया करते थे।

एक दिन वे आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में आये थे कि सत्संग के उपरांत मन्त्री श्री बत्रा ने इनके सामने आकर कहा, "भूषणजी! अब तो आपको पुनः आर्यसमाज का सदस्य बन जाना चाहिए।"

भूषण ने मुस्कराते हुए पूछा, "अब क्या बात हो गई है?"

बत्रा का कहना था, "आप सदस्य बनेंगे तो ये बहिनजी भी सदस्य बन जाएँगी और इसमें समाज की शोभा होगी।"

"पर मैं यह पूछ रहा हूँ कि समाज की शोभा के लिए मैं सदस्य क्यों बनूँ?"

"आप आर्यसमाजी हैं। इस कारण आर्यसमाज की शोभा बढ़ाना आपका कर्तव्य है।"

"क्या मैं आर्यसमाजी हूँ?"

बत्रा हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "मैं ऐसा समझता हूँ। अब तो आर्यसमाज के अन्य सदस्य भी यही समझने लगे हैं। टण्डनजी से आप अधिक आर्यसमाजी हैं।"

"नहीं, बत्राजी! वे आपके प्रधान हैं। भला उनसे बढ़कर इस नगर में कौन आर्यसमाजी हो सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम समझे हैं कि वस्तुस्थिति यही है। वह स्थिति नहीं है जो हम दो वर्ष पूर्व समझ रहे थे।"

"पहले आप क्या समझ रहे थे जो अब नहीं समझ रहे?"

"आपके पिताजी को समाज के सदस्यों ने प्रधानपद से हटा दिया था। वह इसलिए कि वे परमात्मा को नहीं मानते थे और सदा सबके समक्ष अपने मत का प्रदर्शन करते रहते थे। परन्तु अब सब सदस्य समझने लगे हैं कि आपके पिताजी परमात्मा को न मानते हुए भी परमात्मा में अधिक विश्वास रखते हैं और टण्डन साहब परमात्मा पर श्रद्धा-भक्ति रखने की डुग्गी पीटते हुए भी परमात्मा पर विश्वास नहीं रखते।"

"सत्य। यह सदस्यों ने कैसे जाना है?"

"देखिए, भूषणजी! जब से मैं मन्त्री बना हूँ, मैं टण्डन साहब के घर प्रायः नित्य जाता हूँ। उनके घर में न सन्ध्या होती है, न हवन। उनके घर में आर्यसमाज का साहित्य भी नहीं रखा हुआ। आपके घर में सन्ध्या, हवन, पठन, पाठन तो होता है और फिर आपके पिताजी दान-दक्षिणा में भी टण्डनजी से पीछे नहीं। इस वर्ष भी उन्होंने आर्यसमाज और अन्य सहायक संस्थाओं के लिए दो सहस्र रुपये से ऊपर दान दिया है।"

"देखिए, बत्रा साहब! मैं इन बातों को आर्यसमाज में होने अथवा न होने के लक्षण नहीं समझता। एक बात मैं जानता हूँ कि पिताजी मानव अधिक हैं और टण्डनजी के घर में मानवता कम है। इसका आर्यसमाज से सम्बन्ध नहीं।"

बत्रा मुस्कराते हुए पूछने लगा, "यदि मानव होना आर्यसमाज के समीप आना नहीं तो फिर और क्या गुण हैं आर्यसमाजी बनने के लिए?"

"मैं तो आर्यसमाजी हूँ नहीं। इसलिए बता नहीं सकता।"

"फिर भी आप प्रति सप्ताह इसके सत्संगों में आते हैं। आखिर क्या देखकर आते हैं?"

अंजना देवी दोनों का यह बौद्धिक वार्त्तालाप सुन रही थी। उसने कह दिया, "मन्त्रीजी! यदि आप इनसे आज ही कुछ निर्णय कराना चाहते हैं तो आइए, हमारी मोटर में घर पर चलिए और वहाँ पर आराम से बैठ निर्णय कर लीजिए।"

बत्रा ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "बात अत्यावश्यक है और अविलम्ब करने की भी है। इसलिए यदि वहाँ भोजन करने का भी निमन्त्रण दें तो मैं आज इस बात का निर्णय करा ही लेना चाहता हूँ?"

भूषण ने कहा, "आइए, भोजन के लिए आपको कहने की आवश्यकता नहीं थी। आप वहाँ चलेंगे तो माताजी बिना आपके खाए-पिए आपको आने ही नहीं देंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब चलिए। मैं मार्ग में अपनी इस बात का प्रयोजन बता दूंगा।

तीनों आर्यसमाज के बाहर निकल मोटर में बैठ अपनी कोठी की ओर चल पड़े।

: ६ :

बत्रा ने अपना उद्देश्य बताते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप आर्यसमाज के सदस्य बन जाइए तो आपको सब सदस्य इस वर्ष प्रधान बना देंगे। मैं जानता हूँ कि आप परमात्मा पर विश्वास रखते हैं। आपका वेदों पर भी विश्वास है और फिर आप कह रहे हैं कि आप मानव हैं तो मुझे आपसे अच्छा आर्यसमाजी कौन मिलेगा?"

भूषण विचार कर रहा था कि किस प्रकार वह इनकार करे। वह आँखें मूँद विचार कर रहा था। उन्हें चुप देख अंजना देवी ने कह दिया, "बत्रा साहब ठीक तो कहते हैं।"

"क्या ठीक कहते हैं?"

"आप आर्यसमाज का प्रधान बनना स्वीकार कर लें।"

"क्या होगा इससे?"

"आर्यसमाज मानवों का समाज हो जाएगा। एक बार आपने यह कहा था कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत में सबसे बड़े मानव थे। बस स्वामीजी के समाज को मानवों का समाज बनाने के लिए आप जैसे मानव को प्रधान बन जाना चाहिए।"

भूषण हँस पड़ा। बत्रा, भूषण की पत्नी को उसका पक्ष लेते हुए देख प्रसन्न होकर बोला, "भूषण जी! अब मान जाइए।"

आखिर भूषण ने कहा, "मैं तो यह विचार करता हूँ कि मैंने आर्यसमाज को इस कारण छोड़ा था कि इसमें मानवता का अभाव ही दिखाई देने लगा था। अब विचार करता हूँ कि क्या तब से अधिक मानवता इसमें आ गई है?"

बत्रा ने कहा, "कुछ तो आई है। यदि कुछ न्यूनता दिखाई दे तो आप उस न्यूनता को पूरा कर दीजियेगा।"

"और न कर सका तो?"

"तो।" अंजना ने पुनः वार्त्तालाप में हस्तक्षेप कहते हुए कह दिया, "फिर छोड़कर बाहर आ जाइएगा। यत्न तो करना चाहिए।"

बात बन गई। बत्रा साहब अपने हैंड बैग में रसीद बुक लाए थे। भूषण से एक वर्ष के चन्दे का चैक ले उन्होंने रसीद काट दी। इन दिनों भूषण कारखाने से डेढ़ हजार रुपया मासिक वेतन निकालता था। अतः उसने एक सौ अस्सी रुपये आय का शतांश देकर हस्ताक्षर कर दिए।

आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव हो रहा था। इस उत्सव पर इस बार भी पण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायणदत्त पधारे थे। भूषण और भूषण के पिता भी उत्सव में आये थे। प्रेमनाथ तो आर्यसमाज के सदस्य नहीं थे। भूषण सदस्य था। फिर भी दोनों ने उत्सव की कार्यवाही में रुचि ली थी। रामनारायण टण्डन प्रधान अवश्य थे और सभाओं में आ भी रहे थे, परन्तु वह कार्यवाही संचालन में रुचि नहीं ले रहे थे। सब प्रवन्ध बत्रा ही कर रहा था।

पण्डित नारायणदत्त इस बार ग्रोवर साहब की कोठी में ही ठहरे थे और वहाँ रहते हुए उसका अंजना देवी से भलीभाँति सम्पर्क हुआ था। वह यह समझे कि जहाँ प्रेमनाथ भावना से भरा रहता है और भूषण केवल युक्ति के आधार पर जीवन चला रहा है, वहाँ अंजना भावना और युक्ति का समन्वय करती चली जाती है। उसे यह व्यवहार अधिक सफल प्रतीत हुआ।

रविवार का दिन था। मध्याह्न-पूर्व की सभा समाप्त कर उत्सव से सब लोग खाना खाने कोठी पर पहुँचे तो कोठी के वाहर बम्बई के नम्बर की एक नवीन गाड़ी खड़ी देख विचार करने लगे कि उसमें कौन आया होगा?

गाड़ियों को ड्योढ़ी के बाहर ही खड़ी कर वे उतरे थे। ड्योढ़ी में बम्बई वाले 'नम्बर प्लेट' की गाड़ी खड़ी थी। सब लोग भीतर ड्राइंगरूम की ओर चले तो बरामदे में सुशीला को खड़ा देख विस्मय में स्तब्ध रह गए। सुशीला ने प्रमिला को हाथ जोड़ नमस्कार कर कहा, "माताजी, पहचाना नहीं मैं सुशीला हूँ।"

"पहचाना तो है, परन्तु विस्मय तो यह है कि बिना सूचना के कैसे आ गई हो? और फिर उत्सव में तुम्हारे माता-पिताजी मिले थे। उन्होंने भी नहीं बताया कि तुम नगर में हो।"

अंजना ने सुशीला की बाँह-में-बाँह डाल उसे भीतर ले चलते हुए पूछ लिया, "उन्हें भी साथ लाई हो अथवा नहीं?"

"वह देखो।" सुशीला ने ड्राइंग-रूम में खड़े एक सुन्दर युवक की ओर संकेत कर दिया।

"तो ये हैं?" प्रमिला ने पूछ लिया। "अच्छा आओ बैठो।"

अब सुशीला ने परिचय कराया, "देखो अंजू! ये हैं श्री किस्ट्रो तुम्हारे जीजा।"

सुशीला ने कह दिया, "डियर! यह हैं ग्रोवर-परिवार। इनके विषय में मैं आपको बता चुकी हूँ।'

सब बैठ गए तो नारायणदत्त भी एक ओर पृथक् कुर्सी पर बैठ गया। सुशीला ने कहा, "मैं अपने पिताजी को बताए बिना यहाँ आई हूँ। पिताजी ने मुझे एक बहुत ही कटु पत्र लिखा था। इस कारण उनको बिना किसी सिफारिश के मिलना नहीं चाहती थी। मेरा विश्वास है कि आप मेरी सिफारिश कर देंगे।"

ग्रोवर का विचार था कि सुलह कर लेनी चाहिए। वह एक हिन्दू लड़की का ईसाई घर में विवाह कर जाने को बुरा नहीं मानता था, परन्तु बिना पूर्ण स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने वह बीच में नहीं आना चाहता था। इस कारण उसने पण्डित नारायणदत्तजी को सम्बोधन कर कहा, "पण्डितजी। आइये, आपको इनका परिचय करा दूँ और फिर हमारा पथ-प्रदर्शन कर बताइए कि हमको क्या करना चाहिए ?"

नारायणदत्त अपने स्थान से उठकर आगे आ समीप ही एक कुर्सी पर बैठ गया।

प्रेमनाथ ने कहा, "आप इस लड़की को तो पहिचानते हैं। एक बार इसे आपने देखा था।"

"जी, जानता हूँ। ये टण्डन साहब की लड़की सुशीला हैं। परन्तु इसका विवाह तो अन्य अफसर से होने वाला था।"

"हाँ, तो सुशीला ! इनको तुम अपने ही शब्दों में अपनी कथा सुना दो, तब ये जैसी राय देंगे, मैं कर दूंगा।"

सुशीला ने पण्डितजी को उद्घाटन-यज्ञ के समय देखा था। उस समय मोटर में बैठे हुए उसने कहा था कि प्रमिला देवी का सुशीला को गोदी में बैठाकर ले जाया जाना न तो 'स्मगलिंग' है, न ही अपहरण। यह ससुराल गमन भी नहीं। यह भोजन का निमन्त्रण भी नहीं। यह है अन्धे मानव का अँधेरे में टटोलना। कोई नहीं जानता कि वह किधर जा रहा है ?' सुशीला ने इसी बात से अपनी कथा आरम्भ की।

उसने कहा, "पण्डितजी ने जब यह कहा तो मैं मन-ही-मन विचार कर रही थी कि पण्डितजी का कथन सर्वथा सत्य है। मैं घर से एक विचार लेकर चली थी। वह विचार अंजू के व्यवहार ने मिटा दिया।

"मैं घर से चली थी भूषणजी से सुलह करने। परन्तु घर से चलते समय माँ को कह आई थी कि मैं सागरचन्दजी से विवाह पर राजी हो जाऊँगी। अंजू को भूषणजी की मोटर से उतरते देख यह समझी थी कि मेरी गाड़ी छूट गई है और मैं पीछे ही रह गई हूँ। भूषण की माताजी का यहाँ आने का निमन्त्रण पाकर फिर संशय में पड़ गई थी। मोटर में भूषणजी की बात से ही समझ में आया कि मैं अभी भी समय पर हूँ, परन्तु पण्डितजी ने वस्तुस्थिति का वर्णन किया था कि मैं भटक रही हूँ।

"मैं अभी परस्पर-विरोधी भावों को समझ भी नहीं सकी थी कि सागरचन्द के दर्शन हो गए और वे मेरी माताजी से यह सुन कि मैं उनसे विवाह स्वीकार कर चुकी हूँ, प्रसन्न प्रतीत हुए थे। उन्होंने खाने पर चलने का निमन्त्रण दिया और मैं चल पड़ी।

"इसके उपरान्त मुझे पता चला कि वे तो पहले से ही विवाहित हैं। इससे मैंने उनसे विवाह करने से बचने के लिए ठीक विवाह के दिन घर से भाग जाना उचित समझा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस समय ऐसा समझ आ रहा था कि भूषणजी और अंजू का विवाह नहीं होगा। इस कारण बम्बई में बैठी हुई मैं पुनः भूषणजी से विवाह की सम्भावना पर विचार कर रही थी। तब ये सज्जन मिले। ये मुझसे विवाह का प्रस्ताव कर रहे थे, परन्तु मेरे मस्तिष्क में भूषणजी थे। अतः इनकी बात सुनती और उस पर मुस्कराती हुई भी उत्तर नहीं दे सकी थी।

"मेरे माता-पिता मुझे यहाँ ले आये। इन्होंने होटल से मेरा पता मालूम किया और मुझको पत्र लिखने लगे। इन्होंने लिखा कि मेरा अकेले बम्बई में जाना और फिर माता-पिता के आने पर उनके साथ घर लौट आना यह प्रकट करता है कि मैं घर वालों से रूठकर आई थी। यह रूठना अवश्य माता-पिता से आयोजित विवाह की अस्वीकृति का प्रतीक था। इस कारण इन्होंने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया है। मैं भूषणजी से राय करने गई। इन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया कि मजहब का विवाह से कोई सम्बन्ध नहीं। धर्म का अवश्य है। इनका कहना था कि पति-पत्नी का धर्म एक होना चाहिए। मजहब भिन्न-भिन्न भी हो सकते हैं। धर्म आचरण से सम्बन्ध रखता है। मजहब युक्ति-सम्बन्धी विचारों से।

"अतः मैंने निश्चय कर लिया कि यदि इनका आचरण मेरे आचरण के समान हो तो इनसे विवाह हो सकता है। तब मैंने अपने आचरण, जिसे भूषणजी धर्म कहते हैं, की रूपरेखा बनाई और इनके पास बम्बई जा पहुंची।

"मैंने इनको समझाया कि यदि ये और मैं धर्म के विषय में सहमत हो जाएँ तो विवाह हो सकता है। दो दिन के विचार-विमर्श के उपरान्त धर्म के विषय में कुछ मोटी-मोटी बातें निश्चय हो गईं। उनमें मुख्य-मुख्य बातें यह हैं। हम परस्पर धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धियुक्त और ज्ञानयुक्त व्यवहार, सत्य और अक्रोध का व्यवहार रखेंगे। ये मुझको मांस खाने को नहीं कहेंगे, मैं इनको कुछ भी खाने से मना नहीं करूँगी। मैं अपने को हिन्दू कहूँगी, ये अपने को जो इच्छा हो कहें। कुछ और बातें हैं। ये सबकी सब व्यवहार से सम्बन्ध रखती हैं।

"हमने 'कोर्ट' में विवाह किया है और पिछले छः मास से इकट्ठे रह रहे हैं। हम यत्न करते हैं कि सदा धर्मयुक्त व्यवहार रखें।

"अब हम यह समझे हैं कि मुझे अपने सम्बन्धियों से सुलह कर लेनी चाहिए। इसमें भूषण के पिताजी की सहायता लेने आई हूँ।"

"पर इनसे आप यह आकांक्षा किस कारण कर रही हैं?" पण्डित नारायणदत्त का प्रश्न था।

"इस कारण कि इन्होंने अंजू के अपहरण के उपरान्त बहुत ही उदारता का परिचय दिया था। अतः ये मेरे साथ भी वैसा ही व्यवहार करेंगे। एक बार इन्होंने कहा था कि कुछ भी हो जाए मैं तो इनकी लड़की ही रहूँगी। इसी से इनकी लड़की बन इनसे सहायता लेने आई हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Central Library
Gurukula Kangri Deemed to be University Haridwar
167969
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायणदत्त जी ने कुछ देर तक विचार कर अपना निर्णय दे दिया। उन्होंने कहा, "ग्रोवर साहब ! आपकी सहायता करने का यत्न तो कर ही देना चाहिए। सफलता भगवान् के हाथ में है।"

"ठीक है सुशीला ! यहाँ भोजन करो और तदनन्तर मैं तुम्हारे माता-पिता को टेलीफोन करके यहाँ बुला लेता हूँ।"

सबने भोजन किया। सुशीला और मिस्टर क्रिस्टो ने भी। भोजन के उपरान्त प्रेमनाथ ने रामनारायण को टेलीफोन किया।

"टण्डन साहब, नमस्ते।" ग्रोवर ने कहा।

"कौन ? प्रेमनाथ जी बोल रहे हैं ?"

"जी हाँ। इस समय क्या कर रहे हैं ?"

"भोजन कर आराम कर रहा था। तीन बजे तक उत्सव पर चलने का विचार है।"

"मेरी राय है कि कान्ता बहिनजी को लेकर आप यहाँ आ जाएँ, यहाँ एक काम है। फिर इकट्ठे हो उत्सव पर चलेंगे।"

"क्या काम है। देखिए, मुझे पता चला है कि इस बार भूषण प्रधान बनने का यत्न कर रहा है। मैं उसका विरोध नहीं करूँगा।"

प्रेमनाथ यह सुन हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "मुझे यह विदित नहीं। मैं उससे पता करूँगा, परन्तु मैं तो किसी अन्य एक आवश्यक काम से आपको बुला रहा हूँ। देखिए, बहिनजी को भी साथ लाइएगा।"

"क्या फिर कोई सगाई-विवाह की बात है ?"

प्रेमनाथ फिर हँसा और कहने लगा, "हमारे घर में तो अब विवाहने योग्य कोई नहीं है।"

"प्रमिलाजी कह रही थीं कि भूषण की साली को आपने लड़की बना लिया है न ?"

"ओह ! किन्तु इस समय यह बात भी नहीं है। आप कब तक आ रहे हैं ?"

"बस, अभी आ रहे हैं।"

टण्डन आया और प्रेमनाथ ने सुशीला की पूर्ण कथा सुनाकर कहा, "पण्डितजी का विचार है कि आपको इन दोनों को आशीर्वाद देना चाहिए।"

"पण्डितजी, किसलिए ?"

नारायणदत्त ने फिर दोनों के धर्म में समानता की बात बताई तो रामनारायण ने पूछ लिया, "आर्यसमाज इसमें क्या कहेगा ?"

"टण्डन साहब ! आर्यसमाज से मानवता ऊपर है।" पंडित नारायणदत्त ने समझा दिया।

□□□

081
167969
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089·9143

वर्ग संख्या........G.U.P — Y   आगत संख्या 167969

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

1894-1989   शिक्षा एम एस-सी

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar